सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

स्तर : अगुवा

अध्ययन पुस्तक क्रमांक : 11

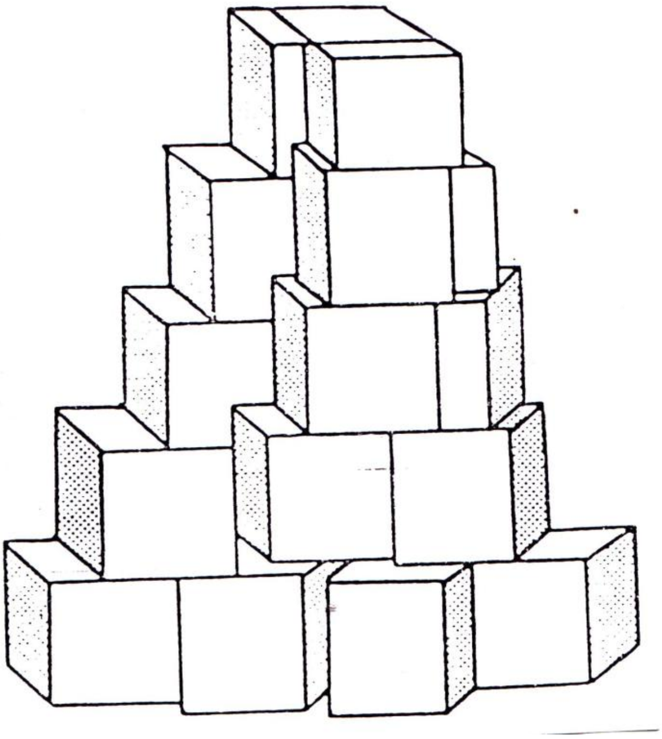

स्तरः

5. सेवक

4. अगुवा

3. सैल अगुवा

2. चेला

1. नौसिखिया

मसीह में हर विश्वासी को एक सेवक बनाते हुए आत्मिक परिपक्वता में विकसित होने और एक प्रभावशाली और कुशल सेवकाई में बढ़ने के लिए बाइबल अध्ययन कोर्स !!!

स्वयं-अध्ययन और दूसरों को सिखाने के लिए सरलता से इस्तेमाल करने योग्य !!!

सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

<u>उद्देश्य:</u>

- उसे जानना, जो एक मात्र सच्चा परमेश्वर है

(विकसित होना / परिपक्व होना)

- यहोशू 1:8 "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रखना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने को तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"

- 2 पतरस 3:18 "पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अभी भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।"

- 2 तीमुथियुस 2:15 "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"

- कुलुस्सियों 1:27-28 "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है, जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"

- और उसके बारे में दूसरों को बताएँ!

(गुणा / पुनरुत्पादन)

- 2 तीमुथियुस 2:2 "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"

- 2 तीमुथियुस 3:16-17 "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"

- इफिसियों 2:10 "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।"

- 2 पतरस 1:8 "क्योंकि यदि ये तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।"

<u>सिद्धान्त</u> : "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है।" (रोमियों 11:36)

(ज्ञान में बढ़ना; चरित्र में परिपक्व होना; आत्मिक वरदान इस्तेमाल करना)

सूची अध्ययन पुस्तक क्र.: ११

पृष्ठ

क्रमाँक

- सफल मसीही विवाह कि कुन्जी 1633
- पति पत्नी के बुध्दिमता पूर्ण निर्णय 1647
- अपने पति के लिए आशिषमय कैसे बने /पनि को आदर करने के गुर 1657
- विवाह मे वार्तालाप के मार्गदर्शन 1667
- विवाह और सम्बंधो में मजदूरी को नकारना 1671
- क्या लौगिकता कम आत्मिक है ? (बाईबिल कि एक दृष्टि) 1673
- अराधना, नेतृत्व – संगीतज्ञ (उनका जीवन एवं सेवकाई) 1682
- अराधना मे अहुवाई करना 1691
- पवित्रात्मा के प्रगीकरण का स्वागत करना (बाईबिल आधारित) 1705
- लतो को तोडना 1714
- विश्वासियों के जीवन की समस्याओं पर जय पाना (गढो को तोडना) 1718
- गढो को कैसे सत्यनाश करे 1726

सम्मति देना कार्यप्रणाली और समाधान निम्न मामलों के लिए :- 1741

- घर :- मॉ-पिता और किशोरों के मामले :
- वैवाहिक समस्या ग्रस्त लोगों को सम्मति देना:
- पवित्रात्मा के बपतिस्मा के लिए सम्मति देना ,
- शारीरिक चँगाई पाने वालों को सम्मति देना
- आंतरिक चँगाई के जरुरतमण्दो को सम्मति देना (तिरस्कृतो का समाधान करना)
- क्षमा द्वारा चोट के घाव से स्वंतत्रता को पाना
- समलैंगिकाता के समस्या का समाधान करना,
- दुष्टात्मा और श्राप छुटकारा पाना
- दुष्टात्मा द्वारा सताए और प्रताडितों को सम्मति देना ,
- छुटकारे की सेवकाई , बचॅचों के छुटकारे की सेवकाई,
- बलवाई के जड / घमण्ड , गुप्त पाप
- रहस्यमय पाप और उसके मूल से लडकर जीतना (भूतसिध्दी करने वाला, वशीकरण EPS, ई.पी.एस., प्रेतात्मावाद, जादू, रहस्यवाद) सहस्यमयी प्रताडना से छुटकारा
- शोक और ,खोए हुओ के दु:खियारो को सम्मति

- क्या मसीही मूर्ति समक्ष अर्पित प्रसाद खा सकता है , 1811
- गैर मसीही शब्दो और अवधारणाओ के शब्दकोश (जैसे : गुरु, कर्म, मंत्र इत्यादि) 1812

एक सफल मसीही विवाह कि कुन्जी

यह सब पमेश्वर से आरम्भ होता है :

शादी स्वर्ग में सृजा गया, यह सब स्वर्गलोक में आरम्भ हुआ, परमेश्वर मनुष्य के अकेलापन को निहारा जो उसे अच्छा नहीं लगा। अत: उसने उसके लिए उसी के "बराबरी का एक सहायक" बनाया। और जब परमेश्वर उस स्त्री को उसके पास लाया, प्रथम वैवाहिक सम्बंध प्रारम्भ हुई। आदम और हव्वा परमेश्वर द्वारा निर्मित स्वर्गलोक जैसे बगीचे में रहते थे जो उसके और उसके पत्नी के लिए बनाया था। बाईबिल बताती है कि यह कैसे आरम्भ हुआ :

और परमेश्वर ने कहा, मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं, मैं उसके लिए एक सहायक को बनाउँगा और उसका एक पसली निकाला और उसके स्थान पर मॉस भर दिया। तब परमेश्वर ने मनुष्य के पसली से जिसे आदम के शरीर से निकाला था एक स्त्री को बनाया, और उसे आदम के पास लाया (उत्पति – २:१, २१-२२) हव्वा को आदम के समानान्तर सहायक को बनाया। एक सहायिका के रुप में , स्त्री को आदम के सहायता के लिए दिया गया था कि वह उसकी सहायता करे कि वह परिपूर्णता को प्राप्त करे। हिन्दी का शब्द इब्रानी भाषा के समान सहायक शब्द के अर्थ को स्पस्ट नहीं करता है। इसका अर्थ इस तरह का है कि सहायक जो पूर्णता को प्राप्त करने में सहयोग प्रदान करना है। एक तरह से, इसका प्रयोग किसी दूसरे को बचाने जैसी बातो में हुआ। प्रथम विवाह सम्बंध में, फिर, उसे मनुष्य के पास लाया गया कि वह परिपूर्ण हो जाए, यानि अकेलापन के तनहाई से बचाना। एक सहायिका के तुलना में हव्वा आदम के बराबर, वार्तालाप सहयोगी था। परमेश्वर ने उसे एक ऐसा सहायिका बनाया जो उससे मेल खाए। वह जीवन के भॅवचक्र मे खोया हुआ टुकडा था इस तरह परमेश्वर अदन के बगीचे में इसका आरम्भ किया। और विवाह करना कार्य करता है: में जाने के लिए, उसके सिध्दॉतों में जाने कि जरुरत है – जो विवाह के लिए आधारशिला बनाता हैं परमेश्वर के वचन में पाया जाता है।

उत्पति में खाते कि शुरुआत विवाह से और अंत चार वक्तब्यों से होता है जो प्रत्येक विवाह में यह होना ही चाहिए। (देखें २:२४-२५) वे निम्न हैं :-

- **एक अलगाव होना :-** इसलिए मनुष्य अपने मॉता पिता को छोड़कर अलग रहेगा। एक विवाहित दम्पति अपने मॉता-पिता को छोड़कर रहते है।
- **एक परिणय बंधन में :-** और अपने पत्नी से मिला रहेगा। प्रथम विवाह एक दूसरे के साथ जुड़ने के विचार को, एक स्थाई बंधन में बांधता है।
- **एक एकता में :-** और दोनों एक तन होंगे। वे दोनों अपने आप को अलग- अलग नहीं पर एक देखेंगे। पुराना परिवारिक सम्बंध टूट जाता है और एक नया सम्बंध शुरु होता है।
- **एक गहरा सम्बंध :-** और दोनों नंगे थे .... और लजाते नहीं थे। उनके खुद के चेतना के अनुपस्थिति के कारण एक दूसरे से आमोद प्रमोद और जरुरतों को पूरा करने में बिना किसी रुकावट, झिझक , या तिरस्कार के करते थे।

दस बाईबिल के आधार शिलाओ का बंधन

जैसे परमेश्वर ने विवाह को रचा, आज्ञा दी कि फुलो –फलो और पृथ्वी पर भर जाओ, और इस बात पर जोर दिया कि विवाह जीवन भर का संबन्ध है। उसने हमें यूं ही हमारे बल-बूते पर छोड़ नहीं दिया कि किसी तरह चलता रहेगा। उसने बाईबिल मे हमसे कहा कि हमारी शादी कैसे कार्य करती है। इस अध्ययन में हम दस बाईबिल के आधारशिलाओं को जो सफल विवाह के लिए है देखेंगे। वे निम्न है :-

१. जीवन भर का समर्पण

२. पहिचान बॉटना

३. आखिर तक विश्वासयोग्यता

४.	पूर्व नियोजत भूमिकाएं
५.	असंरक्षित मोहब्बत
६.	आपसी आधीनता
७.	लैंगिक परिपूर्णता
८.	खुला वार्तालाप
९.	आदर – सन्मान देना
१०.	आत्मिक संगति / सहभागिता

जैसे हम इन दस आधार शिलाओं पर विचार करते हैं, याद रखें यह मनुष्य निर्मित नहीं है । ये स्वयं परमेश्वर द्वारा हमें दिये गए हैं । क्योंकि इन्हें आप अपने विवाहिता के साथ अनुभव से जान सकते हैं, कि यह विवाह में कार्य करता है ।
किन्तु शायद यह आपके शादी में यह बात सम्भव न हो यदि आपका जोड़ा अविश्वासी या बाईबिल के अधिकार को मानने से इंकार कर दे । फिर भी यदि आपका जोड़ा आपके साथ रहने को तैयार है, यह आपको मौका है कि आप एक ऐसे पति / पत्नी है जिसे बनने के लिए परमेश्वर आपकी सहायता करता है । (१कुरिन्थ-७/ १२-१६) अत: इस अध्ययन को पढ़ें और अपने वैवाहिक जीवन में लागू करने के लिए पवित्रात्मा का सहयोग पा सकते हैं ।

आधारशिला १ : जीवन भर का समर्पण

प्रथम आधार शिला जो पुरुष और स्त्री के वैवाहिक जीवन में जीवन भर का समर्पण को बनाए । जब एक पुरुष और स्त्री विवाह के लिए सहमत होते हैं, वे उसी समय निश्चय कर लिए होते हैं कि मृत्यु कि सिवाय और किसी रीति से अलग न होंगे । प्रभु यीशु ने कहा :- क्या आपने नहीं पढ़ा कि जिसने आरम्भ से नर और नारी करके बनाया, और कहा कि इस कारण मनुष्य अपने मॉता पिता को छोड़कर अपने पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे ? और तब वे दो नहीं बल्कि एक तन होंगे । इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, कोई मनुष्य अलग न करे (मती-१९:४-६)
तब, प्रश्न तलाक के जवाब में, याशु आगे बोले: तुम्हारे हृदय कि कठोरता के कारण, मूसा तुम्हे अपनी पत्नी को तलाक देने को कहा किन्तु आरम्भ मे उेसा नहीं था । और मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई अपनी को तलाक देता है, वह ब्याभिचार करता है, और जो उससे शादी करता है, वो भी ब्याभिचार करता है । (पद ८-९) विवाह का वाचा, इसलिए, जीवन भर का समर्पण का वादा है । वाचा का अर्थ, आज से आगे, एक की मृत्यु तक बंधी रहती है । यह एक बंधन है जो टुटता नहीं है । (सभोपदेशक-५:४)
इस सत्य कहानी पर ध्यान दें:- एक ब्यक्ति और महिला के केवल एक साल बाद पता चला कि वह महिला अनेकानेक गंम्भीर बीमारी की शिकार है । (एक अंतिम शारीरिक गंम्भीर बीमारी) इस पर गंम्भीरता से बिचार करने के बाद, उस महिला ने कहा कि वह उसे स्वतंत्र कर रही है किन्तु पुरुस उसे नहीं छोड़ा । जो प्यार और परिवरिश प्रकट किया उसके बचे हुए दिनों में विशेष खुशियां भर दिया । उसने ऐसा क्यों किया ? क्योंकि, उसने कहा, जब मैं परमेशवर के समक्ष वाचा बाँधा वह बुरे भले, और बीमारी और तन्दुरुस्ती के लिए था, जिसे मैं पूरा किया । और परिणाम स्वरुप हम दोनों को परमेश्वर अविस्वसनीय खूशियॉ दी ।

आधारशिला : २ पहिचान बॉटना –

एक दूसरा आधारशिला पिण्ड जो विवाह में पति पत्नी में कार्यकारी तभी देखेगा जब वे अपने आप को एक समझें । इससे आगे पति अपने आप के लिए नही पत्नी के लिए के लिए जिएँ, तब उनके मध्य एक नया गठजोड़, एक नया परिवार, एक नई एकता, हो जाएगा । आदम अपनी पहिचान को जब परमेश्वर ने महिला को उसके पास लाया तब उसे प्रकट किया । उसने कहा:- यह मेरे हड्डी मे कि हड्डी है, और मेरे मॉस मे कि मॉस, यह नारी कहलाएगी क्योंकि यह नार से निकाली गई है ।

(उत्पति – २:२३) दूसरे वचन का अन्त वे एक तन होगे के शब्दो से होता है, (पद-२४) .....किन्तु यह प्रत्येक के जीवन में प्रतिदिन हमेशा जीना आसान नही है। यह इसलिए कि क्योंकि पति-पत्नी के आदतें, संस्कृति, मॉता-पिता, भिन्न शिक्षा, भिन्न व्यक्तित्वता, और वैचारिकता में बिभिन्नता होती हैं। देखिए हव्वा आदत के कोशिका से नही थी, वह विलक्षण थी जैसे कि प्रत्येक मनुष्य भिन्न है। वह कोई उस से नही आयी थी। वह भिन्न थी, शारीरिक और मानसिक दोनो ही रुप में। उसकी आवश्यकताएँ भिन्न थी, आदम कि आवश्यकताओं को तृप्त करती थी। और वह अकेली आदम से अपनी आवश्यकताएँ तृप्त करती थी। ..... विवाह में एक पुरुष और एक स्त्री एक नए बंधन में जुड़ते हैं वे एक हुए एक दूसरे के जीवन में, यह हमेशा कि लिए है, फिर भी प्रकृया में रहता है। समय, प्रेम, धीरज, क्षमा और विवाह, कि परिपक्वता के लिए पहिचान बॉंटने कि जरुरत पड़ती है। और इसका आश्चर्यजनक परिणाम हैं। अब स्त्री पुरुष अकेला नही रहे, वे एक हैं तब भी जब :-

वह एक लॉज में या हॉटल में हजारों मील दूर है
वह बच्चा जनने कि पीड़ा में है,
अभी-अभी उसकी नौकरी चली गई,
उसे कोई रहस्यमय बीमारी का लक्षण का पता चलना,

दोनो एक तन है, यद्यपि दोनों विभिन्न प्राणी हैं, व्यापक बिभिन्नता के साथ, वे एक चलने के लिए सहमत हुए कि जीवन के राह में एक साथ चलें वे अपनी पहिचान बाँटा है।

संम्बधो की आधारशिला ३ : निसन्देह विश्वास पात्रता

शादी केवल उन दो व्यक्तियो की एक सामूहिक पहिचान का जीवन पर्यन्त का समर्पण मात्र नही है। वरन इसे पति-पत्नी का एक दूसरे के प्रति पूर्ण वफादारी का एक हिस्सा भी कहा जा सकता है। वे एक दूसरे के प्रति सच्चे होने चाहिए। बाईबिल में इस विषय पर कोई दो राय नही है। पुरुष को अपनी पत्नी के प्रति वफादार होना चाहिए, और पत्नी को भी पति के प्रति वफादार होना चाहिए नीतिवचन का रचयिता सावधान करता है। क्या हो सकता है कि कोई अपनी छाती पर आग रख ले ओर उसके कपढ़े न जले ? क्या हो सकता है कि कोई अंगारे पर चले और उसके पैर न झुलसे ? सों यदि कोई अपने पडोसी की पत्नी के पास जाए वरन जो कोई उसको छुएगा वह दंण्ड से नही बचेगा (नीति ६:२७-२९)

बाईबिल में लैगिंक वफादारी की पात्रता के सम्बन्ध मैं किसी तरह का कोई समझौता नही है। पौलुस तितुस से कहता है कि बुजुर्ग महिलाएॅ कलीसिया की जवान महिलाओं को समझाएँ कि अपने पति से प्रेम करे, अपने बच्चो से प्रेम करे, वे सयंमी और पतिव्रता बने (तितुस २:४:५) जब एक स्त्री शादी के बन्धन में बन्ध जाती है तो उसे अपने आपको पूर्णत: केवल पति को समर्पित करने हेतु बचनबध्द हो जाना चाहिए। व्यभिचार को बाईबिल में पूरी कठोरता से निषेधित किया गया है, सीने पर्वत से दी गई छठवी आज्ञा सही थी कि तू व्यभिचार न करना (निर्गमन२०:२४) यीशु मसीह इस आज्ञा का जिक्र उस धनवान पुरुष से वार्तालाप के दौरान भी करते है। (मती१९:१८) पौलुस के शरीर के गन्दे कामों की सूची में व्यभिचार का नाम सबसे पहले आता है। (गलतियो ५:१९)

वैवाहिक वफादारी उस प्रतिज्ञा को पूरा करता है। जो विवाह समारोह के दौरान परमेश्वर और मनुष्यो के सामने ली गयी है। – और आपके पास में अपनी वफादारी गिरवी रखता हूँ एक लेखक यों कहता है ठीक ऐैसे ही हमें एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए एक प्रतिज्ञात्मक स्नेह जो किसी खुशी पर निर्भर नही करता अनन्त सफलता का प्रतीक चिन्ह है। ऐसे प्रेम का शुभारंभ और कहाँ होगा यदि हम इसकी शुरुआत उसके साथ जो हमारे सबसे करीब है, के साथ भी न कर सके, एक जीवन साथी जिसका चुनाव हमने दुनियाँ के बहुतेरे लोगो में से किया है एक आँखो के तारे रुप में ? यहाँ निसंदेह विश्वास पात्रता संम्बधी कुछ मुश्कीलें सामने आती है।

एक सफल विवाह निर्माण का तीसरा पहलू

- हम अपना प्रेम अपने जीवन साथी पर न्यौछावर (केन्द्रित)करेगें।
- हम छोटे से छोटा विषयों पर एक दूसरे के विश्वासपात्र बने रहेगे।

- हम अवैध प्रेमालाप या धोखाधडी में शामिल नही होंगे न ही अवैध प्रेम सम्बंधो के विषय साचेंगे ।
- हम परिक्षाओं से बचकर निकल जाएगें ।
- हम अपने अनुमान और कल्पनाओं को नियंत्रित रखेंगे ।

आज के इस ईश्वर विवाहित और सांसारिक मापदण्डों के तहत निसंदेहात्मक विश्वास पात्रता क्या स्वाभाविक नही है अवश्य नही इस गिरते संसार में तो कतई नही । परन्तु हमारे स्वर्गीय आदि माता पिता के लिए यह अत्यंत स्वाभाविक था । और आज यह प्रत्येक सफल और कारगर विवाहो का एक हिस्सा होगा

संम्बध निर्माणकां आधार शिला ४ : सुपरिभाषित भूमिका :-

वर्तमान समाज ने शादी या विवाह पर आक्रमण के सारे तरीके खोज निकाले है, और परिवार के अन्दर पररम्परिक भूमिका पर आक्रमण इसके आक्रमणों में से एक है । पत्नी से कहा जाता है कि उसे भी समान अधिकार प्राप्त है जैसे कि उसके पति को प्राप्त है, उसे और किसी को समर्पित नही होना है । पति पर यह दबाव डाला जाता है कि वह अपना ख्याल रखें पत्नी के लिए चिन्तित न हो । प्रतिफल या परिणाम क्या निकलता है, पति और पत्नी को आवश्यकता है मार्गदर्शन की, आवश्यकता है उनकी इस विशिष्ट भूमिका के संन्दर्भ में उठते कुछ आधारभूत सवालों के जवाबो की । और वो सारे जवाब मौजूद है बाईबिल में । और जब वो सारें जवाब अमल में लाये जायेंगे शादी निश्चित ही सफल होगी ।

एक पति की भूमिका :-

बाईबिल कहती है कि पति पत्नी का सिर है, पौलुस ने लिखा है मैं चाहता हूँ कि तुम बात जान लो कि हर स्त्री का सिर पुरुष है और पुरुष का सिर मसीह का सिर परमेश्वर है । (१ कुरि२२-३) पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलिसिया का सिर है । (इफि. ५:२३)

इसका आशय क्या है ? इसका आशय है कि पति को एक जवाबदारी पूर्ण अगुवाई या नेतृत्व प्रदान किया गया है जिसे उसे बिना किसी के निर्देशन या ऑख बंन्द करके अपनी ईच्छा के मुताबिक नही करता है । बाईबिल के अनुसार उसकी अगुवाई या नेतृत्व यह है कि,

- जो प्रेम की परिपूर्णता में प्रदान की जाए (इफि. ५:२५ कुल. ३:१९)
- जो मसीह के कलीसिया के प्रति प्रेम के उदाहरण का अनुसरण करते हुए हो, अपने आप का बलिदान और सेवा करना
  (इफि. ५:२५)
- जो कि पूरी समझदारी के साथ किया जाए (पतरस ३:७)
- जो कि बिना किसी कठोरता या कटुता के किया जाए (कुल. ३:१९)
- जो कि उस प्रेम के बराबर हो जैसा कि वह अपने शरीर से करता है (इफि. ५:२८)

अब सत्य यह है कि पति को पत्नी का सिर ठहरायें जाने का आशय यह नही कि वह अतिश्रेष्ठ है । बाईबिल की वही ईबारत जो पुरुष को स्त्री का सिर कहती है वह यह भी कहती है कि परमेश्वर मसीह का सिर है (२ कुरि ११:३) और हम जानते है कि दोनो ही समान रुप से प्रभावी है । दोनो ही परमेश्वर की परिपूर्णता के बन्धन को अगुवाई जीवन्त और क्रियान्वित है जो कि विवाह की सफलता में सहायता प्रदान करती है । यह सम्मती के बन्धन को तोडता है तथा उस बडी जिम्मेदारी को भी लेकर चलता है । एक पति को स्नेही, समझकर और ईश्वरीय आदरभाव की अगुवाई प्रदान करता है ।

एक पत्नी की भूमिका :-

एक स्त्री को बाईबिल में हिदायत दी गयी है कि वह अपने पति की अगुवाई हेतू अपन को समर्पित करे उदाहरण के लिए हे पत्नियों जैसे तुम प्रभु के अधीन हो वैसे ही अपने-अपनें पति के भी अधीन रहो (इफि. ५:२२) हे पत्नियो जैसा प्रभु में

उचित है वैसा ही अपने अपने पति के अधीन रहो (कुलु. ३:१८), (१ पतरस ३.१) जवान स्त्रियो को चेतावनी ...... और अपने अपने पति के अधीन रहने वाली हो .... (तीतुस २:४-५)

परमेश्वर ने स्त्री – पुरुष की सरचना इसलिए की ताकि वो साथ – साथ रहते हुए सन्तोषजनक सम्बधों का निर्वहन कर सके । उसने पहले आदमी को बनाया (१ तीमु ०२:१३) और उसने उसे प्रधान किया गया कि वह उसे अपने अगुवा के रुप में स्वीकारे (उत्पति २:१८, १कुरि ११.८-९)

एक स्त्री जो घर में निर्णय लेने हठधर्मी हो गयी हो उसकी भूमिका एक अनाज्ञाकारी के समान है । परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञा और वचन के उदाहरण के बावजूद भी उसका निर्णय अपने अनुसार ही चलता है । यह उसके लिए बेशर्मी की बात है । तथा उसके विवाह की सफलता के लिए एक खतरा या चेतावनी है । विवाह तभी पूर्णत: सफल होता है जब पति और पत्नी दोनो अपनी अपनी भूमिका को भली भाँति निभाए । यह एक प्रायोगिक आवश्यकता है । एक आवश्यकता जो कि अपने आप में परमेश्वर के शीर्ष (सिर) को भी उद्धृत करती है । यीशु मसीह के इन शब्दों की ओर ध्यान दीजिए मेरा पिता मुझसे बडा है (यहून्ना १४:२८)यद्यपि वह यह भी कहता है मै और पिता एक है (यहून्ना १०:३०) यीशु मसीह दुनिया में आया ताकि पिता की इच्छा और योजना को यथार्थ रुप से पूरा कर सके । यद्यपि वह पिता के समान (बराबर) ही था । उसने अपने आप को पिता की अगुवाई के दौरान पति की ईच्छा पूरी होगी । पत्नी को अपने समर्पण से आनंद होगा और विवाह परमेश्वर के द्वारा आशिर्वाद ठहरेगा, यही वह प्रक्रिया है, जिसे परमेश्वर ने बताया है ।

सम्बंध निर्माण की आधारशिला : ५ उदार या सुस्पष्ट स्नेह :-

सफल विवाह की सफलता की पाँचवा आधार है प्रेम – सत्य पवित्र, हदय की गहराई से मोटे से मोटा और पतले से पतला ऐसा प्रेम हम मृत्यु तक करें । पति-पत्नी एक दूसरे को पूरी उदारता से प्रेम करे और ऐसे प्रेम से वो एक दूसरे की इज्जत और सम्मान भी करेंगे । एक दूसरे की भलाई को व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर रखते हुए, दु:ख-सुख आर्थिक परेशानियाँ सब में एक दूसरे का साथ निभाते हुए जो कि वैवाहिक जीवन में प्राय : आती ही है । एक पति से विशेष रुप से बाईबिल में कहा है कि वह अपनी पत्नी से प्रेम करे । पौलुस अत्यन्त संक्षेप में कहता है कुलु ३.१९ में पतियों अपनी पत्नियों से प्रेम करो (इफि. ५:२५ में भी देख सकते हैं)

पत्नियों से भी अपेक्षा की गई है कि वो अपने पतियो से प्रेम करे । शायद आपको उदाहरणत: याद आयेगा शादी की प्रतिज्ञा या अँगूठी पहनाने से होता है । ऐसा तभी होता है जब ब्याहता जोड़ा ढेरो सच्ची और आश्चर्यजनक हदय की गहराई से भावनाओ को अनुभव करे । जैसे-जैसे समय गुजरता है वो सीखते है कि प्रेम में आपसी आकर्षण जो उन्होने पहले अनुभव किया था उसके अलावा प्रेम में बहुत गहराई और प्रायोगिक स्वरुप निहित है उन्हे इस बात का बोध होता है कि उन्हे आपसी स्नेह से कार्य करना है जैसा कि प्रभु यीशु मसीह ने अपने आप का बलिदान कर दूसरो को आशीष और सहायता के द्वारा हमें सिखाया है ।

बाईबिल के अनुसार मसीही प्रेम को १ कुरि १३ में भली भाँति परिभाषित किया गया है । यद्यपि जिस प्रचलित आयतो में बताया और परिभाषित किया गया है वह सभी तरह के रिश्तो के लिए सत्य है, लेकिन शायद यह विवाह के लिए ज्यादा तर्कसंगत हो । ४ से ८ आयत में प्रेम के जो तथ्य दिखाई पडते है उनकी प्रायोगिक कल्पना कीजिए, पति-पत्नी के रिश्ते के बीच इसे अपनाया जाए

- प्रेम धैर्यवान और सहनशील है, जो अपनी क्षमा शीलता या क्षमा को बार-बार भूल जाता है ।
- प्रेम दयालू है, और जो बिना चिड़े या कुडे पत्नी के व्यस्तापूर्ण दिनों में बरतनो को धोता या माँजता है ।
- पत्नी को उसकी दया के कारण मिलने वाले सम्मान या उसके कार्यो के कारण मिलने वाला प्रशंसा का प्रेम शत्रु नही होता
- प्रेम अपने छोटे-छोटे कार्यो के बदले किसी बडे गौरव या प्रतिष्ठा की आशा नही रखता ।

- प्रेम घमण्डी नही है, परन्तु वह इस बात को स्वीकार करता है, कि सम्भावित मामले या सन्दर्भ में वह(पत्नी) सही होगी, गलतियों के मामले या सन्दर्भ में है ।
- प्रेम अपने वार्तालाप में कभी कठोर और अभद्र नही होता वह हमेशा (पति) से आदरपूर्वक बात करता है, फिर वह व्यक्तिगत हो या सार्वजनक स्थल पर हो ।
- प्रेम स्वार्थी नही होता, बल्कि खुशी से फुरसत के दिन उसे (पत्नी) को खरीददारी को लेकर जाता है ।
- प्रेम आसानी से क्रोधित नही होता, यहाँ तक कि जहाँ आवाज ऊंची करके बोलना चाहिए वहाँ भी अपनी आवाज पर नियंत्रण रखता है ।
- प्रेम गलतियों का कोई हिसाब नही रखता न ही उनकी याद वो कभी दिलाता है । बल्कि तुरन्त उन्हें माफ कर देता है ।
- प्रेम बुराई से प्रसन्न नही होता, न ही अपने साथी पर गलत व्यवहार के लिए दबाव डालता है ।
- प्रेम वास्तविकता का सामना और उसके अनुरुप अपने को डालकर सच्चाई से प्रसन्न होता है ।
- प्रेम हमेशा भरोसा करता है । वह अपने आप को शक और सन्देह से परे रख अपनी महत्वता बरकरार रखता है ।
- प्रेम हमेशा आशान्वित रहता है, अपने सामूहिक सपनो को ऐसे वक्त भी थामें रहता है, जबकि उसका (पति) का व्यवसाय या नौकरी भी चली गयी हो ।
- प्रेम हमेश संरक्षित रहता है । तनाव और विपरित परिस्थितियो में प्रेम और भी मजबूती से बढ़ता है ।
- प्रेम कभी असफल नही होता यद्यपि, जवानी, शरीर और ताकत और तन्दुरुस्ती क्षीण हो जाती है ।

विश्वासी पति या यह सारे कर्तव्य पति-पत्नी के आपसी स्नेह की विवेचना करते है । प्रेम स्वत: धैर्य, दया, विश्वास और आशा के माध्यम से आपके दैनिक जीवन में प्रदर्शित होना चाहिए । उसे प्रदर्शित होने के लिए किसी घटना या दुर्घटना का इन्तजार नही होना चाहिए । मसीही प्रेम के सिध्दातों को अनुभव पूरी सच्चाई से होना चाहिए मुख्य रुप से उस स्त्री या पुरुष को जिसको कि अपने आपने वैवाहिक साथी के रुप में चुना है । लेकिन एक मिनट रुकिये आप कहेंगे मैं तो अपनी भूमिका लेकिन मेरा साथी अपनी भूमिका नही निभा रहा । क्या आप मुझसे यह उम्मीद करते है कि मै उससे प्रेम करता रहूँ जो कि बदले में मुझ से प्यार नही करता । ऐसी परिस्थितियों में प्रेम करना अत्यंन्त कठिन होता है जबकि प्रेम इकतरफा या सिर्फ एक ही ओर से किया जा रहा हो, यह अत्यन्त कठिन है जब सिर्फ आप ही प्रेम देने का कार्य कर रहे हो सारे त्याग और बलिदान कर्तव्य को सिर्फ आप ही थामें हुए हो, यह अत्यन्त कठिन होता है । जब आपके साथी का स्वाभिमान या घमण्ड या स्वार्थीपन आपको वापस मिलने वाले प्यार की राह में बाधा बने अपने इस सम्बंध में बातचीत करने का प्रयास किया लेकिन कुछ नतीजा नही निकला । आप पूरी तरह हार मान चुके है । यदि आप ऐसा सोचते हैं तो यह आपके लिए सहायक सिध्द हो सकता है । कि आप प्रभु को समाप्त करने का हमेशा कोई कारण रहता है तो वो ऐसा करे । किन्तु उसने (प्रभु यीशु मसीह) ने हमें पूरी उदारता से प्यार किया ऐसे समय में भी जबकि वह मौत की कगार पर था, क्रूस पर हमारे लिए मर रहा था । यही वो प्रेम का स्वरुप है जो हमारे बीच एक दूसरे के प्रति होना चाहिए ।

सम्बंध निर्माण की आधारशिला ६: आपसी समर्पण

बाईबिल के विभिन्न अनुवादको ने अधिकाधिक सच्चाइयों का उल्लेख किया है बाईबिल में पत्नियों को पतियों के आधीन रहने को कहा गया है । स्त्रियो की जिम्मेदारी को बढ़ाते हुऐ भले ही वो इफिसियो अध्याय ५ की इन महत्वपूर्ण आयातों के अनुरुप अपनी भूमिका में असफल हो और दाखरस से मतवाले न बनों क्योंकि इस से लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ और मसीह के भय से एक दूसरे के आधीन रहो (इफि. १८-२२) यें आयतें (इबारते) सम्पूर्ण मसीही समाज के लिए लिखी गयी है । इसका प्रचार और फिर आपसी समर्पण के सिध्दंतो को विभिन्न रिश्तों और सम्बधो मै अपनाए जिनमें सबसे पहले हो वैवाहिक सम्बंध जब एक स्त्री और पुरुष विवाह की प्रतिज्ञाओ को दोहराते है वो एक प्रेमपूर्ण रिश्ते में प्रवेश करते है । एक ऐसी प्रतिज्ञा जो जीवन पर्यन्त आपसी समर्पण का बुलावा है ।

समर्पण और प्रेम दोनो साथ – साथ चलते है। हम जानते है, कि परमेश्वर प्रेम है, लेकिन हमें कैसे पता चलेगा कि वह हमसे प्यार करता है? क्योंकि बडी हीनता और समर्पण के साथ यीशु मसीह सलीब की ओर बढ़ गया। (फिली २:५-८)

मसीही विवाह में पति और पत्नी क्योंकि वो परमेश्वर से प्रेम करते है, इस बात को समर्पित रहे कि प्रभू की कौन सी ईच्छा उनकें लिए है। वो ऐसी ईच्छाओं को अपने मध्य तथा परमेश्वर एंव एक दूसरे को समर्पित होने हेतू क्रियाशील है। प्रभु यीशू मसीह की मनसा जो कि आपसी असर्पण स्थापित करती है।

कुछ तथ्यों को निम्नलिखित रुप से भी प्रदर्शित किया जा सकता है।

- विवाह, देना और लेना है – सिर्फ लेना नही है।
- विवाह ईच्छाओं का संघर्ष है।
- विवाह अपने आप पर विजयी होना है।
- विवाह एक सेवक होने जैसी है।
- विवाह त्याग और समर्पण है।
- विवाह बरतन माँजना है, जबकि वह (पत्नी) थही हुई है।
- विवाह उसकी (पति) पसंदीदा कमीज को धोता है।

परंन्तु अन्तत: विवाह को परमेश्वर की नियति तक पहुचने या उसे पूरा करने में सहायता, मदद, का बहाब बना रहता है। इसलिए इसका क्या मतलब है? इसका आशय यह है कि इस औरत को कोई अधिकार नही कि वह सिर्फ घर बार की साधारण जिम्मेदारियों के तले ही अपने आप को देखे। सिर्फ इन जिम्मेंदारियों के कारण उस का दृष्टिकोण यह न हो कि वह अपने आप को एक नौकर की तरह देखे। और उसमें निवास करने वाले सभी, के साथ-साथ उसकी पत्नी भी उसके लिए महत्वपूर्ण हो। बल्कि प्रभु यीशू मसीह की ईच्छा भी, वह इन सब को एक ऐसे दृष्टिकोण से देखे कि यह वह स्थान है। जहाँ उसे यह सुअवसर प्राप्त हुआ है कि वह अपने आप को नम्र और दीन बनाए सबसे पहले जीवन की विभिन्न दशाओ तथा घर में एक सेवक के रुप में, और इसी प्रकार के लोग ही विश्वासी के समान हो सकते है। आपसी समर्पण निर्माण का एक महत्वपूर्ण अंग है जो कि विवाह की सफलता में सहायक सिध्द होता है।

सम्बंध निर्माण की आधारशिला ७ : शारीरिक सन्तुष्टि

अदन की बाटिका जहाँ पर इस सब का प्रारम्भ हुआ, आदम और हवा आश्चर्यजनक प्रेम सम्बंधो में सहभागी हुए जहाँ वो दोनों नंगे थे, एक आदमी और उसकी पत्नी और जहाँ शर्मोहया नही थी, (उत्पति २:२५) इसके अतिरिक्त फिर से एक आज्ञा और धरती पतन (विनाश) के कगार पर आ गयी, इसीलिए अनैतिक प्रेम – संम्बध और सामुहिक शारीरिक खानापूर्ति पति-पत्नी के सम्बों का हमेशा से एक हिस्सा बने रहे है। पति और पत्नी एक दूसरे में शारीरिक सन्तुष्टि पाते है। जिस प्रेम और सुरक्षा मं पति और पत्नी का सहभाग होना चाहिए इस प्रेम और सुरक्षा को शारीरिक प्रेम संम्बधों के चलते अनदेखा कर दिया जाता है। बाईबिल निम्न लिखित परिदृष्य देती है।

यह एक संरक्षण है :- पति और पत्नी को इस महत्वपूर्ण प्रेम संम्बध को एक दूसरे के लिए संक्षिप्त रखना है, और इसे पूरी उदारता से आदान-प्रदान करना है, पौलुस लिखता है, तथापि शारीरिक व्यभिचार के कारण हरेक व्यक्ति की अपनी पत्नी हो और हरेक स्त्री का अपना पति हो (२कुरि ७:२) हम लोग शारीरिक स्वच्छन्दता के युग में जीवन निर्वहन कर रहे है, सनसनीखेज प्रतिबन्धात्मक विज्ञापन काफी कम है, टेलिविजन प्रदर्शित दृष्य उत्तेजनात्मक है, जहाँ शारीरिकता को विशेष महत्व दिया जामा है। स्त्री और पुरुष को पहले से भी अधिक सचेत और सावधान रहने की आवश्यकता है। एक पति और पत्नी जो आपसी प्रेम और विश्वास में बंधे हुए है उन्हे एक दूसरे को इस शारीरिक दुराचार से ग्रसित समाज से बचाना है।

यह आन्ददायी है :- वेश्यावृति संम्बधि सख्त हिदायतो के बाद नीतिवचन का बुध्दिमान रचयिता जवान पतियो के लिए यह लिखता है कि तू अपने की कुण्ड से पानी और अपने की कुएं के सोते का जल पिया करना, क्या तेरे सोतों का पानी सड़क में और तेरे जल की धारा चौकों में बह जाने पाये, यह केवल तेरे ही लिए रहे और तेरे संग औरो के लिए न हो। तेरा सोता धन्य रहे और अपनी जवानी की पत्नी के साथ आनन्दित रह। प्रिय हिरणी व सुन्दर सांभरनी के समान उसके स्तन सदा तुझे सन्तुष्ट रखे और उसी प्रेम नित्य तुझे आकर्षित करता है। (नीति ५:१५-१९) दिर्घ सुत्रता में बधे रहने के लिए विवाह का शारीरिक पहलू कोई आवश्यक बुराई नही है, यह सारा प्रयोजन परमेश्वर के द्वारा था कि एक अनन्त सदा बना रहे – आनन्ददायी प्रगाढ़ता (घनिष्टता) पति-पत्नी का संम्बध एक महत्वपूर्ण अंग है।

यह अपनेक्षा है :- जब पति और पत्नी विवाह के माध्यम में बंधते है, तो दोनों को यह अधिकार है कि, वो दोनो एक दूसरे से शारीरिक सन्तुंष्टि की अपेक्षा करे। पौलुस लिखता है पति अपनी पत्नी का हक पूरा करे और वैसे ही पत्नी भी अपने पति का, पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नही पर उसके पति का अधिकार है। वैसे ही पति को भी अपनी देह पर अधिकार नही, परन्तु पत्नी को है। (१कुरि ७:३-४) पौलुस आगे कहता है, तुम एक दूसरे से अलग न रहो परन्तु केवल कुछ समय तक आपस की सम्मति से कि प्रार्थना के लिए अवकाश मिले और फिर एक साथ रहो ऐसा न हो कि तुम्हारे असंयम के कारण शैतान तुम्हे परखे (१कुरि ७:५) शारीरिक सन्तुष्टि विवाह का एक महत्वपूर्ण भाग है, शारीरिकता कोई बुराई नही है, परन्तु विवाह के अन्तर्गत इस सुखदता जिसको परमेश्वर ने अशीषित किया है, इस सुखदता का अनुभव पति-पत्नी के बीच होना चाहिए, यह अदन की बाटिका का वह पाप नही था जिसके कारण पतन आया, इसे न ही अत्यधिक महत्व देना चाहिए न ही इसकी महत्वता कम महत्वपूर्ण भाग है। आपसी प्रेम संम्बध पति – पत्नी की सामूहिक पहचान का महत्वपूर्ण पहलू है।

संम्बध निर्माण की आधार शिला ८ : अरक्षित विचार विनिमय :-

एक सर्वेक्षण के बाद इस बात का खुलासा हुआ कि अधिकाधिक पति-पत्नियों ने जिससे इस संम्बध में पुछा गया उन्होने अपनी वैवाहिक अडचनों का मुख्य कारण उनके अपने आपसी विचार विनिमय को ठहराया। शायद ऐसा ही अनुमान विश्वासियों के वैवाहिक जीवन की भी हो, एक पत्नी पूरी तरह से हतोत्साहित हो चुकी है, क्योंकि उसके पति के पास उससे बात करने का समय ही नही है, पति को उसके (पत्नी) अनुकूल कार्यो का और बातों का कोई एहसास नही है, क्योंकि उसकी पत्नी अपना दिमाग किसी और बात पर लगाया हुआ है, यहाँ कुछ ऐसे कारण है, जिनकी वजह ये पति-पत्नी प्रभावी तरीके से विचार – विनिमय नही करते।

- वो दोनो एक दूसरे को एक अनुदान समझते है।
- वो आमने-सामने आने से बचना चाहते है।
- वो अपने-अपने लाभ की धुन में लगे रहते है।
- वो ऐसा महसूस करते है, जैसे उनके साथ कोई धोखेबाजी या छल किया जा रहा है।
- वो बहुत जल्दी में रहते है, समय नही निकाल पाते।
- वो किसी व्यक्ति को दु:ख पहुचाना नही चाहते।

सफल विवाह के लिए आवश्यक है कि विचार विनिमय का व्यवधान या बाधा को समाप्त किया जाए। और इसे पूरा करने को एक तरीका है, और वह यह प्रभु यीशु मसीह का उदाहरण हम अनुशरण करे, आपको याद होगा जैसा कि एक पति अपनी पत्नी को प्रेम करने में जितनी रुची दिखाता है, वैसे ही प्रभु यीशु मसीह अपनी कलीसिया, से प्रेम करता है। कलीसिया के प्रति मुक्तिदाता के संम्बधों के दो महत्वपूर्ण पहलुओ को वैवाहिक सफलता के लिए अपनाया जा सकता है।

प्रभु यीशु मसीह एक संदेशवाहक :- वह परमेश्वर का जीवित सुसमाचार है (यूहन्ना १:१-४) वह इसलिए आया कि वचन और उदाहरण के माध्यम से परमेश्वर की पहचान स्थापित करे, उसने परमेश्वर की ईच्छा और चरित्र को मनुष्यो पर उजागर किया, प्रभु यीशु मसीह विभिन्न कलीसियाओं से विचार विनिमय कि सतत प्रक्रिया में सहभागी किया है। वह स्वर्ग में

विराजमान है और हमें बुलाता है अनुग्रह के सिहांसन के निकट हियाव बाँधकर आओ (इब्रानि ४:१६) परमेश्वर को कहने के लिए कि हमारे हदयों में क्या है और उसे अपनी आवश्यकताओं को बताने के लिए । कैसे प्रभु यीशु मसीह का विभिन्न कलीसियाओं को दिया गया सन्देह एक वैवाहिक जीवन के लिए उपयोगी ठहर सकता है ।

- पतियों को आवश्यकता है कि वो अपनी पत्नियों से बातचीत करे ।
- पत्नियों को आवश्यकता है कि वो अपने पतियों से बातचीत करे ।
- दोनो पूरी ईमानदारी सें आपसी प्रतिउत्तर के लिए सहज महशूस करे ।
- प्रत्येक समस्याओं घर सामूहिक रुप से बातचीत होना चाहिए ।
- आपसी वार्तालाप के सुअवसरों को महत्व प्रदान की जानी चाहिए ।

एक खुले आपसी विचार विनिमय के बिना यह काफी कठिन होगा कि, वैवाहिक जीवन सफल हो ।

प्रभु यीशु मसीह प्रधान हो :- (कुलुसि १:१८) कहता हे, कि प्रभु यीशु मसीह देह का प्रधान है, कलीसिया का और आवश्यक है, कि एक सिर शरीर के विभिन्न अंगो से जुडा रहे ताकि एक शरीर सुचारु रुप से कार्य कर सके एक तंत्रिका तंत्र के जरिये वो विभिन्न जानकारी पा सके और उसी तरह विभिन्न जानकारियाँ भेज सके । वही ऊंगलियो को संन्देश देता है कि कब उन्हें कार्य करना है उसे उस बात कि भी जानकारी मिलती है, कि कब ऊंगलियों में दर्द हो रहा है । इस तरह कि सन्देह प्रणाली की अनुपस्थिती में एक शरीर आगें कोई कार्य नही कर सकता ।

ऐसी ही सत्यता विवाह से भी जुड़ी है, एक पुरुष घर का प्रधान होता है, आवश्यक है कि वह अपनी पत्नी से सारी बाते अभिव्यक्त करे । और पत्नी भी प्रतिउत्तरमें पूरी सहजता से उससे (पति) से विचार विनिमय करे । अन्यथा यहाँ प्रभु यीशु मसीह और उसके बीच वैचारिक आदान प्रदान के दो माध्यम निर्भीत हो जाएंगे ऐसी परिस्थितियो में वैवाहिक परिवेश दुविधा से ग्रसित हो सकता है ।

एक प्रसिध्द सलाहकार ने वैवाहिक विचार विनिमय संम्बंध में अपना यह आकलन प्रस्तुत किया है, बिना किसी संदेह के वे (एक पति – पत्नी) हरेक बात पर वार्तालाप करे परन्तु यह केवल एक विकल्प है, सब कुछ सत्य और युवित संम्बधित है । एक स्त्री के लिए सच्ची बातचीत का आशय उसकी भावनाओं संम्बधी वार्तालाप से है, उसकी अपनी भावनाएँ है, परंन्तु इससे भी कही ज्यादा महत्वपूर्ण है उसके पति की भावनाओं संम्बधी वार्तालाप जिन्हे वो समझना चाहती है, परन्तु उसका पति यह नही जानता कि उन भावनाओं को कैसे प्रगट करे । यदि आप ऐसा महसूस करते हे, कि आपका साथी या पति / पत्नी आपकी बातो को नही सुन रहा है, तो आप क्या कर सकते है ? यहाँ चार सलाह दी गयी है ।

- विचार विनिमय की आपकी आवश्यकता को बताईये ।
- पुरानी बातों को लेकर कोई बात मत कीजिए ।
- बात को सत्यता के उचित स्तर से प्रारम्भ करे ।
- बातचीत को भावनाओं और दृढ धारणा या विश्वास के स्तर तक लेकर जाएँ ।

विभिन्न स्तारो पर पूरी ईमानदारी से बातचीत करना अत्यंन्त कठिन है, लेकिन ऐसे प्रयासों और उसकी पीड़ा पर धिक्कार है, सहज और खुली बातचीत एक वैवाहिकता की आवश्यक आधारशिला है ।

संम्बध निर्माण की आधार शिला ९ : प्रेमपूर्ण आदर सम्मान :-

विभिन्न परिस्थितियों में कभी कभी वैवाहिक जोड़े असाधरण सा व्यवहार करते है, यह परिस्थितियों पर निर्भर करता है, लोगो के बीच माफ करने वाले, सहनशील और खुश मिजाज जैसे व्यक्तित्व की होती है, परन्तु एक बार जब वो अपने घर में बन्द दरवाजे के पीछे होते है, वों बदमिजाज, चिड़चिड़े और माफ न करने वाले बन जाते है । न कि ईच्छा यही होती है, कि वह दूसरो के साथ भी वैसे ही पेश आना चाहिए जैसे वह दूसरो के साथ पेश आता है ।

इफिसियों ४:३१-३२ में पौलुस प्रेरित लिखता है, सब प्रकार की कड़ुवाहक और प्रकोप और क्रोध और कलह और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए । और एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय हो और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो । निसन्देह यह लेखांश पति पत्नी के वैवाहिक संम्बधो के लिए उपयोगी सिध्द हो सकते है ।

पत्नियों के विषय कहते हुए पौलुस कहता है । .... और पत्नी भी अपने पति के सम्मान का ध्यान रखे (इफि. ५:३३) पतरस पत्नियो से कहता है हे पत्नियों तुम भी अपने पति के आधीन हो ठीक उसी प्रकार सें तुम्हारा व्यवहार हो जैसे सारा का था, जैसे सारा अब्राहम की आज्ञा में रहती और उसे स्वामी कहती थी (१ पतरस ३:१,५-६) एक वर्णन जो सारा का अब्राहम के प्रति उसके स्नेह को प्रदर्शित करता है ।

१) आगे सातवी आयत में पतरस पतियों से कहता है, कि वैसे ही हे पतियों तुम भी बुध्दिमानी से पत्नियो के साथ जीवन निर्वाह करो । वह तीन निर्देश भी देता है, अपनी पत्नी के साथ बुध्दिमानी से जीवन निर्वाह करो पतियों से कहा गया है अपनी पत्नी को भली जाने ताकि तुम उसकी भावनाओं का सम्मान कर सको एक पति इस बात को अपना उद्देश बना ले कि वह इस बात को जाने कि कौन सी बात उसे (पत्नी) को आनन्द और आराम प्रदान करती है । और साथ इस बात को भी जाने कि किस बात से उसे दु:ख और क्रोध पहुँचता है । इस तरह की विशिष्ट समझदारी के उपयोग से उसे नीचा दिखाने की अपेक्षा कहीं ऊंचा उठाया जा सकता है ।

२) आदर सम्मान देकर ..... एक निर्बल पात्र जानकर उसका सम्मान करो यदि व्यक्ति पाँच पात्रो को लेकर चल रहा है, और वह यह जानता है, कि उन पाँच में एक पात्र अत्यन्त कमजोर है तो वह उस पात्र को बड़ी सावधानी से लेकर जाएगा । ठीक ऐसे ही एक पति को अपनी पत्नी से पेश आना चाहिए । एक पति को अपनी पत्नी को विशेष सादर और सम्मान देना चाहिए । अपनी पत्नी के लिए भेंट खरीदना, उसे किसी पसंदीदा स्थानों पर लेकर जाना ।

३) जीवन की मनोहरता में ऐसे साथ – साथ होना जैसे गुंथे हुए बाल, जीवन का वरदान केवल पति के लिए नही है । कि वह इसका आनन्द उठाए परमेश्वर का यह वरदान दोनो को बराबरी से प्रदान किया गया है, और इस वरदान में दोनों को सामूहिक रुप से सहभागी होना चाहिए । एक पुरुष को अपनी पत्नी का सम्मान करना चाहिए । जीवन के आनन्द और खुशी को छीनना या लूटना नही है, परमेश्वर ने स्त्री को पुरुष के लिए ही बनाया है ।

संम्बंध निर्माण की आधारशिला १०:आत्मिक सहचार्य :-

अन्तत : और शायद सबसे महत्वपूर्ण कि मसीही पति पत्नी अपने आप को मसीही सहचार्य या भाईचारे से बाँधे रखें, वो अपने सम्पूर्ण जीवन काल में एक आत्मिक यात्रा पर है । हाथों में हाथ लिए मसीह के बच्चों की तरफ एक अद्‌भुत अनन्तकाल की और परमेश्वर के साथ जो कि उनका इन्तजार कर रहा है । क्या अन्तर है, कि जब एक समर्पित पति पत्नी हो और उनके वैवाहिक जीवन में परमेश्वर का प्रभुत्व हो । कोई इस बात का अन्दाजा नही लगा सकता कि जीवन के इस सफर में साथ – साथ चलते हुए कितना वे एक दूसरे को आत्मिक रुप से सहायता पहुचाते है । इस लेखांश में विवाह सन्दर्भ में आत्मिक परिमाप जुड़ा हुआ है, हम पतियो से उनकी पत्नियो के संम्बध में सलाह मशविरा और बातचीत कर रहे है । पौलुस कहता है हे पतियो अपनी पत्नियो से प्रेम करो ठीक वैसे ही जैसे मसीह ने कलीसियाओं ये प्रेम किया और उनके लिए अपने आपको बलिदान कर दिया । कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुध्द करके पवित्र बनाए । और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाके अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुरीं न कोई और ऐसी वस्तु हो वरन पवित्र और निर्दोष हो । इस प्रकार उचित है, कि पति अपनी – अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे जो अपनी पत्नी से प्रेम रखना है, वह अपने आप से प्रेम रखता है । (इफि.५:२५-२८)

इस प्रकार विवाह की एक पवित्र और शुद्ध परिधि होनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे कलीसियाओं को यीशु मसीह द्वारा पवित्र किया गया, एक पत्नी बेहतर संम्बधो के चलते अपने पति के साथ उत्तम और उत्तम बनती चली जाये । और ये

सब कैसे पूरा किया जा सकता है ? ठीक उसी तरह जैसे प्रभु यीशु मसीह ने कलीसियाओं की सहायता की, उसने उनसे प्यार किया और उनकें लिए अपनें आप को दे दिया । प्रेम और त्याग, ओर विवाह को पृथकता प्रदान करता है, और आत्मिक सहचार्य को वैवाहिक जीवन में संभव बनाता है ।

पतरस ने भी विवाह कें सम्बध में अपने लेखांश में आत्मिक सहचार्य के और के विषय में वर्णन किया है, वह यह करते हुए अन्त करता है कि .... तुम्हारी प्रार्थनाए रुक न जाएं (१ पतरस ३:७) जब एक पति अपनी पत्नी को समझता है, उसे आदर सम्मान देता है और उसे जीवन के अनुग्रह में आपस में गुंथे हुए बाल के नजरिये ये देखता है उससे वह प्रार्थना की सामर्थ में बलवान होता जाता है, यदि वह ऐसा नही करता तो पतरस कहता हे उसकी प्रार्थनाएँ रुक जाएगी (नही सुनी जाएँगी) और उसे प्रार्थनाओं के सुने जाने की इस सहज आजादी की हानि उठानी होगी ।

यहाँ कुछ गुण और बाते बताई गयी है, यदि ये गुण पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में मौजूद है, तो ही वे आत्मिक सहचार्य और विश्वाय शीलता में बने हुए है ।

- वो परमेश्वर की आराधना साथ – साथ मिलकर करे ।
- वो परमेश्वर की ईच्छा की खोज साथ मिलकर करे ।
- वो परमेश्वर की सेवा साथ मिलकर करे ।
- वो साथ मिलकर अपने बच्चों को ऊँचा उठांए ।
- वो एक दूसरे के लिए प्रार्थना करे ।
- वो एक दूसरे के विश्वास को मजबूती प्रदान करे ।
- वो परमेश्वर के वचनो की सामर्थ और अधिकार को स्वीकार करे ।

एक पति पत्नी के रुप में परमेश्वर के समीप आना है, प्रार्थनाओ के माध्यम से, पवित्रशास्त्र के अध्ययन और प्रभू यीशु मसीह को समर्पित होकर इस प्रकार एक दूसरे के भी करीब आते जाएँगे । इस प्रकार इन संम्बधो को एक त्रिकोणीय श्रृखंला के रुप में भी देखा जा सकता है । जितना ज्यादा पति पत्नी परमेश्वर के साथ अपने संम्बधो में बहते जाएँगे उतनी ही मजबूती उनकी वैवाहिक वचनबध्दता में भी आती जाएंगी, अपने जीवनों में मिलकर परमेश्वर की ईच्छा के अनुसार चलने पर उनके वैवाहिक जीवन और संम्बध को एक उदभूत बल मिलेगा । जिसमें भविष्य की महत्वपूर्ण सामूहिक चेतना होगी ।

विवाह के संम्बध में पाँच सत्यताएँ :-

पसबान और विवाह संम्बधी सलाहकार पति और पत्नियों द्वारा ही जानने वाली आपसी जानकारियों को बार-बार सुनते है, जो कि सत्य नही होती । यहाँ विवाह के संम्बध में पाँच वास्तविकताएँ बताई गई है, जो कि प्राय: विवाह या कलह के रुप वैवाहिक जोडों के मध्य तनाव का कारण ठहरती है ।

१. आपने किसी गलत व्यक्ति से विवाह नही किया है :-

कभी – कभी विवाह के कुछ दिन बाद ही ऐसा होता है कि पत्नी यह सोचना प्रारम्भ कर देती है, कि काश, कभी-कभी पति यह सोचना प्रारम्भ कर दे, कि उसके बड़ी गलीती कर डाली । यह प्राय: उस वक्त होता है, जब सामजंस्य स्थापित करने का समय होता है जब कि विवाह की आदर्शवादी आपेक्षाओं का जीवन की वास्तविकताओं से होता है ।

- आपको पता चलता है, कि खाना बनाने से उसे नफरत है ।
- आपको पता चलता है कि वह (पति) घर के छोटे मोटे कामो की भी कोई परवाह नही करता ।
- घर के आर्थिक मामलों मे आपके विचार मेल नही खाते ।
- आप दोनों हटधर्मिता, एक दूसरे को दु:ख पहुँचाना, तनाव और गुस्से को पनाह देते हैं ।

तभी आप अपने आप से यह कहना प्रारम्भ कर देते है कि आपने गलत व्यक्ति से विवाह कर लिया है, लेकिन यह लम्बे समय तक एक विषय बनकर न रहे आपने जीवन भर का वादा किया है । अब परमेश्वर के सम्मुख आपका यह उत्तरदायित्व बनता है, कि आप अपनी अविश्वास पात्रता का अंगीकार करे, उस व्यक्ति के साथ हमेशा रहना है । (मती १९:४-९ १कुरि७:१०-१४)

२. उसकी असफल अगुवाई आपका बहाना नही है :-

अच्छा है जवान स्त्री बड़ी दृढता और जोर देकर कहती है, यदि वह सिर्फ अपनी सोची हुई बातों के अनुरुप अगुवाई करे तो हम विभिन्न कामों को अन्जाम दे सकते है, लेकिन वह (पति) ऐसा नही करता इसीलिए मुझे (पत्नी) कुछ निर्णय लेने पड़ते है, फिर वह उन निर्णयों की अवहेलना करता है, मैं उसके साथ और निर्वाह नही कर सकती ।

वह (पत्नी) एक बात पर बिलकुल सही है, उसके पति को घर के प्रधान के रुप में अपने आपको मान लेना चाहिए और उसे अगुवाई की कमान सम्भांलना है । विशेषकर धार्मिक मामलों में फिर भी उसकी असफल अगुवाई उसकी (पत्नी की) अनाज्ञाकारिता कारण नही है । प्रभु परमेश्वर के सामने अभी भी उसकी जिम्मेंदारी स्नेह और मधुर स्वभावी बने रहने की बुलाहट देती है, धार्मिक स्त्रिाया अन्दर की खुरसुरती में बढ़ती है, (१पतरस १-६) यदि वह भी उन्ही बातो को जिन्हे उसने (पत्नी) उसकी(पति) असफल अगुवाई में देखा और जिसे वह अपने स्वत: के अपूर्ण व्यवहार का कारण और बहाना मानती है, तो वह (पत्नी) भी उतना ही असफल है, जितना कि पति असफल है ।

३. उसका (पत्नी) का असफल समर्पण बहाना नही है :-

कुछ पति हर असफलता, या अपूर्णता के लिए एक बहाना बना लेते है, वो अपनी पत्नियों को दोषी ठहराते है

- वह हमेशा ही धर्मनिष्ठ रही है वह हमेशा मेरी गलितियों को सुधारती है, और मै अपने परिवार को पूरे समर्पण के साथ अगुवाई करने का प्रयास करता हूँ । यह उसकी गलती है, हम और साथ नही चल सकते ।
- उसे घर में ही रहना था, मैं उसके पहले गया क्योंकि मै जानता हूँ कि इससे उसे प्रसन्नता होगी यह उसी की (पत्नी) की गलती है, कि आज हमें आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है । जब एक व्यक्ति इस प्रकार बात करना प्रारम्भ करता है, तो वह अपने ही घर में निर्णय लेने संम्बधी प्रक्रिया में अपनी जिम्मेदारियाँ से मुकरने लगता है ।

सत्य है, कि वह उसकी (पत्नी) सारे आवश्यकताएँ पूरी करता है, शायद वह आग्रह भी करे लेकिन फिर भी यह उसका कोई बहाना नही हो सकता, उसे पत्नी को दोष लगाना बन्द करना होगा और परमेश्वर कि नजरों में जो योग्य है, एक ऋणी की उत्तरदायित्वता और पूरी बुध्दिमानी के साथ उसकी शुरुआत करनी होगी ।

४. यौनाकर्षण ही सब कुछ नही है विचार कीजिए :-

कभी – कभी परिश्रमी व्यस्त पत्नी यह सोचने लगती है, कि उसके पति का उसके प्रति आकर्षण सिर्फ अपनी शारीरिक जरुरत पूरी करने तक ही सीमित है, ऐसी भावना विशेषकर वहाँ उत्पन्न हो सकती है, जहाँ निम्नलिखित परिस्थितियाँ मेल खाती हो ।

- उसे (पति) काम का नशा हो ।
- उसके (पत्नी) पास साफ करने को बड़ा घर हो ।
- वह (पति) कभी-कभार ही बच्चों को सहायता करता हो ।
- उपकी दिनचर्या व्यस्तताओं सें भरी हो ।

अब, यह बात सत्य है कि उसे (पति) यह बात विशेष रुप से याद दिलाई जायें शारीरिक संम्बंधो के अलावा भी आपकी अन्य जरुरते है । लेकिन यह भी सत्य हो सकता है, कि आप अपने आपको दया का पात्र बनाने के लिए समस्या को बढ़ा चढ़ाकर या अतिशयोक्ति कर रही हो आप दोनों को कुछ समझौता करने की आवश्यकता है, प्रयास करे कि उस पर

(पति) किसी प्रकार का शक न किया जाय उससे अपनी भावनाओ के विषय में बात करो । सप्ताहान्त पर कही बाहर जाने का कार्यक्रम बनाओ या छुट्टीयों पर जाओ । और समस्याओं के समाधान में कोई देरी न करे, इससे पहले कि ये छोटी समस्याएँ कोई बड़ा रुप ले ले ।

५. दिखावा ही सब कुछ नही है वह (पत्नी) इस पर विचार करें :-

विवाह के संम्बध में पाँचवा सत्य है कि महिलाएँ दिखावे के विषय जरुरत से ज्यादा सोचती है, लेकिन कुछ पति इन बातो पर विश्वास नही करते, वह बहस बाजी करते है ।

- वह (पत्नी) हमेशा घर के लिए कुछ नया खरीदना चाहती है ।
- उसे (पत्नी) को अपने कपडें खरीदने या अन्य कपडों की खरीदारी में काफी समय जगाती है ।
- वह (पत्नी) आग्रह करती है, कि रसोईघर की डोली या अलमारी के लिए कुछ चीजों की आवश्यकता है, ताकि वो मुझे अच्छा लगे ।
- वह हमेशा ही जाने के समय तैयार होने में बहुत समय लगाती है, और हम हमेशा देरी से पहुचते है ।
- उसे (पत्नी) को खरीदारी करना अच्छा लगता है, और वह मेरी मेहनत की कमाई महत्वहीन सजावटी सामानो पर खर्च करती है ।

यह सत्य है, कि स्त्रियो को दिखावा करने में गर्व होता है, उन्हे पति की सोच से ज्यादा इस बात की चिन्ता होती है, कि दूसरे क्या साचेंगे । और पतरस ने बड़ी स्पष्टता से स्त्रियों से कहा है, यह बहुत खतरनाक है, कि वह अपने बाहरी दिखावे या बाहरी सुन्दरता के लिए अधिकाधिक ध्यान दे हृदय का गुप्त मनुष्यत्व (१पतरस ३:४)

किन्तु पुरुषो इस बात का सामना करो, हमें आवश्यकता होती है कि पत्नी हमारी मदत करे । हम में सें कुछ एक मुर्ख होते है, यदि हम ईमानदार है, हम इस बात को स्वीकारेंगे, हमें प्रसन्नता है, कि उनका ध्यान इस व्याख्यांन पर है ।

पतियो के लिए मूल्यांकन तालिका :-

पतियो अब आपको इस बात को पढ़ना है, कि विवाह के संम्बध में बाईबल आपकी भूमिका और उत्तरदायित्वों के विषय क्या सिखाती है । अपने आकलन के लिए थोडा समय लें । उचित संख्या पर गोला लगाकर आपका मूल्यांकन करें ।

१, २, ३, ४, ५, मेरा लगाव मेरी पत्नी से भी उतना ही है, जितना लगाव मुझे आपने माता पिता से था ।

१, २, ३, ४, ५, मेरा दृष्टिकोण मेरी पत्नी के लिए एक ऐसे शक्स की तरह है जो जीवन की हरेक परिस्थिती में मेरा साथ निभाए ।

१, २, ३, ४, ५, मैं भरसक प्रयास करता हूँ कि विचारों और क्रिया कलापों में उसका विश्वासपात्र बना रहूँ ।

१, २, ३, ४, ५, मैं, अपनी पत्नी को एक प्रेमपूर्ण अगुवाई प्रदान करता हूँ, जैसे प्रभु यीशु ने कलीसियाओ को दी ।

१, २, ३, ४, ५, मैं, प्राय: अपनी पत्नी से कहता हूँ कि मैं उससे प्यार करता हूँ और उस प्रेम को प्रदर्शित करने हेतू कुछ करता हूँ ।

१, २, ३, ४, ५, मुझे उसकी भावनाओं की फिक्र है, और जब अपनी भावनाओं के विषय बात करती है, तो मैं उसे सुनता हूँ ।

१, २, ३, ४, ५, मैं प्राय: प्रतिदिन अपनी पत्नी से कुछ अच्छा कहने का प्रयास करता हूँ, और गुस्से के साथ कभी सोने नही जाता ।

१, २, ३, ४, ५, मैं कभी मेरी पत्नी की कमियों या नाकमियों को मेरी असफलता की वजह नही बनाता ।

१, २, ३, ४, ५, मैं उससे धार्मिक मसलों पर बातचीत करता हूँ और प्राय: उसके लिए और उसके साथ प्रार्थना करता हूँ ।

अब आपकी पत्नी आपका मूल्यांकन करेगी, खुलकर उन बातों और क्षेत्रो का ध्यान रखे जहाँ सुधार की आवश्यकता है ।

५-एक उत्तम, ४ बहुत अच्छा, ३ –अच्छा, २ – कमजोर, १ असफल

पत्नियों के लिए मूल्यांकन तालिका :-

पत्नियों अब आपको इस बात को पढ़ना है, कि विवाह के संम्बध में बाईबल आपकी भूमिका और आपके उत्तरदायित्वों के विषय क्या सिखाती है । हो सकता है, आप रुककर इस बात का मूल्यांकन करें कि आप कैसे कर रही है ।

१, २, ३ , ४, ५, मैं कभी अपने आपको इस बात का अवसर नही प्रदान करती कि सोचूँ कि मैं ने गलत आदमी से विवाह किया है ।

१, २, ३, ४, ५, मैं अपने माता-पिता से अलग हो चुकी हूँ, अब मेरी पहचान मेरे पति के साथ ही है ।

१, २, ३, ४, ५, मैं अपनी शादी की सफलता के लिए समर्पित हूँ, अन्त तक जब कि हम में से एक की मृत्यु न हो जाए ।

१, २, ३, ४, ५, अपनी ईच्छा पूर्ति के लिए मै यौनाकर्षण को किसी हथियार की तरह उपयोग में नही लाती ।

१, २, ३, ४, ५, मैं परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार अपनें पति की अगुवाई में समर्पित रहने की ईच्छा रखती हूँ ।

१, २, ३, ४, ५, मेरा मानना है कि हृदय की सुन्दरता शरीर के बाहरी आकर्षण से कही ज्यादा महत्वपूर्ण है ।

१, २, ३, ४, ५, मैं अपने आचार विचार और क्रिया कलापों से अपने पति के लिए आदर सम्मान प्रदर्शित करती हूँ

१, २, ३, ४, ५, मैं हर वो छोटा काम करती हूँ, और जानती हूँ, कि इससे उसे खुशी मिलेगी ।

१, २, ३, ४, ५, मैं अपने पति की नाकामियों या कमियों को अपनी असफलता का कारण नही बताती ।

१, २, ३, ४, ५, मैं अपने आपको अपने पति की धार्मिक साथी के रुप में देखती हूँ, और उसके लिए और उसके साथ प्रार्थना करती हूँ ।

अब अपने पति से कहिए कि इन क्षेत्रों के अन्तर्गत आप का मुल्यांकन करे और तुलना करे । पूरी ईमानदारी और खुलेपन के साथ ।

एक मसीही पति – पत्नी के निर्णय

१. हमने निर्णय लिया कि हम दूसरे से प्यार करेंगे :-

हम किसी को भी ऐसा अवसर प्रदान नही करेंगे कि जो हमारे प्यार को नियंत्रित कर सके या कम कर सके। हमारा प्यार ऐसा होगा जिसमें बनावटीपन या दिखावे की कोई जगह नहीं होगी। हम निर्णय लेते है कि एक दूसरे को प्यार के नाम से पुकारेंगे और बिना किसी शर्म के, पूरे धेर्य और विश्वाय से प्रतिदिन हम अपनी बातचीत या क्रिया कलापों से ऐसा कुछ करेंगे जो हमारे आपसी स्नेह को प्रदर्शित कर सके। हम एक दूसरे का जन्म दिवस ओर शादी की सालगिरह याद रखेंगे और उन्हे मनाएंगे। हम एक दूसरे के लिए मुस्कुराएंगे (रोमियो २३:८-१०, १ थिस्लु३:१२,४:९, १पतरस १:२२)

२. हमनें निर्णय लिया है, एक एक दसरें को प्रोत्साहित करेंगे।

हम किसी भी विषय के नकारात्मक पहलू पर ध्यान नही देंगे बल्कि किसी भी चहलू के सकारात्मक पक्ष को प्रोत्साहित करेंगे। हम स्वाभिमान के चलते बधाई पूर्ण शब्दो को बोलने में नही चूकेंगे। हम बिना किसी हिचकिचाहट और अपेक्षा के आपसी दान गुणों और वरदानों को प्रदर्शित करने में एक दूसरे का सहयोग करेंगे। हम लोगो के द्वारा किसी एक की प्रशंसा और बढ़ाई होने पर जलन या ईर्ष्या महसूस नही करेंगे। बल्कि आनन्द मनाएंगे (गला ५-२६ फिली २:३-४)

३. हमने निर्णय लिया है कि हम एक दूसरे को माफ करेंगे।

हम पुरानी बातो को पूरी तरह दफना देंगे। हम अपने भूत कालिक पापों, गलतियों और अपमान का कोई उदाहरण नही देंगे न उनका जिक्र करेंगे। यहाँ तक कि न तो उनकी ओर कोई ईशारा करेंगे। हम शैतान को कभी भी भूत काल के दुर्बल मनोभावो को याद दिलाने में सफल नही होने देंगे। बल्कि एक दूसरे की सहायता करेंगे कि उन पुरानी बातो से बाहर निकल सके। बिस्तर में जाने से पहले प्रतिदिन हम पहले अपनी गलफहमियों को दूर कर लेंगे। और उसके बार मिलकर प्रार्थना करेंगे (इफि ४/२, ३२, कुलि ३:१३ याकूब ५:१६)

४. हमने निर्णय लिया है, कि एक दूसरे का सम्मान करेंगे :-

हम एक दूसरे का अपमान नही करेंगे या एक दूसरे पर कभी उपमानजनक धोटा कभी नहीं करेंगे। हम दूसरों के सुझावों पर बिना विचार उन्हें कभी भी एक दूसरे पर नही थोपेंगे। हम कभी भी किसी के पहिनावे, शारीरिक बनावट, क्रिया कलापों, आदतों और परिवार पर अपमानजनक टिपणी नही करेंगे न ही उसका मजाक बनाएंगे। परन्तु कोई भी सुधार करना हो तो पूरी सज्जनता से प्यार और अकेले में करेंगे। हम कभी भी गुस्से में हाथ नही उठाएंगे न ही अपनी आवाज ऊंची करके बोलेगें। आपसी वाद विवाद के दौरान पूर्णत: नियंत्रण रखेंगे। मतभेदों के विषय हम बातचीत करेंगे लडाई नही। हम बच्चों के सामने किसी कि बदनामी या खिलाफ बाते नही करेंगे (इफि ५:३३ पतरस ३:७-८, रोमियो १२:१०)

५. हमने निर्णय लिया है कि ऐ दूसरे को सन्तुष्ट करेंगे :-

हम एक दूसरे को अपने ध्यान और ख्याल का केंन्द्र बिन्दु समझेंगे मैं हमारे सोच विचार का केन्द्र नही होगा किसी भी संम्बध में चाहे वो खाने, बाहर घूमने जाने, शौक या शारीरिक जरुरतो से जुडा हो, हम हमेशा यह देखेंगे कि दूसरे को सन्तुष्टि

है या नही, हम हमेशा यह पुछेंगे कि आप कया चाहते है या आप किस बात को प्राथमिकता देते है । या आपकी क्या राय है ? कोई भी निर्णय लेने से पहले हमारा यह प्रयास होगा कि हम वचन की मर्यादाओं से एक दूसरे को सन्तुष्ट करे । हम एक दूसरे को सन्तुष्टि या सन्तोष के लिए बहुत ज्यादा अपेक्षा या आशा करनें से रोकेंगे (१कुरि १०:२४, १ कुरि ७:३-५, ३३-३४६)

६. हमने निर्णय लिया है कि एक दूसरे को समझेंगे :-

हमारा भरसक प्रयास होगा कि हम एक दूसरे कि भावनाओं, हृदयों, स्वप्नो, लालसाओ और दु:ख और खुशी को समझे । हम प्रयास करेंगे कि एक दूसरे की शारीरिक, सामाजिक, आत्मिक और भावनात्मक जरुरतों को समझ सके ।

हम एक दूसरे के जीवनों विचारों में ताक झाक नही करेंगे न ही एक दूसरे के विचारों पर दोषारोपण करेंगे इस बात का एहसास करते हुऐ कि हम किसी के दिमाग या विचार का अन्दाजा लगाने वाले नही हैं । हम अपनी परेशानियों को अपने दिल में दबाकर दूसरे के लिए मुश्किल पैदा नही करेंगे बल्कि उसे बिना हिचकिचाहट और गुस्से से प्रदर्शित या बताने की कला को सीखेंगे । (२ शमूएल १:८ रोमियों १४:२, गला ६:२ १ थिस्लु ४:१८)

७. हमने निर्णय लिया है कि एक दूसरें को स्पर्श करेंगे :-

हम एक दूसरे को छूने में कोई लज्जा या उलझन महसूस नही करेंगे । हम उन सारे विचारो को निकाल फेकेंगे जिनका आशय है कि केवल शारीरिक या लैगिक क्रिया-कलापों के लिए ही स्पर्श किया जाता है । हम उस समय भी स्पर्श बनाएंगे जबकि हम बातें कर रहे हो, हँस रहे हो, या मौज मस्ती या आनन्द मना रहे हों । हम सामाजिक आयोजनो, कार्यक्रमों में साथ साथ रहेंगे । हम हाथों में हाथ लेकर प्रार्थना करेंगे इससे पहले कि बिस्तर पर विश्राम करे । हम सोने से पहले एक दूसरे को हाथ पकडेंगे । हम अलग – अलग नही सोएंगे (श्रेष्ठगीत ८:३, २:१६ रोमियो १६:१६)

८. हमने निर्णय लिया है कि एक दूसरे से बातचीत करेंगे :-

हम एक दूसरे से हमेशा बिना किसी जल्दी के बातचीत करने का समय निकालेंगे, हम दिन के संपूर्ण क्रिया कलाप को एक दूसरे को बताएंगे । हम वार्तालाप बातो से प्रोत्साहित नही होंगे । उस बात के विश्वास के साथ कि हम प्रतिदिन बढ़ रहे है । हम उन बातों और विषयों को नकारना सीखेंगे जिससे एक दूसरे को दु:ख पहुचता है । और प्रयास करेंगे कि हम एक मधुरभाषी साथी बन सके । हम कभी भी नही कहेंगे कि मैने तुमसे शादी करके बहुत गलती की, न ही तलाक के संम्बध में बात करेंगे । (श्रेष्ठगीत २:१४, ४:११, कल्लुसी ३:९)

९. हमने निर्णय लिया है कि एक दूसरे को सुनेंगे :-

जब हममें से एक बोल रहा हो तो हम पूरी तन्मयता से उसकी बात को सुनेंगे । हम उसकी आखों में आखें डालकर उसकी बात को सुनेंगे जब तक कि यह हमारे लिए नामुनकिन न हो जाए । हम पूरी सटीकता और उचित तरीके से प्रतिउत्तर देंगे । वार्तालाप के दौरान हम टोका टोकी नही करेंगे और न ही एक दूसरे से यह कहेंगे कि चुप रहो । हम जँभाई लेकर या ऊबकर या विषय बदलकर या उठकर कही चले जैसे कार्यो से बोलने वाले को हतोत्साहित नही करेंगे बल्कि पूरी लगन और ध्यान से उसे सुनेंगे । खामोशी हमारा जवाब नही होगा (इफि ५:२१)

१०. हमने निर्णय लिया है कि एक दूसरे की सहायता करेंगे :-

हम एक दूसरे को कठिन परिश्रम की दशा में अकेला नही छोडेगें । जब हममें से किसी एक के पास कामों की अधिकता होगी तो हम अपनी सहायता का हाथ उसकी ओर बढ़ाएंगे । हममें से यदि कोई बीमार हो तो हम उसका पूरा ध्यान रखेंगे और सही समय पूरी सहायता पहुँचाएगे । हम कभी भी यह प्रदर्शित नही करेंगे कि हमारे साथी की सहायता से हमें चिड़चिड़ाहट या परेशानी हो रही है । हम दोनों साथ – साथ खड़े रहेंगे जबकि किसी एक के ऊपर कोई परेशानी या मुसीबत आयी हो । हम बाईबल को पढ़कर और मिलकर प्रार्थना करते हुए पूरी धार्मिकता से एक दुसरे की मदत करेंगे । हम अपने धर्मिक ज्ञान और अनुभवों को आपस में बाँटेगे । हम कम से कम सप्ताह में एक बार उपवास रखेंगे और एक घण्टा अपने परिवार के लिए प्रार्थना करेंगे । गिरने की स्थिती में बजाए इसके कि सान्तवनापूर्ण शब्दो की झड़ी लगाए हम एक दूसरे को ऊपर उठाएंगे (रोमियो १४:१९, १५:१४, १ कुरि ११:३३ कुलु ३:१६)

एक आदर्श जोड़ा

एक आदर्श पति :-

१.	वह बहुत सारा पैसा कमाता है और काम का आदि कभी नही बनता (उसे काम का नशा नही होता)

२.	वह लगभग सारी व्यवस्था और काम घर के पास ही बनाता है । अपने काम को वह घर और संम्बणों के लिए कोई कारण नही बनने देता ।

३.	वह उनकी शादी की सालगिरह, उसके (पत्नी) का जन्मदिन बच्चों का जन्मदिन, सास-ससुर का जन्मदिन, मंगनी का दिन आदि सभी दिन याद रखता है ।

४.	वह फूल, पत्र और छोटे उपहार भेजता है और आश्चर्य जनक रुप से सप्ताहान में बाहर उसके (पत्नी) के साथ जाने का कार्यक्रम बनाता है । शादी की सालगिरह के दौरान विशेष उपहारों के जरिये उसे (पत्नी) को आनन्दित करता है ।

५.	वह उसके खाने की तारीफ करता है । और उसे खाने के लिए बाहर ले जाने को हमेशा तैयार रहता है ।

६.	वह एक सृजनात्मक प्रेमी है, संवेदनशील आशिक मिजाज जोशीला, लेकिन वह जबरदस्ती करने या वेवक्त मांग करने वाला नहीं है । वह हमेशा अपने आपको उसी (पत्नी) के आत्मीय एकसास और भावनाओं के अनुरुप अपने आपको ढाल लेता है । और अपनी आकाक्षांओ के विषय नहीं सोचता ।

७.	वह योग्य, निपुण, जिम्मेदार और हमेशा अगुवाई और आदर की स्थिती ऊपर उठता है । वह प्रति सप्ताह ४० घण्टो से ज्यादा काम नही करता ।

८.	वह बच्चों के सभी खेलों, नाटकों, पढ़ाई और कार्यक्रमों में जाता है । और कम से कम एक घण्टा अपने हदय की भावना और लगाव उनके साथ बाटता है ।

९.	वह विनोदी वृत्ति है, उसके आस-पास हमेशा खुशी का वातावरण होता है । लेकिन वह जानता है कि गंभीरता से भी बात करना है ।

१०.	वह आवश्यकतानुसार शक्तिशाली, साहसी और सक्त है । वह कभी गुस्सा नही होता ।

११.	वह दयालु, सेवा भावी, उदार, ईमानदार कोमल है, अपनी किसी भी भावना या बात से किसी को दु:ख नही पहुचाता ।

१२.	वह हमेशा उसे (पत्नी) आनन्दित रखता है । उसी विशेष आशाओं के अनुरुप प्रेम और लगाव की झड़ी लगा देता है । और कभी भी उसे दु:खित नही करता ।

एक आदर्श पत्नी :-

१. वह बहूत अच्छा खाना बनाती है । और खाने के बाद स्वादिष्ट पेय और खाद्य पदार्थ भी परोसती है । और अभी भी इतनी स्वस्थ आर सुडौल है, कि उसकी शादी की पोशाक अभी भी उसे ठीक होती है ।

२. वह चर्च के कामों में भाग लेती है, ... और उसके पास अपने बच्चों और पति के लिए काफी समय होता है ।

३. वह हमेशा स्वस्थ रहती है घर में बीमार और सभी का विशेष ध्यान रखती है ।

४. वह हमेशा विनोदी वृत्ति बनाए रखती है, कभी बदभिजाज नही होती.

५. वह अपने पति की बडाई और प्रशंसा करती है, और उसकी (पति) असफलताओं के लिए उसे परेशान नहीं करती ।

६. वह काम से सीधे घर आती है । बच्चों की समस्याओ का निवारण करती है । रात का खाना बनाती है । घर के अन्य काम खाने के बाद बर्तनों की सफाई, संम्बंधी गृहकार्य, भण्डार कक्ष की ओर भागना कपड़ो को इस्त्री करना, बच्चों को सुलाना पति से बातचित करना, धुले कपड़ो को तह करना घर की साफ-सफाई करना इतना सब करने के बाद भी चुस्त दुरुस्त बने रहना । फिर अच्छी सी रात की पोशाक पहनकर चुपके से पति के साथ एक हसीन और सुहानी रात के लिए बिस्तर पर चले जाना ।

७. वह प्रतिदिन एक घण्टा प्रार्थना और बाईबिल के अध्ययन में बिताती है । फिर भी कभी यह नही जताती है, कि वह अपने पति से ज्यादा जानती है ।

८. वह बेहतर ढ़ग से बच्चों, माता-पिता और अन्य रिश्तेदारो के जन्मदिवस का आयोजन करती है । इस प्रकार सामाजिक सम्मेलन (कार्यक्रम) बाहर जाना, मौज-मस्ती भरा सप्ताहांत, करीबी दोस्तों के लिए आश्चर्यजनक कार्यक्रम और आयोजन छुट्टियाँ और कभी भी प्यार का आर्थिक सन्तुलन बिगड़ने नही देती ।

९. वह किसी भी खेलकुद के अभ्यास, संगीत की शिक्षा, गेंद से खेलने वाला कोई खेल हो, विशेष सामाजिक कार्यक्रम हो या चर्च का कोई कार्यक्रम हो समय का बहुत ध्यान रखती है । और समय से आने जाने का प्रबन्ध करती है । और हमेशा अपने पति के विभिन्न मनोरंजन संम्बंधी क्रिया कलापों में हिस्सा लेती है ।

१०. वह हमेशा अपने अन्दर सुधार लाती है । और आगे बढ़ने के लिए पढ़ाई, बाईइल का अध्ययन, कम्प्युटर सीखना, अपनें अन्दर की कला को बढ़ाना और भविष्य में हमेशा आगे बढ़ते रहना, लेकिन इन सब बातो के बावजूद भी उसकी प्राथमिकता उसके बच्चे और उसका पति होता है ।

११. वह दसवा अंश देती है । वह समय से सारे बिल पटाती है । खाने का सामान, कपड़े, टेबल कुर्सी, घर के छोटे-मोटे विद्युत यंत्र, कार और दर्जनों बीमा योजनाओं का भुगताना इन सब के साथ वह कुछ पैसा बैक में भी डालती है । इनके बावजूद भी कुछ पैसा वह अपने बटुए में सुरखित रखती है, कि शायद बच्चें कोई फरमाइश करे तो उसे पूरा कर सके.

१२. वह बड़ी तरतीब से बनाए श्रृगांर करती है, आकर्षक कपड़े पहनती है । शालीनता से मुस्कुराती है, प्रतिदिन व्यायाम करती है, वह सन्तुलित भोजन करती है, और अपने वजन पर नियंत्रण रखती है ।

निष्कर्ष :

दरअसल बात यह है कि कोई भी पति – पत्नी पूरी तरह कुशल या योग्य नही हे, निसन्देहन ही पूर्णत: कुशल या योग्य होना एक असंम्भव उद्देश है । जिससे हो सकता कि यह हमें निराशाजनक स्थिती या आत्म गलानि की ओर ले जाए । पूर्ण योग्यता या कुशलता को भूल जाइये । लेकिन सफलता की खोज में एक आदर्श साथी बनने का केवल एक ही तरीका है, कि आपस में एकमत हो ।

अपनी पत्नी को जानो

१. आप उसके जीवन की पहली प्राथमिकता है ।

परमेश्वर के बाद वह आपको अपना सब कुछ मानती है । एशिया के औसतन पुरुषों की अपेक्षा औसतन एशिआई महिलाएँ अपने माता पिता को छोड़कर अपने पति की छत्र छाया में जीवन व्यतीत करती है । सम्भवत: वह अपने दैनिक जीवन में इस बात को नही दर्शाती लेकिन जब आप उसके साथ निर्दयता से पेश आते हों, तो वह बहुत दु:ख महसूस करती है । उसे अपनें बचपन के उस सुरक्षित घर का ख्याल आता है । और वह अपने भविष्य को लेकर चिन्तित रहने लगती है । अपने आनन्द और खुशी के लिए उसे गृह-वियोगी मत बनाइये । वह जीवन के किसी भी तूफान में साथ खड़ी रह सकती है । सिर्फ उसके पति का हाथ उसके चारो ओर होना चाहिए । इलीशिबा – बाँझ भी (लूका १:७) उसे बाँझ पुकारा जाता था, मनुष्यों के बीच उसका अपमान होता था (लूका २५:३६) लेकिन फिर भी धर्मी थे, बुढ़े थे परमेश्वर कि आज्ञाओं और विधियों में साथ चलने वाले थे (लूका१-६) परन्तू जकर्याह पूर्णत: समर्पित पुरुष था । एक समर्पित पति और अपनी पत्नी के लिए प्रार्भना किया करता था (लूका १.१३)

२. वह आपके जीवन की पहली प्राथमिकता बनना चाहती है ।

वह आपके और उसके बीच आने वाले किसी भी तीसरे को बर्दाश नही कर सकती । यदि आपकी माता का घर पर एकाधिकार है । तो स्वाभाविक है कि वह अपने आपको तिरस्कृत समझेगी । घर के किसी भी फैसले या विषय के बारे में सबसे पहले अपनी पत्नी से सलाह मशविरा होना चाहिए । आपका विवाह आपके काम के साथ नही हुआ है । आप पूरे समय सिर्फ काम में ही नही लगे रह सकते । क्योंकि किसी का जीवन उसकी संम्पति की बहुतायत से नही होता (लुका १२:१५) काम को अपना नशा न बनाएँ ताकि आप जीवन के सुखदता को महसूस कर सके । अपने पूर जीवन काल में १५० किलो मीटर प्रति घण्टा की रफतार से ही न चलते रहे । पति होने के लिए समय निकाले, परमेश्वर को मौका दे कि वह आपके जीवन के निरर्थक उद्देश्यों को दूर करे । परिवार के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलें और आपका परिवार हमेशा के लिए बदल जायेगा । अपने घर पर आनन्द मनाएं बच्चों को बढ़ता हुआ देखें (क्योंकि वो सिर्फ एक बार ही बड़े होंगे) अपनी पत्नी को इस बात का एहसास दिलाए कि वो ही आपके जीवन की पहली प्राथमिकता है ।

३. वह स्वतंत्रता पसंन्द है (आजादी)

यह कहना नहीं चाहिए कि वह आपके ऊपर निर्भर रहना नहीं चाहता वह आप पर निर्भर हैं, अपनी आजादी के लिए । उसे कडे नियंत्रण में या वश में न रखें । उसे आदेश न दें यदि आप काम से जल्दी नहीं आ रहे हैं, तो घर के चारों तरफ अपने निर्देषो की झड़ी न लगा दें ताकि आपके आदेश और निर्देष ही उस की ईच्छा बनकर रह जाए । पतियो से कहा जाता है कि यहाँ तक कि परमेश्वर ने सिर्फ आज्ञाएँ दी है । बहुत सी पत्नियाँ अपने आप को एक पिंजरे में बन्द पक्षी की तरह महसूस करती हैं जो हमेशा पिंजरे की सलाखों के अन्दर अपने पंख फड़फड़ाती रहती है । उसकी आशाओं का सम्मान कीजिए । अपनी पत्नी पर पाबन्दी लगाना किसी दुर्घटना का कारण बन सकता है । सारा अब्राहम की आज्ञाकारी रही उसे स्वामी कहकर पुकारती थी, इसके बावजूद भी उसे स्वतंत्र स्त्री कहा गया । (गला ४:२२-२३) उसके पास हर बात की बहुतायत थी बोलने की आजादी अपनी पत्नी से कभी चुप रहो या शान्त हो जाओ न कहे, उसे अभिव्यक्ति का आनन्द उठाने दें ।

४. वह किसी से तुलना किए जाने से घृणा करती है ।

आपके कोई भी निवदेन सीधे और सरल होने चाहिए कभी ऐसा मत कहिए कि फलां, फलां ने कितनी अच्छी खाने की चीज बनाई थी सो आप भी वैसी ही चीज बनाईये कभी मत कहिए कि आप फलां – फलां के समान तैयार होईये या किसी अन्य की तरह कपड़े पहनिए । वह किसी और के समान होना नही चाहती, फिर क्यों नही आप उसके आचार विचार के अनुरुप हो जाते, उसकी भावानाओ को घटिया स्तर पर जहाँ हमेशा ईर्ष्या और जलन की झलक दिखाई पडती है आप ही लाते है । यदि एक व्यक्ति पत्नी के बिना किसी भी दशा में सन्तुष्ट रहना सीख सके (फिली ४:११) निसन्देह आप अपनी पत्नी के साथ सन्तुष्ट रहना सीख सकते है ।

५. वह अपनी व्यक्तिगत पहिचान बनाए रखना चाहती है ।

उसे इस बात कि आजादी हो कि वह अपने आप को बना सके, आप उन गुणों को उसके अन्दर प्रविष्ट नहीं करा सकते जो कि उसके खून में ही नही है सुधार आवश्यक है । किन्तु सिर्फ सुधार या रुपान्तरण ही नही बल्कि उसे स्वत: स्थापित होने का अनुमोदन भी प्रदान करे । यदि वह सेब को काटकर खाने की बजाए दाँतो से काटकर खाना पसन्द करती है तो उसे सभ्य बनानें की कोशिश न करे । जीवन में छोटी छोटी बाते संम्बधो के लिए महत्वपूर्ण होती है । सम्भवत: आपकी पत्नी में अनेक गुण के द्वारा उन गुणों की सराहना होती है । आप शायद महसूस करें कि वह एक अफसर की पत्नी की तरह जल्दबाजी न दिखाएं । बहुत सी औरतें बुझी हुई मोमबत्ती के समान रहती हैं । उन्हें प्रज्जवलित कीजिए और उन्हे उनकी सही पहचान के पंख दीजिए, ताकि वो भी अपने जीवन से सन्तुष्ट हो सके ।

६. वह बहुत ज्यादा काम करती है । (परिश्रमी है)

बहुत से घरों में औरतो को ज्यादा काम के कारण पीठ दर्द होता है । और पुरुषो को पीठ दर्द की समस्या होती है । व्यायाम न करने के कारण उसे हमेशा बुखार रहता है हमेशा थही होती है । हमेशा कमजोर रहती है । उसके लिए न शनिवार की छुट्टी होती है, न रविवार की । दो बच्चे उसकी स्फूर्ति और ताकत का रस निचोडने को काफी होते हैं, इसलिए जब वह थकित होती है, तो उसे समझने का प्रसास कीजिए एक महिला घर के बाहर काम करती है, उसे घर में विशेष सहायता होती है । आदमी रसोई घर में काम करने को नही बना है, फिर यह कितना सुखद होता है कि मेरा पति मेरे लिए कॉफी बनाएं और सुबह बिस्तर की घड़ी लगाए । हजारो साल पहले वह पुरुष ही था जिसने बरतन पोछा था । (२राजा २१:१३) लेकिन अब वह उसे भूल चुका है । (गहरी साँस) कम से कम घर में पुरुषो का काम तो करें ताकि वह दूसरों की ओर सहायता के लिए देखने की तकलीफ से बच सके ।

७. वह भावुक है :-

पुरुष अपने दिमाग से सोचते हैं । स्त्रियाँ हृदय में महसूस करती है । वह विपरीत परिस्थितियों में राजी है । वह तिरस्कार पूर्ण परिस्थियों में भावूक निर्णय लेती है । ये भावुक बदलाव उसके जैविक क्रिया के अनुसार होते है । कुछ दिन ये जैविक क्रियाएं उसे अति उत्साह कि दिशा में प्रेरित करती है, और अगले ही दिन धीमे पड़ जाती है । और नीचे आने लगती है । यह उसकी शारीरिक सरंचना का एक भाग है । लेकिन इससे कोई फर्क नही पड़ता कि उसकी भावनाएँ काँच के टुकडों के समान चकनाचूर हो जाए । उसे मानसिक परेशानियों से निजाद दिलाने का प्रयास करें, जहाँ कटी हो और जब कभी भी संभव हो सके अपने गुस्से से भरे शब्दों को निकाल फेकें । जब वह रो रही हो आप सो मत जाइयें या जब बात कर रही हो तो आप उठकर और कहीं मत चले जाइये । एक पत्नी जो अपनी सास के साथ रह रही हो उसे विशेष रुप से समझने और सहायता की जरुरत है । उसकी भावनाओ की कद्र कीजिए । अपने हास्यपद प्रसंगो से उसे गुदगुदाइये उसे प्रसन्न कीजिए ओर अपने

विवाह की खुशियों को वापस लाइये आन्नद से अपनी पत्नी के साथ जीवन व्यतीत करो)समोपदेश ३:९) संक्षेप में, अपनी पत्नी से विनोदी या प्रेमी रसिक बनो ।

८. यौनाकर्षण या शारीरिकता उसकी सूची में सर्वोपरी नही है :-

वह कभी भी इस बात के लिए तैयार नहीं है, कि बिस्तर में आपके पीछे कुद जाये और फिर आमंत्रण दे, आदमी आश्चर्य करते है, कि क्यों ये एक लकड़ी के गुटके के समान व्यवहार करती है । औरते आश्चर्य करती कि क्यों यौनाकर्षण के अलावा उसकी कोई और भूमिका नहीं है । यह बहुत आश्चर्यजनक है कि बहुत सारे पति इस बात को अनदेखा कर देते है । कि यौन संम्बधों के अधिकाधिक आनन्द की अनुभूति के लिए उसे और समय और कारगर तरीको की आवश्यकता है । यह एक पति का कर्तव्य है । कि वह इस बात का ख्याल रखे कि वह (पत्नी) भी यौन संम्बधो या क्षणों का भरपूर लुप्त उठा सके । (१कुरि ७:३) यौन संम्बध सभावित: क्या किया जाय जैसी उसकी सूची में बहुत सारे अन्य आवश्यक कामों के बाद एकदम आखिरी में होगा । यौन संम्बध एक बिना आवाज के सिनेमा समान है । वह चुपचाप रहती है । कभी-कभी करती है कि यह सब कुछ जल्दी हो जाये । प्राय: जब पति गहरी नीद में सो रहा होता है । वह जागती रहती है । छत को देखते हुए यदि शारीरिक संम्बधो से उसे यही सब मिलता है । कि वो बोले बताए उसकी पसन्द, नापसन्द संम्बधी भावनाओं को, यदि आप क्रूर है, विश्वास पात्र या दयालु या सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार युक्त नही है । तो यौन संम्बध उसके लिए उत्पीडन है । क्योकि मनोविज्ञान में स्त्रियों के यौन जीवन के संम्बध में बहुत कुछ कहा गया है ।

९. उसे एक अटल आश्वासन की जरुरत है ।

अपनी योग्यता संम्बधी शंकाओ के चलते वह एक पहेली बन चुकी है । क्या मैं अभी भी अपनें लिए आकर्षक हूँ ? मुझे आश्चर्य होता है यदि वो मेरे बनाए हुए खाने को पसन्द करता है ? क्या मैं एक अच्छी पत्नी हूँ ? क्या मैंने कुछ गलत किया है ? ये सवाल निरन्तर उसके दिमाग में आते रहते है । उसे बार बार ऐसे आश्वासनों की जरुरत है, कि वह बहुत अच्छी है । बीते हुए कल गयी शुभकामनाएँ उसे आज तक के लिए पर्याप्त नही है । किसी न किसी बहाने प्रतिदिन उसके प्रति अपने स्नेह को प्रदर्शित करे । उसे हर प्रकार से यह एहसास हो कि वह सुरक्षित है, कोई उसकी कामना करता है । और वह किसी की जरुरत है । परमेश्वर पतियों से नीतिवचन में सिर्फ एक बात कहता है । जो कुछ भी स्त्री करती है, उसकी प्रशंसा करो । (नीति ३१:२८) और सम्भवत: यही नीति वचन ३१ और स्त्रियो की सफलता का राज है ।

१०. वह जाना चाहती है :-

जब तक आप उसे स्पष्ट रुप से नही बताएगें तब तक उसे कैसे पता चलेगा कि आपके दिमाग में क्या है ? एक हटधर्मी बच्चे की तरह व्यवहार करना बन्द करें और उसे अपनी नाराजगी की वजह बताएं । तभी वह अपने आप को बदल सकती है । यदि आप किसी चीज को पसन्द करते हैं, तो उसे अपने अन्दर बनाए रखें, उसे सिखाइये जो कुछ भी अपने धर्मशास्त्र में जाना है । धार्मिकता में जाना है । धार्मिकता में उसे बिछड़ने न दें । जहाँ भी सम्भव हो सके उसे साथ लेकर जायें । इस बात पर गौर न करें कि आपको प्रतिक्रया का अन्दाजा पहले से ही था । यह सिर्फ एक मुखौटा है । उसे अपने ज्ञान को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करें । जिससे कि उसमे निपुणता और दक्षता आयेगी उसे ग्रहण मत लगाइयें औरतो में पर्याप्त साहस होता है । कि वो गौरव और प्रतिष्ठा के लिए समय तक प्रयत्नशील रह सके । प्रतिदिन अखबार की खबरें उसके साथ बाटिए । टी. वी. देखते वक्त भी उसे विस्तार से बातों को समझाइये । अधिकांश औरतें सामान्य ज्ञान में कमजोर होती है । जब वह कुछ पूछे तो उसे सिखांए उसका मजाक न बनाएं विशेषकर दूसरों के सामने ।

विवाह आपको दो अति महत्वपूर्ण वरदान प्रदान करता है ।

कोई एक जिसे आप प्यार करें ।
कोई एक जो आपको प्यार करे ।
दोनों ही वरदानों को सफल बनाएँ ।

स्त्री :-

स्त्री परमेश्वर की ओर से दिया गया महत्वपूर्ण उपहार है, एक श्रेष्ट वरदान जिसे परमेश्वर ने अपनी सृष्टि में आदमी के लिए रख छोड़ा है ।
पुरुष स्त्री के कारण ही यह कह सकता है कि हाँ परमेश्वर की योजना के कारण ही दोनों का साथ हैं ।
पूर्ण माननीय अस्तित्व की सम्भावनाओं के समक्ष अपने आपको प्रदर्शित कर उसनें मानव स्वभाव को पूरा किया है ।
वह अपने अन्दर रहस्यतम प्रकार के मानव स्वभाव से जुड़ी हुई है ।
वह मानव सृजन की क्रमबधता से जुड़ी हुई है, और उसका क्रमबधता में स्थान है ।
उसकी महिमा और सम्मान पुरुष के सम्मान और महिमा से थोड़ा भी पीछे नहीं है ।

स्त्री पुरुष का संम्बध अभिन्नता का नहीं बल्कि बराबरी का है ।
उसका नाम स्त्री आदम के द्वारा दिया गया है । याद रहे कि उसमें से तथा उसकी है ।
वह कोई संम्पति नहीं है ।
वह पूर्णत: मनुष्य है ।

उसका संम्बध आदमी से और आदमी के लिए है, वैसे ही आदमी का संम्बध उस (स्त्री) और उसके लिए है । इसलिए निर्माण की श्रृंखला में मनुष्य पहले आता है । और स्त्री दूसरे स्थान पर और इसलिए उसका प्रथम अभिप्राय उससे संम्बधित होता है । जैसा कि वह उसके जीवन या संम्बध में दूसरा स्थान रखती है । किंचीत भी गैर समझ न हो । यह महत्वता है, गौरव या सम्मान का प्रश्न नहीं है परन्तू एक साधारण क्रम का प्रश्न है । यह किसी ऊंचे या नीचे मनुष्यत्व को नहीं दर्शाता । परमशेवर की विकृति में निर्माण का यह क्रम स्त्री पुरुष की व्यक्तिगत महानता लाता है ।

जब स्त्री पुरुष वैवाहिक मनुष्यत्व में एक होते है । तो पुर्नस्थापना की संम्पूर्णता को अनुभव करते है जो कि निम्नलिखित वाक्यों में बखूबी दर्शाया गया है ।

पुरुष बेचैन होता है जब वह उस पसली को याद करता है जो कि उसके अन्दर से निकाली गयी थी । और स्त्री तब तक बेचैन रहती है, जब तक कि वह उस हाथ के नीचे न आ जायें जहाँ से वह निकाली गयी थी ।
विरोधाभास प्रेमी, इसका मतलब स्त्री और पुरुष की महानता और मनुष्यत्व एक बराबर है । पुरुषों की महानता इस बात की स्वीकृति है कि स्त्री उसके लिए ही बनाई गयी थी । स्त्री की महानता इस बात की स्वीकृति है कि, पुरुष उसके बिना अधुरा है । दोनों ही बराबरी के गौरव आदर और सम्मान के हिस्सेदार है । हाँ और दोनों ही एक दूसरे के सामने मनुषत्व को बाँटते है । तथा दोनों ही एक दूसरे की पूर्णता के लिए अतिआवश्यक है । दोनों ही अनिवार्य रुप से एक दूसरे के ऊपर निर्भर है ।

यदि परमेश्वर का यह अभिप्राय होता कि स्त्री पुरुष पर राज करे तो, शायद उसने उसे उसका निर्माण आदमी के सिर से कुछ निकाल के किया होता । तो क्या परमेश्वर ने स्त्री का निर्माण इसलिए कि वह एक दासी बनी रहे, यदि ऐसा होता तो उसने उसे आदमी के पैर से लिया होता, लेकिन परमेश्वर ने स्त्री को पुरुष की बगल से निकालकर निर्मित किया, इसलिए बनाया ताकि वो उसकी सहायक और उसके बराबर बनी रहे पुरुष की पसली द्वारा स्त्री का निर्माण उसे उसका (पति) स्वामी

नही बनाता कि वह उससे ऊपर रहे न ही उसका निर्माण उसके पैरों से हुआ है, कि हमेशा कुचली जाए परन्तु उसकी बगल से हुआ ताकि उसके हाथो के नीचे हमेशा सुरक्षित और बराबर बनी रहे, उसके हदय के पास से ताकि हमेशा उसकी प्रिय बनी रहे ।

उत्पति २:२०-२२ पर एक समीझा :-

१. आदमी ने स्त्री के अन्दर एक दूसरे मनुष्य को पाया जिसका उदगम आदमी की उत्पति से अलग था, न तो वह पूर्णता उसके समान थी न कि पूर्णता उससे भिन्न थी । वह उससे और उसके लिए है, उससे ऐसे जुड़ी हुई है, जैसे शरीर के अंग एक दूसरे से जुड़े होते है । वह उसकी जरुरतों को पूरा करती, और एक खाली जगह को भरती, जिसे वह खुद उपयुक्त तरीके से भरने का पूर्वानुमान नहीं लगा पाया पसली का लिया जाना और स्त्री का निर्माण उसके बाद उसे पुरुष को सौंपा जाना ताकि वह अपने निर्माण को पूरा करे और अपने मनुषत्व को संम्भव बना सके ।

२. पुरुष स्त्री में पहचाना जाता है, क्योंकि उसके अंश उसमें विद्यमान है, लेकिन वह भी अपना एक स्वतंत्र स्वभाव रखती है । वह बिना किसी गलती के पहिचाना जाता कि यह मानव स्वभाव उसका ही है । वैसे ही बिना गलती के वह भी पहचानी जाती है । जिसके लिए या जिस हेतू उसे पुरुष में से लिया गया और उसे सजाया गया (निर्माण) वो अंश और वो तत्व अब तक उसके अन्दर पहचाने जाने योग्य है । यहाँ दो मनुष्यों के बीच एक परस्पर विरोधी मत है । एक पुरुष, एक स्त्री, वो दोनों अपने आप में परिपूर्ण जान पड़ते है लेकिन वो नहीं है । वो दोनों अधिकाधिक एक समान जान पड़ते हे, लेकिन वो नहीं है । वो अलग-अलग जान पड़ते है, लेकिन वो नहीं है । वो एक दूसरे के लिए बने है । फिर भी यह सिर्फ वैवाहिक प्रेम सम्बधों में अनुभव किया जा सकता है । सम्पूर्णता को बनानें में उन दोनों का बराबरी का या आधा-आधा हाथ है । फिर भी दोनों के क्रिया –कलाप अलग अलग है । (दोनों एक ही प्रकार के कार्य नहीं करते) वो दोनों निर्माण क्रम में अलग-अलग खड़े हे (पुरुष को पहले बनाया गया स्त्री को दूसरे स्थान पर) फिर भी उनकी भूमिका और सम्मानता एक समान है । दोनों ही अपने आप में परिपूर्ण जान पड़ते है । लेकिन इसका यह आशय नहीं कि दोनों का अन्दाजा एक-दूसरे के बिना लगाया जा सके ।

३. पुरुष अपने शरीर में से कुछ भाग निकाले जाने और स्त्री के बनाए जाने से थोडा पीड़ा या कुछ खो जाने की पीड़ा को महसूस करता है । वह बहुत समय अपने आप को पूर्ण नहीं समझ सकता जैसा कि वह जान पड़ता है । उसे अपने शरीर के उस भाग से जुड़ना या समर्पित होना ही है । लेकिन वह नहीं जानता कि क्यों (परमेश्वर ने उस स्थान को भर दिया जहाँ पर पसली थी, पुरुष सो रहा था)

पुरुष उपयुक्त घटनाक्रम के किसी प्रमाण से नही बंधा है । या न कोई प्रमाण शेष है न ही उसके क्रिया कलाप में किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न हुआ है । जैसा कि वह शुरुआती दिनो में था, लेकिन अब उसने इस बात पर गौर किया है, कि वह पूर्ण मनुषत्व में नहीं है । और तब तक एक सम्पूर्ण पुरुष नहीं हो सकता जब तक कि अपने शरीर से निकाले हुए उस अंश से जुड़ न जाए और जब तक अपने उस साथी के साथ पुर्नस्थापना की एकरुपता न स्थापित कर ले । उसके मनुषत्व की यह कमी, स्त्री के सिवाय अन्य किसी भी माध्यम से पूरी नहीं हो सकती ।

४. वह (पुरुष) अपने आप को अपने उस शरीर के अंश या हिस्से से वन्चित नही रख सकता जो कि उसे वापस दे दिया गया है, वह अपने आप को उससे दूर नहीं रख सकता जो कि अभी भी उसके अपने अस्तित्व का एक टुकड़ा है । उदासीनता के चलते वह अपने आप को उससे अलग नहीं कर सकता अपने उस पृथक हुए अंश से बिना अपने आप को जोड़े वह उससे अलग नहीं हो सकता । वह भी (स्त्री)उदासी नहीं दर्शा सकती न ही अलग हो सकती है । जिसके द्वारा उसका जन्म या उसका उदगम हुआ है, ऐसा करने पर वह उस अपने जन्म से इन्कार करती है । और परमेश्वर की व्यवस्था या निर्माण को असगंत या अनुचित ठहराती है । इसीलिए दो विपरीत लिंगी के आपसी निर्भरता की व्यवस्था की गयी ताकि वो अलग न हो सके यह परमेश्वर की अपनी ईच्छा है ।

कैसे अपनी पत्नी के लिए आशीष बनें

किसी ने एक बार ऐसे इंगित किया है कि एक अच्छे व्यक्ति की पहचान यह है, कि उसके परिवार से उसके बारे में पूछो जब कलीसियांए और अन्य सेवा करने वाली सस्थाएँ विभिन्न सभाएँ रखती है, कॅम्प रखती है, शिबिर लगाती है, वहाँ दु:ख भरे तिरस्कार और चुनौती होती है, कि एक पुरुष परमेश्वर द्वारा दी गयी अपनी भूमिका को पूरी करे विशेषकर अपने परिवार में विवाह की खुशी और आनन्द को बनाए रखना पति-पत्नी का उत्तरदायित्व है लेकिन एक पति की जिम्मेदारी एक पति से कही ज्यादा है । क्योंकि वह मुखिया है ।

मुझे इस अध्ययन को लिखने का कोई डर या जोखिम नहीं है क्योंकि मैं सोचता हूँ कि मैं दुनिया का सबसे अच्छा पति हूँ, या मेरी पत्नी इस पृथ्वी की सबसे सुखी औरत है । लेकिन शादी के पहले दिन से ही मैने अपना सारा समपर्ण अपनी पत्नी को प्रसन्नता और उसे ही पहली प्राथमिकता रखा उसके बाद परमेश्वर की प्रसन्नता जो कि मेरा रखवाला है । मैने १ कुरि ७:३३ को काफी गम्भीरता से लिया है, विवाहित मनुष्य सन्सार की बातों की चिन्ता में रहता है । कि वह अपनी पत्नी को किस रीति से प्रसन्न रखे । यहाँ मैं पतियों को युक्तियाँ देना चाहता हूँ जिससे वो अपनी पत्नियों को प्रसन्न कर सकते है । मैं पूरी ईमानदारी से और पूरी चैतन्यता से प्रयास करुंगा भले ही इसमें मुझे असफलता ही क्यों न हासिल हो । एक बार मेरी पुत्री ने मुझसे कहा कि वह मेरे ही समान किसी व्यक्ति से विवाह करना चाहती है । उसकी यही बात निम्नलिखित को बताने हेतू मेरा प्रेरणा स्रोत रहा ।

१. विश्वास निर्मित करे :-

आपसी विश्वास, विवाह के परमानन्द का मूल आधार है । अविश्वासी से जितना वैवाहिक जीवन प्रभावित होता शायद ही किसी अन्य वजह से हो । आपकी पत्नी आपका सदैव विश्वास करे, यह आवश्यक है, कि आप सच्चे और विश्वासपात्र बने रहे । मलाकी का रचयिता पतियों को सचेत करता है, कि इस विषय को गंम्भीरता से क्योंकि परमेश्वर आपके और आपकी पत्नी के बीच साक्षी है (मलाकी २:१४) और वह परमेश्वर के लोगों को भी सचेत करता है कि आत्मा को व्यभिविचार से मुक्त रखो (मलाकी २:१५-१६) मानसिक व्याभिविचार भी उतना ही पाप युक्त है, जितना की शारीरिक (मला ५:२७-२८) विवाह की प्रारम्भिक उत्तेजना के बाद आँखो की लालसा और कामना जैसे विचारों से मुक्त रहो ।

अपनी पत्नी को स्वतंत्रता प्रदान करो कि वह तुम्हारी सुरक्षा कर सके, लेकिन यदि वह आवश्यकता से अधिक अधिपत्य की ओर अग्रसर होने लगे, तो उससे पूरी नम्रता से बात करें कि वह अपने इस व्यवहार को बदले । यदि आपकी पत्नी स्वाभाविक रुप से हर दूसरी औरत पर शक करती है । जबकि कोई ठोस कारण भी नहीं होता । तो आपको उसके साथ पूरे धैर्य से पेश आना होगा और उसके लिए और अधिक प्रार्थना करें । परमेश्वर के अनुभवी सेवको की मदत लें या व्यवसायिक से सहायता लें ।

एक औरत भयंकर रुप से अशान्त हो जाती है जब वह कुछ लम्बे बालो को उसकी कमीज पर देखती है । जब कि वह ऑफिस से वापस घर को आता है । उसने अपने कार्यशाला तक पहुँचने के लिए भीड़ भरी ट्रेन और बस से यात्रा किया है । अगले दिन घर में प्रवेश करने से पहले वह उसकी कमीज की जाँच करती है । पत्नी फिर भी उससे यह कहकर झगड़ा करने लगती है, कि शायद तुमने आज किसी गंजी औरत को गले लगाया है लेकिन सच्चाई यह थी कि घर में सभी एक ही कंगी से बाल बनाते थे । और उसे बाल बनाने के बाद कंगी को साफ करके रखने की आदत नहीं थी ।

कुछ पत्नियां पतियों द्वारा किये गए शक के प्रति उत्तर में शक करती है । अपनी पत्नी को पूरी आजादी प्रदान करें और उस पर विश्वास करें (निति वचन ३१:११) उसके हरेक हाव –भाव और गतिविधियों पर सवाल मत पूछो । शक से शक पैदा होता है । जितना विश्वास वह आप पर करती है, जब आप काम पर जाते है और आप को पूरी स्वतंत्रता प्रदान करती है कि समाज में आजादी से घूम फिर सके आपको भी वैसी ही स्वतंत्रता और विश्वास उसका करना चाहिए । कुछ पति अपनी अत्नियों को कभी भी ये नहीं बताते कि वो कहाँ जा रहे है । और कब लौटेंगे । लेकिन वही पति पत्नी के कभी कभार

पड़ोसियों के यहाँ चले जाने पर अशान्त हो जाते है, यह न्यायोचित नहीं है। कौन कहता है कि लैगिंक परिक्षा के दौरान स्त्री की अपेक्षा पुरुष ज्यादा आत्मनियंत्रित रहता है।

२. समय दें

यीशु मसीह ने अपने आप को कलीसिया के लिए दे दिया उसका बलिदान (इफि ५:२५) अपने आप को देना यानि प्राथमिक रुप से किसी को समय देना क्योंकि समय अत्यन्त आवश्यक है, यूँ कि जीवन की गणना सालों और घंण्टो में की जाती है। एक सर्वश्रेष्ट उपहार जो हम अपनी प्रेमिका को दे सकते है, वह है समय जब एक जवान स्त्री पुरुष आपसी प्रेम मे पड़ जाते है, तो वो सभी चीजों से बढ़कर क्या चाहते है, कि एक दूसरे के साथ समय व्यतीत कर सकें। तो इसीलिए उसे पूरा करने के लिए विवाह में पहले प्यार इसके अलावा और कोई दूसरा रास्ता नहीं कि आप अपनी पत्नी के साथ एक सुखद समय बिता सके। प्राथमिकता यह नहीं है, कि एक ऐसा समय कि आप उसके साथ सो रहे हो या नींद ले रहे हों। बल्कि एक ऐसा समय जो आप उसके साथ आपसी बातचीत के माध्यम से व्यतीत करते है। पुरुष हमेशा स्पर्श के लिए उत्साहित है, परन्तु स्त्री बातचीत से आनन्दित होती है।

एक पति अपनी पत्नी से उन्मुक्त वार्तालाप इसलिए बन्द कर देता है, क्योंकि वह अनुभव करता है कि जितना कम वो बातचीत करते है, झगड़े उतना ही कम होते हैं। लेकिन शायद एक मजबूत विवाह के लिए झगड़ों का होना आवश्यक है। झगड़े जिनका निपटारा बिना किसी की भावनाओं को ठेस पहुचाएँ हो तथा इस बात के सहायक हो कि दूसरे विचार धारा पर गौर करे। किसी ने कहा है जहाँ दो व्यक्ति हर बात पर एकमत हो जाये वहाँ उनमें से एक की कोई उपयोगिता नहीं यदि बात करना वरदान है, तो सुनना एक कला है। उपरोक्त वार्तालाप आवश्य रुप से सीखा और विस्तारित किया जाए ताकि मतभिन्नता को लाभदायक बनाया जा सके।

अन्यथा आप अपनी पत्नी के साथ खेलते हैं, लेकिन अपनी पत्नी के साथ प्रार्थना नहीं कर सकते किसी ने कहा है, कि विवाह को सफल बनाने का सबसें अच्छा तरीका है, कि उसे एक खेल बना लो अपने कुछ और – तरीके बनालो टी. व्ही. देखने के लिए नहीं अन्यथा अपनी पत्नी से गप-शप लड़ाने के लिए आपके पास पर्याप्त समय होगा, यूँ कि टी.व्ही. और इन्टरनेट अनेकों शादियाँ बर्बाद कर चुका है पारिवारिक प्रार्थना और खाने के समय टेलिफोन बन्द कर दें। टेलीफोन सुखद क्षणों के दौरान सबसे बड़ा अवरोध है, तथा अवरोध या शोर के दौरान व्यस्तता दर्शाने का सबसे सुविधाजनक है। जब आप किसी कार्यक्रम से वापस आयें और आपकी पत्नी पूछे कि कार्यक्रम कैसा था सिर्फ यह कहकर मत रुक जाईये कि ठिक था पूरे विस्तार से बताएं अपने कार्य क्षेत्र की कोई भी परेशानी उससे न छिपायें, परमेश्वर उसे आपको दिया है, एक उपयुक्त और आपके समान एक सहायक के रुप में (उत्पति २:१८) इस बात की जाँच पड़ताल को भूल जाइये कि उसका दिन कैसे गुजरा, उसके साथ खरीदारी करना व्यर्थ में समय गवांना जैसा नहीं है। आवश्यकता से अधिक समर्पित मत होइयें। क्या महत्वपूर्ण है, और क्या आवश्यक दोनों के बीच अन्तर को समझियें कुछ एक अनावश्यक मागों को न कहना भी सीखें पत्नी को सिर्फ उसकी खुशी के लिए समय देना सिर्फ पत्नी के लिए अच्छा है। ऐसा नहीं है, बल्कि यह आपके लिए भी अच्छा है।

३. तुनक मिजाज या स्वभाव को बर्दाश्त कीजिए.

एक दूजे के लिए बनना इसका आशय यह नहीं कि पति –पत्नी का स्वभाव भी एक समान हो, हम सभी सम्पूरकता के अलग - अलग क्रम में बने हुए है। स्वाभाविक विभिन्नता आवश्यक रुप सें स्वीकार्य एंव सराहनीय होना चाहिए। जैसे कि हम बनाए गए है, इस प्रकार एक शसक्त समानता इसका प्रतिफल होगी। स्वाभाविक रुप सें में और मेरी पत्नी ध्रुवों के समान दूर है। हम दोनों का व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली है। हम चिड़ते है, लेकिन हम भरसक प्रयास करते हैं। बिस्तर पर जानें से पहले सभी बातों को सामान्य कर लें, वचन हमें सिखाता है, क्रोध तो करो पर पाप मत करो, सूर्य अत: होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे, शैतान को अवसर न दो .... अपने बिछौने में जाकर हृदय में ध्यान करो और चुपचाप रहों (इफि ४:२६-२७ भजन ४:४) हमारे विवाह के पहले हप्ते के दौरान मेरे सास-ससुर ने मुझसे निवेदन करते हुए कहाँ कि में अपनी

पत्नी के अति संवेदनशील स्वभाव के प्रति सहनशील हूँ । उसके साथ बिताए कुछ वर्षो ने मुझे सिखाया कि लोगों के साथ कैसे सावधानी सें निर्वहन किया जाए । विवाह वास्तविकताओं की एक पाठशाला है । अपनी पत्नी से बहस न करें कि उसने क्या कहा या क्या कहा था, यह सब वह स्वभाववश कह रही है । यह एक विद्युत बल्ब जलाने के प्रयास जैसा अनुपयोगी है । पति-पत्नी आवश्यक रुप से एक दूसरे के स्वाभिमान का सम्मान करना चाहिए । किन्तु क्योंकि स्त्री एक निर्बल पात्र है, एक पति अधिकाधिक उदार हो सकता है, लोगों को जानता, लेकिन बहस कोई उद्देश नहीं होना चाहिए । शादी के पहले सबसे महत्वपूर्ण शब्द है, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ शादी के बाद सबसे महत्वपूर्ण शब्द है, शायद तुम ही हो जब कभी आप गलत हो उसे मानियें, जब कभी आप सही हो चुपचाप रहिए । यूँ कि सवाल स्वभाव को नहीं बदल सकते ? वो बदल सकते है, प्रार्थना कीजिए उसे बदलने के बजाये आप को बदले

४. परम्पराओ रुचि का सम्मान करें :

यद्यपि सम्भंव है कि पति-पत्नी एक ही तरह की सामाजिक मान-मर्यादाओं से सम्बधित हों, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वो दोनों अलग-अलग परिवार से आते हैं, यदि वे संगे सम्बधी न हों तो । प्रत्येक परिवार का कार्य करने का और परम्परा निभाने का अपना एक अलग तरीका होता है, यदि आप उसकी परम्पराओं का सम्मान नहीं करते तो आप उसके परिवार का आदर नहीं करते, समय की उपयोगिता और आपसी विचार विनिमय के माध्यम से आप दोनों अपने रीति रिवाजों में बदलाव कर सकते हैं ताकि आपका नया परिवार बेहतर और एकता में बंधा रह सके । खान – पान सम्बधी आदतों और टेबिल में खाना खाने सम्बंधी सदाचार अनेकों परिवारों को विघटन की ओर अग्रसर करते है । यूँ कि आप परिवार के मुखिया है, इसका ये मतलब नहीं कि आपकी आदतो आचार-विचार और तरीके परिवार पर भी प्रभावी हो । आधार पर प्रत्येक बातों और विषयों को निरीक्षण कीजिए और उसे अपनाइये जो दो में से बेहतर हो । यह स्वाभाविक है कि आप अपेक्षा करेंगे कि आपकी पत्नी आपकी माता की तरह कपड़े पहने और आपकी माता की ही तरह बनें । लेकिन यह गलत है, कि एक आधुनिक महिला पारम्पारिक रीति रिवाजों का पालन करे भले ही वो अच्छे हो या सुविधजनक हो । उसकी व्यक्तिगत पहचान को मत कुचलिए । अपनी पत्नी की चर्च सम्बधी भूमिका का सम्मान कीजिए, कोई भी कलीसिया पूरी तरह से योग्य नहीं है, बाईबल में विश्वासी कलीसियाओं के विषय कहा गया है, कि कोई भी योग्य नहीं है, या कोई भी सही मायने से किसी से उत्तम नहीं है सबकी अपनी कमियाँ और खूबियाँ है । यीशु मसीह फिर भी लौदीकिया की कलीसिया से प्रेम करता है, उन सब को ताड़ना और डाँटना भी है । (प्रकाशित वाक्य ३:१९:२०)

मेरे एक मित्र ने सद्भावनापूर्ण सम्बंध कैसे बनाया जा सकता है, उस विषय पर मुझसे कहाँ हरेक व्यक्ति में कुछ अलग सा है, मैं ठीक हूँ, आप ठिक है, आप ठीक है ऐसा मत कहिए, आप ठीक नहीं है या मैं ठीक नहीं हूँ, विवाह के प्रारभिक वर्षो में मैं प्रयास कर रहा था कि मेरी पत्नी में कुछ बदलाव लाऊ क्योंकि उसकी ऊँची मान्यताएँ मेरे से एकदम अलग थीं । उसे अकेलापन अच्छा लगता था लेकिन मै हंसी मजाक और दूसरों से मिलने जुलने में दिलचस्पी रखता था । मैं बहुत ही सामाजिक प्रवृत्ती का व्यक्ति हूँ, जबकि उसका व्यवहार काफी संकुचित है, जहाँ मैं रंग बिरंगी पसन्द करता उसे सफेद रंग पसन्द आता, वह हमेशा पुराने नियम की ऐतिहासिक किताबें पढ़ती और मेरा पसंदीदा हमेशा पॉल प्रेरित हुआ करता, इस प्रकार की भिन्नताओं की सूची अनन्त है, लेकिन अब मैं उसकी रुची और मान्यताओं को आदर देना सीख चुका हूँ, इसलिए उसे अधिकाधिक स्वतंत्रता प्रदान है, इस प्रकार समझौते को अपनाकर कलीसिया में अपनी व्यक्तित्व पहचान बनाए रखना ।

५. तनाव मुक्त करें :-

एक सहयोगी और दयालु स्वभाव का पति पाना एक स्त्री का सबसे बड़ा सौभाग्य होता है । एक व्यक्ति के चरित्र का सच्चा अनुमान उसकी पत्नी के स्वास्थ से लगाया जा सकता है जैसा कि बुजुर्ग कहते है । समाज में उसकी योग्यता या स्थान कुछ भी हो सकता है, परन्तु परमेश्वर के सामने वह एक निर्बल पात्र के समान है (१ पतरस ३:७) जब आप काम से वापस घर आये और पत्नी समस्याओं की एक सूची आपको सौपे तो गुस्सा मत होइये । पूरा दिन उसके हाथ बरतन धोने की मोरी में

गिरे रहे अब उसे आपकी छाती पर पडने दीजिये जब एक महिला कामकाजी होती है, तो उसकी जिम्मेदारियां दुगुनी हो जाती है, जिनता सम्भव हो सकें बच्चो की देखरेख, खरीदारी और घर के अन्य कामों में उसकी सहायता करें । आसानी से उसे यह सलाह न दें कि एक और नौकर रख ले । उसके प्रत्येक कामों में सहभागी हो । स्वईच्छा से अपनी पत्नी के काम-काज की जानकारी लें । तब तक इन्तजार में मत रहिये कि जब वह खुद अपना हृदय खोलकर आपकों अपनी परेशानियाँ बताये । ओह : आश्चर्य है एल्काना जैसे पतियों पर उसने अपनी पत्नी से पूछा तू क्यों रोती है ? खाना क्यों नही खाती ? तेरा मन क्यों उदास है ? (१ शमुएल १:८) अपनी पति का विशेष ध्यान रखें कि कहाँ उसे परेशानी है, एल्काना ने अपनी उत्नी को अपनी आशीषों का दोहरा भाग उसे दिया जब देखा कि वह सन्तान से वंन्चित है, उसने उसे उसकी समस्याओं में सम्पूर्ण पहचान देने का आश्वासन दिया, जब उसनें उससे पूछा कि क्या मैं तेरे लिए उन बेटों से अच्छा नही हूँ । (१शमुएल १:५-८) अपनी पत्नी के दर्द और आसुंओ को महसूस कीजिए । अपना कंधा उसे दीजिए की वह उस पर सिर रखकर रो सके । एक साँखिकीय आश्वासन के अनुसार, जो लोग अपनें वैवाहिक जीवन में आनन्दित रहते हैं । उनकी आयु लम्बी होती है, उसका एक कारण है, क्योंकि वो अपने अन्दर के सारे तनाव को बातचीत के माध्यम से बाहर निकाल देते हैं । उससे उनका रक्त चाप सामान्य रहता है

यदि आपका परिवार संयुक्त है और आप पात्नी सास ससुर के साथ रह रही है, तो सम्भव है, आपके माता-पिता के साथ या भाई-बहनो के साथ कोई गलत फहमी हो जायें इसलिए आपको आवश्यक रुप से सोच समझकर और पूरी तरह से विचार करने के बाद कोई कदम उठाना है । उसका साथ दिजिए (उत्पति २:२४) अन्ततः उसे उसके लिए एक घर उसे दे, जहाँ वो एक सच्ची रानी बन सके ।

६. दखल अन्दाजी या हस्तक्षेप को माफ करें :-

प्रभु की प्रार्थना को एक परिवार की प्रार्थना भी कहाँ जाता है । इस पूरी प्रार्थना में एक ऐसा निवेदन है, जो कि शर्त या दशा पर आधारित है, और वह है क्षमाशीलता हमारे पापों को क्षमाकर क्योंकि हम भी अपने हर एक अपराधी को क्षमा करते हैं (लूका ११.४) यहाँ तक कि एक भाई दिन में सात बार क्षमा की पात्रता रखता है (लूका १७.४) तो आपकी पत्नी का पात्रता इससे अधिक और कितनी होगी । जब पतरस ने प्रभु से यह सुनिश्चित करना चाहा कि क्या सात बार क्षमा करना पर्याप्त होगा यीशु ने उस से कहा मैं तुझसे यह नहीं कहता कि सात बार बल्कि सात बार के सत्तर गुना तक (मती१८:२१-२२) चेलों ने सोचा कि यह तो बहुत अधिक है, और असभ्भव भी इसलिए उन्होंने प्रभु से कहाँ कि उनके विश्वास को बढ़ाए । यीशु मसीह ने यह स्पष्ट किया यदि वो दूसरो के छोटे से छोटी बात को क्षमा करेंगे चाहे वो राई के दाने के बराबर ही क्यों न हो तभी वो बड़े से बड़ो विषयों को संभ्भाल पायेंगे चाहे फिर क्यों न वो विषय शहतूत के पेड़ के समान बड़े क्यों न हो । पारिवारिक जीवन में वाद-विवाद अत्यंन्त छोटे-छोटे विषयों को लेकर होता है ।

एक विवाह को सफल बनाना एक खेती को चलाने जैसा है । आपको हर दिन सुबह सब कुछ नये सिरे से प्रारम्भ करना आवश्यक होता है । जब प्यार गाढ़ा होता है जब गलतियाँ पतली लगने लगती है । प्रेम अनेकों पापों को ढ़ाप देता है । (१पतरस ४:८) यही भाव नीतिवचन कहता है । कि प्रेम सभी अपराधों को ढाँप देता है । (नीति १०.१२) एक महान अगुवे ने बड़ी बुध्दिमानी से सचेत किया है कि शादी से पहले अपनी आँखे पूरी तरह से खुली रखो और शादी के बाद आधी आँख बन्द रखो । आपकी पत्नी जो कुछ करती है, तो हो सकता है, कि आप को उसमें कुछ पसन्द न आये । यदि आप उसे बदल नहीं सकते तो परिस्थितीयों सें समझौता करें ।

एक सच्चा मसीही विभिन्न परिवारों में समस्याओं और परेशानियो से जाँचा जाता है । परेशानियों को टालना या अनदेखी करना एक बोझ के समान है, लेकिन उन्हें स्वीकारना और उनका मुकाबला करना उन्हें सरल ओर सहज बना देता है । उसका आशय यह नहीं है कि आपको उसें सुधारने की कोशिश नहीं करना चाहिए । पत्नी को ऊंचा उठाना पति की जिम्मेदारी है । (इफि ५:२८-२९) लेकिन कृपया हर दिन सिर्फ एक ही सुधार मैं पूरी तरह से योग्य नहीं हूँ, लेकिन मैं एक सुधारक जरुर हो सकता हूँ । किसी ने ऐसा वर्णन किया है । अगली बार आप इस परीक्षा में पड़ेगे कि अपनी पत्नी की गलतियों को चुनकर निकालें, तो पहले उसे दस बार अपनी गलतियों के लिए पर्याप्त समय लगाएँ ।

क्षमाशीलता भूल जाने से और भी ज्यादा मजबूत होती है, माफ करना यदि इन्सान है तो भूल जाना ईश्वर । भूलना अत्यन्त मुश्किल है । एक इंन्सानी नजरिये से भूलना यानि इस बात से इन्कार करना है, कि हम बार-बार उसी मुद्दे को नहीं उठाएंगे । परमेश्वर के चौमुखी प्रेम ने हमारे पापों को अपने पीछे फेंक दिया है, उन्हे इस तरह से सोंक लिया है, जैसे समुद्र की गहराई, उन्हे इस प्रकार से निकाल दिया है, जैसे आकाश में से बादल, और इतनी दूर जितनी दूर पूरब से पश्चिम है । हम प्रभु में बुलाए गए है, कि एक-दूसरे को क्षमा करें जैसा कि प्रभु यीशु ने हमको क्षमा किया । यदि आप अपराधी हैं, अपनी पत्नी से क्षमा माँगने में हिचकिचाइे नहीं, यही सच्चा पुरुषत्व है ।

७. प्रतिभाओं को विकास कीजिए

यह कहा गया है कि सफल व्यक्ति के पीछे एक औरत होती है । इसी प्रकार हम कह सकते हैं कि हर फलदायी औरत के पीछे एक पुरुष होता है । प्रभु यीशु मसीह ने अपनी वैवाहिक कलीसियाओं से इतना प्यार किया कि उसे मजबूत बनाने और महिमा दिलाने के क्रम में उसने अपने आप को उसके लिए दे दिया । पतियों के लिए चुनौती है, कि वो प्रभु यीशु मसीह के उदाहरण को अपनी पत्नियों को प्रोत्साहन देने के लिए अनुसरण करें । दूसरों को बचाने या सुधारने के लिए अपने आप को देने वाला प्रेम सर्वोच्य दृष्टि से देखा जाता है । जब आप अपनी पत्नी की खुशियों को पूरा करने के लिए अपनी खुशियों का बलिदान करते हैं, तो आप वास्तविक रुप सें अपने लिए ही कुछ अच्छा करते हैं । और यही बाईबल के अनुसार विवाह का तत्व ज्ञान है । (इफि ५:२६-२९)

हमारी क्षमता के प्रति आशावादिता के क्रम में हम एक दूसरे की सहायता करते हैं । हम प्रभु में आनन्दित होते हैं । जब हम में से प्रत्येक यह देखते हैं, कि दूसरा व्यक्ति प्रगती कर रहा है । या चमक रहा है एक व्यक्ति की ताकत दूसरे व्यक्ति की कमजोरी में सहायक होती है । इसी प्रकार कलीसिया की सरचंना का सिध्दांत पति पत्नियों के समूह में लागू होता है । अपनी पत्नी की तुलना किसी अति योग्यता धारी स्त्री से न करे, न अपने सोच-विचार में और न ही अपने शब्दो में, यह उसकी उन्नती के लिए हानिकारक है । आप सोचेंगे कि वह आपके ऐसे विचारों को एक चुनौती के रुप से स्वीकारेगी लेकिन वास्तविकता यह है कि वह ठंण्डी हो जायेगी । यह एक गंम्भीर सत्य है कि एक अकेले प्रतिभावान व्यक्ति ने २५ भली वचनों में बहुसंख्यको का प्रतिनिधित्व किया, ठीक उसी प्रकार साधरणत: वो भी अपनी प्रतिमा को तीव्र और प्रभावी बनाएं । शायद हो सकता है, कि आपकी पत्नी में केवल एक ही गुण हो लेकिन वही एक गुण कितना महत्वपूर्ण हो सकता है । आप तब तक महसूस नहीं करेंगे जब तक कि आप उस वरदान को चकमा न दें सही दिशा निर्देशन और प्रोत्साहन तथा पति के उत्साहवर्धन के द्वारा एक पत्नी के उसकी आशंकाओं, भय और समझ में आजादी मिलती है । इस बात का सफल प्रयास करे कि किसी भी उत्सावर्धन के बाद किन्तु परन्तु जैसे शब्द कभी न जोडें ।

८. घूमने फिरने की योजना बनाएं :-

विश्राम दिन (सब्द दिन) प्रभु की योजना है । विश्राम का आशय निष्क्रिय से नहीं है परन्तु अपनी दैनिक जीवनचर्या से हटकर कुछ करने से है । छुट्टियों का अपना एक अलग महत्व है । यह कोई ऐयाशी नहीं है, लेकिन एक पति पत्नी के लिए अत्यन्त आवश्यक है, चाहे वे घर से बाहर काम पर जाते हों या घर पर ही रहते हों । स्वरोजगार करने वाला पति कभी भी अपने काम की उन्नति या व्यवसाय के कारण अपनी पत्नी और बच्चों की खुशी का बलिदान नहीं करेगा । परिवार का मुखिया होने के नाते यह आपका दायित्व बनता है । कि आप छुट्टियाँ मनाने की योजना बनाएँ इस बात के इन्तजार में मत रहियें कि पत्नी या बच्चे छुट्टियाँ मनाने जाने हेतू परेशान करें । जब आप छुट्टियाँ मनाने जाते है । तो अपने कार्यक्रम को अत्यन्त व्यस्तता भरा न बनाएँ किसी के घर किसी को मिलने जाना । और व्यवसाय सम्बधी जैसी बातों को न करें । यदि आप वहन कर सके तो छुट्टियाँ मनाने की विशेष सैरगाह जों कि प्राय किसी शान्त जगह पर होती है, जाएँ । यदि आप परिवार के साथ छुट्टियाँ मना रहे हों तो स्थान ऐसा हो जहाँ लोग आपको जानते न हों । आप उचित तरीके से एकदम खुलकर स्वाभाविक होकर वो सब खरीद सकते हैं । जो आप चाहे । आप जहाँ ईच्छा हो या जहाँ चाहें खा सकते है, जैसे भी कपड़े पहनना चाहे पहन सकते हैं । उसके अलावा भी अनेक आप अपने ईच्छानुसार कर सकते है । और यही वह सब कुछ है, जो आपकों सही

मायनें में आराम दे सकता है । यदि आप कोई प्रचारक है, तो स्वर्ग के लिए अपने प्रचार कि कोई भी लिखित सामग्री अपने साथ लेकर मत चलिए या कही पर बोलने के आमंत्रण को मत स्वीकारइये । आपकी पत्नी और बच्चे आपसे नफरत करेंगे, छुट्टियों से हटकर अपनी पत्नी को कम हप्ते में एक या दो बार शाम को कहीं टहलने को ले जाएँ । यह घर आने वाले उन लोगों से बचने का भी अच्छा तरीका है । जो आपका पारिवारिक समय चुरा लेते हैं । अपनी पत्नी के लिए फूल खरीदें । यह मत कहिए कि उसके पास पैसे हैं, वो जो चाहे खरीद सकती है । महिने में कम से कम एक बार बाहर खाना खाएं । किमतो को लेकर हमेशा तुलना या गुणा भाग न करें । आपकी दिनचर्या बर्बाद हो जायेगी ।

घर में आपकी दोहरी भूमिका है, जिसे आपको निभाना है । पति के रुप में और दूसरी एक पिता के रुप में । आप पहले पति है उसके बाद पिता, आप इस क्रम में कोई बदलाव न करें, उदाहरण के तौर पर यह आवश्यक नहीं कि जब आप अपनी पत्नी के साथ शाम को टहलने जाएं तो अपने बच्चों को भी साथ लेकर जाएं । केवल जब आप एक पति के रुप में अपनी वचनबध्दता निभाएँगे तो आप प्रभावशाली पिता बन सकते हैं । एक पति और पत्नी एक शरीर हैं, लेकिन आपके माता-पिता और बच्चों के साथ ऐसा नहीं है यद्यपि वो खून के रिश्ते से जुड़े हुए हैं । अपनी पत्नी को पर्याप्त पैसे दीजिए ताकि जो कुछ भी वह चाहती है खरीद सके । हर समय खरीदारी करने पर उसे भाषण मत दीजिए । क्या फर्क पड़ता है, यदि वह कोई निम्न दर्जे का समान खरीदती है । क्या आपने अपने चुनाव में गलती नहीं की है ? फिर क्यो ंखरीदारी के समय गलत चुनाव करने का दोष सिर्फ उसे ही दिया जाना चाहिए । महत्वपूर्ण क्या है, खुशी या पैसा ? एक झल्लाए हुए पति ने पूछा औरतें क्यों ऐसा कहती है कि वो खरीदारी कर रही है, जबकि उन्होने कुछ भी नहीं खरीदा होता है ? एक समझदार पत्नी जवाब देती है, कि क्यों एक पति कहता है, कि वह मछली पकड़ रहा है, जबकि उसने कुछ भी नहीं पकड़ा होता है ?

९. रोमाँच जगाइये :-

शारीरिक संम्बध पति की प्राथमिक जिम्मेदारी है, कि वह अपनी पत्नी को प्रसन्न करे । बाईबल की यह शिक्षा है कि जो पुरुष हाल का ब्याहा हुआ हो वह सेना के साथ न जाए और न किसी काम का भार उस पर डाला जाए वह वर्ष भर स्वतंत्रता से रहकर अपनी ब्याही हुई स्त्री को प्रसन्न करता रहे । (व्यवस्थाविवरण २४:५) जबकि हम पति-पत्नी की सामुहिक जिम्मेदारियों के संम्बध में बात कर रहे हैं, इस बात पर ध्यान दें कि, पति का नाम पहले लिया जाता है । पति के जो भी वैवाहिक कर्तव्य उसी के लिए बनते हैं । उन्हे उसे पूरा करना चाहिए । और इसी प्रकार पत्नी को भी पति के प्रति अपने कर्तव्य पूरा करना चाहिए (१कुरि ७:३) अब्राहम और सारा दोनों बहुत बूढ़े हो चुके थे, फिर भी वह अब्राहम के साथ आनन्द मनाने के संम्बध में बात कर रही है (उत्पति १८-११-१२) विभिन्न सर्वेक्षणों और साक्षातकार के अनुसार बहुत कम प्रतिशत पत्नियाँ यौन संम्बधो का लुप्त उठाती है । वो बड़ी सहजता से इस कठिन परीक्षा को बर्दाश्त करती रहती है । मसीही पुरुष को इसे एक चुनौती के रुप में लेते हुए यह निर्णय लेना चाहिए कि वह यौन संम्बधो के दौरान कभी भी स्वार्थी नहीं हो । पर्याप्त समय लीजिए जल्दबाजी न करें । अन्यथा इसके बिना ये निसन्देह असम्भव है, बच्चों को दूसरे कमरे में सोने दीजिए । छोटी से छोटी चीज वंचित कर देती है । आप स्पर्ष चाहते है, लेकिन उसकी ईच्छा बात करने की है । यदि आप यौन सम्बध स्थापित करना चाहते है, तो ऐसे दिन का चुनाव करें जो आपकी पत्नी के लिए कम से कम तनावयुक्त हो । थके हुए घोड़े को मत मारिये किसी ने कहा है । कि यौन संम्बधो की शुरुआत नाश्ते के समय प्रारंभ होती है । अचानक से यौन संम्बध की मांग न करें और तत्काल प्रतिक्रिया की अपेक्षा न रखें । वह कोई फटफटी नहीं है कि पैर मारते ही चालू हो जायेगी । यदि आप हर बार आनन्द और सन्तुष्टि के चरम स्तर तक पहुचते हैं, तो क्या कम से कम उसे हर बार उस स्तर तक नहीं पहुंचना चाहिए । ईमानदार बनें, जब कभी आप उसे सन्तुष्टि के चरम स्तर तक पहुंचाने मे असफल हो उससे माफी मांगे, इस पूरे क्रिया-कलाप के बाद उसका धन्यवाद करना न भूलें । औरतें वास्तव में जो कामना करती है, उसे अपने पति को बताने में शर्म महसूस करती हैं । वो पतियों की सन्तुष्टि के लिए सहजता का दिखावा करती हैं । अपनी यौन जिन्दगी को पुर्नजीवित करने के इस विषय सम्बधि अच्छी किताबों का सहारा लीजिए । (वैवाहिक क्रिया-कलाप) एक बहुत अच्छी किताब है और प्राय: सभी देशो में उपलब्ध भी है । गर्भधारण का भय यौन सुख को मार डालता है । किसी योग्य चिकित्सक की सलाह लें, और रोकथाम के

उचित उपायों का चिकित्सक की सलाह लें, और रोकथाम के उचति उपयों को अपनाएं । किसी ने कहा है कि यदि हरेक पति गर्भधारण करे और एक बच्चा पैदा करे तो परिवार नियोजन की मुहिम १०० सफल हो पायेगी ।

१०. सच्चाई और धर्मज्ञान बताएं :-

आप परिवार के पुरोहित है । उदाहरणों और व्याख्याओं के द्वारा ईश्वरीय सच्चाई को बताने वाला शिक्षक बनें । घर में पत्नी की अपेक्षा पति को काफी खाली समय होता है । इसलिए आप ज्यादा पढ़ सकते है । और ज्यादा अभ्यास कर सकते हैं । मसीही साहित्यों के प्रतिपादन के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो, विशेषकर धर्मशास्त्र के विश्लेषण और टिप्पणियों के लिए । अपने किताब से क्या पढा और क्या ध्यान किया अपनी पत्नी के साथ उसे बाँटिए । जब कभी आप धर्मशास्त्र संम्बधी समयों या चेतना समयों से वापसी आयें तो अपनी पत्नी के साथ बैठिए उसे बताइयें कि आपने क्या सीखा अन्यथा आपकी पत्नी आपके साथ नहीं बढ़ पायेगी, आपको हर प्रकार से उसे खीचना ही होगा । एक औरत का सन्सार पुरुष की अपेक्षा कहीं ज्यादा तनावपूर्ण होता है । निराशा के चलते अपनी स्त्री भावना को प्रस्तुत करते समय हो सकता है, कि वह बातों या तथ्यो को सार्थकतापूर्ण ढ़ग से न कि परमेश्वर की योजनाओं को समझ सके । जब अय्यूब की पत्नी ने अपने पति से कहा कि परमेश्वर की निन्दा कर और मर जा उसने उत्तर दिया क्या हम जो परमेश्वर के हाथो से सुख लेते हैं, दु:ख न लें (अय्युब २:९-१०) और अन्त में वह तीन अति सुन्दर रानियों की सम्मानित माँ बनी (अय्युब ४२:१५) उसका आशय यह नहीं कि एक पति को हमेशा एक सिखानेवाला और पत्नी को सीखने वाली हो होना चाहिए । आप सर्व शक्तिमान परमेश्वर के बेटे हैं । और वह उसकी बेटी । आप दोनों स्वर्गीय पिता के बच्चों के समान हो, तुम यह समझ लो कि तुम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हो (१पतरस ३:७).

उस व्यक्ति पर आशीष हो जो अपनी पत्नी को खुश रखता है । वी भी खुश रहेगा ।

अपने पति को सम्मानित करनें के १० तरीके :-

१. उसे स्वीकार करें चाहे वह विलक्षण प्रतिक्षा सम्पन्न हो या कोई दोषपूर्ण प्रतिभा रखता हो । उसे कभी यह एहसास न दिलाएँ कि आप उससे गहरा प्यार तभी करेगी जब कि वह अपने आपको बदलेगा, या सिर्फ तभी जब वह आपके मापदंण्डो और प्राथमिकताओं को पूरा करेगा । प्रेमपूर्ण स्वीकृति एक सुखद वैवाहिक जीवन के निर्माण में सहायक होती है । और प्राय: उन लोगों के लिए भी सहायक सिध्द होती है । जो बढ़ना चाहते है, और बदलना चाहते है ।

२. जब वह ऐसा कुछ करे जिससे आपको खुशी मिलती है, और परिस्थितियों का कुशलता से सामना करे या जब परमेश्वर द्वारा दिये गये वरदानों और योग्यताओं परमेश्वर की ईच्छा के अनुसार उपयोग करे तो उसका समर्थन कीजिए और उसे उत्साहित कीजिए । प्रसास करें कि कम से कम दिन में एक बार उसे उसके बेहतर कामों के लिए बधाई दे या उसके अन्दर की उस प्रतिभा के लिए उसकी सराहना करें । उसके सामने या पीछे उसका अपमान, अवमानना या उसे नीचे दिखाना जैसी बातो को न करें । उसकी कमजोरियो का मजाक न बनाएं या दूसरे लोगों के सामने उसका अपमान न करें विशेषकर अपने बच्चों के सामने ।

३. सोच विचार और व्यवहार विनिमय के विभिन्न तरीको को समझिये जैसा कि पुरुष यर्थातता के अनुरुप, कम से कम भावनाओ ंके वशीभूत होकर और जब कभी आप चाहते हैं कि आपकी योजनाओं भावनाओं और जरुरतों में वह आपका साथ दे वह हमेशा समाधान या उपाय देने को तैयार रहता है । उससे ऐसी अपेक्षा मत कीजिए कि वह आपके मन या दिमाग की बात को पढ़ लेगा, या आपके अनकहे सकेतों को वह प्रारम्भ करने से पूर्व ही सावधान करना चाहती होगी, प्रिय मैं चाहती हूँ कि कुछ समय तुम मेरी बातों पर कान लगाओ या ध्यान लगाकर सुनो क्योंकि वह आपकी अपेक्षा के अनुरुप प्रतिउत्तर या व्यवहार नहीं कर रहा ऐसी स्थिति में प्रतिरक्षात्मक होने की बजाए उसकी यर्थात बातों और उपायों को भी भली भाँति सुनें । वह क्या कह रहा है, हो सकता है कि वह उस समय परिस्थिति के अनुकूल न लगें या उचित न लगे । लेकिन वह सब यर्थात होगा जो कि सहायक सिध्द होगा । वह क्या कहता है उस पर ध्यान दीजिए, उस समय पर भी जब आप अपने विचारों के प्रति उसका दृष्टिकोण चाहती हो । जब वह अपनी भावनाएं, योजनाएं, और समस्याएँ आपके साथ बाँटता है, तो हमेशा इस बात का ध्यान रखें कि जल्दी में किसी बात की कोई सलाह या किसी सवाल का बिना सोचे-समझे तुरन्त जवाब न दें ।

४. अपनी प्राथमिक भूमिका को भंली भांति निभाएँ, एक पत्नी के रुप में, भूमिका जो परमेश्वर ने विशेष रुप में भूमिका जो परमेश्वर ने विशेष रुप सें आपके लिए बनाई है, या एक पत्नी के लिए बनाई है । तुम्हारे पति की प्रिय, स्नेही सहायक होना । अपने अन्य किसी क्रिया-कलाप, स्वार्थ, दिलचस्पी या महत्वकांक्षा को अवसर के इस महत्वपूर्ण भूमिका को निकलने न दो जिसे परमेश्वर तीतुस २:४-५ में अच्छी तरह बताता है "पालन पति से प्रेम करो, अपने बच्चो से प्रेम करो, बुध्दिमान और शुध्द बनो, घर में अच्छा काम करने वाली बनो, और अपने पति के आधीन रहो ।"

५. परमेश्वर द्वारा दी गयी उसकी अगुवाई को अपने वैवाहिक जीवन और परिवार में स्वीकार करें । आप इसे इस प्रकार भी प्रदर्शित कर सकती हैं ।

   १. हमेशा अपने आचार-विचार और व्यवहार में सम्मान या आदर प्रदर्शित करने के द्वारा
   २. समर्पित, समर्पण को हमेशा श्रेष्ठ और उत्तम समझा और माना गया है (इफि ५:२२-२४)

और जब कभी उसके द्वारा लिए गये निर्णयों का प्रतिसाद अच्छा न मिले, उसे कभी यह मत याद दिलायें कि उसे आपकी आत को मानना या सुनना चाहिए था । परमेश्वर अपने न्याय में उसकी (पुरुष की) अपेक्षा कहीं ज्यादा आसानी से धर्म विरोधी सम्बंधीको अनदेखा या अस्वीकृत कर सकता है । (इफि ५:२२-२३) परमेश्वर यह नहीं कहता कि एक पत्नी केवल तभी अपने पति की अगुवाई का सम्मान, और उसकी अगुवाई को समर्पित रहें जब उसका पति भी धर्म के अनुसार अपनी भूमिका को निभाएँ । और पतरस ३:१-२ दिखाता है कि पति को आप से जोड़े रखने के सम्बंध में परमेश्वर का मापदंण्ड एक समान है, फिर चाहे वह अविश्वासी की ही क्यों न हो । और इस प्रकार का आदर-सम्मान सम्भव है, उसे परमेश्वर की ओर लाने का एक बेहतर तरीका हो या बनें ।

६. उसके लिए प्रार्थना करें, उसकी शक्ति और स्थिरता के लिए धन्यवाद देते हुए, उसके अच्छे विचारों के लिए, विशेषकर तब जब आप दोनों आँखो-आँखो में नहीं देख पाते हो) और धर्म विरोध में कोई गलत निर्णय कर बैठते हो । भावनाओं और एहसास की बजाए प्रार्थना आपकी सहायता कर सकती है । परमेश्वर पर विश्वास कीजिए, यह सब कुछ आप पर निर्भर करता है । अपनी प्रार्थनाओं में उसके उज्जवल और चमत्कारिक पहलुओं की ओर ध्यान दे न कि उसके उदासीन और दोषपूर्ण पहलुओं की ओर ऐसा ही नजरिया अपने विचारों और बातचीत के दौरान भी अपनांए ।

७. उसकी सेवा ऐसे करो जैसे कि तुम प्रभु की सेवा करती हो । (इफि६:७) उसे प्रसन्न करने और उसकी आवश्यकताओं को पूरी करने के विशेष तरीको के विषय सोचों साथ ही दैनिक क्रिया कलाप पूरी गर्मजोशी और सकारात्मक दृष्टिकोण से निभाओ ।

८. दया और बुध्दिमानी से वार्तालाप की आदत को बढ़ाइये । आपका पति आपके सुझावों और भावनाओं को आहवान और उन पर विचार करना और अधिक पसन्द करेगा यदि आप उन्हें एक बीज के समान उचित समय और परिस्थिति में बोलोगी या रखोगी, बजाए इसके कि आप उन्हे धर्म सिध्दान्त की युक्त कीलों की तरह ठोकोगी या बहस और वाद-विवादपूर्ण मनसा या उसे परेशान करते हुए रखोगी (महिलाएं इसे याद दिलाना कहती है, पुरुष इसे सिर खाना या परेशान करना कहते हैं ।) अपने द्वारा बोए गये बीज को प्रार्थना के साथ पानी दीजिए और परमेश्वर पर विश्वास रखें कि वह उन्हे अंकुरित करे और बढ़ाए ताकि वह उसके समय के अनुसार और जो वह चाहता है, वैसे बन और बढ़ सके । ऐसी परिस्थितियों में अत्यधिक विश्वस की आवश्यकता होती है । – बजाए इसके कि एक असाधारण और महान परमेश्वर पर साधारण से विश्वास

९. उसके प्रति क्षमाशील और धैर्यवान बनें । वह भी आपके समान ही दोषपूर्ण और गल्तियाँ करने वाला इन्सान ही है । जो इस भृष्ट संसार में जीवन निर्वाह हेतू कठिन परिश्रम कर रहा है । उसके अनेको पापों और दोषों को प्यार से ढ़ाँप दो जैसे परमेश्वर ने तुम्हारे पापों को ढ़ाँपा (१ पतरम ४-८) जब यह आवश्यकता हो कि उसकी आँख से कोई तिनका निकालना पडे, कपास के छोअे नर्म गोले का उपयोग करे । न कि बेलन या किसी नुकीली चीज का प्रयोग करें, और पूरी सावधानी बरतें । इस बात का भी पूरा ध्यान रखें कि जब आपको उससे क्षमा मांगने की आवश्यकता पड़ती है, तो आपके क्षमा मागने का तरीका पूर्णत: सम्मानजनक धैर्यपूर्ण, विनम्रतापूर्ण या किसी स्वार्थ के वशीभूत नहीं होना चाहिए, न व्यक्तिगत धार्मिकता का घमण्ड कि मैं ज्यादा जानती हूँ, या मैं ज्यादा धार्मिक हूँ इस प्रकार का अनुभव आपके अन्दर न झलके ।

१०. सबसें महत्वपूर्ण और उपरोक्त सभी बातों की सफलता का आधार है कि परमेश्वर को अपने हृदय में प्रथम स्थान दें और दिन ब दिन परमेश्वर के साथ तुम्हारा संम्बध और अधिक मजबूत होता जाए । यूँकि एक अच्छे पति की अपेक्षा कही बेहतर वह तुम्हे सुरक्षा और सारी जरुरतें प्रदान करता है । या एक सुनहरा भविष्य – क्या हव्वा पा सकी । और (नीतिवचन ३१:२७-३) के अनुसार जो स्त्री प्रभु का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी (परमेश्वर का आदर, विश्वास और आज्ञा मानती हो) उसकी प्रशंसा होगी उसके पति के द्वारा उसके बच्चों के द्वारा और दूसरों के द्वारा । अपने पति को समर्थन देने और उसे प्रोत्साहित करने का एक महत्वपूर्ण और विशेष तरीका है प्रेम निर्माण में सकारात्मक बने रहना, ऐसा मत सोचिये कि यौन सम्बंध पुरुष के लिए सिर्फ शारीरिक सन्तुष्टि और एक आनन्द के समान है । यह उससे भी बढ़कर है, यह पुरुष को अनुमोदक और स्वीकार्य का एहसास दिला सकता है । यौन सम्बंध जो उसें स्वतंत्रता और आसानी सें प्राप्त हो जाता था उसके लिए उसे रोकना या आपका नकारात्मक प्रतिउत्तर यौन संम्बधो के प्रति उसकी सदासीनता को बढ़ा सकता है । इन सब से उसे आपके प्रति अविश्वासपात्र होने का प्रोत्साहन मिल सकता है । आपका ऐसा व्यवहार आपको आपकी वास्तविक ताकत से भी विमुक्त कर सकता है । परिस्थिति के अनुरुप समर्थन बनाने की बजाए यदि आप प्रेम निर्माण और प्रदर्शन के प्रति अनिच्छा और असमर्थता जताते हैं, तो आप समस्या के समाधान की बजाए उसे हमेशा बनाए रखते हैं । और यह परमेश्वर की नजरो में सीधे-सीधे अनाज्ञाकरिता है (देखें १ कुरि ७:३-६) समर्पित व्यवहार का आशय यानि दरवाजे का पायदान (पैर पोछने का कोई कपड़ा) होने से नहीं है या अपने विचारों और सुझावों को दबा लेना, दफन कर लेने से या शान्त रहने से कि आपका पति नाराज होगा या आपको गलत समझेगा । पवित्र शास्त्र में पुरुष के बोलने सम्बंध में जो दिशा निर्देश है, उनमें खुलकर बोलना भी शामिल है (गला ६:११ इफि ४:२९ नीतिवचन १६:२१, २५:१५, १२:१५, १५:१ समोपदेशक ३:७ आदि)

परमेश्वर द्वारा नियोजित भूमिका में जीवन निर्वहन आपको पत्नी के रुप में बहुमूल्य बनाता है, आपके पति और परमेश्वर दोनों की नजरों में । यह आपको सामर्थ, सम्मान और गौरव प्रदान करता है । (नीतिवचन ३१:१०:२५:२८, १ पतरस ३:४-५)

वैवाहिक जीवन में विचार विनिमय हेतू दिशा निर्देष

नीतिवचन १८:२१, २५:११, अय्यूब, याकूब ३:८-१०, १ पतरस ३:१०

१. सुनने को हमेशा तैयार रहिए, और तब तक कोई जवाब मत दीजिए जब तक दूसरा अपनी बात पूरी न कर ले। नीतिवचन १८:१३, याकूब १:१९.

२. अपनी बोलचाल में उतावले न हो, पहले विचार कीजिए फिर इत्मिनान से बोलिये, और इस प्रकार बोलिये कि दूसरा व्यक्ति उसे समझ सके और उससे सहमत हो सके नीतिवचन १५:२३, २८, २१:२३, २९:३० याकूब १:१८

३. हमेशा प्रेम में सच्चाई से चलते हुऐ बोलिए, बढ़ा - चढ़ाकर मत बोलिए (इफि ४:१५, २५ कुलु ३:९)

४. दूसरे को व्याकुल या निराश करने के लिए बातचीत के दौरान शान्त मत हो जाइयें, आप इस बात को उजागर कीजिए कि क्यों आप इस समय बात करने से हिचकिचा रहे हैं।

५. झगड़ो में शामिल मत होइयें, यह संम्भव है कि बिना झगड़ा किए भी किसी बात की असहमति जताइ जा सकती है। नीतिवचन १७:१४, २०:२ इफि ४:२६, ३१

६. गुस्से से किसी बात का प्रति उत्तर न दें। पूरी विनम्रता और धैर्य से प्रतिउत्तर दें। नीतिवचन १४:२९, १५:१, २५:१५, २९:११ इफि ४:२६, ३१

७. जब आप गलती हो तो उसे स्वीकार करें और क्षमायाचना करें याकूब ५:१६ जब कोई आपसे अपनी गलती मान लें तो उसका हौसला बढ़ाएं, उससे कहें कि आपने उन्हें माफ किया। इस बात का ख्याल रखें कि आप उस गलती को पूरी तरह भूल चुके हैं। और उसकी याद कभी भी अगले व्यक्ति को नहीं दिलाएंगे नीतिवचन १७:९ इफि ४:३२ कुलु ३:१३ १ पतरस ४:८

८. परेशान न करें (सिर न खाएं) नीतिवचन १०:१९, १७:९, २०:५

९. दूसरे व्यक्ति पर दोष न लगाएँ न ही मजाक बनाएँ। उपदेश देने की बजाए उत्साहित करें, पुर्नस्थापित होने का अवसर प्रदान करें रोमियों १४:१३ गला ६:१ १ थिस्सलु ५:११ यदि कोई आप पर बातचीत के माध्यम से दोष लगाए या आपका मजाक बनाएँ तो उसका प्रतिउत्तर उसी अन्दाज या उसी प्रकार से न दें। रोमियो १२/११४, २१ १ पतरस २:२३, ३:९

१०. दूसरे व्यक्ति के विचारों को समझने का प्रयास कीजिए। मत भिन्नता को अनदेखा करें या नरमी बरते, दूसरों की भलाई का ध्यान रखें, फिलि २:१-४, इफि ४:२

अन्य दिशा – निर्देश और सिध्दांत

- अपनी सेवकाई (धार्मिक सेवाकार्य) को अपनी पत्नी/पति या बच्चों से ज्यादा प्राथमिकता न दें ।
- पत्नियां अपने पति का आदर करना सीखें और उसे व्यवहार में लायें । पति अपनी पत्नियों से प्रेम से रहना सीखें और उसे व्यवहार में लाएँ और उससे अपने प्रेम का इजहार करें ।
- साथ-साथ मिलकर हंसिये खुशी मनाइये ।
- अपने पति-पत्नी को सच्चा मित्र बनिये ।
- माफ करने की कोशिश करें, संम्भव हो तो पश्चताप करें, आवश्यकता हो तो पुर्नस्थापित हों ।
- इस बात को माने कि कोई भी पूरी तरह योग्य नहीं है, आपकी पत्नी / पति में भी दोष है, जैसे कि आप में हैं ।
- आर्थिक मसलो पर मिलकर कार्य करें लेकिन पति इस दिशा और विषय पर ज्यादा से ज्यादा जिम्मेदारी निभाए ।
- पति के मार्गदर्शन में घर का संचालन हो ।
- पत्नी ही वास्तविक रुप में एक घर को घर बनाती है ।
- परमेश्वर ने विवाह संरचना और व्यवस्था खुशी और एक अनन्त आनन्द के वरदान युक्त संम्बध के रुप में की है, यदि इनमें से किसी एक बात की भी कमी है तो आपका कुछ चोरी हो गया है ।
- एक दूसरे की परेशानियाँ, आशा, आकांक्षाओं आदि को आपस में बाँटिये । कोई फर्क नहीं पड़ता कि वो कितनी मजाकिया या छोटी जान पड़ती हो ।
- अपने आपसी प्रेम और आकर्षण को अपने बच्चों के सामने प्रदर्शित कीजिए । इससे वो सचाई को सिखेंगे न कि टेलिविजन या किताबों में प्राय: दिखाए जाने वाली बातों को । उन्हे इससे प्रेरणा मिलेगी और वो भी अपने वैवाहिक जीवन में इन बातों को उपयोग में लाएंगे ।
- अपने बच्चों के सामने मत झगड़िये न ही किसी प्रकार का वाद-विवाद करें ।
- परिवार प्रारम्भ करने से पहले और अगला बच्चा पैदा करने से पहले आपसी सहमति हो
- प्राय आपसी विचार – विनिमय और वार्तालाप प्रेमपूर्ण हो ।
- विवादित विषय या समस्या को दबाकर न रखें वें कहीं न कहीं, कभी न कभी उभरकर सामने आयेंगे ।
- आपस में खुलापन हो कोई भी बात छिपायी न जाए (पारदर्शिना हो)
- आपसी लाड़, प्यार, प्रेमालिंगन साधारण बातचीत का एक अंग हो ।
- बाईबल में कहीं भी ऐैसी लोकोक्तियो जैसे एक पुराना थैला या मेरा बुड्ढा आदमी (या औरत) यह या वह कोई काम का नहीं का प्रयोग नहीं किया गया है । इसलिए आपको भी ऐैसा नहीं करना चाहिए ।
- अपने पति / पत्नी की बुराईयों पर विचार करने से पहले उसकी अच्छाइयों पर नजर डालें ।
- पति अपनी पत्नियों पर उनके मासिक धर्म की वजह से पड़ने वाले प्रभावों को समझें, उसे महसूस करें और उस पूरे दौरान उसकी सहायता करें ।
- एक साथ एक कमरे में बैठकर बातचीत करें दूसरे कमरे या दूर से बातचीत न करें ।
- यदि सामाजिक स्वीकृति हो बाहर जाते समय हाथ में हाथ या बाहों मे बाहें डालकर चलें ।
- प्रतिदिन साथ मिलकर प्रार्थना करें ।
- विशेषकर जब घर में छोटे बच्चे हो तो समम्भवत आपकी पत्नी पूरे दिन बच्चों की सी बातों में व्यस्त रहेगी, आप जब काम से वापस आयें तब ही उसे किसी व्यस्क या बराबरी के आदमी से बातचीत करने का अवसर मिलेगा ऐैसी स्थिति में उसे अपने आप को व्यस्त करने का पूरा समय और स्थान दें ।
- आज तक किसी ने भी घर की साफ-सफाई या घर ठीक-ठाक रखने के लिए कोई सोने का पदक नहीं जीता फिर भी हर कोई घर को आवभगत के लिए साफ सुथरा और सवाँरता है ।

- प्राय सभी काम बार-बार किए जाने वाले, नीरस और उकता देने वाले होते लेकिन विवाह ऐसी चीज है जो जीवन में स्फूर्ति, जोश भर देती है, तथा जीवन का सही मतलब प्रदान करती है ।
- विवाह में आप परमेश्वर के विषय बहुत कुछ सीखेगे ।
- अपनी सारी पारिवारिकता का प्रधान यीशु को होने दीजिए ।
- शारीरिक सम्बधों के लिए नये-नये प्रयोग कीजिए कभी समय को लेकर तो कभी स्थान को लेकर या कभी दशा को लेकर ।
- आत्मिक या धार्मिक न हों ।
- छोटी-मोटी खरीददारी के लिए दूसरे शहर जायें इस प्रकार आप अपनी पत्नी को पसन्द और नापसन्द को बेहतर जान पायेंगे ।
- प्रशंसा, बढ़ाई और उत्साहवर्धन प्रदर्शित करें ।
- सभ्य और शिष्ट बने ।

उपरोक्त बातों को एक सूची के रुप में देखा जा सकता है । कि क्या करें और क्या न करें । क्या नहीं ? यही वह सब कुछ है जिसे हम एक उन्नत और फलते-फूलते सम्बध के मुख्य घटक या अवयव के रुप में प्राप्त करना चाहते हैं । यह प्रार्थनापूर्ण और आहवान की आशा के साथ बताया और बाँटा गया है । ताकि यह एक सुखद विवाहिक जीवन निर्माण में सहायक सिध्द हो सके । सन्देह नहीं कि आप इसमें कुछ और जोड़ सकें ।

परिपक्वता और निर्माण में बने रहते हुए निरन्तर आगे बढ़ते रहें यूंकि परमेश्वर ने हम सब के लिए कुछ न कुछ सुरक्षित रखा है । जो कुछ भी आप एक जोड़े या सामूहिक रुप से करें परमेश्वर के लिए करें । हर प्रकार से और हर बात से हमारे परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह को महिमा मिले ।

सम्बंधों और विवाह में दरार लाने वाली चीजों से दूर रहना

१. उदास या दुखित मनोदशा

२. हमारे सम्बधो में अनिछा, अभिरुचि, ऊब जाना और खालीपन, तथ एककीपन का एहसास ।

३. एक दूसरे कि समस्याओं, रुचि शौक और कामों के प्रति उदासीनता या महत्वहीनता ।

४. एक दूसरे के प्रति या ओर उदासीनतापूर्ण या शान्त क्षण ।

५. हमारे बीच पर्याप्त लगाव का अभाव और सामान्य शिष्टता या आदर सम्मान

६. असुरक्षा और जलन द्वेष का एहसास ।

७. पति / पत्नी की अपेक्षा दूसरों के द्वारा या दूसरों की नजरों में बेहतर समझे जाने का एहसास ।

८. निरन्तर मतभिन्नता, असहमति या झगड़े ।

९. विभिन्न विषयों और बातों पर आपसी या एक साथ मिलकर योजनाएँ बनाने का अभाव ।

१०. पर्याप्त आपसी वार्तालाप का आभाव, अधिकाधिक विचार-विनिमय भौतिकीय या मशीनी अन्दाज में, साधारण दैनिकता जैसे और उपरी तौर पर, दिल से न होना ।

११. कार्यो को साथ मिलकर न करने की मनसा या पिछड़ापन ।

१२. एक दूसरे का आदी या अभ्यस्त होने का एहसास ।

१३. मैं या मेरी अपेक्षा पैसे और दर्जे, स्थान और अहमियत की ओर अधिकाधिक रुझान ।

१४. एक दूसरे का फायदा उठाना ।

१५. एक दूसरे को अनुदान समझना ।

१६. हमारे सम्बंधो में कोई उत्साह नहीं ।

१७. साथ मिलकर पर्याप्त सुखद समय न बिताना ।

१८. अनादर, अशिष्ट व्यवहार, व्यंग्य या ताना कशी, आलोचना ।

१९. हमेशा दूर भागना, एकाकी होना जैसे टी. वी. देखना, कोई खेल या सामाजिक कार्यो में व्यस्त रहना या शराब आदि पीना ।

२०. एक दूसरे की आश्चर्यजनक क्षमताओं या योग्यताओं को कम करना ।

विवाह में भूमिकाएँ

निम्नलिखित सवालों के प्रति अपने दृष्टिकोण के लिए उचित अंको पर गोल लगाइयें इसके पश्चात अपने जवाबों के विषय साथ मिलकर विचार विमर्श कीजिए ।

-	पति घर का मुखिया या प्रधान है ।	१, २, ३, ४, ५,
-	पत्नी घर के बाहर कोई काम नही करना चाहिए ।	१, २, ३, ४, ५,
-	पति को रोज घर के बरतन माँजने में सहायत करनी चाहिए ।	१, २, ३, ४, ५,
-	बच्चों की सारी जिम्मेदारी पत्नी की है ।	१, २, ३, ४, ५,
-	पत्नी जो पैसा कमाती है, वह सिर्फ उसका ही है ।	१, २, ३, ४, ५,
-	पति को हप्ते में एक रात बाहर बिताना चाहिए ।	१, २, ३, ४, ५,
-	पैसों का सही खर्च सामूहिक खाते के द्वारा किया जा सकता है ।	१, २, ३, ४, ५,
-	वैवाहिक जीवन या विवाह ५०:५० का अनुपात है ।	१, २, ३, ४, ५,
-	दुर्गम या अवरोध की स्थिति में महत्वपूर्ण निर्णय पति द्वारा लिए जाने चाहिए ।	१, २, ३, ४, ५,
-	आय-व्यय की योजना पति-पत्नी को साथ मिलकर बनानी चाहिए ।	१, २, ३, ४, ५,
-	यह एक स्त्री के लिए उचित है, कि वह भी कभी-कभी अपने पति से प्रेम प्रसंग या प्रेमालाप की शुरुआत करे ।	१, २, ३, ४, ५,
-	न पति ना ही पत्नी बिना आपसी विचार विमर्श के कोई ऐसी चीजें खरीदे जो एक दिन के औसतन वेतन से ज्यादा कीमत की हो ।	१, २, ३, ४, ५,
-	पिता ही केवल बच्चों को अनुशासन में रखे ।	१, २, ३, ४, ५,
-	एक पत्नी जो प्रतिभावान है उसका अपना पेशा, जीविका, या जीवन होना चाहिए ।	१, २, ३, ४, ५,
-	एक पति का काम है कि वह बगीचे और गैलरी(अटारी) की साफ सफाई करे और उसे सुसज्जित रखे ।	१, २, ३, ४, ५,
-	एक माता नैतिक मूल्यों को सिखाएं ।	१, २, ३, ४, ५,
-	बच्चे परिवार की नियोजित गतिविधियों में मदत करे ।	१, २, ३, ४, ५,
-	स्त्री पुरुष की अपेक्षा ज्यादा भावुक है ।	१, २, ३, ४, ५,
-	बच्चों का विकास उस घर में बेहतर होता है जहाँ कड़ा अनुशासन होता है ।	१, २, ३, ४, ५,
-	एक पत्नी जो कुछ भी उसका पति करने को कहता है, उसका पालन करे ।	१, २, ३, ४, ५,
-	न पति न ही पत्नी अपने-अपने माता पिता को अपने साथ रहने के लिए अपने घर लायें ।	१, २, ३, ४, ५,
-	एक पति-पत्नी मिलकर यह निर्णय करें कि परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए कौन सी जिम्मेदारी उचित है ।	१, २, ३, ४, ५,
-	जिस प्रकार पति बच्चों को अनुशासन में रखता है । पत्नी भी अनुशासनशीलता के के लिए उत्तरदायी है ।	१, २, ३, ४, ५,
-	एक जोड़े को या पति पत्नी को अपना खाली समय एक दूसरे के साथ व्यतीत करना चाहिए ।	१, २, ३, ४, ५,

१- पूर्णत: सहमत, २-किंचित या थोडी सहमति, ३-आश्वस्त नहीं, ४-किंचित या थोडी असहमति, ५-पूर्णत: असहमत ।

वैवाहिक प्रतिज्ञाएँ

१. अपने विवाह समारोह के उस क्षण को स्मरण कीजिए ठीक वैसे ही जैसे आपने कहा था, अपने विवाह की प्रतिज्ञाओं में अपने एक दूसरे से क्या वायदे किए थे । एक दूसरे के साथ और एक दूसरे को अच्छे और बुरे समय थामें रहेंगे । जब तक मृत्यु न अलग कर दे, एक दूसरे के साथ अमीरी, गरीबी, बीमारी और भले दिनों में एक दूसरे को प्रेम और प्रसन्न रखेंगे ।

२. वो सारे समझौते क्या थे ।

३. एक दूसरे से विचार विमर्श कीजिए कि अब इस प्रतिज्ञात्मक संम्बध का आप दोनों और आपके वैवाहिक जीवन में क्या महत्व या मायने है, तथा अपने निष्कर्षो पर ध्यान दीजिए ।

४. प्रतिज्ञाओं के प्रति आपकी नई समझ के अनुसार

क्या यौन कम आत्मिक है? – एक बाइबल का दृष्टिकोण

यौन परमेश्वर से एक सुन्दर दान है। पति और पत्नी के बीच शारीरिक घनिष्ठता को परमेश्वर ने पाप के संसार में आने के पहले ही निश्चित किया था। पुरुष और स्त्री को एक पति और पत्नी के रूप में एक "तन" बनने के लिए बनाया था। एक दूसरे के सामने उनके नंगेपन के कारण कोई लज्जा पैदा नहीं हुई (उत्पत्ति 2:24-25)।
बाइबल पति और पत्नी को चिताती है कि वे उनके शरीर एक दूसरे को बिना किसी रोक-टोक के दें। लिखा है, "पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नहीं पर उसके पति का अधिकार है; वैसे ही पति को भी अपनी देह पर अधिकार नहीं, परन्तु पत्नी का है। तुम एक दूसरे से अलग न रहो; परन्तु केवल कुछ समय तक आपस की सम्मति से कि प्रार्थना के लिए अवकाश मिले, और फिर एक साथ रहो; ऐसा न हो कि तुम्हारे असंयम के कारण शैतान तुम्हें परखे। (1 कुरिन्थियों 7:4-5)
1 कुरिन्थियों 7:29-31 का अक्सर गलत अर्थ निकाला जाता है। यह परिच्छेद पाँच पहलुओं से निपटता है: जीवन साथी, जीवन की समस्याएँ, जीवन के सुख, जीवन की सम्पत्ति और जीवन के लाभ। संदेश यह है कि ये सब पृथ्वी की हैं, अनन्त नहीं। उदाहरण के लिए, रोना गलत नहीं है जब कोई मृत्यु या हानि होती है; लेकिन हमें पुनरुत्थान की अपनी आशा को भूलना नहीं है। उसी प्रकार चीजें खरीदना गलत नहीं है; लेकिन हमें याद रखना है कि हम उन्हें सदा के लिए नहीं रख सकते और न स्वर्ग ले जा सकते हैं। उसी प्रकार, पति और पत्नी का सम्बंध केवल इस "गुज़रते" पृथ्वी के जीवन के लिए ही है। साथी स्वर्ग में पति या पत्नी के रूप में नहीं होगा, लेकिन वे स्वर्गदूतों जैसे होंगे। (मरकुस 12:23-24)

यह एक गलत विचार है कि यौन केवल प्रजनन के लिए है। <u>यौन को परमेश्वर ने सुख और प्रजनन दोनों के लिए बनाया है।</u> "तेरा सोता धन्य रहे; और अपनी जवानी की पत्नी के साथ आनन्दित रह, प्रिय हरिणी या सुन्दर सांभरनी के समान उसके स्तन सर्वदा तुझे सन्तुष्ट रखें, और उसी का प्रेम नित्य तुझे आकर्षित करता रहे।" (नीतिवचन 5:18-19)। विवाह के बीच यौन का सुख बिलकुल वैध है। केवल विवाह के बाहर यह पाप है। अगली आयत में एक प्रश्न है: "हे मेरे पुत्र, तू अपरिचित स्त्री पर क्यों मोहित हो, और पराई को क्यों छाती से लगाए?" (आ. 20)। "विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और विवाह-बिछौना निष्कलंक रहे, क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा।" (इब्रानियों 13:4)
पौलुस ने भविष्यद्वाणी की कि अन्तिम दिनों में दुष्टात्माओं की एक शिक्षा विवाह करने से रोकना होगा (1 तीमु. 4:1-3)। ये पाखंडी अगुवे परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के साधनों का आनन्द लेने नहीं देंगे लेकिन उनकी अति-आत्मियता के लबादे से उनको धोखा देंगे। सावधान !
फिर ये कौन हैं जो "स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए हैं ?" (प्रका. 14:4)। इस अनुच्छेद को पूरी बाइबल के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। "अशुद्ध" शब्द यौन अनैतिकता और व्यभिचार का सुझाव देता है, क्योंकि परमेश्वर ने पहले ही कह दिया है कि विवाह-बिछौना निष्कलंक रहे (इब्रा. 13:4)। बारह प्रेरितों के नाम नए यरूशलेम की दीवारों की नींवों पर लिखे हुए हैं (प्रका. 21:14); और इनमें से अधिकतर प्रेरित विवाहित थे और उनमें से कई उनकी मिशनरी यात्राओं पर उनकी पत्नियों को साथ ले जाया करते थे (1 कुरिन्थियों 9:5)। और, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक अन्योक्ति-संबंधी है। पाठ में "स्त्री" शब्द अभक्त सांसारिक प्रणाली भी हो सकती है। इसलिए जब बाइबल में दूसरे स्थानों पर विवाह में यौन की पवित्रता के बारे में इतना साफ-साफ सिखाया गया है, इसलिए एक आयत से अर्थ निकालना गलत होगा जो यह नहीं कहता है।
संसार सब जगह यौन आकर्षण से भरा हुआ है। कोई भी पुरुष या स्त्री शैतान की पहुँच के बाहर नहीं है कि इस चीज में परीक्षा महसूस न करे। इसलिए हर पुरुष की उसकी अपनी पत्नी हो, और हर पत्नी का उसका अपना "पति" हो, और हर एक "फिर एक साथ रहो", और फिर एक साथ रहो। (1 कुरिन्थियों 7:2,5ब)

क्या परिवार नियोजन गलत है?

परिवार नियोजन हाल की चीज है। इसलिए हमें बाइबल में इस विषय पर सीधी शिक्षा नहीं मिलेगी। पवित्रशास्त्र में दिए पितृत्व के बारे में सामान्य सिद्धान्तों पर विचार करने पर, हमें आज के संदर्भ के लिए निर्देश बनाने चाहिए।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को फलने-फूलने और पृथ्वी को भर देने के लिए कहा था (उत्प. 1:28)। यह एक विशेष आज्ञा थी जिसे पहले दम्पती को दिया गया था जब पृथ्वी अभी भी खाली थी। लेकिन आज कई देश जरूरत से अधिक भरे हुए हैं। दूसरे नागरिकों के समान मसीहियों की भी सरकार के साथ सहयोग करने की एक नैतिक जिम्मेवारी है कि जनसंख्या को सीमित किया जा सके और संबंधित समस्याएँ हल की जा सकें।

पिताओं के लिए 10 करो और मत करो

हर पिता की भूमिका का एक भाग परिवार में ढाँचे और अनुशासन की एक सही भावना लाना है !

1. **सुधारने के पहले सम्पर्क बनाओ**
   हर पिता की भूमिका का एक भाग परिवार में ढाँचे और अनुशासन की एक सही भावना लाना है ! अपने बच्चे के साथ बातचीत करना, जिसमें उनके मामले के "हिस्से" को सुनना शामिल है, एक सफल, स्नेही अनुशासन में पहला कदम है।

2. **वहाँ रहो**
   एक सबसे बड़ी कहानी यह है कि थोड़ा सा "उत्तम" समय समय की "संख्या" की कमी को पूरा कर देता है। स्कूल जाना, खेल-कूद और दूसरी घटनाएँ एक बड़ी बात है। यह आपके बच्चे को कहता है – "मेरे हृदय में तुम्हारे लिए मैं बहुत अच्छा सोचता हूँ।" केवल अपने कामों के बारे में ही मत सोचो, बल्कि दूसरों के बारे में भी, और वे क्या कर रहे हैं यह भी – फिलिप्पियों 2:4।

3. **अक्सर प्रेम व्यक्ति करो**
   बच्चे, (विशेषकर किशोरावस्था के पहले और किशोर भी), ऐसे दिखाते हैं कि वे नहीं चाहते उनके माता-पिता उनके बारे में "नाटक" करें। यह केवल दिखावा है। बच्चों को आलिंगन और चुबंन चाहिए होते हैं... हर अवसर पर दो।

4. **नकली, मर्दाना पुरुष केवल फिल्मों में पाए जाते हैं**
   असली पिता सिद्ध नहीं हैं। आप अपने बच्चों के लिए हीरो हो सकते हैं यदि आप उनके लिए अपना हृदय खोलें और मान लें जब आप गलती करते हैं। उनमें क्षमा करने की एक विशाल क्षमता होती है और उनके हृदय की इच्छा प्रेम करना और प्रेम पाना होती है। जो लोग उनके पापों को छिपाते हैं सफल नहीं होते। लेकिन यदि वे उनको मान लेते और छोड़ भी देते हैं, वे दया पाएँगे। (नीतिवचन 28:13)

5. **कभी भी अपने बच्चे को माता या पिता में से एक को चुनने के लिए विवश मत करो**
   यदि आपकी अपनी पत्नी के साथ समस्याएँ हैं, तब अपने बच्चे को विश्वास दिलाने की कोशिश मत करो कि आप "सही" हो या "शिकार" हो। इससे आपके बच्चे में भावात्मक दरार पड़ जाती है और अन्त में उसे आप से दूर कर देगी। बड़ों के मामलों को बड़ों तक ही रखो।

6. **अपनी पत्नी से प्रेम करो**
   संसार का सबसे महान पिता उसके बच्चों पर उसके प्रभाव को कम करेगा यदि वह उसके बच्चों के सामने भक्त घनिष्ठता का आदर्श नहीं पेश करता। वहीं पर उनके भावी विवाह के कोने का पत्थर रखा जाता है। क्योंकि परमेश्वर ने आपको पवित्र लोग होने के लिए चुना है जिनसे वह प्रेम करता है, आपको कोमल दया, कृपया, भलाई, दीनता, नम्रता, और धीरज को पहन लेना है। आपको एक दूसरे की गलतियों के लिए छूट देनी है और जो व्यक्ति नाराज़ करता है उसे क्षमा करना है........और सबसे महत्त्वपूर्ण कपड़ा जिसे आपको पहनना है प्रेम है। प्रेम ही है जो हमें सिद्ध समन्वय में इकट्ठा करता है। कुलुस्सियों 3:12-14)

7. सुसंगत बनो

जब आप अपने कार्यो, प्रेम और अनुशासन में एक समान होते हो, सुरक्षा का एक वातावरण बनता है। बच्चों को जानने की जरूरत है कि कुछ चीजें हैं जिन पर वे हमेशा भरोसा कर सकते हैं। जब तक आशा है अपने को अनुशासित करो। यदि आप नहीं करते, आप उनके जीवन नष्ट कर दोगे। (नीतिवचन 19:18)

8. सावधान रहो, आप सुर्खियों में हैं

आपके बच्चे आपकी हर चाल को देखते रहते हैं। कुछ सीमा तक, आपके बारे में उनका चित्र उनके स्वर्गीय पिता का उनका चित्र बनाता है। आपके पास एक सकारात्मक, स्नेही चित्र बनाने या एक उलझा हुआ और कुटिल चित्र बनाने का अवसर है। उसके बदले, आपके विचारों और रवैयों की एक आत्मिक जाग्रति होनी चाहिए। आपको एक नया स्वभाव दिखाना है क्योंकि आप एक नए व्यक्ति हो, जिसे परमेश्वर के स्वरूप में धर्मी, पवित्र और सच्चा बनाया गया है। (इफिसियों 4:23-24)

9. अपनी जीभ की रखवाली करो

जिन शब्दों को आप अपने बच्चों से बोलते हैं या तो एक चाकू के समान काट सकते हैं या उन्हें एक रॉकेट के समान ऊँचाई पर ले जा सकते हैं। वे उन कुछ चीजों को उनके जीवन भर याद रखेंगे जिन्हें आप यूँ ही बोलते हो। मुख्य शब्द मधु के समान हैं – प्राण के लिए मीठे और शरीर के लिए स्वस्थ्यकारी। (नीतिवचन 16:24)

10. भक्त चरित्र विकसित करो

कोई भी चीज आपके बच्चे को उतना प्रभावित नहीं करेगी जितना आपको परमेश्वर के साथ सम्बंध में बढ़ते देखता कर सकती है। आप सुसमाचार का प्रचार अपने कार्यो के द्वारा कहीं अधिक प्रभावशाली तरीके से कर सकते हो जिसे आप अपने शब्दों के द्वारा नहीं कर सकते। और अब, जैसे आपने मसीह यीशु को अपना प्रभु ग्रहण किया था, वैसे ही आपको उसकी आज्ञा में चलते रहना है। अपनी जड़ों को उसमें गहरी होने दो और उससे पोषण पाते रहो, जिससे आप विश्वास में बढ़ोगे और सत्य में जिसे आपको सिखाया गया था दृढ़ और उत्साही बनोगे। आपके जीवन उस सब के लिए धन्यवाद से उभरते रहें जो उसने आपके लिए किया है। (कुलुस्सियों 2:6-7)

मेरी पुत्री के लिए स्नेह सहित, तुम्हारे पिता की ओर से

प्रिय पुत्री,

कुछ साल पहले मैने एक नाटक देखा जिसकी मुख्य पात्र एक युवा स्त्री थी, जिसका अपने प्राध्यापक से काफी दोस्ताना संम्बध स्थापित हो जाता है, और वह प्राध्यापक उसका फायदा उठाता है, और उसे अकेला छोड देता है । मैं अपने अन्दर उठे उन विचारो को याद करता हूँ, कि इतनी सहजता से कैसे उसने इतना बडा मुर्खतापूर्ण कायम किया ।

अब मैं इस बात को महसूस करता हूँ कि बहुत सी स्त्रियाँ जो इस सन्सार में बाहर काम करने जाती है, उन्हे शैतान की नीचतापूर्ण युक्तियों से निपटने को पूर्णता तैय्यार रहना चाहिए तथा चालाक पुरुषों की धोखाधडी से पूर्ण सावधान रहना चाहिए, बहुते माता-पिता शर्म के चलते इस तरह के नाजुक विषयों पर बातचीत नही करते । लेकिन यदि हम तुम्हें नही बाताते, तो हम उस ज्ञान और समझ को तुमसे छिपा रहे है, जो कि तुम्हारे लिए सहायक हो सकता है । (नीति २:१०) एक दुखद: वाक्यांश आप जवान स्त्री से सुन सकते है "कि काश मुझे किसी ने बताया होता"

मुझे कभी-कभी तुम्हारे बहुत चिन्ता होती है, यूंकि इस पुरुष प्रधान संसार में एक स्त्री के लिए जीवन निर्वहन करना आसान नही है । परन्तु यह बात मुझे काफी सन्तोष देती है, कि प्रभू यीशु मसीह जिसे तुम जानती हो इतना सामर्थी है, कि वह तुम्हे हरेक शैतानिक युक्तियों सें सुरक्षा दे सकता है । फिर भी हमें परमेश्वर के वचन से सीखना है । कुछ बातें में तुम्हे बाताऊंगा जो कि आज्ञाकारिता और आधारभूत बातों के सन्दर्भ मे अत्यंत प्रभावी हो सकती है । याद रहे कि, बहुत सारी दुखद घटनाएँ प्राय: साधारण आधारभूत बातों की अनभिज्ञता के कारण होती है । इस प्रकार की घटनाओं के प्रति तुम उतनी जागरुक और सचेत नही रह सकती, इसलिए यह पत्र मैं तुम्हें लिख रहा हूँ ।

तामार एक जवान रानी थी और बहुत खुबसुरत थी, लेकिन उसका जीवन एक दुखान्त था, आप उसकी पूरी कहानी शमुएल १३:१-२२ में पढ सकते है । अब जब आपने उस पूरे अध्याय को पढ लिया है । हम उसके इस दुर्भाग्य से क्या सीख सकते है ।

पुरुष की कामवासना (लैंगिकता) को समझना

जब एक पुरुष के अन्दर आयु अनुसार स्वाभाविक कामवासना का स्तर आता है, तब एक पुरुष स्त्री का विरोधी जान पडता है । यह विस्मयकारी प्रभाव उस बाढ से समान होता है, जो अपने रास्ते आनेवाली हर चीज को किनारे करते हुए अपना रास्ता तय करती है, उनकी अतिसंवेदनशीलता के इस स्तर का अन्दाजा प्राय: स्त्रियों को नही होता उनके लिए यह समझ पाना अत्यंत कठिन होता है, कि कैसे एक युवा प्राध्यापक के स्वाभाविक व्यवहार में अचानक बदलाव आ सकता है, कैसे एक ज्ञान की प्रतिमुर्ति, सहजवृति के चलते जानकर बनने को आमादा हो सकता है । पढिए शभुएल १३:१५

देखिए कि प्रेम और घृणा के बीच महल एक पतली लकीर जितना ही अन्तर होता है । पुरुष के अन्दर की कामुकता बहुत ही आसानी से एक भावानात्मक स्नेह से किनारा कर सकती है । इस प्रकार की विरक्तता या असहयोग प्राय: विपरित भावनात्मकता के घटने बढने से संम्बधित हो सकता है । इसलिए स्त्रियों के लिए यह महत्वपूर्ण है, कि इस बात को समझे कि, उनके न चाहने के बावजूद भी एक पुरुष बडी आसानी से समपर्ण या प्यार को दर किनार कर कामुकता या यौन क्रिया कलाप को अपना सकता है । जब एक सुन्दर युवा पुरुष आपसे कहता है कि "वह आपसे प्यार करता है" इसका क्या मतलब होता है ? क्या वह स्वार्थ है, एक शैतानिक मानसिकता पूर्ण प्रेम जो कि, क्षणिक रुप से आपकों अपने सम्मोहन की मनोहरतापूर्ण चिंगारियो की गिरपत और झुलसाने के लिए होगा, केवल भरने के लिए, धुएँ में बदलने के लिए, जो कि आपके जीवन मे पूर्णत: अन्धेरा ले आयेगा और आप कही खों जायेंगे अस्तित्व विहित हो जायेगे ? या एक सच्चा प्यार जो कि एक अनन्त और अटूट प्रेम के सदृष्य स्वच्छता और चमक के साथ प्रज्जवलित होगा ।

अपने आप को सुरक्षित रखना :-

तामार एक फाख्ता (पक्षी) के समान सीधी थी, लेकिन चतुर नही थी, वह बहुत ही भोली – भाली और सरल स्वभाव की थी (नीति वचन १४:१५) उसने चेतावनियों के सभी संकेतो को अनदेखा किया । शायद उसने सोचा होगा कि अम्नोन उसे कही ले जायेंगा, और वो शादी कर लेगे, और आनन्द और खुशी से जीवन बिताएंगे (जैसे कि सिनेमा में होता है ।)

ओह आप कहेगें वह कुछ नही कर सकी, शायद वह इस बात का इन्कार नही कर सकी कि, जब राजा दाऊद ने उसे अम्नोन के पास जाने को कहा । वह अपने साथ रिबेका की तरह किसी सहेली को लेकर जा सकती थी । (उत्पति २४:६१) यदि वह इन सब बातो के विषय नही सोच सकी तो जब अग्नोन ने सबको बाहर जाने का आदेश दिया तब तो एक चूहे की तरह परिस्थिती को सूंघ कर अन्दाजा लगा सकती थी और वहाँ से निकल कसती थी । में जब अम्नोन उससे कमरे में चलने का आग्रह कर रहा था, उसे कमरे में जाना नही चाहिए था, किन्तु हाय । इस तरह की कोई भी बात उसके दिमाग में नही आयी और तब तक तो बहुत देर हो चुकी थी, बहुत देर । जब तक कि वह कमरे के अन्दर नही गयी थी, तब तक ही उसे कोई आदेश या हिदायत दी जा सकती थी । लेकिन उसके बाद वह (अम्नोन) प्रभावी हो गया यूकि वह बलवान था । (२शमुएल १३:१४) वहाँ हर जगह पर खतरे का संकेत था, किन्तु उसने एक बाद एक हर संकेत को अनदेखा कर आगे बढ गयी, और अब तक बहुत देर हो चुकी थी । हमारे सीखने के लिए बहुत कुछ यहाँ पर है । आपको उत्पति में ३४:१ और २ कि ओर ले जाना चाहूगा जहाँ एक और जवान स्त्री गलत स्थान पर जाकर मुसीबत में पड गयी । अपने आपको कभी भी ऐसी परिस्थितियों मे न ले जाये जो फिसलन भरी हो, अपने आपको कभी किसी पुरुष के साथ किसी कमरे में अकेला न होने दे जब तक कि दरवाजे पूरी तरह खुले न हो । हो सकता है , कि कोई परुष ५७ वर्षीय हो लेकिन इस बाते संम्भावित खतरे पर कोई प्रभाव नही पडता यह एक दूसरी काल्पनिक बात है, जो कि सत्य नही । किसी पुरुष की आयु को लेकर सुरक्षा की सम्भावना बेमानी है । पुरुष बडी आसानी से दृष्टिगत लैंगिक उत्तेजना से उत्तेजित हो जाते है । पुरुषों को कभी न परखे, याद रहे कि पुरुष इस क्षेत्र में परखे जाने के दौरान ज्यादा देर तक धैर्य नही रख सकते, वह कमजोर है (लैगिंक कमजोरी) इसलिए कोई ऐसा परिधान या कपडे पहनने का निवेदन न स्वीकारे जो लैंगिक उत्तेजना को बढता हो तुम्हारे मनों (हृदय) की सुरक्षा (नीतिवचन ४:२३) :-

परमेश्वर का जीवित वचन कहता है कि “आपने मनोभाव की चौकशी करो । एक समय आयेगा जब तुम किसी पुरुष से अत्याधिक संजीदा संम्बध स्थापित करने की कल्पना करोगे । इससे पहले कि इस दिशा में तुम आगे और कुछ करो, मैं कुछ सलाह तुम्हें देना चाहूँगा इन महत्वपूर्ण पहलुओं पर विचार करे ।

औरतों के अन्दर भी एक अपेक्षित खनक और व्याकुलता होती है, जिसे भावनात्मक सहारे और दूसरो के द्वारा समझे जाने की आवश्यकता होती है । औरते दूसरों के द्वारा प्रशंसित होता, बात करना, अंलिगन और सुखद स्पर्श की बाट जोहती है कुछ पुरुष इन बातो को भली भाँति जानते है, और अपनी स्वार्थ सिध्दी के लिए इन बातो का उपयोग एक हथियार के रुप से करते है, इसलिए अपने मनोभावों की चौकसी करो ।

जानकारी प्राप्त करना :-

क्या कुछ एक गंभ्भीर जानकारियाँ प्राप्त करना अत्यन्त कठिन होता है ? आप कह सकते है, कि आपसी समन्वय या अरेन्ज मेंरिज में यह बात लागू नही होती सिर्फ इसलिए कि क्योंकि आपकी शादी आपके माता पिता ने सम्पत्र करवाई, इसका ये मतलब नही कि आपकी कोई जिम्मेदारी नही यह बात वहाँ मुख्य रुप से लागू होती है, जहाँ माता पिता पारिवारिक स्तर, शिखा और पैसा तथा चालचलन के विषय अत्यधिक गंभ्भीर होते है । अन्तिम निर्णय आपका होता है, यूकि यह आपके जीवन का संवाल है । यदि आप अपने माता पिता और अन्य पारिवारिक बुजुर्ग लोंगो के निवेदन और बातो के अनुसार नही कर सकते । रुथ को याद कीजिए वह समझदार और चालाक थी, उसने नाओमी द्वारा दी गयी सलाह और जानकारियों को भली भांति पालन किया ।

मैं एक जवान स्त्री को जानता हूँ जिससे उसके प्रेमी ने कहा कि लोग जो कुछ भी उसके विषय कहते है, उस पर विश्वास न करें क्योंकि वो जलते है, और इसलिए वो मुझे बोलते है, ताकि हमारा संम्बध खराब हो जाये अब हमें इस प्रकार के शब्दो के प्रति पूरी सावधानी बरतनी होगी । आखिर किस संम्बध में जानना चाहजा है, आपके विभाग या आपकी बौध्दिक क्षमता क्या आप अपने विवेक से उस पर भरोसा कर सकती है । इस युवा स्त्री के इस सम्पूर्ण प्रसंग मे वह स्त्री पहले ही अपने आप को उस प्रेम के हवाले कर चुकी है (श्रेष्टगीत ८:४, ६-७) और समर्पण की इस दशा में वह स्त्री बहुत आगे के विषय नही सोच सकती । की उसके स्वत: उसका (उस पुरुष) विश्वास करने की बात ठान ली थी, बाद में जब सच्चाई से उसका सामना होता है, तब तक बहुत देर हो चुकी थी बहुत देर ।

शायद आप सोचेंगे कि “कितना हास्यापद या बेतुका है, पिताजी क्या आप सोचते है, कि मैं कोई गूँगी हूँ मेरे प्यारे बच्चे मै जानता हूँ कि तुम गूँगी नही हो, किन्तु मैने अपने दीर्घ जीवनकाल में इन बातो को बखूबी समझा और जाना है, यहाँ तक कि जिन बातों की कल्पना नही की जा सकती ऐसी बाते हो जाती है, और ये बाते बार-बार होगी । दिमाग सोच सकता है, लेकिन मन नही । विवाह से पहले के उन भावना के प्रवाह को इतना कम मत आँको (श्रेष्टगीत ८:७) यह प्रवाह सुन्दर से सुन्दर स्त्री का भी दिमाग पर से नियंत्रण

खत्म कर सकता है । और यदि आप किसी के लिए आपने विवेक पर नियंत्रण खो देते है, तो यशाशीघ्र आप अपने शरीर पर भी नियंत्रण नही रख पायेंगे

अब वापस अपने सवाल पर गौर करते है । क्या वह शादीशुदा है ? यदि जबाब “हा” है तो याद रहे कि आप की दशा लुटने या कुछ चुरा लिए जाने जैसी है (नीति वचन ६:३०-३२) यदि आपका जवाब है कि “मुझे नही मालूम तो गलती न करें, आप बहुत पतले बर्फ के टुकडे के उपर खडे है ।

क्या उसका प्यार सच्चा है :-

सच्चे प्यार का अनुमान आत्म नियंत्रण और आपसी सम्मान के परिणाम से लगाया जा सकता है, सच्चा प्यार अपने प्रेमी या प्रेमिका के प्रति क्रमशः सुरक्षा, शुध्दता तथा सुस्पष्ट अन्त:करण या मानसिकता हो बचाएं रखने की योग्यता रखता है । इसलिए यदि कोई पुरुष आपसी संम्बधो के दौरान शारीरिक क्रिया कलापो में ज्यादा रुचि दिखाए तो सावधान । आपको इस सन्दर्भ मे बातचीत करने की आवश्यकता है । यदि वह आपके व्यक्तित्व और आपकी परिस्थितीयों का सम्मान करने की पात्रता रखता है, तब तो उसका प्यार सच्चा हो सकता है ।

यह कदम उठाना काफी निर्णायक और कठिन होता है, आप सोचेंगे कि आपका निर्णय या कदम कही उसे आपसे दूर न कर दे, हो सकता है, आप उसे खो दे । लेकिन दूसरी महत्वपूर्ण बात यदि उसका प्यार सच्चा है, तो आप उसके श्रध्दा, सम्मान और स्नेह पैमाने में और अधिक ऊचा उठ सकती है । वह यह सब कहेगा नही लेकिन आपके इस कदम के लिए आपका और अधिक सम्मान करेगा । आखिर कौन चाहता है कि कोई ऐसी स्त्री से विवाह करे जो पहले ही अपना सब कुछ लुटा चुकी हो ? वो सोचेगा “यदि यह आज मुझे सब कुछ दे सकती है, तो हो सकता है, पहले भी उसने अपना सब कुछ किसी को दिया हो, या भविष्य मे किसी को दे बैठे और यदि आप अपना अभिप्राय स्पष्ट रुप से रखे और वो नाराजगी जताये, तो आप जानती है, कि उसका इरादा आदर योग्य नही था, उसका गुस्सा और झल्लाहर इस बात के परिचायक है । जैसे कि दलीला (न्यायियो १६:१५) वह यह कहने लगती है ।

कि “तुम मुझसे प्रेम नही करते, क्या तुम मुझपर विश्वास नही करते ? वह एक चालाक आदमी है । एक बार जब उसने चाहा था वह उसे मिल गया वह अपने अगले पडाव के नए कौतुहल की तलाश में बढ सकता है और तुम जो कि बुहुमुल्य और महत्वपूर्ण हो उसकी टोपी में लगे एक और पंख बनकर रह जाओगी ।

यदि उसके दिल मे कोई कपट नही था, तो वह सरल और सीधे तरीके वे कह सकता था, यदि तुम इस सन्दर्भ में ऐसी महसूस करती हो, तो आओं हम इसें यही समाप्त कर दे । चिन्ता की कोई बात नही तुमने विश्वास रखते हुऐ कुछ खोया नही है । वह एक अच्छा इन्सान हो सकता था यहाँ तक कि एक अच्छा विश्वासी भी । परन्तु यह स्पष्ट है, कि जीवन के प्रति उसका तत्व - ज्ञान उसे बाईबल की शिक्षाओं से कही पर लेकर जा रहा है ।

स्त्रियों का दायित्व :-

और एक महत्वपूर्ण बात की, इन सारी बातो को एक साधारण या एक पुर्वानुभवित योजना न बनाए । खुद धर्मी हो जान और फरीसियाँ के समान अपने आपकों धार्मिक समझना इन सारी बातो से किसी को कोई लाभ नही पहूँचनेवाला, परमेश्वर ने प्रेम और लैंगिक क्रिया कलाप को बनाया और देखा कि यह बहुत अच्छा था । आपसी वार्तालाप और हँसीमजाक अच्छी और आनन्दायी बात है, परन्तु ये सब सबके सामने और खुलेआम करें और जो औरों को मान्य और स्वीकार्य हो । किसी भी बात की जल्दी और अतिश्योक्ति किसी बडी दुर्घटना, विपत्ती या अनर्थ के नुस्खे के समान होती है । जो आपको एक ऐसी अपराध या दोष में छोड देगी जिसे मिटाना अत्यधिक कठिन होगी । यहाँ तक कि उसी व्यक्ती से जिससे साथ यह सारा घटनाक्रम घटित हुआ विवाह क्यों कर ले ।

एक विवाहित के लिए इससे बढकर बदतर पतन और विनाश की बात और क्या हो सकती है ? बुराइ बचा रहता है समाज के द्वारा किसका बहिष्कार होना है । एक स्त्री का (यहुन्न ८:३) परमेश्वर ने स्त्री को आकर्षण तथा नियंत्रण की विलक्षण प्रतिमा प्रदान की है । नीतिवचन ७:२६ में कहा गया है, कि इस प्रतिमा को शैतानिक दृष्टिकोण से इस्तेमाल किया जाता है । स्त्रियों यदि तुम्हारे जीवनों में परमेश्वर की आशीष और दया न हो तो तुम इन लाभकारी बातों की खो बैठोगी यदि तुम अपनी महत्वपूर्णता के प्रति लापरवाही बरतोगी या उनका ख्याल नही करोगी अपने जीवन को सांसारिक आकर्षण या बातों के चलते इतना उलटा या महत्वहीन समझने का कोई समझोता मत करो इस दुख के साथ तुम्हे बहुत समय बिताया होगा ।

यदि इन प्रोत्साहनपूर्ण बातो से तुम्हारे अन्दर यह एहसास घर कर गया है, तो मुझे बहुत चिन्ता है, कि मैने या मुझसे कोई गलत काम हो गया है । किसी भी दुर्घटना में कार का कोई दोष नही समझा जाता परन्तु चलाने वाला या ड्रायव्हर दोषी होता है । सम्भवत: आपने यह हास्यास्पद चुटकूला सुना हो "दुर्घटनाओं का अधिकाधिक कारण प्राय कार का कोई कलपुर्जा या उसकी खराबी होता है, फिर वो चाहे चक्के के बाद लगने वाला नट भी हो सकता है । मुझे गलत न समझे मैं यह नही कह रहा हूँ कि ड्रायविंग न करे यह बहुत खतरनाक है । मैं कह रहा हूँ कि अपनी ड्रायविंग सीट पर किसी अन्य पुरुष को बैठने दे, न उसे अधिकार करने दे । जब आप ड्रायविंग करने योग्य हो जाते है, आपको एक सहाय्यक या सिखने वाले की आवश्यकता होती है, परमेश्वर को मौका दे कि वह आपकों सिखाएं और यदि आप यात्रा का लुप्त उठाना चाहते है, अस्पताल या मुर्दा घर के अलावा अन्य किसी और स्थान में जाना चाहते है । तो सावधानी से चलाईये और जो भी आवश्यक नीति निर्देष उनका पालन कीजिए ।

व्याकुल न होना, उपरोक्त तमाम बातों के पालन के प्रयास में तुम्हे शायद यह महसूस हो कि में कैसे एकेली उन ढेरी बातो को चरितार्थ कर पाऊँगी, तुम्हारी माता और में तुम्हारी मदत करेंगे । बातचीत के दौरान एक दूसरे को विश्वास में लेना कभी न भूलना । इन सारी बातो से बढकर यह हमेशा याद रखना कि प्रभू यीशु मसीही सदा तुम्हारे साथ है । "मै तुझे कभी नही छोडूंगा और न कभी तुझे त्यागूंगा (इब्रानियों १ ३:५)

उसका प्रेम सदा के लिए है !

आराधना की अगुवाई और संगीतज्ञ / साज बजाने या गाने वाले (उनका जीवन और सेवकाई)

भविष्य के लिए उदाहरण :-

भविष्य की कलीसियाएँ या भावी कलीसियाएँ निश्चित ही सांस्कृतिक बदलावपूर्ण होगी, मसीही सुसमाचार के पालन करने वाली कलीसियाओं को धार्मिक गाने या मसीही गाने सीखना होगा । चिन्हो और चमत्कारों पर विश्वास करने वाली कलीसियाएँ पुन:नवीन संगीत और भजन का निर्माण करेगी, और प्राचीन कलीसियाएँ नये भजनों को गाना प्रारम्भ करेगी, नविन कलीसियाएँ प्राचीन कलीसियाओं का आदर करे और ठिक इसी प्रकार काली और सफेद कलीसियाओ के माध्यम से सेतु का निर्माण हो । हमारे सास्कृतिक द्वेष और मतभेदो का बाँध उसके पाक उद्देश्यों की प्रचुरता की बाढ में वह जाना चाहिए । हमारी स्तुति, आराधनाओ में भजनो, धार्मिक गानों के अन्तर्गत या उसमें विहित मापदण्डो या आदर्शो का अभ्यास और अनुकरण साधारण है, परन्तु हमारे धार्मिक आचार विचारों पर केन्द्रित प्रतिमान को तोडना या निजाद पाना एक चुनौतिपूर्ण कार्य है । जाने कहाँ ये सारी बातें हमें पहुचाएँगी ? एक अत्यन्त उत्साहपूर्ण समारोह जिसकी कल्पना हम कर सकते है, एक अन्तराष्ट्रीय विविध सम्प्रदाय, विविध भाषा और विविध जातीय, प्रभू यीशु मसीह का समारोह, परमेश्वर पिता का पुत्र । उसके बाद मैने देखा हर एक जाति, कुल, राष्ट्र और भाषा बोलने वाली की एक बडी भीड आयी, वह इतनी बडी थी, कि कोई उसको गिन नही सकता था । भीड के सब प्राणी श्वेत वस्त्र पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियाँ लिए हुए थे । वे सिंहासन के सामने और मेमने के सामने खडे हो गए (प्रकाति वाक्य ७:९)

<u>आरधना करने तथा आराधना की अगुवाई करने वालों में अन्तर :-</u>

आराधना करनेवाले

- परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत अराधनापूर्ण व्यक्तित्व या जीवन का स्वागत करना ।
- अपने आपको ऊँचा उठाना ।
- अपनी दिखावटी आराधना से लोगो को प्रभावित करना ।
- चमक – दमक और दिखावटी व्यक्तित्व प्रदर्शन (१ शमुएल १६:७)
- किसी बडे धार्मिक दर्शन दे पाने की असमर्थतता ।
- व्यक्तिगत उद्देशयों की ओर अधिकाधिक रुझान ।

अपनी ओर ध्यानाकर्षण के लिए दिखावटी पहिनावा या चमकीले या ऐसे कपडे पहिनना जिससे ध्यानाकर्षित हो बडे-बडे उपाय युक्तियाँ सुझाना या ढेंर सारी सम्भावनाएँ बताना, बहुत ज्यादा बात करना, व्यक्तिगत अनुभवो का उदाहरण और उन्हे श्रेष्ठ ठहराना, बहुत जोर के गाना गान, अतिश्योक्तिपूर्ण शीरीरिक गतिविधियाँ, गाने या किसी साज को समय ऐसा प्रदर्शित करना जैसे कोई बडे प्रवीण संगीत तज्ञ हो, सिर्फ दिखावे के लिए कि सबके सामने या सार्वजनिक मान्यता पर उनका एकाधिकार बना रह सके ।

- ✓ अपनी व्यक्तिगत अराधना पध्दती को अन्य मसीही अराधना सांस्करीता से पृथक और ऊँचा ठहराने का प्रयास
- ✓ लोगो को बताना कि कैसे वो तनाव पूर्ण क्षणों का सामना करे ।
- ✓ आराधना क्रम या पध्दति के प्रति कोई समझोता या लचीलापन न करने की वचन बध्दता, सभी कुछ एक योजना या क्रम के अनुरुप संचालित करना ।
- ✓ भीड या समुह की खोज जो सहमति या स्विकृति का परिचायक हो ।
- ✓ शांती बनाए रखने का प्रयास ।
- ✓ माईक या उद्घोषणा का अवसर किसी दूसरे को न देना ।
- ✓ छोटे समुह को या कम लोगो को देखकर दुखित हो जाना ।

आराधना की अगुवाई करने वाले :-

- ✓ अराधना और स्तुति को पूरी गंम्भीरता से ऐसे स्विकारना जैसे वह उनकी जीवन शैली हो ।
- ✓ परमेश्वर को ऊँचा उठाना ।
- ✓ लोगों को अगुवाई प्रदान करे कि वो आराधना और स्तुति के माध्यम से अराधना करे ।

हृदय की सत्य-निष्ठा और ईमानदारी से परमेश्वर के लिए पूरे उत्साह और उमंग से भरे रहना (भजन २७:४) इफि ४:२२-२८)

- ✓ यीशु मसीह के द्वारा छुटकारे की बात हो सबके सामने रखना, लोगों के व्यक्तिगत जीवनो के घटनाक्रम में परमेश्वर की कहानियों, दृष्टांतो और सत्यता को जोडना ।
- ✓ व्यक्तिगत स्वार्थ या उद्देश का न होना ।
- ✓ आकर्षक पहिनावे से लोगों का ध्यानाकर्षण करने की बजाय विनम्रता और ईश्वरीय स्वभाव से लोगो का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना ।

शारीरिक क्रिया-कलाप, भाव भंगिमा, सद्भावना और संकेत इस प्रकार से हो जैसे कि वो आपकी व्यक्तिगत अराधना कि स्वाभाविकता हो जो कुद वचन मं दिया गया है । सिर्फ उसी विषय पर बात करना या परमेश्वर के विषय ज्यादा से ज्यादा गुढ और रहस्यमयी बातो को उजागर करना, ज्यादा से ज्यादा परमेश्वर और उसके कार्यो पर केन्द्रित होना, सुनना लेकिन विनाशकारी और नकारात्मक बातो को नही, कार्य करना लेकिन प्रदर्शन के लिए नही बल्कि प्रभाव के लिए परमेश्वर को अपनी कलाओं और योग्यताओ का दान स्तुति रुपी बलिदान के रुप में चढाना, कभी जरुरत पडे तो परदे के पीछे से या किनारे हटकर कार्य करना ताकि आपका कार्य प्रकाश में आये आप नही ।

- ✓ परमेश्वर को अवसर प्रदान करे कि वो अपने तरीके और ढंग से आपको एक विशिष्ट व्यक्तित्व के रुप मे सँवारे और विशेष वरदानी और अनुभवों से नवाजे ।
- ✓ आराधना स्तुति आनन्दित हृदय से तथा सहज भाव से करना ।
- ✓ स्तुति आराधना के दौरान लोगों को प्रोत्साहित तथा स्तुति मगन कर उसी दशा में रहने देना ताकि या यूँकि अब परमेश्वर उनकी दशा, स्थिति और जरुरत के मुताबित लोगो से मुखातिब हो सके ।
- ✓ लोगो को विभिन्न विकल्प बताएँ और उन्हें उनके मताबित विकल्प का चुनाव करने दे ।
- ✓ तैयारी करे लेकिन इस बात के लिए भी सजन और संवेदनशील रहे कि परमेश्वर क्या कर रहा है । तथा वह क्या चाहता है ।
- ✓ लोगों से उनकी प्राथमिक जरुरतो, आवश्यकताओं तथा परिस्थितियों के अनुसार सम्बंध बनाए रखना ।
- ✓ सदैव संयमी और नियंत्रित रहना, परमेश्वर को अवसर देना कि वो लोगों के टूटे और उदास हृदयों से तथा उनके एकाकीपन में उनसे बोले और बातचीत करे ।
- ✓ दूसरो को अराधना स्तुति की सलाह तथा उत्साह देना, उनको अवसर प्रदान करना कि वो ईश्वर की सेवकाई कर सके ।
- ✓ परमेश्वर की प्रामाणिकता और विश्वसनीयता के लिए हमेशा उसकी जय-जयकार करना कोई बात नही आराधना के दौरान मंच पर या आराधना में कितने लोग है ।

गाना गाने वालों या साज बजाने वालो का जीवन :-

आत्मोन्नति, समर्पण, संवेदनशीलता और दक्षता किसी भी धार्मिक सेवकाई तथा साज बजाने गाने के द्वारा की जानेवाली सेवकाई में इन चार गुणों का होना अनिवार्य है। इन सिध्दातो के बिना बढना कार्य करना, हमारे जीवन और सेवकाई में है तो हममें कुछ कभी है। निम्न अध्ययन, दाउद के काल के तम्बू की सेवा काल के संगीतज्ञ, गायक जो संगीत एवं सेवा करने वाले लोगो के लिए कुछ आवश्यक जीवन शैली है। जहाँ ये बिन्दु नियम दिनचर्या के लिए ये, वे मसीही संगीतज्ञो के लिए लागू नहील होते, किन्तु आत्मिक विशिष्टता और व्यवहार जीवन को प्रवाहित करेगा जो आज के संगीत सेवा मे है।

परमेश्वर के आवश्यकताएँ :-

१. संगीतज्ञ चुने हुए और अलग किए गये हो

१ इति १५:१६-१७, १९, १६:४१, २५:१, २इति २०:२१, २५:१८, २९:२५ नहेम्याह ७:१ ये सब लेवी के घराने से ही चुने हुए थे। (लेवी के तीन संतान थे :- गेरशोन, कहात और मरारी) जो भी परमेश्वर के भवन में सेवकाई करते थे इन्ही तीन गोत्रो में से आते थे। मुख्य संगीततज्ञ भी इन्ही तीन गोत्रो में से एक-एक चुने जाते थे। कनन्याह और असाप गेर्शेनी थे, हेमान कहाती था, युदूतून / एतान मरीरी मे से था। याजकें कहात, अम्राम हारुन, और एलियाजर /एताराम मे से थे।

संगीत सेविकाई याजकीय सेवा :-

सेवा का कार्य यह एक विशेष और पवित्र बुंलाहट है। इसे हल्के से न ले। संगीतज्ञो, गायको के लिए प्रार्थना करने की जरुरत है। और वे इस सेवा के लिए जाऐ।

१. तिमु ३:१०, ५:२२, ४:१४

२ गायक / संगीतकार सफेद एपोद कपडो से सजते थे

१ इति ५:१२, १५:२६ २ इति २९:१५, नहे १२:३०

यह सफेद वस्त्र महायाजक का आंतरिक व एक मात्र पोशाक था।

मसीह के धार्मिकता के चित्रण का ध्यान करे - यशा ६१:१०

यह हमारी धार्मिकता नही परन्तु मसीह का है – १ पत १:१६, प्रका ७:१३ (१४, १९:८)

एक सेवकाई का जीवन धार्मिकता के जीवन से अपृथकनीय जीवन है :-

३ गाने /बजाने वाले पवित्रता के वाचा में प्रवेश करने की जरुरत है। नहे १०:२८-२९

- सभी सेवकाई में मनुष्य अपने आपको इस जगत के लोगों से अलग करता है। यूह २:१५
- अपने परिवार को (बच्चो सहित) अलग रखते है। इन अंतिम दिनो मे, हमें परिवार की आवश्यकता है कि जीवन के सेवकाई के राज्य में एक पूर्ण इकाई बन कर कार्य करे। यदि एक व्यक्ति ही परिवार से सेवकाई मे है। तब वहाँ (सहयोग), प्रेरणा की आवश्यकता और परिवार में समझ चाहिए। बीते निदो तक तोहम केवल लगातार हाजिरी लगानेवाले कलीसिया के सदस्य रहे। परमेश्वर बनाया है कि हम परिवार के साथ्ज्ञ प्रभू के राजय में मिलकर कार्य करे।
- पद २९, वे भाईयों से जुडे रहे – वे एक दूसरे के प्रति समर्पित थे केवल शब्दो से ही नही।
- वाचा – इब्रानी शेबा से यह शब्द निकला है। जिसका अर्थ सात पवित्र संख्या यह एक पवित्र वाचा या श्राप है। इस वाचा को लेने के द्वारा बनाये। गाने वाले अपने समर्पित वाचा को पूरी न करने से प्रभू के शाप को अपने उपर लाते है। कुलु ३:१६ हमे पुराने मनुष्यत्व को उतार फेकना है, और मसीह में एक होना चाहिए
- पदे ३०-३१ विश्वास और जीवन शैली को व्यवहारिक बातों के प्रति समर्पित एक समर्पण जो छोटी जान पडने वाली बातो के लिए भी विश्वास योग्य।
- ३९ पद वे प्रतिज्ञा किए कि परमेश्वर के भवन को न छोड। हम गाने / बजाने वाले तभी न करें जब हमे मन करता हो, हमें विश्वासयोग्य बने रहने के लिए बुलाया गया है। कि खडे रहे जब चीजे हमारे लिए अच्छी बाते न दे रही हो तब।

- यह व्यक्तिगत लोगों के लिए उचित है, या परिवार को संगठित खडा रहना और अपने समर्पण को प्रभू को उचित ठहराना कि जिसके लिए वह बुलाया गया है ा पुरा करने मे जागृत है ा बहुत सारी कलीसियाएँ गायाको, वादको को, अराधना अगुवा को और नाचने वालों को जो परमेश्वर के रीति से करने के लिए उन पर हाथ रख कर लोगों के सामने उलग करते है ा कि वे अब सेवकाई और एकग्रता के वाच्व में समर्पित हुए ा

ब. व्यक्तिगत आवश्यकताएँ :-

१. उन्हे सिखाया जाना चाहिए /सिखाने योग्य १ इति १५:२२, २२:६-८ (भजन ३३:३) इफि ४:११-१६ १ यूहना २:२७

- शिक्षक की योग्यता एक धन है, सुधार के लिए खुलते है और वे कभी नही सोचते की वे सब जानते है, संगीतज्ञता या आत्मिकता मे, यद्यापि आप करते है
- वह तुरन्त गलत नजरिया प्रकट होती है ा
- संगीत पवित्र आत्मा का एक वरदान नही है, यह एक क्षमता है जिसका विकास करना जरुरी है ा यहाँ पर संगीत सेवाएं गाने / बजाने वाले के लिए, आराधना अगुवा और नाचने वालों को अत्यंत आवश्यकता है, कि प्रभू के लिए आगे आकर सीखे ा सिखाए ा
- यह सब सम्भव है, संगीत सिध्दातों में अपने सेवा के व्यवहारिक पाठों मे लगातार दृढ रहिए ा

२. वे विश्वासयोग्य थे

१ इति ६:३२, १६:३७, २इति ७:६, ८:१४, ३०:१५ नहे १२:४५

- वे अपने स्थान पर इतजार किये, द्वारो पर इंन्तजार किए ताकि वे अपनी सेवा से हट न जाएँ, इब्रानी भाष में इंतजार का यानि खडे रहना या रुके रहना ा

ये स्त्री पुरुष परमेश्वर में दिये गये भाग के प्रति विश्वासी रहे. जबकि वे थके रहते थे ा लगातार गायी जानी वाली गीते वाचा के संदूक के सम्मुख कभी भी नही रुका ा हमारी स्तुति सेवा कभी न रुके, हमे हर समय इमानदार बनना सीखे, यद्यपि हमारी सेवकाई में परिणाम न के बराबर दिखाई देता हो ा

रोमी १२:७, “आइए हम अपनी सेवाओ मे इंतजार करे” जब पुराने नियम के गाने /बजाने वाले वाचा के संदूक के संमुख सेवा नही करते थे, वे प्रभू के संमुख ठहरते और अपनी पाली की सेवा के लिए तैयार होते थे ा कभी-कभी हम सोचते है कि प्रार्थना करने के लिए भी व्यस्त है ा लेकिन हम व्यस्त है कि इम प्रार्थना न करे ा

३. वे एकता के लिए प्रयासरत रहे :-

२इति ५:१३, (भजन १३३:१-३, १थिस्लुनी ३:१२)

- परमेश्वर एकता मे आशिषे देता है ा
- बहुधा, अराधना अगुवा, संगीतकारे, मण्डली और बजाने वाले अलग-२ दल के रुप मे अराधना मे ही कार्य करते है ा और एक आत्मा में नही बहते, वहाँ हमारी एक दूसरे पर आवरण की आवश्यकता है, और एक दूसरे की कमजोरी और दक्षता को समझते हुए ा यदि एक गायक गाने के साथ आगे बढता है, और कठिनाई में पड जाता है, वहाँ एक समय होता है कि अन्य गायक और बजाने वाले एवं अराधना अगुवा इसे अपनी क्षमता व श्रेष्ठता से उस गलती को ढके, ताकि अन्य जान न सके कुछ गडबडी हुई थी ा

क. गाने / बजाने वालो का दल का संगठन :-

मुख्य संगीतज्ञ नियुक्त थे १इति १५:१६, २२,२७, २५:१-८ २इति ५:१२, नहे १२:४२ १ इति २३:५ में लिखा है कि ४,००० लोगों ने परमेश्वर का अराधना साजो के साथ किया, जैसे राजा दाउद के राज्याधिकार के आधीन, वे असाप

के, हेमान, येदूतून के २४ संतानो के आधीन २४ शिक्षण अध्याय रखे थे । इन २४ संतानो में करीब २८८ व्यक्ति थे जो दक्ष गायक और वादक थे ।

- परमेश्वर के शासन का तरीका प्रजातंत्र नही है
- हमें अगुवापन चाहिए । तीन संगीत अगुवा सेवा के लिए नियुक्त किए गये थे, कनन्याह सबके उपर गायको का गुरु था ।
  असाप-१ इति ६:३९, १५:१७, २५:१-२, २इति-२०:१४, २९:३०, ३५:१५, मज ५०:७३ ८३
- उसके नाम का अर्थ - वह संग्रह करता और बुराई को दूर करता है ।
- कोई प्रमुख संगीतज्ञ को जीवनो को समझने में काबिल होना चाहिए, और उसके अधीनस्त गाने / बजाने वालों के व्यवहार, क्षमता, कला को भी ।
- संगीत सेवा में लोगो को इक्काठा करता कि वे अराधना के लिए योग्य माहौल बनाए कि प्रभू को देख सके
- **हमान** – १इति ६:३३, २५:५, २इति-३५:१५, भजन ८८ उसके नाम का अर्थ - जो विश्वास योग्य है -कालीसिया गायको और बजाने वालों की इस गुणवत्ता के लिए आज चीख रहा है । हम हमेशा अपनी अप्रतियोगी और आवश्यकता को छिपाने के लिए हम अपने को केवल व्यवहारिक संगीतकार/वाध्यकार अप्रतियोगी और आवश्यकता को छिपाने के लिए हम अपने को केवल व्यवहारिक संगीतकार / वाध्यकार (१/२व्यवहारिक, १/२मानसिक) कहते है यह संतोष प्रद नही है । हमे जो भी हमारे पास है उसमें विश्वासयोग्य रहना चाहिए, जिसे हम करते और कहते है ।
- यदि इन छोटी बातों मे विश्वासयोग्य रहे, तो परमेश्वर की और निहार सकते है, कि वह अपने पर भरोसा रखे । १कुरि - ४:१७, १ तिमु १:१२, ३ यूहना – ५ लूका – १६:१०-१२

  ऐतान / यदुतून – १ इति ६:४४, १५:१७, १९, १६:३८, ४१-४२, २५:१-३, ६ इति ५:१२, २९:१४, ३५:१५ नहे ११:१७ भजन ३९, ६२, ७७ उसके नाम का अर्थ - एक निरन्तर चलने वाली स्तुति एक स्थिर और स्थाई स्तुति, प्राचीन और स्तुति में स्थापित ।

  एतान और यदुतून एक ही जन है ।

  कलीसिया ने अराधना अगुवा के नाते, स्वयं मे वह एक अराधक होना, चाहिए । कनन्याह – १ इति १५:२२, २७ उसके नाम का अर्थ - यहोवा द्वारा स्थापित
- यहोवा द्वारा स्थिर किया गया, स्वामी से स्थायी बनाया गया ।
- जब भी परमेश्वर हमें बुलाता है, वह हमे सुसज्जित और प्रस्थापित करता है, यह हमारा प्रभू मे प्रवेश है, जैसे प्रभू यीशु में उत्तराधिकार मे सहभागी होते है ,
- इन कालो में, इब्रानी पालक स्वय में संतानों के नाम सावधनी से रखते थे, नाम साधारणत: व्यक्तिगत चरित्र को प्रस्तुत करता है, कुछ घटनाए जन्य से ही जुडी होती है, कुछ प्रार्थना करते और कुछ आशा पालको को होता है, कुद संतान तो उनके नाम के साना वाचा समान उनके नाम से जुड जाते है । बहुधा बच्चा अपने नाम के अर्थ को जानने को उद्देश बना लेता है, कि अनुमत करे ।
- सब मुख्य संगीत भवियवक्ता और नबी थे ।
  १इति २५:१-३, २इति २९:३०, ३५:१५
  यहा आज दक्ष गानेवाले / बजानेवालों की नितांत आवश्यकता है ।

२. **<u>गाने / बजान वाले परमेश्वर के भवन में कार्यो को करने में सहायता करते थे ।</u>**

  १ इति – ९:२६-३३, २५:८-३१, २६:२९, नहे ११:२२ (इति २३:२४, मती २०:२६-२८, २३:१०-१२, मरकुस १०:४३-४५, कुरि ९:१९)
- गाने /बजाने वाले सम्पूर्ण लेवीय परिवार के साथ कार्य करते थे, और कार्यो को करने से अपने हाथ गंन्दे करते थे, वे सब केवल मंच दल के लोग वे ढाखरस और तेल तैयार किया
- यह पवित्र आत्मा के अभिषेक को और प्रभू का आनन्द संगीत सेवकाई द्वारा उमडने लगता है ?
- वे चौकीदारी में सहायता किये

- वह भेड की रखवाली करने मे सहलता किए यह गायक/वादक के कर्तव्य में था । हमें लोगो के लिए उपलब्ध रहना चाहिए ।
- वे सुगंध द्रव्य, लोबान और धुप बनाने में सहायता करते थे
- यह मसीहियों को प्रार्थना के चरित्र में, अराधना, और उनके हृदय में परमेश्वर के कार्य के लिए पर्याप्त नम्रता के विषय कहना है । और अपने आप को तोड डाले ताकि उसकी महिमा का सुगन्ध निकल सके, कुरि – २:१५
- गान /बजाने वाले लोग व्यस्त थे
- उनके पास आलस करने के लिए प्रभू के राज्य में ऐसा दिन न मिला ।
- वे आर्थिक प्रबन्धन किए
- हमे मरोषेमाद होना चाहिए ।
- वे मेंट की रोटी तैयार करने में सहयोग करते थे । यह परमेश्वर की चंगाई और वचन को बताता है, और आटा, और हमारे वचन को भी दर्शाता है ।

(वे सेवक थे)

आज कल सेवकों का होने के विषय में बहुत सारी बाते की जाती है, किन्तु जो संगीत सेवा मे है, वे अपनी संगीत को सेवा का हो माग्र के रुप में नही देखते है । हमें इन निम्न क्षेत्रो के लिए भी कार्य करने वालों की आवश्यकता है ।

३. परमेश्वर के पास लगातार स्तुति के गाने हुआ

इति ९:३३, १६:६, १६:११, ३७:४० (इति ६:३२ भजन ३४:१) भजन ११३:३, ११५:१८, १४५:१-३

- वाचा के संदूक के पास गायकों का एक न खतम होने वाली श्रृखला रहता था - यह स्तुतिपूर्ण जीवन का चित्रण है । इब्रा १३:१५, प्रेरित २:४६-४७
- हमें अपना सब कुछ परमेश्वर को देकर पूर्ण शक्ति के साथ उसका भजन करनी चाहिए – १ इति १३:८

४. लेवीय गायकों और संगीतकारे २५ वर्ष से सेवा आरम्भ करते थे –

- गिनती ८:२४, (देखे – अध्याय ८) शमूएल १०:५
- गायक और बजानेवाले पिता के आधीन रहते थे इति – २५:६ वे कई वर्षो तक प्रशिक्षण प्राप्त करते थे उस पवित्र स्थान मे प्रवेश पूर्व,
- हमे कलीसिया गायन मंडली, बाजा बजाने वाले झुण्ड, अराधना स्तुति के दल में जाने से पूर्व कुछ लोग, केवल कुछ नोट,कोर्ड से कही अधिक जानने यानि प्रयाप्त प्रशिक्षण के बाद शामिल होना चाहिए १ – हमें संगीत की बारीकियों को सीखना, ताकि पूरी प्रवीणता से बजा समे (भजन ३३:३) और हमें आत्मिक रुप से तैयार रहना चाहिए ताकि हम लोगो की सेवकाई कर सके ।
- ५० वर्ष के बाद, उन्हे सेवा में बने रहने की अनुमती नही थी, मसीह की सेवकाई मे आयु सीमा नही है, जब तक प्रभू के बुलाहट का आत्मा का बहाव है तब तक आप सेवा कर सकते है ।

५ वहॉ स्त्री / पुरुष, गायक / बजानेवाले थे करते थे, २शमू १९:३५, एजा २:६५, नहे १२:४३

- परमेश्वर तो चाहता है कि देह में सही प्रणाली स्थापित हो
- सेवकाई मे पुरुष व स्त्री के लिए एक उचित जगह है ।

ड. वे कैसे जिए :-

१. उनके अपने मकान व शहरें थी

गिन – १८:२० बयवश्या १०:९ १इति ९:२७, २५ एजा २:७०, नहे १२:२८ यहेज – ४०:४४, गिन ३५:१-१०

- जब प्रतिज्ञा का देश इस्राएल में विभाजित हुइ, लेवीयों को जमीन नही मिली, उनका भाग तो स्वयं परमेश्वर ही था, उनके परिवारों के लिए नगर दिए गये, सोने का कमरा, कार्य करने वालो के लिए मंदिर से लगा कमरा, गाय-बैल, अहार, और आर्थिक सहायता दशवांश से मिलता था ।
- कलीसिया को उनकी सेवा करने की आवश्यकता है, जो सेवकाई ये है, गाने/बजाने वालो की भी

२. **उन्हे नया तेल और दाखरस दिया जाता था ....** नहे १३:५

- दाखरस मसीह यीशु के लहू को दर्शाता है, (मती २६:२७-२९) और पवित्र आत्मा के परिपूर्णता को इफि ५:१८
- तेल आनन्द को दर्शाता है – मर ६१:३
  अभिषेक (बयवश्या ८:८, यहेज १६:२३) पवित्र आत्मा
- हमें प्रतिदिन तेल और दाखरस को अपने जीवन के व्यवहार में लाना चाहिए ।

३. **वे अन्य गायों द्वारा सहायत पाते थे** ।

१इति ९:३३ एज्रा – ७:२४, नहे ११:२३, ११:१० लेब्य २७:३०-३३

- शारीरिक जरुरतो को पूरी करने की जबाबदारी आर्थिक बातों के लिए प्रभू पर भरोसा करने से पूर्व उनकी बुलाहट निश्चित होना चाहिए ।

  जो भी हो वचन कहता है, तुम जुए में जोतने वाले बैल के मुह न बांधना जो फसल को खाता हो और मजदूर को उसकी मजदूरी मिलनी चाहिए । मसीही कलीसिया को इस जिम्मेदारी के तरफ संकेत भी किया है जो सेवा में है, और प्रभू को इस क्षेत्र में आदर नही दिया गया । संगीतकार जिसे पूरे समय के लिए बुलाया जाता है, आर्थिक मदद अवश्य करे । गाने /बजाने वाले अपने हिस्से का दशवा अंश परमेश्वर को दे, यह तो कम से कम है, देते है, २ इति ९:२७

४. **वे काई कर / चुंगी नही भरते** एजा – ७:२४

- आज इसे खींचकर देंखे ।
- यह उनके निश्चित बुलाहट की चिन्ह है, और आदर मिलता ही है जो सेवकाई में है ।

५. **वे राजा के भवन में सम्पति (धन) समान थे**

उत्पति – ३१:२७, २ शमू – ३५, भजन ३७:३-४, सभो २:८-९, लूक १५:२५

- परमेश्वर भी गाने / बजाने वालो को अपना निज संम्पति के समान रखेगा यदि हम भी राजकीय सेवकाई जैसा कार्य करें ।
- हम मसीह के देह में भी सहयोग करे, तो जैसे हम सेवा को अपनाते है, अपने ही भाइयों से हमे प्यार व महत्व दिया जाएगा ।

६. **संगीत वाद्य यंत्र विशेष लकडो से बने होते थे**

१ राजा १०:१२, २ इति ९:११

- यह लकडी लबानोन की जंगल से था, अलमग/अलगम ।
  यह बहुत कीमती था जिसकी प्रयोग राज महल में खम्भा बनाने के लिए भी करते थे ।
- एक गान/बजाने वाला सेवकाई का संचालन करता, एक सेवक जैसा कार्य करता, और याजक जैसा परमेश्वर के भवन में खम्भा जैसा खडा रहना है । जो राजाओ का राजा है ।
- हमे अपना सर्वोत्तम देना चाहिए
- जितना उतना मेंट कर सकत है । यदि परिस्कृत वाद्य यंत्र हासिल कर सकते है तो ऐसा करे ।

  आप इस बात को बार-२ ठीक से सुना होगा, लेकिन प्रश्न है कि “क्या आप परमेश्वर के आंगन में आवश्यक राजकीय, सेवकाई जीवन शैली में चलते है ? हम निराश होते है । बार-बार फिर बार-बार इस चीज को देखते है कि जो संगीत सेवा में है वे कभी भी अपने आप को न्योछावर, या अपनी सेवा को परमेश्वर के वेदी के पास अर्पण नही किया । “हमारी नजरिया सेवकाई में महत्वपूर्ण पूरक है अराधना एवं स्तुति में केवल सृजनात्मक बातों को न ढूढे, जो कलीसिया आपके द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली बातों को रचिकर बनाए “ आराधना मात्र. एक और कार्य नही है कि कलीसिया में अपनी कला को बढावा दे

ा अराधना हमारा जीवन हो, यह हमारे सब बातों के केन्द्र हो, और जो भी हमारे जीवन में परमेश्वर के साथ सम्बध मे है उमण्डना चाहिए ा अपने दिनचर्या में लागू नही करते है ा तब कोइ दूसरी शिक्षा, गहराई या सृजनात्मक बाते हमारे जीवनों मे लागू नही हो सकती ा यदि हम आज परमेश्वर जो कर रहा है ा उसका हिस्सा बनना चाहते है, और यदि हम कलीसिया को उस स्थान पर ले जाना चाहते है जिसे आज के दिन के लिए प्रभू तैयार किए है, तब हमे (इस सिध्दांत के चरम बिन्दु तक बहना होगा) राजकीय सेवक की और इसके बाद संगीत के चरम सीमा मे उपरोक्त सिध्दांत गहरी चीजो की शिक्षा की चाबी है ा

कलीसिया में गाने / बजाने वाले

१. **वाद्य यांत्रो के उद्देश**

- उसके उपस्थिती में परमेश्वर की सेवा करना	१इति १६:४, ६, ३७
- परमेश्वर की स्तुति करना	१इति, २३:५, भजन ३३:२
	७१:२२, ९२:१, ९८:५-६
	१४९:३, १५०:३-५
- आनन्द और स्तुति में गायको	१इति, १५:१६ भजन ८१:१ के संग सहयोग
	(नये नियम भी भजन की ओर इंगित करना)
अराधना मे अगुवाई करने की बुलाहट	गिनती १०:१-१०, भजन ८१:३
लोगो को भविष्यवाणी के लिए तैयार करना	२ राजा – ३:१५, रामू १०:५
भविष्यवाणी करने के लिए	१इति – २५:१-३, भजन ४९:४
युध्द मे लडने और खेलने के लिए	गिन १०:२-१०, भजन ६७:२५
परमेश्वर के उपस्थिती का घोषणा	भजन ४७:५
और मार्ग प्रशस्त करना	
राष्टो को स्तुति के बारे सिखाना	भजन ५७:७-९

२. **मुख्य संगीततज्ञ स्थापित करना**

बातें अच्छी होती है, जब संगीतकारो की देखभाल करने वाला स्वयं एवं संगीतज्ञ हो, किन्तु प्रत्येक दशा में न भी हो ा संगीत निर्देशक ा मुख्य संगीततज्ञ कलीसियाई जीवन के इन क्षेत्रों का भार भी उठाना चाहिए :-
गायब एवं गायन मण्डली, बजाने वाले, अराधना अगुवो सुसयाचारीय संगीत

३. **इन दोनो का रितीश्र्वक देखभाल करने के लिए तुममें निम्न गुण होने चाहिए**

- वचन पर अच्छी पकड
- अगुवाईपर के गुण निर्धारण करना (चरित्र का बल, विश्वास योग्यता, अधिकार, जोश इत्यादी)
- प्रबन्धकीय कौशल्य
- संगीत के विषय सेदातिक और समझ मे निरंतर बढने की भावना ा
- अपने गाने / बजाने वालो का प्रार्थना पूर्वक समझना ा
- लोंगो का एकत्र करने का कौशल एवं प्रेम ा

४. **किसी भी संगीतकार / बजाने वाले को अपनी जरुरत को समय पूर्व समझना**, आवश्यकताओ की सूची बनाना, यदि आप नियम बनाए तो बनें रहें ा असाप, हमान और यदूतुन पारंगत थे, संगीत सेवा में कठिन परीश्रमी, हमे भी कलीसिया मे उच्च स्तरीय संगीत को बनाए जाने की आवश्यकता है ा

<u>संगीततज्ञो का चुनाव एवं नियुक्ति</u>

- आवश्यक गाने । बजाने वालों के लिए प्रार्थना करे ।
- झुंण्ड से कहें कि पुराने वाद्यय यंत्र एवं छिपे गुणवालो के लिए प्रार्थना करे ।
- ऐसे भी साज है जिसे अन्य प्रयोग कर सके, या क्षमता जिसका विकास किया जाए ।
- किशोर संगीतकारो को प्रेरित करे कि अध्ययन जारी रखे (कभी भी अधुरी शिक्षा का प्रयोग न करे) ताकि दल मे लोगी की संख्या बढाएँ ।
- उच्च स्तरीय संगीत विद्या, आत्मिक माहौल, को बढावा दे कि संगीत का स्तर ऊँचा बना रहे ।
- प्रत्येक संगीततज्ञो के लिए प्रार्थना करें
- स्थापित और पक्का उनको सेवा में लगाएँ ।
- साजों को एक तरफ सजाए इति -२९, १९ नियमित एक साथ अभ्यास करे ।
- साथ में प्रार्थना – आप एक ईकाई की तरह बढेंगे ।
- ईमानदारी और समर्पण दल प्रति बढाए ।
- वचन साथ में अध्ययन करे ।
- प्रत्येक अभ्यास का ध्येय निश्चित करे, नये गानो को सीखें, कठिन लय को सीखे, विशेष सभाओ के लिए तैयारी करना, संगीत विद्या सीखना, आराधना के स्वरुप का विकास करना, अभ्यास में विसफोटक और चरित्र में फोरस आर अराधना में गुनगुनाना ।
- नियमित उपस्थिती और अराधना में गुनगुनाना ।
- नियमित उपस्थिती और समय की पाबंदी का पालन करे ।
- अपने जीवन में प्राथमिकताएं बनाएं - ये कुछ इस तरह झलके – परमेश्वर के साथ सम्बंध, परिवार, स्वास्थ, रोजगार, सेवकाई , अन्य रुचि (खेल कुद)

५. संगठित जीवन शैली का विकास करना -

- जो भी करते और कहते है उसमें विश्वासयोग्य रहे ।
- अपने संगीत और (लेखक) का एक संचयिका रखे ।
- कार्य स्थल और घर दोनो स्थल (साफ) सुधरा रखने का अभ्यास करे ।
- हरेक सभा के लिए तैयार रहे ।
- तैयारी पहले – पूर्व नियोजित हो ।
- अपने जीवनशैली मे परिवर्तन लता पड सकता है ।

६. वे स्वयं साज थे -

- इन अंतिम दिनों में संगीत साज या साधन होने के विषय में सावधान रहे, छूटकारा प्राप्त व्यक्ति के गवाही को प्रस्तुत करे करने की क्षमता रखना एकसाथ है । और प्रकृति के प्रभू के उतराधिकारी के चरित्र मे होना
- संगीत मण्डली में तुलनात्मक समायोजन बनाना अलग-२ साजो का तुलनात्मक समावेश जैसे तारवाली, डफली वाली लय वाली साजें ।
- कुछ संगीतकार अपने अपने साज से मेल खानेवाले साज को शीघ्रता से सीखते है, ताकि विभिन्नता का समावेश हो, (बजानेवाले इसका समावेश कर सकते है जैसे- सींग, तुरही शहनाई)
- इस बात की शासवती कर ले कि सब साज है । (धीमा स्वर साज, बांसुरी, तार अतिरिक्त रखे

७. सेवा -

- जल्दी पहुँचे – सभा आरम्भ पूर्व प्रार्थना, आवाज जाँच से

- स्वरो की जाँच पूर्व शीघ्रता से पूरा करे, जब दूसरे जाँच कर रहे है तो वाद्या न पहुचाए।
- साजो को ठीक से सजाए कि सब देख सके, और देखने में रुचिकर लगें, अगुवा का ख्याल रखे।
- सब साज सब समय बजाया आवश्यक नही इसकी जानकारी रखे, और आपसी तालमेल के लिए सजग रहे।
  (प्रत्येक साज को महत्व दे ताकि आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जा सके -)
- साजों के स्वर में बदलाव भी लाए ताकि आप परमेश्वर का कहना चाहता है उसको प्रस्तुत कर सके। अपने साज की पूरी क्षमता का स्तेमाल करे।
- आपका बजाना आपके स्तुति को बढावा देता है। जब आपने बजाने में व्यस्त होते है, जैसे अराधना अगुवा नेतृत्व करता है, उसी तरह जैसा झुण्ड प्रभू के उपस्थिती में प्रवेश करते है, आप न कर सकें हो इसिलिए तो आप अराधक है, और मात्र वह नही जो अराधना सभा मे जाते है।
- कभी-कभी बजाना धीमा हो – प्रर्याप्त नम्रता मे, नीरवता से न घबराए, एक-एक जन कोर्ड बजा सकते है, नेतृत्व साज के साथ-साथ या कोरस गीत के धुन बजाए जा सकते है।
- लय को साधारण रखे ताकि गायक पकड सके, निश्चय कर ले कि सही ताल – लय बजाया जा रहा हो।
- परिवर्तन मे प्रयाप्त सावधानी बर्ते।
- सभी फासलो को संगीत। साज स्वर से न भरे वहा वह वक्त हे कि मण्डली उस स्वर, समय को पकड सके यहाँ सतर्कता जरुरी है।
- आरम्भ और अन्त सापु सुथरा रीति से करे कुछ अराधना अगुवो के लिए परिचय और आरभिंक संकेत की आवश्यकता होती है।
- अपने अधिकार को समझना कि का और कब शुरु और खत्म करना है। हर समय अगुवे की राह पर चले
- यहाँ कोई स्वतंत्र शैली प्रस्तुत करने की आवश्यकता नही, अपने ही शैली को विकसित करे।
- अपने संसाधनों का पूरा प्रयोग करे। गानो के चरम शिखर तक जाने की स्वतंत्रता, केवल ध्वनि नही, किन्तु साजों के मधुरतम चोली के संग।
- जो गाया जा रहा है, उसके कविता के अर्थ बताएं।
- यदि आप दूसरों की ध्वनि, लक्ष को नही सुन रहे है तो आप ऊंची आवाज से बजा रहे है। कमजोर (कम ध्वनि) वाले साज को ऍप्लीफायर से जोडे।
- महान प्रवाह प्रभाव के लिए साधारण और नये वाद्य के समावेश से पा सकते है, जैसे ढोलक, घण्टा, करतल इत्यादी।
- सभा में शामिल हो, अपने साज के पीछे न छिपे, प्रार्थना न्योता में प्रत्युतर देना।
- बंधन या रुखे का का इंजहार न हो, भजन १३७:४, १६७:२२, इब्रा – १३:१५, रोमि – १२:६ इफि ४:१-७ कभी – कभी केवल विश्वास से सेवा करें जब जीवन कठिन हो, एस.एल. के संतान अपने साजो को टांग दिया, जब वे बंधुवाई में और आत्मिक अंधेरे में थे।

(योग्य सेवकाई द्वारा परमेश्वर योग्य कलीसिया बना रहा हैं)

ठेस जो पूछा नही जाता इस सेवकाई का भाग है। कही भी ठेस को पूछना कर उसे बैठा देने से बुरा कुछ नहीं है।

आराधना में नेतृत्व

संगीतकार का अराधना मे नेतृत्व सेवकाई में अलग ही कुशलता की बात है, पासबान पुरनिया, गायक, इत्यादि I अराधना नेतृत्व कभी २ कठिनतम कामों मे से एक है, कि मण्डली को परमेश्वर के हूजूरी में ले चलना जहाँ मण्डली व्यक्तिग तोर पर और सामूहिक रुप से परमेश्वर से बाते करते है I (जिसमें बीमार, थके हुए, चोट खाए, धीठ, आलसी, शिक्षा ग्रहय करने वाले है शामिल है I) अन्तत: स्तुति और अराधना के ऐसे जगह पर ले चलना जहाँ परमेश्वर के हृदय को स्पर्श करते और उसके उपस्थिती को साक्षात प्रामाणिक करते है I

- यदि ऐसा होना है, तो अराधना नेतृत्व मे कलीसिया के अन्य विभिन्न अगुवो को सीखना ही गुणो को विकसीत करना ही चाहिए I

<u>आराधना अगुवा के तीन कार्य</u>

१ **पूरे समुदाय को परमेश्वर के उपस्थिती में नेतृत्व कि वे उसकी अराधना एवं स्तुति करे**, और प्रत्येक सभा वे उसकी सुने, (प्रत्येक सभा के लिए परमेश्वर के पास योजना है) वह हमारे साथ समय व्यतीत करना चाहता है, और जब-२ उसके नाम एकत्र होते है, उसके पास बाँटने /देने के लिए खास होता है I

आवश्यकताएं :-

- आप एक अराधक (श्रधालु) हो, दूसरों को अराधना में नेतृत्व करने का सबसे बेहतर मार्ग कि स्वयं की जीवन दिन भर रोज परमेश्वर की अराधना मे हो (भजन ११९:१६४)
- निरन्तर आगे चलने / वढने वाला परमेश्वर के साथ संम्बध I
- परमेश्वर को जानना व समझना, उसकी हुजूरी एवं रास्ते I
- आत्मा के बहाव को समझना I
- देहे में सही और सेवकाई का दृष्टिकोण I
- एक मोहबत और सहानुभूती कलीसिया के लिए I
- संगठित एवं नियमित जीवन शैली, (समयनिष्ठ)
- वचन में मजबूत पकड - प्रकटीकरण और गहनता का नया बहाव का होना, कुलु – ३:१६ (आपकी सेवकाई वही है कि वचन को जितना समझते और जीवन में अमल करते है, गहरी समझ से व्यवहार मे लाते है I प्यासों के लिए आप स्रोत बनते है I
- आपके जीवन, सेवकाई और कलीसिया का अभिन्न अंग बने, केवल इतवार को दिखाई देनेवाला नही I
- आत्मिक आराधना की व्यक्तिगत प्रगटीकरण एवं समझा हो I
- सत्यता के आधार में ठीक से स्थापित रहना I
- कलीसिया मे परमेश्वर क्या कह रह है उसे जाने कि, पासबान को आप कैसे सहयोग कर सकते है I कि राष्ट्र, शहर, जीवन में उसकी इच्छा पूरी हो I

२. **गायकों / बजाने वालों को सम्भालना और सहयोग करना** – उनके इश्वरीय सेवा एंव मंण्डली में I

आवश्यकताएं –

- गाने / बजाने वालों के प्रति प्यार और सेवा को समझना I
- विभिन्न प्रकार के संगीत साजो के प्रति कुशलता का उपयोग करना I
- संगीत के बुनियाद को समझना - यानि
- लय मं लम्बे समय तक रुके रहना
- साजों के लय / ताल के अनुसार गीत आरम्भ करने की समझ
- गानों में कम लम्बा उँचा, नीचा कब, कैसे करना है, को समझाना I

- संगीत के ऐतिहासिकता का विकास
- इससे न डरे बुनियाद कठिन नही है, उसमें वो न रह सके जो सहायता न करे ।

३. **समूह को परमेश्वर के वचन के लिए तैयार करना**

आवश्यकताएँ :-

- कलीसिया के अगुवा के साथ एक होना ।
- कलीसिया को परमेश्वर की योजना मे प्रत्येक कलीसिया के लिए अलग योजना खुशबू जो देह में ही है -
  इसे समझना और परमेश्वर के बहाव में एक हो जाना महत्वपूर्ण है, परमेश्वर समूह / कलीसिया को विभिन्न मौसम, वचन को व्यवहारिकता में लाना, मसीहियत जीवन की बातों को जोर देता है, जाने कि प्रभू मे आप कहा है ।

सभा की तैयारी करना

१. **अपने के शुध्द करे** :-

१इति १५:१४,११, २इति २९:१४-१५, नहे १२:३०, मला ५:२५ १कुरिन्थि – ६:११

- पुरानी रिती के वचन न हो जो आज के दौर के लिए न हो, हमें रोज पश्चाताप करते हुए परमेश्वर के सन्मुख स्वच्छ जीवन रखें, तब इन्तजार हो न करे कि प्रभू आपको पूरी तरह साफ करके पवित्र बनाए ।

२. **परमेश्वर की बाट जोहें** –

१इति ६:३२, २इति ७:६, ३५:१५-१६, रोमि-१२:७

क्योंकि प्रत्येक सभा के लिए परमेश्वर के पास योजना है, हमें उसे ढूढना चाहिए

- वह इसे हमसें छिपाकर नही रखता, और वह हम पर इसे उंडेल देता है अंतिम पल में । जैसे प्रचारक जानता है कि कब क्या बोलना है । तब भी आराधना अगुवा आ सकता है, समझते हुए कि परमेश्वर पथ प्रदर्शन करेंगे । (इसका अर्थ यह नही कि हम ही पूरा कार्य करें और स्वाभाविकता अन्य लोगों के लिए कुछ जगह न रखे)

३. **गानो का पर्ची रखना** :-

आपको गानों के विषय मे ठीक रहंना चाहिए – लय के अनुसार क्रम मे हो (धन्यवादी, स्तुति, आनन्द और जय, चंगाई, युध्द, प्रार्थना, योता, उच्च स्तुति, आराधना इत्यादि) गानो के साथ गानों का लय/स्वर भी अंकित करे ताकि एक के बाद दूसरा गाना उठाने में मुस्किल न हो, गानों को अक्षर क्रम मे भी रखे जो स्तुति से अराधना की आरे हो ।

४. **संगीतकार अभास में जाए :-**

बहुधा अपराधना अगुवा कलीसिया के अन्य क्षेत्र में भी नेतृत्व करता है । और वे संगीतकारों के अभ्भास में नही जा सकते । इसलिए गलतियां कभी नही सुधरती, बहाव में कभी, जो नेतृत्व और संगीतज्ञ के मध्य है, अराधना शैली, सृजनात्मक एवं रीति के शिखर तक नही पहुँचते । यदि आपका मण्डली अराधना प्रतीष्ठता में श्रेष्ठ होना चाहता है, और अधिक सृजनात्मक, तब तो अधिक अभ्यास की आवश्यकता है । बहुत सी मण्डली अपनी समस्याओं की हल ढूढंना और अराधना का विकास करना चाहा, किन्तु अपर्याप्त सेवा आत्मिक और संगीतमय वातावरण की कमी से लटके पडे है ।

अराधना अगुवाई के व्यवहारिक बिंन्दु

१. **संगीतज्ञों / गायको के साथ अच्छे सम्बंध** :

- संगीततज्ञो को न सिखाएं या लाागो के सामने बहस न करें ।
- संगीतज्ञो के साथ अभ्यास करे ।

- हाथों का संकेत सहज प्रवाह के लिए रखे ।
- गाने चुने हुए (लय के साथ) बजाने वालों के पास सभा से पूर्व हो ।
- संगीतकार के क्षमता को जाने और उन में से प्रत्येक से कैसे उत्तम प्राप्त किया जा सकता है । समझ ले ।

२. **<u>बातें करने मे ज्यादा समय न बिताएं :-</u>**

- जब लोग अराधना करते है । उन्हें उत्साहित करें ।
  (इस बात को आसानी से न ले कि लागो को मालूम है क्या अभी करते है) पूरी कुशलता से किया जाए, बिना अधिक बात किए ।
- देर तक बातें करके आप अराधना के प्रवाह/लय को तोंड सकते है ।
- सम्बधित सच्चाई को सम्प्रेसित करें ।
- सिखाए और सज्जनता से डाटें – कभी दोषारोपण न लाएं, न ही सुधारने के लिए चंरवाहे के उसके जिम्मा मे दे दे ।
- आरम्भ में प्रभू का परिचय हो न कि आपका ।

३. **<u>गानों का चयन सावधानी से हो,</u>**

- कुछ बातो का विकास एवं पूर्णतता अराधना में ही करे, देखे कि अराधना पूरे समय में हो । जैसे
- एक हवाई जहाज चालू होकर उडान सडक पर दौडता है, वेग से और उडान भरने लगता है, उसी प्रकार गानों का चयन भी रखे । आनन्द के गीतो के साथ आरंभ करके धन्यवाद और स्तुति में बढे, तब गहराई और एकात्मता के अराधना में ले चले जहाँ स्वयं आत्मा गाने लगे १ कुरिन्थि १४:१५
- समय, गति, विषय को सावधानी से बदले – तेज और धीमी गति के गाने न गायें, या आनंद के बाद फिर श्रध्दा के विषयों जैसे । कोशिष करे कि विषय में बने रहें, और गहराई तथा एकात्मता अराधना में अग्रसर होवे । इसमें पवित्र आत्मा नये प्रकटीकरण, आंतरिकता और प्रकटीकरण तथा परमेश्वर के चरित्र को प्रकट करना है, जब लोग उसकी अराधना करते है ।
- आवश्यकता से अधिक गानो का चयन करे, अधिक सतर्क / तैयारी मे रहना ।
- किसी विशेष सभा के लिए दो गानो मे एकी लय इस्तेमाल कर सकते है । ऐसे गानों की जरुरत पर समय से बाहर गाने में न हिचहिचाएँ । हरेक समय आशा में उठाए और आत्मा की अराधना का अनुभव करें ।
- अनुमती दे कि परमेश्वर कार्य कर सके, हो सकता है, कि जितने गानों को चुना है, उसमें से सभी आप न गा पाये ।

४. **<u>गानों को जानना :-</u>**

- जिसे गाने को बहुधा भूलते है, न लें ।
- अपने दल से अभ्यास न करें ।
- यदि आप नये गाने सिखाते है, कोशिष करे कि सही सिखाएं, आप मण्डली को रोक सकते है, कि गलत गा रहे है ।
- नये गानो को समावेश करें जिसमे “वर्तमान सत्य” झलकता हो, जैसे सच्चाई है कि इन अंतिम दिनों में परमेश्वर पुन: स्थापित कर रहें है । और इस सत्य को वो जोर दे रहे है ।

५. **<u>मजबूत नेतृत्व दें ।</u>**

- आप अगुवाइ करें – मण्डली या संगीततज्ञ नही ।
- सर्वोत्तम मार्ग यह है, कि आप अपने ध्वनि से नियंत्रण करे । पहले ही स्वर से न लडखडाएँ, यह अति महत्वपूर्ण है ।
- मण्डली को कमजोर अगुवा पर मरोषा न हों और उसका वे अनुकरण नहीं कर सकते । अपने शारीरिक हावभाव और आँख से आँख मिलाकर नियंत्रण / नेतृत्व करें ।
- मुख्यत: आप गुनगुनाए न कि एक अलग भाग बनाएं ।
- सरल रहे – मुस्कराएं, विशिष्ट, मनोरम प्रेरणा दें ।
- लोंगो को परमेश्वर ओर लें अपनी ओर नहीं ।

६. **<u>आत्मा के समय और बहाव के प्रति सजग रहे ।</u>**

- विश्वास बनाने के लिए समय लगाए, उम्मीद और भरोसा लोगो का आप पर हो ।
- अराधना के गहरे मात्र में जाने से पूर्व धन्यवाद, स्तुति प्रस्तुत करने को स्थापित करें ।
- यदि आपको लगता है, कि किसी खास गाने को बार – बार गायें कि जब तक लोग अराधना के संदेश के लिए तैयार न हो जाएं ।
- भविष्यवाणी के प्रवाह के लिएकब रुकना हो, समझे आत्मा के वरदानों के बाइबिल सिध्दंता को जानें ।
- नीरवता से घबरायें नही । यहाँ हो सकता है । अराधना का लहर चला हो ।
- प्रत्येक भविष्यवाणी के शब्दो का पालन करे ।
- यहाँ विशेष सेवकाई का जरुरत भी पडे जैसे - चांगाई, समर्पण ।
- पासबान पर नजर लगाये रहें – वह जानता है यदि आत्मा का कार्य ठिक कम में है ।
- कब रुकना है जाने
- आबंटित समय से अधिक न ले अन्यथा पासबान से सूचना आपको मिलेगी ।
- जैसे बाहर के लोग खास मौको पर पहनते है, वैसे आप वस्त्र धारण न करें ।
- अराधना के चरम बिन्दु के प्रति जागृत और कितने समय तक बने रहना चाहिए, सतर्कता जरुरी है । परमेश्वर के सम्मुख समय व्यतीत करने के बाद, प्रभु इच्छा रखता है कि लोग आनन्द और उत्सव मनाने के समय में, प्रवेश करे । जो परमेश्वर चाहता है उसके लिए खुले रहें, उन्हं पेटी में बन्द न करे, और कहें कि में पूरा छानबीन किया है प्रभू इसी तरीके से कार्य करेंगे अन्यथा नहीं ।

७. **सामान्य विचारे :-**

- हाथ उठाना, ताली बजाना और अन्य बातो को देखें जो आदतन किया जाता हो ।
- लोगो को सिखाए कि वे आदर के साथ खडे हो जैसे वे याजक है - यदि पुरनिए बीमार न हो इत्यादी ।
- लगातार संगीत बीट पूरे समय न बजाएं जब तक कि सभा बडा या आर्केस्ट्रा न हो ।
- बैठना, ध्वनि प्रणाली, बोलेन्टीपरींग, गर्मकरना, रोशनी करनी, हवादार और दूध पिलाने वालों के लिए सुविधा प्रदान करनेवाला कार्य ठीक से करने की जरुरत है ।

आत्मा का बहाव

यह एक कठिन क्षेत्र है कि आत्मिक अराधना को निर्धारित करे, इसलिए कि प्रवीणता आए पवित्र आत्मा प्रथम पवित्र आत्मा है, और धार्मिकता और पवित्रता (केवल सेवक नही वरन मण्डली भी) यें चले ताकि वह शोकित न हो । इफि ४:२२-२३
यह एक सच्चाइ है कि, सच्चे मसीह के विश्वासियो में पवित्र आत्मा स्थिर बना रहता है । जब हम एकत्र होते है, तब हम पहले से हो "आत्मा में होते है, क्योकि रोज हम आत्मा में चलते है । किन्तु यह भी लागू होता है कि परमेश्वर अपनी पवित्रता के स्थिति को नही बदलता, ताकि उसमे सिंहासन के पास साहस (इब्रा – ४:१६) के साथ पहँचने, और उसमें रहस्यों को सुनने, हम उनमे से हो जो भरोषा रखते, जो समझ रखते और उसके आगनो के आदर को बनाएँ रखें ।

जब भी हम एकत्र होते है वह हमसे सुनना चाहता है (बिलाप गीत-२:१४)

(अ) क्योंकि वह यह बात उसे प्रसन्न करता और

(ब) क्योंकि इस आनन्द में हमें उसके उत्तर की आवश्यकता है ।

जब भी हम इक्काठा होते है, परमेश्वर बेशक चाहता है, कि हम उससे मिलें और उसके प्रकटीकरण को प्राप्त करें । जो व्यक्तित्व और स्वभाव मे है । यह प्रकटीकरण परमेश्वर के साथ मिलने सें अपने आप आता है, जब ऐसा होता है, हम उसके समानता में बनते जाते है । भजन – १७,१५, २कुरिन्थि-३:१८) यह रिश्ता और प्रत्युत्तर केवल एक घण्टे भर का जीवन शैली नहीं परन्तु पूरे एक सप्ताह भर का है ।
इसलिए जब भी परमेश्वर से मिलने पहुचने है । अराधना सभा में पर्याप्त स्वतंत्रता रहना चाहिए कि लोग प्रवाहित हो सके, और उस विशेष प्रकटीकरण के लिए तैयार हों । यह गहरी बात नही है , किंतु हमारी आत्मा के लिए परमेश्वर के वचन का ज्योतिर्मय है । (सालों तक यह सत्याई केवल चातुर्य समझ बना रहा हो) यह एक सामान्य और स्वभाविक कि प्रत्येक मसीही स्थिर प्रवाह, परमेश्वर के ज्ञान का प्रकटीकरण जैसे स्वाभाविक बहाव उसमें साथ अराधना सम्बंध बनाने होता है । क्योंकि परमेश्वर असीमित है । हम अनन्त जीवन के लिए प्रशस्त होते हुए भी उसमें व्यक्तित्व और चरित्र के आशा के सीमाए नहीं समझ सके है ।

परमेश्वर के प्रत्येक सभा के लिए योजना और उद्देश्य है, अत: संगीतज्ञ गायक, नाचनेवाले, अराधना अगुवा के नाते परमेश्वर को पूरे सप्ताह ढूढे । तब वे आएँगे, और एक आत्मा में प्रवाहित होंगे, जैसे हम अराधना और स्तुति में प्रवेश करते है । परमेश्वर ही सभा को विकसित करेंगे, और लोगो के मध्य प्रकटीकरण का स्पष्ट खुलने को महसूस कर सकते है ।

पवित्र आत्मा हमारी अराधना में प्रवेश करने के कई दिशाएँ एवं साधना है, हम समाओकी तैयारी कर सकते है, सभा को बिना छोडे और कोई जान भी पायेगा कि हमने इस प्रकार अगुवाई के लिए पूर्व निर्धारित थे । प्राय: विषय, या धारा लगातार एक हप्ते या महिने भर तक व्यक्तिगत व मण्डलीम तौर में बहता रहना चाहिए ।

निम्न चित्र अराधना के आत्मिक खुलाव के आधार पर और जहा पवित्र आत्मा अराधको के मध्य नेतृत्व करता है । को प्रकट करता है । इसका अर्थ यह नही है कि इस चित्र अनुसार हम अपने अराधना सभा का मुल्यांकन करें, यह एक उदाहरण है कि उसके साथ में रहने से कैसी प्रकटीकरण उत्पन्न हो सकता है ।

यह चित्र केवल उस लोगों के लिए है जो पूछते है कि हम कह जाएं या अराधना किधर जा रही है । कैसे हम बंद करने की सोचे जब लगता है , कि अभी तो हमने आरम्भ ही किया । दूसरा चरण प्रभू है । कभी-२ हम अराधना में प्रवेश करते है, और स्तुति में एक जाते है, या उच्च स्तुति, और कभी भी गहराई में नही जाते कि परमेश्वर प्रकट करे । हमे परमेश्वर को खोजना चाहिए हमें मूसा के समान पुकारना चाहिए, "मैं तुझे ढूढंता हूँ, अपनी महिमा दिखा,"कलीसिया के मध्ये परमेश्वर का दर्शन (सामर्थ) आना चाहिए ।

कलीसिया में छुटकारे काआनन्द में आत्मा से अगुवाई मिले कि (आनन्द) हर्षालालास कि ये जाएं, तब केवल न गायें, प्रभू में सदा आनंद करो, फिर मैं कहता हूँ कि प्रभू में आनंन्द करो, कुछ समय और सोंचे बस हो गया , तब पासवान के हाथ में है कि चंदा लिया जाए । परमेश्वर के गहराई को सम्प्रेसित करने की क्षमत्व तुममें होना चाहिए । कलीसिया के मध्य परमेश्वर के राज्य की गहराई को बताने का काबिलियत हो, यह बात अननन्त काल की ओर ले जाएगा जब हम केवल परमेश्वर और उसके चरित्र को समझते है, यदि आप इममानुएल गाते है तो, तो उसका नाम इममानुएल है उसे कहते है यदि परमेश्वर हमारे साथ है । उसका ना इम्मानुएल है (उदाहरण के लिए) जब तक उन शब्दो के अर्थ व गहराई को न जानते हों जिसका आपने जीवन को प्रदर्शित कर सकता है न गायें ।

यदि न समझे पूरा या अधुरा आत्मा से न गायें । आप एक ही गाने को बार – बार गा सकते है । क्योंकि जितनी बार आत्मा में गाते है परमेश्वर उसमें शब्दो, परत दर परत सत्य और प्रकटीकरण को जोडता जाता है ।

धन्यवाद देना	(भजन ९५:१-२, १००-४)
स्तुति	इब्रानी भाष में, बाराक यादाह तेवाखह जमार, शब्दक हलाल
उच्च स्तुति	भजन २२:३, इब्रानी तेहोलाह
या (यूहना)	प्र. इति – २०
अराधना	(भजन – ९५:६, ९६:९)
१ उँचा उठाना	(प्रका – ५:८-१४ इत्यादि)
२ सम्मान करना	(भजन ९९:५ लूक २४-५३)
३ पश्चाताप	(यशा ६:१-५, रोमि – १२:१-२)
४ खोज करना	(भजन – २७:४)
५ बाट जोहना	(यशा ४०:३१)
६ परमेश्वर के सम्मुख शांत रहना (भजन ४६:१०)	
७ चंगाई	(२शमू – १६:२३ मती ८:२)
८ अपने प्रेम का इजहार	(१यूहना – ४:१९)

यह समय है कि लोग परमेश्वर को ढूढें - यह समय है कि हम परमेश्वर से मिले, और खटखटाते हुए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करें । राज्य के विषय चर्चा करते हुए उन बच्चों के समान मागना जो डर घबराहट से उसका सामना नही कर सकते । हमने नही जाना कि हमे उसे क्या कहना चाहिए, हमने अपने बाप के साथ बर्ताव ।नही किया, और शारीरिकता हमें उसमे उपस्थिती से छिपाकर आदम और हवा के समान (उत्पति – ३:१०) और ऐसा एक के संतानो के समान जिन्होने अराधना, अपने तम्बू के द्वार पर से ही किए । मूसा ने साहस किया और मित्र के समान बातें की, और आमने सामने देखने का भी साहस किए, अराधना हम उसे कहते है जिसमें हम अपनी सुविधानुसार कुछ, नाइयो के साथ कमरे में, पडोसियो के साथ इस बात का ध्यान रखते हुए कि उन्हे कोई तकलीफ नही होनी चाहिए गानो को गाते ।

मानवीयता की आत्मा हमारी अराधना मे घुस आए है, और हम जो लोग हमारी परम्परा से आकृष्ठ थे उन्हे प्रस्तुत करने में नाकाम रहे है । सच्चाई है कि ("न परमेश्वर किसी राष्ट्र का है न पंथ का) हमें परमेश्वर की अराधना परमेश्वर जैसा सोंचते है उसी सहज और क्रमानुसार होना चाहिए । हमने कुछ अभिव्यक्तियों को अराधना में शामिल करने मे अपनी मण्डली में सफल हुए है । बजाए इसके कि जैसा सम्बध परमेश्वर चाहता है जिसकी बाइबिल मे चर्चा की गई है प्रवेश कर पायें है ।

तो आइए हम उस अराधना एवं स्तुति के गहराई के सम्बध को जॉच कर जानने की कोशिष करें ।

धन्यवाद देना

भजन – १००:४, धन्यवाद के साथ उसमें फाटको में प्रवेश करना परमेश्वर के उपस्थिति के बाहरी आंगन मे प्रवेश यानि विश्वास को दिखाता है, यह ऐसा बात नही हैं जिसे हम सप्ताह में एक बार करतें है । किन्तु सब बातों में धन्यवाद करना चाहिए । यह विश्वास का कर्म है । इनमें कुछ बाते दिखाई नही देती, और हमे विश्वास के साथ परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए जब हम उसे नही देखते या अनुभव नही करते, विश्वास करे कि वह है ।

जब आप परमेश्वर कें पास आते है – (थके हुए, चोट खाकर, तनहाई मे, बोझ से दबे, हुओ को क्षमा किए जाने की जरुरत है, पूर्ण आनन्द, शांतिपूर्ण इत्यादि) पश्चाताप के साथ धन्यवाद अपने आप से परमेश्वर के बारे में बाते करें कि आपके आंखे उसमें

चरित्र एवं उसकी ओर लगे रहेंगे । होने पाये कि आपका आत्मा सुने और नयापन प्राप्त करे, और परमेश्वर के आशा में भरपूर हो जाए । विश्वास आशा उत्पन्न करता, अशा आगे बढने लिए इच्छा उत्पन्न करता है ।

- इब्रानी भाषा में धन्यवाद का अर्थ कहीं कही पर जैसा स्तुति के लिए इस्तेमाल करते है । वैसा ही है, और तोबयाह को मिलाता है, एल एल या झुंण्ड जो धन्यवाद और स्तुति करता है, और धन्यवाद तथा स्तुति का अर्पण भी करता है । हू वेदोह यानी गायकों का झुंण्ड । यह अच्छा है कि आप धन्यवाद अर्पण करें – ताकि आपकी आत्मा सुनें ।

स्तुति

इब्रानी भाषा में स्तुति के लिए सात शब्द है – जिसे सुन्दर रिति से अलग-२ पहलू के स्तुति को अब तक हमने पूर्ण रुप से उसके अभिव्यति में प्रवेश नही कर सके है ।

बाराक का अर्थ, घुटने टेकना, आशिष, सलाम, स्तुति

- न्यायी ५:२, भजन ७२:१२-१५

यह परमेश्वर के समुख आदर भाव और शांत रहने को दर्शाता है, उम्मीद करना, विश्वास के साथ, एक प्रत्युतर । सब शब्द स्तुति के लिए केवल यहा एक जो शांतता के विषय नहीं

- यहां कोई ऐसा सामुहिक दल जैसे शब्दो को प्रयोग नही किया है ।

यादाह स्तुति का धन्यवाद अभिव्यक्ति, शब्द का अर्थ है, जड से हाथ फैलाकर, हाथ उठाते हुए (१इति २०:२१, भजन २८:७, ४३:४, १११:१, १३८:१)

यह शब्द कर्म में बदलता, केवल शब्दों में नही, यह हृदय की स्तुति हाथो को उठाकर आवाज के साथ गाते हुए, हृदय के पुकार को उठाना, यह कारण सिध्द होता है, जब युध्द में प्रयोग होता है । २इति, २०:२१

तावदाह स्तुति और धन्यवाद परमेश्वर के लिए जो वह करता है । अर्पण की स्तुति, हाथो को यहां पर भी उठाया जाता है, भजन ५०:२३, ६९:३०, १०७:२२, यशा ५१:३

यह विश्वास मे कर्म - और परमेश्वर का सम्मान करना है, भजन ५०:२३ उनको स्तुति अर्पण करना मेरी महिमा तोवदाह “वह हमे देखता है कि हम उसके वचन बिना पूछे ग्रहण कर रहे है ।

स्तुति के अर्पण लाना यानी हम अपकी अनुग्रह के परख के लिए स्तुति अर्पण करते है । जिस तरह पुराने नियम के महायाजक अर्पण से पुख्ता करते थे कि वे शुध्द है, हमें अपने हृदय को जाँचना चाहिए ताकि परमेश्वर को जो स्तुति अर्पण करते है वह शुद हृदय से निकले ।

ज्गार यह स्तुति को गीत और साज है

नम्रता व प्रार्थना पूर्वक तारों को छोडे - भजन ४७:७, ५७:७, ६८:४, १४४:९, १४७:३ भजन १४९:३ गाते, नाचते हुए उसकी स्तुति करें, एक और वीणा बजाकर स्तुति करे ।

शबाका अर्थ - तारीफ, जयजयकार, महिमा, चिल्लाकर, उच्च स्वर से गाना भजन ३५:२७, ६१:३, ११७:१, १४५:१ दानि २:२३, ४:३४, ३७

भजन, ६३:३ क्योकि जीवन से भी उत्तम उसकी करुणा होने से स्तुति करुंगा सर्वदा ।

भजन ११७:१, हे जाति-जाति के सब लोगो यहोवा की स्तुति करो, (उच्चे स्वर से चिल्ला चिल्लाकर) इसका मतलब यह नही कि जो शीत या शर्मीले है वे ऐसा नही करते, हम सबको ऐसा ही करना चाहिए, फिर भी क्रमानुसार और शालीनता के साथ करना चाहिए, परमेश्वर उस तरह की ध्वनिपूर्व स्तुति की अनुमति देते है, (इसलिए नही कि वह बहरा है) परन्तु उसकी महिमा और गौरव पूर्ण स्तुति के योग्य और महान है । (नये नियम मे भी उच्च ध्वनि स्तुति का जिक्र किया है –लूक २:१३, १९:३७, प्ररित-२:४६-४७, ३:८, प्रका ५:१२, ६:१०, ७:१०)

हलाल अर्थ - चमकना, गर्व, उत्सव, प्रशंसा, गानें, सुस्पष्ट, प्रलाप, हुल्लडता, के संग, २इति ३१:२, १इति-२३:५, २३:३०, २३ ति २०:१९ एजा ३:११, नहे ५:१३, भजन २२:२३, २६, २५:१८, ६३:५, ६९:३०, ३४, ७४:२१, १०७:३२, १०९:३०, ११९-३०, १६४, १७५, १४५:२, १४९:३, १५०:३-५ योएल २:३६

धर्मशास्त्र मे सामान्यत इन शब्द को आप देख सकते है जो आज्ञापूरक आया है, देख सकते है हाल्लेलूयाह, इत्योदि । "याह की स्तुति करों गर्व से और आनन्द करते हुए शालीनता से जब तक हुलड मे न बदल जाए ।

तेहील्लाह युध्द स्तुति ऊँचा एवं गाना निर्ग १५:११, २ इति २०:२२, भजन २३:३, ३३:१, ३४:१, ३५:२८, ४०:३, ६५:१, ७१:४, १००:४, १०६:२, १४७:१, यशा ४२:१०, ६१:३

यह स्तुति अन्य स्तुति के अभिव्यक्ति से हटकर है, जब अन्य स्तुति के परिमण्डल में विश्वास सरीक है, यह शब्द विश्वास को प्रत्युत्तर मे लाने का कार्य करता है । और तेहिलाहू स्तुति में समाकर, हटकर स्तुति करने वालों के मध्य राज्य करता है । तब निर्ग १५:११ हम केवल पिता और मित्र जैसे देखते है, परन्तु पवित्रता में गौरवांवित और स्तुति में डरावनापन – हम जानते है कि, परमेश्वर भष्म करने वाली आग है । (इब्रा-१२:२९) कलीसिया में आते हुए, परमेश्वर की ईश्वरपरायणता और प्रभू प्रेम को समझना ही नही, परन्तु परमेश्वर का सार्व भौमिकता रोमि ११:२२ जब इस स्तुति मे वास करता (वह हमेशा विश्वास का आदर उत्तर के साथ करता है – जैसे हम विश्वास के साथ प्रवेश करते, हम उसके उपस्थिती को महसूस करे वो यह निश्चित है) कोई दूसरा मार्ग नहीं कि हम चुपचाप घुसकर खडे रहने के काबिल हमारी महानता, धार्मिकता और गुलामी उसके सन्मुख योग्य है । भजन ३३:१ "स्तुति करना धर्मियों को शोभा देती है, जैसे हमारी स्तुति में परमेश्वर वास करता है, हम उसकी समानता में बदल जाएगें । (भजन १७:१५) और एक साहस देने की सुहावनी बातें बनती है । २इति-२०:२२, युध्द तेहील्लाह स्तुति के मध्य जीता जाएगा । भजन ४०:३ महान सुसमाचार तेहोल्लाह स्तुति का परिणाम है । भजन – ६५:१ "हे परमेश्वर, सियोन मे स्तुति तेरी वाट जोहती है, ---------------- कभी-कभी हम स्तुति के लिपटनेवाली अभिव्यक्ति मे नही जा सकते, जब तक बाट जोहने के क्षेत्र की स्तुति और परमेश्वर के ज्ञान में जोहते नहीं । कई बार कभी भी यहाँ तक नहीं आ पाते, और जब समझते है कि परमेश्वर हमारी स्तुति में वास करता है, तब हम बहुत "जल्द आगे बढते या चंदा लेने लगते है, वहा से जाने पूर्व स्तुति में बाट जोहे, समय लगाकर उसके वाणी सुनने को काम लगायें और सूचनाएं पढे ।

आराधना

शकाह अर्थ - घुटने टेकना, षष्टांग प्रणाम, घुटने के बल गिरना, जमीन को स्पर्श करते हुए, जमीन पर सपाट लेट जाना, आदर के साथ

(यूनानी – प्रोस्कुनियो षष्टांग लेटना, आदर के साथ, चुम्बन लेने जैसा, जैसे स्वामी के हाथ को कुत्ता चाटता है ।)

एक बार जब विश्वास से परमेश्वर की उपस्थिती में प्रवेश करतें है, और इसलिए तो परमेश्वर के निवास में पहुँच पायें है, तब अराधना हमारी प्रत्युत्तर होगा, स्तुति को विश्वास चाहिए, किन्तु जब परमेश्वर वास करता है तो विश्वास नही चाहिए, और अपनो के मध्य राज करता – हम अनायास उसके पांवो मे गिर पडते हैं, - क्योंकि हम उसके उपस्थिती के सामर्थ को जानकर देखते है ।

एक बार जब परमेश्वर अपनी उपस्थिति हमारे मध्य आ गई तो दूसरी क्या बात है, सिवाय अराधना के और जब भी परमेश्वर किसी व्यक्ति से प्रकट होते है, हम झुकते है, - यही सारी सृष्टि से सामान्य और आदर रीति से उतर देने की अपेक्षा की जाती है ।

फिलि २,९-११ "इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया, जो सब नामों में श्रेष्ठ है, वे सब यीशु के नाम पर घुटने टेके, जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे है, और परमेश्वर पिता की यीशु मसीह ही प्रभू है पिता परमेश्वर की महिमा के लिए ।

स्तुति और धन्यवाद देने का अर्थ परमेश्वर द्वारा किये गये बातों मे रहना, जो कुछ भी वह है न की उस महानता के कर्म के लिए ।

अराधना उसके प्रति हमारा प्रतिउत्तर है, जिसके अपनी उपस्थिति हमारे मध्य स्वयं को प्रकट करता है, प्रत्येक बार जब हम उसकी उपस्थिती में आते है, वह कुछ न कुछ अपने चरित्र प्रकृति के विषय जताना चाहते है, जब भी हम अराधना करते है, यह जीवन

बदलनेवाली अनुभव है । हम उसके उपस्थिति में प्रवेश करते है, देखों उसके मुख और महिमा के प्रकृति में हम भी बदल जायेंगे, और महिमा के साथ इस संसार में भेजे गये कि उसके महिमा को दिखाएँ । कुरिथि ३:१८ परन्तु जब हम सब के उघाडे चेहरे से प्रभू का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभू के द्वारा जो आत्मा है इम उस तेजस्वी रुप में अंश अंश करने बदलने जाते है

आराधना अगुवा को समझना चाहिए कि परमेश्वर लोंगो में कब कहा रहा हा उन्हे वह कहाँ लेकर जा रहा है । उन्हे क्या प्रकट कर रहे है, कितना अच्छा, लोग उसे प्रत्युत्तर दे सकते है, क्या कारण है कि परमेश्वर अराधन में वास करते है, निर्ग १९:६ और तुम मेरी दृष्टि में याजको का राज्य और पवित्र प्रज्ञा ठहरोगे .....

परमेश्वर का असली नजरिया उसके लोगो के प्रति यह था कि वे राजको का राज्य हो, और वे सब जैसे मूसा परमेश्वर को जानता था सब जाने तथापि तीसरे दिन, परमेश्वर लोंगो से मिले, और वह ऊँच स्वर से जितना लोगों ने सोचा था उससे अधिक ध्वनि से बोला, और वे जितना महसूस किए उससे व अधिक तीव्र था, और जब वह शब्द कहे तो धरती हिल गयी, और उन्हे अधिक चाहिए था जितना लोग चाहते थे कि उसे चाहिए (वह चाहता था कि लोग पवित्र हो, और परिशुध्द करे, वह चाहता कि अनका सम्पूर्ण जीवन उसमे सम्मुख समर्पित हो) तब लोंगो ने कहा : मूसा आप ही परमेश्वर बात कहें, हम सब सुनेंगे, परन्तु परमेश्वर हमसे बातें न करे, कही ऐसा न हो कि हम मर जाएँ, वे दूर खडे रहे, ताकि वे परस्पर परमेश्वर के समुख न आ सके, आप आगे बढे और बताएं हम उसी को मानकर बने रहेंगे और उसके उतराधिकारी प्राप्त करेंगे किन्तु हमें उसके करीब इतना मत लिजिए कि हम नाश हो जाएँ । निर्ग /२०/१८-२१.

हम कलिसिया में जाते हुए कितने समय प्रभू से दूर खडे रहते है, वह प्रतिदिन चाहता है कि उसने लोगो के मध्य वह आए, जैसे वह मूसा के सम्मुख आया (निर्ग ३४) और हमारे जीवनों में कार्य करता है घोषणा और प्रकट करते हुए कि हम एक महिमा से दूसरे महिमा मे बदल जाएं । अराधना परमेश्वर के साथ शुध्द : यह जीवन को परिवर्तित करने वाली । तभी जब हम सामना करते तो केवल एक जो परमेश्वर असीमित है अनुभव करते है । वह आशा से कहो बडा है, वह असीम प्रेम का परमेश्वर है, दया, अनुग्रह, शक्ति, महानता, महिता, विश्वासयोग्यता, न्यायी, शांति, पवित्रता, सुन्दरता का यह मेरी इच्छा है कि जितना अधिक हो सके में जाऊँ (परमेश्वर के सन्तुलित और नियम के सीमा में – मनुष्य के स्रंतुलित विचारों के उम्मीद मे नही) उसकी महिमा के साथ अराधना मे उठाते हुए, उत्सव मनाते हुए, सुसमाचार युध्द, पश्चाताप, एकाग्रता इत्यादि में जाऊँ ।

जो कुछ परमेश्वर अपनें लोगों में कहता है उन सबको जानना चाहता हूँ ।

आइए हम उसकी, अराधना घुटने टेककर करं - निम्न अभिव्यक्तियों में केवल कुछ क्षेत्र है जिससे अराधना में पहुँच सकते है । इस प्रकार का बहाव जब कलीसिया में लोग व्यक्तिगत और सामूहिक रुप से सभा में परमेश्वर से मिलते है । तब भी हम परमेश्वर के स्पर्श का और उसको नही जाना, न ही अराधना सही माने में आरम्भ किया ।

पूजा – प्रका ५:८-१४

बाईबिल में अराधना के मध्य पूजा के अभिव्यक्ति से भरा हो, किन्तु हमारी अराधना में असली रुप में वर्णित किया है । जहाँ कही प्रेम मण्डराता है, आदर और सम्मान पिता के लिए, यह एक अंतिम व्यक्तिगत समय परमेश्वर में उझडेलना, यद्यपि यह एक सामुहिक अभिव्यक्ति भी कहा गया है । बहुत बार पूजा में उचित होता है कि बोलें, जैसे शब्द परमेश्वर की महिमा और प्रताप का वर्णन नही करता ।

एक कलीसिया के नाते अब भी पूजा के राज्य को शामिल नही कर सके, सम्भवत: हम सोचते है कि अराधना करने का यह भी एक विधि है । गानों के मध्य और सहज अभिव्यक्ति, वह शब्द जो हम गाते है, बोलते है, आसानी से समझता और पकड को हल्का करेगा जब तक हम विश्वास को कार्य न करने दे । मन और इच्छा, अराधना मे प्रवेश करने की भूमिका पर निर्भर हो । क्या हम सच परमेश्वर की पूजा करते ? या बस केवल कह / गा रहे सही शब्दो का इस्तेमाल कर रहे है ।

स्वर्ग में पुरनीयें निरंतर परमेश्वर की महिमा कर रहे है । अन्य प्राणियो के संग, रात और दिवस (प्रका -४:८) आराम किए बिना, वे प्रभु को देखते, और दण्डवत करते हुए आराधना करते, और मनन करते कि वे क्या देखे, और उपर देखते जहाँ परमेश्वर को पूरी महिमा सहित या सुनते उसके अद्भूत वाणी को, और उन्हे फुर्ती से प्रकट होने वालो के लिए कुछ बातों के देखेंगे जिसे इसके पूर्व कभी नही देखा, या सोचा, इसके बाद वे तुरन्त भूमि पर दण्डवत करके उसकी महिमा की । (प्रक ४:१०, ५:८, ५:१४, ७:११, १९:४) और युहना गिर गया (दण्डवत किया) प्रक १:१७, १९:१०, २२:८

जहाँ पर मनुष्य या निर्मित वस्तु है, कौन परमेश्वर को समझा और अपनी धार्मिकता से खडा रह सकता है? जहाँ से आप उसकी तारीफ कर रहे है आप न रुके हमें परमेश्वर के अधिकार, सामर्थ, अद्भूत, और न्याय, ज्ञान, शक्ति, दया, पवित्रता, महिमा, अनुग्रह, तरस, ताकत, प्रशंसा, तारीफ को देखते या सुनते ही रुकना नहीं चाहिए। और वे लोग कुछ उस व्यक्तित्व के गुण में है। जैसे हम पूरी तन्मयता से अराधना करते है, परमेश्वर के ज्ञान परिपूर्णता की ओर अग्रसर होना आरम्भ भी नही किए है।

यह अराधना का एक पहलू है – बहुधा उसकी उपासना में जाते जाते है। जहाँ पर अराधना में महत्वपूर्ण पहलू जिसकी जरुरत आवश्यक पडती है। (निचे बिन्दुओ को देखे)

संगीत तज्ञ, गायक, नृतक, मण्डली – उपासक को आप उत्तम कैसे प्रस्तुत कर सकते है? क्या ध्वनि (स्वर) बना सकते है? क्या गान/शब्द कह सकते है आपके हृदय का प्रदर्शन क्या हो सकती है ?

उपर उठाना भजन – ९९:५, लूक २४:५३

जहाँ उपासना, एक हृदयी पुकार है – लगभग उसी नम्र बिना शब्दो के, सर्वशक्तिमान के सामने नीचा झुकना, ऊँचा उठाना अति प्रसन्न पुकार, और हृदय के चाहत की पुकार, उपर उठाना यानि अपने हृदय को ऊँचा करना
हाथो को, ध्वनि, झुण्डा इत्यादि उठाना है, ऊँचा उठाने का कुछ युनानी और इब्रानी शब्द निम्न है :-

-	रम/कमरा इब्रा	-	ऊँचा उठाना, उदर ढकेलना, ऊँचा बनाना, ऊँचा स्वर ऊँचा स्थिर करना। ऊँचा
-	गवाह/गोवाह	-	उपर उठाया करना
-	नासा	-	उपर उठाये हुए
-	अनाह	-	उपर गया हुआ, उठाया हुआ
		-	बढा हुआ, ऊँच में निर्धारण करना
-	सुपरियो (यूनानी)	-	उपर उठाना, ऊँच उठाया जाना,
-	कऊचाऊमी (यूनानी)	-	गर्व, आनन्द, हर्ष, महिमा मे

महिमान्वित करना में शब्द परमेश्वर के लिए बनाए गये बिपुल स्तुति का शब्द है – एक तरह से ऊँच स्वर या हर्षित उपासना को बताया है।

व्यक्तिगत गुणात्मकता कुलु ३:१५-१६

हम एक दूसरों को उत्साहित करने भेंट और तारीफ (प्रोत्साहन, सम्मती, सूचना, स्मरण, प्रशिक्षण) भजन और आत्मिक गानो से करने के लिए है। यह परमेश्वर के वचन से प्रकट है, और मण्डली के मध्य गानो, (१कुरि १४:२६) जब हम साथ मिलते, कुछ गाते, अन्य सिखाते, या सिध्दाँत, को बताएगें इत्यादी सब आत्मा में चले और फलदायी हो, या देह को बनाए) हम परमेश्वर के आत्मा के प्रवाह हमारे मध्य में अनुभव प्राप्त किए है, जो भी हो, कई बार हमने आशिष पाने के लिए लालायित हुए बजाए कि हम आशिष के लिए माँगे जो दूसरो के लिए आशिष बने। आइए हम आत्मा के परिपूर्णता के वरदान मे जाएँ, ताकि अन्य इसके द्वारा वे गुणित हो, परमेश्वर अराधना के वातावरण के बाहर से भी अशिष देता है, और हम प्रज्वलित एवं दृढता के साथ घर लौटते है।

चंगाई शमू १६:२३, मती – ८:२

दाउद पाया कि जब वह परमेश्वर की स्तुति साज एवं संगीत से शाउल को चंगाई की सेवा की किया। यह सिध्दांत पूर्व बिन्दु से सम्बधित है ।

- जहाँ हम अकसर देह में अराधना के वक्त सेवकाई तेल से दे सकते है। यह एक जिक्र करने वाली बात
- यह है कि यह एक केवल आत्मिक और भावनात्मक चंगाई, किन्तु शारीरिक चंगाई भी विशेष तरीके से अराधना द्वारा बांट सकते है। मती ८:२ एक कोढी यीशु के पास आया और लिखा है कि उसने अराधना की फिर चंगाई माँगी, चंगाई अराधना के

फलस्वरुप आई, मती ९:१८ एक बदत्तर बीमारी, यह सम्भव है कि अराधना द्वारा मृत्यू पर जय पाया जा सके, मती १५:२५ कभी – २ अराधना के मध्य, परमेश्वर अपन आप को हमारा चंगा कर्ता के रुप में प्रकट करता

- निर्ग १५:२६

"........... क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करनेवाला यहोवा हूँ । इस दर्मियान आशिष का महान समय होगा, और कोइ परमेश्वर को न ढूढेंगे, संगीतज्ञ सेवा को बंद करके और जीवन को अर्थपूर्ण बनाने के लिए जैसे परमेश्वर अपनी इच्छा ने श्वास देते है । एक गाना, नृत्य इसका उदाहरण हो सकता है, और गायक गवाही दे चुके है कि लोग गानों के दौरान ही चंगे हो गये है । यूनानी में आराधना के लिए एक शब्द थेरापियो – का अर्थ चंगा करना, इलाज करना, जैसे हम परमेश्वर के चरित्र को अराधना में लाते है । तब परमेश्वर हमारे बीच में जब चंगाई कर्ता के रुप में प्रकट होता है जैसे ही हम उसके, जीवन, तन्दुरुस्ती, आनन्द, और उसके मन:स्थिती को लेते है तो चंगाई निश्चित मिलती है । नीति १७:२२ और याकूब ५:१३ जो हर्षित है गाये, और आनन्दित हृदय हमारे हवाई जैसा भलाई का काम करेगा, स्वाभाविक जगत मे भी, इस बात की घटनाएं बढ रही है जो गवाही है कि संगीत में क्षमता है कि चंगाई और छुटकारा लाए । संगीत विज्ञान ने स्पष्ट किया है कि संगीत मे वह क्षमता है कि बीमार अंग अविचल अवयव तक पहुँचे और भलाई या बराई का असर डाले, यदि वह बात स्वतंत्र संगीत में है तो कितना अधिक शक्तिशाली और अभिषिक्त अराधना संगीत में हो सकता है ।

पश्चाताप यशा ६:१-५, रोम १२:१-२

जब यशायाह यहोवा को ऊँचे पर उठाया हुआ देखा, और साराप अराधना मे एक दूसरे को पुकार कर, वे परमेश्वर की पूजा नही किये, न युध्द में गये न ऊँचा उठाया, या आनन्द से उच्छल पडा – वह चिल्लाया ....

हाय – हाय मै नष्ट हुआ, क्योंकि मैं अशुध्द होठ वालें मनुष्यों के बीच मे रहता हूँ, क्योंकि मैं ने सेनाओ के यहोवा महाराजा धिराज को अपनी आँखो से देखा है तब उसने परमेश्वर के नजन में अपने अपवित्र देखा, इस प्रकार का नजरियां हम सबके जीवन में चाहिए । जब हम अराधना करते है, तो इस बात के लिए भी तैयार रहना चाहिए कि परमेश्वर हमारे हृदय की सच्ची दशा को प्रकट करे ताकि हममे ईश्वरीय पश्चाताप आए और हम दुनिया की बातों के लिए पश्चाताप करें । २कुरि ७:९-११ (हो भी सकता है कि जो हम देखे उसके लिए तैयार न हो)

रोमियों १२:१ में कहता है कि शरीर को जीवित भावता हुआ बलिदान करके चढाना आत्मिक अराधना है । और हमें संसार की वस्तुओं से अलग कर लेना चाहिए जब हम परमेश्वर को देखते है

- अईश्वरीय इच्छा मूर्छित होगी
- हमारी इच्छा उसकी ओर होगी, यह उसे जानने की शुरुआत होगी ।

पुन: एक बार – हृदय की पुकार को सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करने के लिए साजों /संगीत का स्वर को ढूढें और लाएं इस तरह संगीत आवश्यकता होगी

- हो सकता हे कि बिलाप का गीत या शोक को पहचाना जाए, यिर्मयाह – ९:१७ आज की बढने वाली कलीसिया में पश्चाताप की आवश्यकता है । बिना किसी नये और गहन पश्चाताप के कार्य के बिना वेदारी को नहीं देख पायेंगे ।

परमेश्वर को ढूढना – भजन २७:४

एक बार अपने आप से मुह गोडे – हमारी कुछ इच्छा न होगी, परमेश्वर के भवन में जीवन भर रहूँ । उसकी सुन्दरता को बनाए रखने के लिए, और उसके मंदिर में खोजना, जितना अधिक हम उसे ढूढते हैं, जितना अधिक हम उसे देखेंगे, वह अप्रतिरोधी है, सुलमान का बिलाप गीत दुल्हन का बेहतरीन तस्वीर है, अराधक परमेश्वर को ढूढता है, आज वह दिन है कि परमेश्वर को हम ऐसा ढूढे ऐसा ढूढे जैसा इसके पूर्व नही ढूढा हो ।

विजयोत्सव – भजन – १५०, यशा ५१:११

समय ऐसा रहा कि परमेश्वर अपने आप को नृत्य का परमेश्वर के रुप में प्रकट किया, आनन्द और हर्ष हमें यह जमाना चाहिए । " .... अवणर्नीय आनन्द और महिमा से भरा" केवल इसलिए कि हम जानते, और मसीह पर विश्वास रखते है । १ पत १:८ जहा कहीभी मण्डली है आनन्द की भरपूरी में प्रवेश करना आरम्भ भी नही किया है । इन अंतिम दिनों मे हमे परमेश्वर के इस विस्तारित आनन्द की भरपूरी को मण्डली मे उण्डेले जाने का देखना बाकी है । परमेश्वर ऐसे लोगों को तैयार कर रहा है जो पूरे संसार में बिजयोत्सव को कैसे प्रकाशित करना चाहिए जानते है । साज, संगीत नृत्य, गाने परमेश्वर के आनन्द के प्रकाश को कलीसिया में प्रकाशित करेगा – दु:ख और शोक हमारे सामने से भाग खडे होंगे । प्राय: हम यह देखते है कि लोग तेज गानों को स्तुति में और धीमे गीतो को अराधना में गाते है । यदि हम परमेश्वर से मिलते है तो अपने लोगों के स्तुति से आनन्दित होता है । वहाँ और कुछ नही बल्कि इसी तरह की अराधना के अलावा और कुछ करने की जरुरत नहीं । कभी – २ उत्तम है कि कुर्सियों को पिछे ढकेल दें, हँसे और नाचें साथ में क्योंकि आनन्द का परमेश्वर हमारे मध्य में है । हर्ष की ध्वनि के साथ साजो के ताल पर थिरकने के लिए प्रोत्साहित करें । ताल ध्वनि और गानों को चाल प्रसन्नता के साथ चलने दे ।

सुसमाचार प्रचार

भजन ४०:३ प्रेरित १६:१५ – ३४ यूहन्ना १२:३२

फसल के महानतम दिन में और सुसमाचार प्रचार कलीसिया के आगे चलता है । अराधना के प्रस्तुतिकरण को सीमित करने के बजाए प्रचार को जारी रखें, (क्योंकि अन्य जाति उभारे जाएगे) बहुत तेरे मण्च की ओर उध्दार के लिए आगे बढेंगे, जैसे हम ऊच्च स्वर से अराधना करते है । "और यदि मैं उपर उठाया गया तो धरती पर से सबको अपने पास उठा लूँगा जब सीलास और पौलुस स्तुति के गीत गाये – कितना बडा परमेश्वर के सामर्थ का उपस्थिति था, कि वहाँ का जेलर उध्दार के लिए पुकार उठा । हमारा जीवन, और हमारा परमेश्वर के प्रति प्रेम स्त्रीयों एवं पुरुषो को उध्दार पाने के लिए उत्साहित करे । वे हमारे जीवनों में परमेश्वर को देखें, कि वे उस पर विश्वास और भरोसा रखें, यदि हम आवाज करते हैं – केवल ध्वनि के लिए, या चाहे जो भी हो अराधना में प्रवेश करते है, केवल आदत के वजह से, तो अविश्वासीयों को केवल ध्वनि और परंपरा ही देखने सुनने को मिलेगा । जब कभी यदि हम परमेश्वर को अपनी अराधना में मिलते है, तो अविश्वासी मात्र परंपरा और ध्वनि के आगे और परमेश्वर की सामना को भी पायेंगे ।

युध्द मुकाबला – २ इति २०

इस अवसर में, अराधना और स्तुति के कारण एक बडे समुह को जीता जा चुका है, जो कलीसिया इस युध्द में है उनसे कई उदाहरणों को देख सकते है ...... क्योंकि हमारा युध्द अधिकारियों से, और इस संसार के अंधकार के शक्तियों से और उस दृष्ट की आत्मिक सेनाओ से है, जो आकश में है "इफि ६:१२, मल्लयुध्द शब्द का यूनानी शब्द पाले है, जो उस समय कुस्ती का जो मुकाबला होता था उससे लिया गया है । और जिस मुकाबले में मौत तक कुश्ती होता था । केवल एक औजार, हाथ और पैर इस्तेमाल का होता और विपरीत खिलाडी के गले में एडी रखकर मारा जाता था, यहां बराबरी का मुकाबला नही होता था । हम आत्मिक युध्द में हाथ और पांव का इस्तेमाल करेंगे, और उस अध्याय में नृत्य के आधीन होगा, यह समझना हमारे लिए और भी महत्वपूर्ण है कि हमारी आत्मिक मल्लयुध्द कितना सामर्थशाली हो सकता है, जो लोग परमेश्वर के उपस्थिती मे वास करते है, उनके समक्ष शत्रु खडा नही रह सकता, जब वे अराधना मं प्रवाहित होते हैं । कलीसिया अभी भी इस मल्लयुध्द में अपनी स्थिती को सीख रहा है, जबकि संभी गायकों और नृतको को पढाया जा रहा है संसार भर में कि वे गानों, बजाने और नृत्य को मल्लयुध्द जैसे आत्मिक अराधना का जिम्मेदारी से अगुवाई करे । सभी ध्वनि वायु से संचारित होता है, यदि शैतान वायु शक्ति का राजकुमार (इफि -२:२) है, तो हमें स्तुति अराधना से भर देना चाहिए जैसे दोधारी तलवार (भजन १४९:६) चिल्लाने से न डरें – स्वर्ग में (चिल्लाना यानि, बिगाडना विशेषकर, कानों को फाड देना, ध्वनी से सर्वनाश करना, चतुराई से, जयघोश, ललकार से, तुरही के चेतावनी ध्वनि, स्वतंत्रता, हर्षनाद, के सूचना के साल) यहोशू – ६:५ २इति १३:१५ भजन ५:११ कोई भी चिल्ला सकता है । और आवाज करके और केवल शोर मचा सकता है - शैतान शोर मचाने से नही डरता, लेकिन ध्वनि में परमेश्वर है तो वह सब परमेश्वर से नही है, सर्वनाश हो जाएगा । हमें मित्रों पडोंसियों को शैतान के हाथ से छुडाना चाहिए, ताकि वे परमेश्वर के राज्य के लिए स्वतंत्र किए जाए । संगीतज्ञ, गायक और मण्डली – गानों को मनन करे और आवाज को भी जिसे आप लोगों के मध्य मल्लयुध्द के लिए प्रयोग करते है । शहनाई और नगाडे मल्लयुध्द के लिए

उत्तम होता है जब पूरे प्रतिष्ठता के साथ बजाया जाए । हमें वह आवाज जिससे शत्रु हास्ता और जड सहित उखाड फेंकना सीखना चाहिए ।

धन्यवाद स्तुति उत्पन्न करता, स्तुति ऊच्च स्तुति को, ऊच्च स्तुति आराधना को, उत्पन्न करता है, अराधना कई रीति से प्रस्तुत किया जा सकता है । केवल उपासना ही आवश्यक नही हैं, ईश्वरीय जीवन परमेश्वर के साथ सम्बध में से निकलना चाहिए यह हमारी अराधना है । तब परमेश्वर की महिमा हमारे जीवनों में प्रकट होगा, जब हम उसकी समानता को महिमा लेते है । परमेश्वर का आत्मा रोज के जीवन में प्रवाहित हो, लोगों को चमत्कार दिखाकर उसके राज्य में नही लाया गया, उन्होने देखा कि यीशु महान कार्य किये, तब उसे क्रुस पर चढाया, चिन्ह और चमत्कार परमेश्वर को जानने और उसके ही राह पर चलने से आता है ।

स्तुति मे नृत्य

जो परमेश्वर के समक्ष नाचते है, इस बात को ध्यान में रखकर आत्मिक नृत्य के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए इस तरह वचनों को खोलकर उनके सेवकाईयों के सम्बध में रख देते है, इसके बाद नृत्य के साथ अराधना करने में जो महान बातें नियोजित है उसे देखने पाते है । हम नियमित चलनेवाली थोडा हिलना, डुलना, झुकना के विषय में नही बात कर रहे, जिसके बारे में संसार भर की कलीसिया जानती है । (यह एक पहलू और नृत्य का और वांछित आत्मिक तरीका है जिसमें हम प्रभू के उपस्थिती में आनन्द का इजहार करते है ।) हमारी इच्छा है कि अराधना में पूरी स्वतंत्रता को प्रकट करें । और मसीह का देह परिपक्वता के योग्य, और सही समय पर आत्मा और सच्चाई में अराधना करना, किसी भी माध्यम का प्रयोग करना जो परमेश्वर कहता है की प्रस्तुत करने का उचित तरीका हो । नाचना धर्मशास्त्र की सच्चाई है, और इसलिए हमें सच्चाई में ईश्वरीय समझ के साथ जिम्मेदारी और क्रमानुसार उत्सव मनाना चाहिए ।

हम डरते है कि लोग बिना उचित विचार, प्रार्थना और शिक्षा के इस सोंच में चले गये, कुछ नृत्य को अपना लिया, और सृजनात्म बातो को भी, इस बात की गहरे अर्थ को पहचाने बिना कि इन अंतिम दिनों की कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना है । आज कल हम बाहरी चीजों को मरते तक सीखते है - जहाँ तक हमारी इच्छा करता मृत्यु के बिना जीवन नहीं, परमेश्वर चाहता है कि नृत्य सेवकाई द्वारा जीवन का संचार हो, और केवल थोडे लोगो के दल जो स्वतंत्र हुए, और नई बातों का अभ्यास करे ताकि सृजनात्मक पहल बना रहें । कुछ बातें जो अंतिम दिनो मे प्रकट कर रहा है, और जमा करके कलीसिया के लिए रखा है, वे पाँव के विषय हो सकता है ·

नृत्य सेवा में जो बातें सम्बधित है, उसका संक्षिप्त अध्ययन अपने आप के लिए वचन का अध्ययन करे यह आरम्भ से ही केवल नजरिया के लिए ही करेंगे ।

पवित्रशास्त्र के वचन का अध्ययन – नृत्य एवं हर्ष के लिए शब्द (इब्रानी)

१. गुल मिल रीढ के चारो तरफ (किसी उग्र भावना के वंश में होना) हर्ष : (पिछे ढुबकना) डर : आनन्दित होना, हर्ष, प्रसन्न होना, आनन्दित होना, वृत्त में जाना,

भजन : २:११, ९:१४, १३:४-५, १६:९, २१:१, ३१:७, ३२:११, ३५:९, ४३:४, ४८:११, ५१:८, ५३:६, ८९:१६, ९६:११, ९७:१-८, ११८-२४, १४९:२, यशा ९:३, १६:१०, २५:९, २९:१९, ३५:१-२, ४१:१६, ४९:१३, ६१:१०, ६५:१८-१९, ६६:१०, १ इति १६:३१, अयूब ३:२२, नीति २:१४, २:२१-२३,,होरो – ९:१, १०:५, हब – १:१५, ३:१८, सपन्या ३:१७, जक – ९:९, १०:७,

२. चुल, चील घुमाना या घुरघुराना (वृत में या रेघारीनुमा चुडिया समान) नृत्य करना, घुमड नृत्य, वृत में नाचना, दर्द से छटपटाना, (विशेषकर प्रसव पीडा) दु:ख सहना

व्यवस्था – २:२५, यहूदा २१:२१-२३, अयूब १५:५०, भजन २९:९, ५५:४, यशा १३:८, २३:४, २६:१७-१८, ५४:१, ६६:७-९, यिर्म ४:१९, यहेज – ३०:१६, योएल २:६, यीका – ४:१०

मकोल (कुल से – उपर) एक छोटा नृत्य (वृत) भजन ३०:११, १४९:३, १५०:४, यिर्म ३१:४, बिलाप-५:१५, मकोलाह (मकोल का अकाल) छोटे नृत्य का कम्पनी निर्ग १५:२०, ३२:१९, न्यायी ११:३४, २१:२१, शमू – १८:१६, २१:५१, २९:५, राजा १९:८, श्रेष्ठ गीत ६:१३, शमू – ६:१४)

३. घुमघुम कर नाचना, वृत में नाचते हुए घुमना, २शमू – ६:१४

४. रेकड ढप्प लगाना, प्रोत्साहित करना, (व्यापक आनन्द के लिए, नृत्य कूदना, दण्डवत करना लाधना)

५. डलाग उछलना या लांघना ।
२ शमू २२:३० भजन १८:२९ यशा ३५:६ श्रेष्ठ २:८, सपन्याह १:९

६. पजाज कुढना, चिपकाना, हल्का होना, आग से घातु के शुध्द रुप को अनुग्रहता से अलग करना, मुल शब्द से सम्बधित छाननी द्वार ठोस बनाना, मजबूत बनाना ।

७. कगाग नृत में घुमना, विशेषकर पवित्र पदयात्रा में हासिल करना, त्योहार मनाना, बिजयोत्सव, (पवित्रता के साथ नाचने कुदने का उत्सव) उपवास रखना, मतवालों जैसे तेज घुमनेवालों वाली नृत्य १ शमु ३०:१६ निर्ग ५:१ लैब २३:१४, भजन ४२:४ निगम १२:१४, १७, २३:१४, १६:१५

पवित्र शास्त्र के वचन का अध्ययन – नृत्य एवं हर्ष के लिए शब्द (यूनानी)

१. अगालियाओ अगान से लिया गया है, और हालोमाई) (कुदना, छलांग, उछनला, उपर)
ठिक रीति से आनन्द से उछलना, ऊँचा उठाना, अति प्रसन्न होना, अति आनन्दित होना । लूक
१:१४,४४, ४७:१, १०-२१, मती ५:१२ यूह ५:३५, ८:३६ प्रेरित
२:२६, ४६, १६:३४ पतर १:६,८, ४:१३, इब्रा १:९ यहूदा – २४, प्रका १९:७

२. हालोमाइ - कुढना, उचकना, उछलना । प्रेरित ३:८, १४:१०-३

३. इक्जालोमाई उछल पड़ना, उचकते हुए, छलांग प्रेरित ३:८

४. स्कर्टाव : कुढना, नियमानुसार बढ़ना आनन्द के छलांग । लूक ६:२३, १:१४, ४४

५. क्लारोस नृत या घेर में छोटा नृत्य, गाने और बजाने वालों का दल, घुम - घुम कर नाचने
वाला, लूक १५:२५

आराधना में नृत्य

अपने हाथो को उठाना, परमेश्वर के समक्ष नतमस्तक होना, हृदय के समर्पन को शरीर के साथ प्रकट करने का प्रदर्शन है । व्यवस्था ६:२ ‘‘तू अपने परमेश्वर यहोवा से, अपने सारे मन, और सारे जीवन, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना ।) यीशु मरियन की उपासना को ग्रहन किया, क्योकि उसने आना सब कुछ उसके चरणो में अर्पित कर दिया, और यीशु को अपना प्रभू एवं राजा मानकर उसके चरणों को अपने आँसुओं से धोकर, अपने बालो से पोछा (युहना – १२:३, लक ७:३८) यह स्वभाविक अराधना का प्रतीक कर्म है ।

२ शमु ६:१४ – १ इति १५:२९ दाउद परमेश्वर के सन्मुख अपने पूरे शक्ति से नृत्य किया, भजन १४९:३, ‘‘आओ नाचते हुए एसकी उपासना करे’’ प्रका १९:७- आओ हम आनन्दित और मग्न हो, क्योकि मेमने का विवाह आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हिन अपने आप को तैयार किया है ’’

न्यायी – २१-२१- शिलों पुत्रियाँ प्रति वर्ष नाचते हुए उपासना करती थी, जो नियुक्त दाख की बारी में थी ।

यिर्म - ३१:१३ (१२ से पढ़े) ‘‘तब उनकी कुमारिया हुई हर्ष करेंगी, सब जवान और बुढ़े एक साथ यह हर्ष की उपासना गेहूँ का फसल को काटने के बाद आरम्भ होता है, दाखरस और तेल (हर्ष अभिषेक, शब्द) मे तीनों बाते मिलकर नृत्य सेवाकाई को संतुलित करती है)

भजन – ३०:३१ ‘‘ तूने मेरे लिए शोक को हर्ष में बदल दिया ’’

सुस्वागत्म पवित्र आत्मा का भेंट देना

वर्तमान दिन के वक्त के लिए बाईबिल की आधार

"मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन मे पवित्र समझो, जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय पूछे, उसे उत्तर देने के लिए सदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ" (१ पत ३:१५)

हम अंतिम निदो के उतेजित दिनों मे जी रहे है, और परमेश्वर अपनी पवित्र आत्मा का उण्डेलना दूनियां भर की कलीसियाँओ में संगतियो पर, मण्डलियो पर लोगों में नये तरीके उण्डेल रहा है, योएल – २:२८-२९ प्रेरित २:१७-१९व) ये पवित्र आत्मा का उण्डेला जान एक महान जागृति की आत्मिक ताजगीपन का अनुभव होता है (प्रेरित ३:१९) परमेश्वर के नये जोश के साथ, खोए हुओ के लिए तरस और पवित्र जीवन जीने की चाहत, फिर भी नये रीती से पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने का प्रवाह से विभिन्न तथ्यों के प्रदर्शन से महसूस होता है कि कुछ अच्छे विश्वासियो की जीवन भर के प्रश्न एनसे उभर आए है। मुख्यत: ये प्रश्न पूछे जाते है। कि हम इसे बाईबिल में कहाँ पाते है। यह अध्ययन इस प्रश्न का उतर देग। हमारे भम्र को स्पष्ट करे और हमे तैयार करें कि इस नये प्रकार के पवित्र आत्मा के भेट के तरीके प्राप्त करने के लिए संसार भर में हमे तैयार करें।

१. क्या मै इस अनोखी अनुभव को स्पष्ट कर सकता हूँ कि "विभिन्न कलीसियाएं, मण्डली ठिक ठिक बाईबिल के वचनों के अनुसार है ? इसका उतर है हमेशा नही" या दूसरा कोई प्रश्न पूछना क्योकि ..... "

२. क्या यह अनुभव बाईबिल के सिघ्दातो सें सहमत होता है ? इस प्रश्न का उतर – "प्राय हाँ"

बाईबिल प्रारंभिक बचनों को लिए हुए है कि हम क्या विश्वास करें और क्या न करे बाईबिल में कुछ बचनें है जो अनुभव और विश्वास को प्रमाणित करता है, वे मसीदी अनुभव जिसे नियम कहते है वे उसे प्रामाणिकता के तौर पर विचार करते है। उदा. के लिए यीशु व्यभिचार में पकड़ी गई औरत को क्षमा करते हैं। (यूहना ८:४-११) यहा वहा वह हमारे नजरियों और व्यवहार के लिए परिमाण (स्तर) बना रहे हैं। हमें इस उदाहरण का अनुकरण कर दयालु रहना चाहिए, कृपालु और जो पश्वाताप करके आते है उन्हे स्थापित करने का प्रयास करने है।

तथापि बाइबिल दूसरा घटना भी रखता है - यह घटना और अनुभवो को जरुरी स्तर पर निश्चित करता जिसे अनुभवो को जरुरी स्तर पर निश्चित करता जिसे सर्वमान्य समझा जाता है। इसे हम सिध्दातिंक वचन के रुप मे नही सिखते नही अच्छे मसीही के लिए करने को वाध्य करते किन्तु यह दूसरा उदाहरण महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें इससे मिलती जुलती प्रकटीकरण और क्रियाकलाप उन्हे मान्यता दे सकती है। ठिक इसी प्रकार का अनुभवों हमारे दिनों में सम्मवत: जो बाईबिल में है के अनुसार नकल करें, लेकिन वे इसके करीब तो रहते कि समझ सकें कि वे परमेश्वर के है कि नही ? इसके लिए यीशु एक आदर्श रखते है, एक जन पर मिट्टी मे थुक सान कर देखने और सुननें की चंगाई को करते है। (मर-७-३२-३५यूह९:६-७) यह उदाहरण आज के दौर मे चंगाई के लिए अनोखा द्वार खोलता है , वास्तव में थूक का प्रयोग बिना ही हमें थूकने की जरुरत नही, किन्तु असामान्य बातों के द्वारा चंगाई करना यदि आत्मा अगुवाई करता है, ऐसी मामलों में यह छूट दी जाता है और देवीय अगुवाई प्रमाणित होता है जब बीमार चंगे होते है, अनेकानेक बातें बिना परिणाम अस्वीकृत होता है।

प्रमाणे – धर्मशास्त्र या बाईबिल सिध्दाँते

यहेजकेज अन्य उदाहरण है, उसने देखा कि हाथ के समान दिखने वाली चीज से उठा लिया गया और दर्शन में देखा कि वह यरुशलेम में है (यहेज -८:३) अनगिनत बार मुहके बल नीर्जिव मनुष्य के समान गिरा, केवल शारीरिक रुप से उठाया गया या आत्मा में ले जाया गया (यहेज १:२८,२:२, ३:१४, २४ और अन्य)

यहेज का जीभ तालू से चिपक गया, जिसके जिए तैयार न था और बोलने मे असमर्थ हो गया (यहेज – ३:२६) युकि यह अनपेक्षित अनुभव है, यही इसलिए दुहराई जाए । तथापि, वे इस उदाहरण का नकल न किया कि विश्वासी उसी के अनुसार चले । और न ही इसे मुख्य आधार वचन के अनुसार करका प्रचार किया, फिर भी कुछ बचनें विवरण पूर्ण है, वे दूसरों के अनुभव में इसी प्रकार की बात होना स्वीकार किया । ठीक इसी प्रकार की घटनाएं जो यहेजकेल के जीवन मे घटी वैसी ही बातें नही घटी फिर बाईबिल आधारित माना गया ।

पालन अपने समझ के अनुसार अनुवाद करना

- वचन का प्रत्येक जन अपने अनुभव और समझ के अनुसार भाषांतर करते है । लोग प्रशिक्षण पूर्व, पंथ या मण्डलीय भूमिका के अनुसार व्यापकता से बाईबिल को कैसे समझते और पढ़ते हैं । उदा. के लिए – पौलुस के सिर ढांकने के टिप्पणी पर विचार करें, "प्रत्येक जो अपने सिर को बिना ढके प्रार्थना या भविष्यवाणी करती वह आने सिर का अपमान .... उसे अपना सिर मुड़वालेना चाहिए । (२ कुरि – ११:५) इस भाग का अर्थ औश्र व्यवहारिकता अलग – अलग दल, मण्डली निर्भर करता है । कुछ मण्डली में यह एक विशेष सिध्दांत उस पथ के लिए बना, वे इसे लिखित तौर पर लिया कि "प्रत्येक नारी अपने सिर को ढांकना ही चाहिए ।" तथापि जब वे भविष्यवाणी के क्षण आते है, वे कहते है ये बाते लागू नहीं होती । भविष्यवाणी समाप्त हो चुकी है । वे विश्वास करतें है कि भविष्यवाणी १२ चेलो के साथ ही मरकर समाप्त हो गई ।

दूसरी तरफ, हमारे मित्र कहते है कि सिर ढकना नही है , क्योंकि आधुनिक युग में सिर ढकना ही अधिकार के अधीन रहने का चिन्ह नही गया तथुपि, क्योंकि भविष्यवाणी उनके विश्वास के सिध्दांत का विशेष भाग है, वे दिल से आमेन कहते है । यानि नारी भविष्यवाणी कर सकती है, यह एक ही वचन दो मण्डली के लिए प्रयोग किया गया लेकिन लागू करने में एक दूसरे के बिपरीत है ।

तब मैं एक अन्य मण्डली से मिला वे तो सिर ढांकने और न भविष्यवाणी पर विश्वास करते है, क्या बुराई है दिन के अन्त में वे विश्वास करते वो ही सही है, गल्ती तो उप्तति को वचन को अपनी समक्ष और सुविधानुसार भाषांन्तर करने और सिंध्दात में लागू करने से आरम्भ हुआ । हम सब विश्वास करते और वचन पर विश्वास करके बातों को करते है, किन्तु नये नियम में आयत नही दिया गया है, हा इस सिध्दांत को जान (ढूँढ) सकते है यदि कुछ बाईबिल के अनुसार है

रविवार पाठशाला बाईबिल में आज्ञा नही हैं, लेकिन हम जानते है कि यह बाईबिल के अनुसार है कि हम अपने बच्चों एवं दूसरो को परमेश्वर के वचन को सिखाएं (व्यवश्या ४:१०, ६:७ मती, २८:२० इत्यादि)

कुछ लोग विश्वास करते है कि साजो के साथ आराधना नहीं करना चाहिए । यह इसलिए है कि वे नये नियम ये कही भी साजो के इस्तेमाल को प्रयोग करते नही पाया । सोलहवीं शताब्दी में कुछ लोंगों ने कलीसिया के वीणा को जो जागृति लाने वालें रहे वे साजों को बरबाद किया क्योंकि वे नये नियम में नही पाया ।

सत्य, यह मुमकिन है कि प्रथम शताब्दी में कलीसिया के अन्दर साजो का इस्तेमाल नही हुआ जब वीणा आया न था । किन्तु वचन का इस प्रकार वेजा इस्तेमाल गलत है । बाइबिल मे लिखा है .... वीणा बजाते हुए परमेश्वर का भजन गाओ । .... डफ और वीणा बजाते हुए स्तुति करों (भजन १४९:३) नरसिंगा फूंकते हुए उसकी स्तति करो, सारंगी और वीणा बजाते हुए उसकी स्तुति करो (भजन १५०:३) भजन संहिता आराधना में साजो के प्रयोग से भरा पड़ा हैं ।

परमेश्वर के आत्मा के द्वारा प्रेरणा प्राप्त करने के कारण राजा दाउद आज्ञा दी कि आराधना में नयें गीत व साजों का प्रयोग करे । दाउद कहा यहोवा का आत्मा मुझमें होकर बोला, और उसी का वचन मेरे मुंह मे आया । (२ शमु -२३:२)१ इति – १५:१६, २ इति ५:१३, ७:६ भी देंखे आरभिक कलीसिया में आराधना करना कहाँ से आया यदि पुराने साजें पुराने नियम से नही ? वर्षो पूर्व दैवीय आराधना रीति तो दिया गया उसे कभी उठाया (लिया) नही गया इसलिए, संगीत साजें पुराने नियम में परमेंश्वर का सम्मान व आराधना करने में उपयोग लाया गया तो, आज भी हम उसकी सम्मान करने स्तुति करने में उपयोग किया जा सकता है ।

प्रत्येक चीज को वचन से बाईबिल द्वारा प्रमाणित करेन की आवश्यकता नही

एक महान कलीसिया अगुवा ने कहा परमेश्वर अपने किताब से बड़ा है वह मेरे लिए समाचार था, क्योंकि मुझे बताया गया था कि वह अपने किताब में हैं । मुझे बताया गया था कि परमेश्वर को बाईबिल मे से जान जा सकता है । यीशु के साथ यहूदियों के

वक्त यही समस्या थी, यीशु ने कहा – तुम पवित्रशास्त्र में ढूढते हो क्योंकि समझे हो कि उसमें अनन्त जीवन मिलता है और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है, फिर भी जीवन पाने के लिए मेरे पास आना नही चाहते वचन यीशु के बारे में है किन्तु वे उसके नही । यह मुमकिन है कि वचन जैसा लिखा है उसी पर चिपके रहें मायनो को जाने कि परमेश्वर उससे आगे भी कार्य कर सकता है उसको सामित कर देते है ।

प्रत्येक बात को वचन से बाईबिल द्वार प्रमाणित करने की जरुरत नही, किताब उसके विषय बातें करता है, कि यीशु इनके अलावा अन्य कार्य किए । यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ कि पुस्तके जो लिखी जाती वे संसार में भी न समाती अनुभव पूरे जगत मे भी न समाएगी, उसके शिक्षा एवं कार्य को विधियत यदि लिखा जाए । क्या इसका मतलब लिखी बातों मे भिन्नता या विवादित है ? नही ! यह उन बातों का छाया मात्र है जो वास्तव मैं है । यदि यीशु द्वारा किया कर्म लिखे नही गये तो बात सच हो कि सारी बातें बाईबिल में नही हैं । तो उतर देने के लिए क्या अस्वभाविक बाते जो वर्तमान काल मे हो रहा है बाईबिल के अनुसार है ? उत्तर है हाँ । क्या इनके लिए कोई वचन से प्रमाण है । उत्तर होगा, शायद हाँ । शायद नही भी, यह बात लोंगों के वचन को कैसे समझते है पर निर्भर करता है । निम्न बातचीत आत्मिकता के वास्तविकता को बाईबिल के सिध्दात को प्रस्तुत करेगा, जो शारीरिक और भावनात्मक प्रदर्शन पवित्र आत्मा के द्वारा होता है ।

अन्याय भाषाएँ

पुराने नियम मे कही पर भी विशेष और स्पष्ट भविष्यवाणी नही थी कि नये नियम के शुभारंम्भ के बाद आंधी तुफान, आग की जीभें, जोग मतवाले तो लगेंगे पर हकीकत में जाननें (समझने) वाली भाषा बोलेंगे (प्रेरित २:१-२१) बोलने वाले तो इसे नही समझते थे । पेन्टीकोस्ट में जब पवित्र आया तो बहुत सारी अस्वभाविक घटनाएँ और प्रदर्शन हुए । इन बातों का पूर्वानुमान किसी ने भी लगाया था । योएल २:२८-३२ की ओर जिसका पतरस मे जिक्र किया था किसी ने भी खोलकर न देखा । जब इस तथ्य को बयाख्या करने का दबाव बना, पतरस धर्मशास्त्र को प्रकट किया । पवित्र आत्मा के उभारे जाने पर कहा यह वह बात है जो योएल भविष्यवक्त के द्वारा कहा गया था (प्रेरित २:१६) फिर जब हम योएल २ को जाँचते इनमें एक बात नही पाते पतरस किसी तथ्य का बचाव नही किया, केवल उसने कहा यही वह बात है धर्मशास्त्र से प्रमाण ढूढना जरुरी नहीं कि बाईबिल में वो बाते शब्दश हो और हां फरीसी जो परमेश्वर के वचन पर आधारित होते हैं वे कह सकते है – आप क्या कर रहें कि योएल भविष्यवक्ता ने ऐसा कहा ? मैं तो आंधी की सी तुफान अग्नि का प्रकटीकरण और जीभ की बातें, आप इन्हे बाईबिल मे कहां पात्ते है ? यहा तक यीशु तक भी ऐसी बातें नही कही । तकनीकी तौर पर फरीसी सही भी है, फिर भी आत्मिक रीति से वे एकबार फिर गलत, मरे हुए है । योएल भविष्य की एक शक्तिप्राप्त करने को लिखते है तौभी धर्म शास्त्र कें पवित्र आत्मा को जो बातें हो होने वाली थी, उसका वर्णन एवं समावेश करना जरुरी नही समझा ।

जो वर्जित था वांछित हुआ

महान विध्दवान संत अगस्तिन ने कहा, परमेश्वर से प्रेम करो और जो चाहों सो करो इसका अर्थ था यदि आप सचमुच परमेश्वर से प्रेम रखते हो, आपको वही अच्छा लगेगा जो उसे, और आप आज्ञा को बिना आज्ञा मानेंगे (रोमि -२:१४)यदि इसे हम बाईबिल के सिध्दांत पर अनुवाद करेंगे तो हम कह सकते है, जो वर्जित था, वांछित हुआ । यही है, यदि कुछ बाते धर्म शास्त्र के अनुसार वर्जित या विवाहित, यह सम्भवत: वांछित है । एक बार यूहना ने यीशु के पास आकर विरोध प्रकट किया कि हमने देखा कि लोग आपके नाम से दुष्टात्मा निकालते है .... और हमने उन्हे रोका, क्योकि वह हमारे साथ नही थे (मर ९:३८) यूहना का मतलब – वह हममे से नही था, वह हमारे समान नहीं करना चाहिए, ऐसा करने के लिए उसे अनुमति नहीं रहना चाहिए, किन्तु यीशु ने उतर दिया, उन्हे मना मत करो, क्योंकि ऐसा कोई नही जो मेरे नाम से सामर्थ के काम करे, और जल्दी से मुझे बुरा कह सके, क्योंकि जो हमारे विरोध मे नही वह हमारे संग है (मरकुस ९:३९-४०)

आधार में साधारण बने रहना

हम व्यक्तिगत अनुभवों को वचन के प्रतिबधता समानता में उठाना नही चाहते । हम वेस्ट मिनिस्टर कबूली को जिसमे से शब्द समाहित है, समर्थन करते है । वचन में जोड़ने के लिए बन्धन नही है कोई भी कलीसिया जो व्यक्तिगत

अनुभव को तवज्जुब देता था वचन के अधिकार के बराबर अन्त मे वे सब वचन का विरोधी हो गया । यह उचित न होगा कि व्यक्तिगत अनुभव को शिक्षा करके नया सिखाया जाए । हम निम्न संदर्भ से सहमत है, किसी विशेष भविष्यवाणी के दर्शन के अनुसार भाषांतर के आधार पर कोई भी सिध्दांत न हो जब हम इसे दृढता से पालन करते है, फिर भी हम बाईबिल के भविष्यवाणी को क्षण भर विश्वास करते है । पौलूस इसे सर्वसामान्य रीति मे इसे इस तरह निर्धारित किया है । परन्तू जो भविष्यवाणी करता है, वह मनुष्यो से उनन्ति और उपदेश और शांति की बाते करता है । (१ कुरि १४:३) भविष्यवाणी हमेशा उन्नति करता, उत्साहित और आनंदित करे । कोई भी बात इस वचन सीमा सें बाहर आने पर भविष्यवाणी के दान को कलीसिया के अगुवों द्वारा सावधानी से परखना और जॉचना चाहिए । हम जो बातें हुबहू बाईबिल में वर्णित नहीं है जो अनुभवों और दर्शनों पर अस्तित्व में है, विश्वास करते है । बाईबिल काल मे बहुत सी बातें हुई जिनमें अंकित नही किए गये है, प्ररित यूहन्ना इस बात को अपने सुसमाचार के अंत मे लिख है, यीशु ने और भी बहुत से चिन्ह चेलो के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक मे नही लिखे गये (यूह २०:३०)

कुरिथियों की कलीसिया की आरंभिक समाओ में भविष्यवाणी आम बात थी । ये भविष्यवाणीयाँ जो बोला गया परमेश्वर के लिखित वचन को अंकित करके सम्मिलित किये या नही इसका पूर्व मनन कभी नही दी । पौलुस ने सिखाया कि भविष्यवाणी से आया शब्द बाईबिल के लिखित वचन से आया शब्द बाईबिल के लिखित वचन से कभी ऊचा नही उठाया जाना चाहिए । भविष्यवाणी अवश्य जांचा और विविधता की परख करना (कुरिथि – १४:२९)चाहिए, यीशु और बाईबिल और हस्तियाँ कार्य किए और परमेश्वरीय अनुभव बताया जो नही लिखा गया । अस्वभाविक दर्शन किसी को हुई उसे हम नहीं मान सकते केवल इसलिए क्योंकि इसे बाईबिल में ठिक - ठाक देया अनुभव नही पते । प्रत्येक आत्मिक अनुभवों को लिखना बाईबिल के लेखकों का उद्देश्य नही था । सच तो यह है कि ऐसा करना मुमकिन नही । यूहना कहता है । और भी बहुत से काम है, जो यीशु ने किए, यदि वे एक-एक करके लिखे जाते, तो में समझता हूँ कि पुस्तके जो लिखी जाती वे संसार में भी न समाती

बाईबिल के प्रमाण

आज के वर्तमान काल मे परिवर्तन / वेदारी संसार भर में बिभिन्न दर्शनों को बाईबिल के प्रमाण से सहयोग प्राप्त है । हम चार सर्व सामान्य और विवाहित दर्शनों को विविचेना करेंगे । वे ये है हिलना, गिरना, हँसना और भविष्यवाणी, यद्यपि इन बातो का कलीसिया में ऐतिहासिक प्रमाण है । हम केवल बाईबिल लिखित वचनों से देखेंगे

अ - हिलना

परमेश्वर के उपस्थिती से आत्मिक तथ्य और शारीरिक और हिलना बाईबिल के कई अन्य जगहो से सहमती प्रकट करता है । बाईबिल के इतिहास मे एक महान दर्शन / प्रकटीकरण अंकित है, परमेश्वर पहाड़ के उपर मूसा को दस आज्ञा देने के लिए उतरा संम्पूर्ण पर्वत कॉंपने लगा था । हूबहू मूल्माँकन करना अत्यंत उपमा होगा । तीसरे दिन सुबह, वहां विद्युत का कड़कना और चमकना, पहाड़ के उपर घना बादल और एक बड़ा तूरही का आवाज, प्रत्येक जो तम्बू मे थे कॉप उठे । तब मूसा जोगो को तम्बू के बाहर लाया कि परमेश्वर से मिले । और वे पर्वत के नीचे खड़े रहे, सिन । पहाड़ धुए से भरा था क्योंकि परमेश्वर पहाड़ पर आग के रुप में उतरा था । पहाड़ से धुँआ ऐसा उठ रहा था जैसे धुँआ यहा से पूरा पहाड़ हिल रहा था, और तुरही का आवाज ऊँचा और ऊँचा होता गया, मूसा ने कहा और परमेश्वर का उत्तर सुनाई दिया (निर्ग - १९:१६-१९) नये नियम में इसे इस तरह बयान किया गया है, उसके शब्द में पृथ्वी को हिला दिया (इब्रा – १२:२६)

यशायाह अपने दर्शन में परमेश्वर के ऐसी ही सामर्थ को अनुभव किया । नये नियम के इतिहास में महत्वपूर्ण उत्तेजनात्मक अवसर पर ऐसे दृश्य, परमेश्वर की उपस्थिती धरती को हिलाने जैसा प्रमाण है । जब परमेश्वर का एकलौता पुत्र, यीशु यसीह, क्रुस पर दु:ख उठा रहा था, पवित्र आत्मा चारो तरफ मण्डरा रहा था, बाईबिल मे लिखा है तब यीशु ने बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए । और देखो मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गये । और धरती डोल गई और पट्टाने तड़क गई, (मीका २७:५०-५१) पुन:यह कापना परमेश्वर के उपस्थिति का प्रत्युत्तर है । अत्यंत: हिलना पेन्तीकोस्त के दिन आया था वह प्रतिज्ञा के साथ आना हुआ । एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे वह सारा खद जहां वे बैठे थे, गूंज गया । और उन्हे आग की सी फटती हुई जीभे दिखाई दी, और उनमें से हर एक पर आ ठहरी । और वे सब पवित्र आत्मा से भर गये, और जिस प्रकार उन्हे आत्मा ने उन्हे बोलने की शक्ति दी वे अन्य भाषा बालने लगे । (प्रेरित २:२-४) आग की आंधी पर पुन ध्यान

दे, कि जंगल में परमेश्वर ने एलियाह को भेंट दी थी उसकी याद दिलाता है । बाईबिल मे लिखा है । वे वहा सब पवित्र आत्मा से भर गये ।

तुरन्त दूसरी बार जब वे सब इकठा हुए वे पवित्र आत्मा से भर गये । यीशु के चेलो द्वारा प्रथम सताव के कारण प्रार्थना के लिए जमा हुए थे । प्रार्थना करने के पश्चात जहा वे इकट्ठा थे हिल गया और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गये, और परमेश्वर का वचन हिसाब सुनाते रहे । (प्रेरित ४:३१) परमेश्वर के उपस्थिति में हिलने की कृपा के संम्भावित कारण को जानकर आश्चर्य होगा । एक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक जो स्वंय एक विश्वासी था परमेश्वर के धरती का सृष्टी के बारे चिंतित था । वह निम्न अध्ययन किया पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के उपर अंधियारा था, तथा परमेश्वर का आत्मा जल के उपर मण्डराता था, (उत्पति१:२) यह क्रिया पवित्र आत्मा द्वारा किया गया उसे मण्डराना (बहाना) इब्रानी में (रेकाफ) पुराने नियम में केवल तीन बार जिक्र किया गया है, दो बार उसे हिलने शब्द के रुप में अनुवाहित किया गया है (यिर्म-२३:९) जैसे स्पंदित होना, उत्तेजित हिलना (व्यवस्था -३२) कुछ टीकाकार रेकाफ शब्द को मुर्गी के चुजों पर ढकने जैसी बातों से जोड़ा है, किसी भी मामले में, मुख्यत आगे-पिछे हिलने की क्रिया से लिया गया है । आधुनिक वैज्ञानिक शब्दावली में, सम्भवत उततम अनुवाद शब्द कम्पायमान होना हो सकता है । यदि दुनिया को उर्जायुक्त करना है तो उर्जा प्रदान करने वाला होना चाहिए, यदि इसे राष्ट्र में स्थापित करे, वहाँ एक मुख्य संचालक हो, यह एक विशेष बात है कि शक्ति को वातावरण मे प्रवाह के रुप मेंरोशनी प्रवाह उर्जाप्रवाह, ध्वनि प्रवाह और अन्य माध्यम से है । इस प्रकार की प्रवाहें जल्दी- जल्दी आगे- पिछे होने वाली गति है । वे सामान्यत स्पंदन गति से उत्पन्न प्रवाह का कुछ प्रकार होता है । उजार् स्वंय उत्पन्न नही होती । यह एक सर्वोचित मानना यह है कि जगत को उर्जा देने के लिए सबसे पहले स्पदन गति के रुप में स्वयं परमेश्वर ने आत्मा से दिया ।

आत्मा के द्वारा चलना

बाईबिल में एक और प्रकार के आत्मा के गति का वर्णन किया गया है, क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से नही हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे । (पत १:२१) पवित्र आत्मा असली दुनिया को सामर्थ से भर दिया कि परमेश्वर की जीवन को ले जाए । उसी तरह, इसके बाद उसने प्रभु के भविष्यवक्ताओं को सामर्थ दिया कि, सुन्दरता और आत्मिक जीवन उसके सृष्टी मे लाए । उन्हे इसे शक्ति संचार के द्वारा करना था जिसे वचन मे लिखा है । चाहे बहाव, (इब्रानी-रेकाफ)शब्द का जोर से हिलना शब्द में भाषान्तर करे । बल्कि शक्ति का संचार कैसे भेजा जाता है । रुचिकर विषय है । हिलना संम्भवता सामान्य शक्ति का प्रत्युत्तर है । बाईबिल के आंवड़े इस बात की स्थिति को शरीर का हिलना परमेश्वर के उपस्थिती का प्रत्युत्तर को सहयोग कर सकता है ।

यह बाईबिल के अनुसार होगा कि परमेश्वर का आत्मा का बहना (यूनानी - फेरो)निर्जिव वस्तुओं पर और पवित्र लोगों पर हुआ । हिलना बाईबिल के अनुसार है क्योकि यह बाईबिल में है और, इसको उत्साहित किया है । कुछ लोग सोंचते है कि हिलना शैतान की ओर से है । कुछ मामलों में यह सच भी है । हमने हिलना को अपवित्र पाया । मरकुल ९:२२ में दुष्टात्मा कभी आग में और पानी में डालना था । शैतान लोंगो में कभी — कभी (हिलना) चिखना, और अन्य प्रकटीकरण ला सकता है ।

जो भी हो, एक अनुभवी जन इसे (शैतान) आसानी से पहचान सकता है । इसे तुस्त व्यवहार में (सामना) करना चाहिए । सच्चाई यह है कि शैतान ग्रसित व्यक्ति के शरीर में अपने वास का आभास कराती है । अस्वीकार करते है और यह सच है कि मसीही या विश्वासी परमेश्वर के आत्मा के द्वारा चलाये और हिलाए जाते है । (जैसे पहले ही बताया गया है ।) अब यहा हमने हिलना जो शारीरिक रुप से होता है जब परमेश्वर का पवित्र आत्मा बहुतायत से उतरता है को समाप्त करते है ।

ब - आनन्दित भविष्यवाणी

परमेश्वर का बहाव मनुष्यो में होता है उसका ब्यायक उदाहरण शाऊल और उसकी सेना में वर्णित है । प्रथम मुठभेंड़ शमूएल १०:१-१२ में देखते है जहाँ शमूएज, परमेश्वर द्वारा निर्देशित हे, शाऊल इस्रायल का प्रथम अभिषिक्त राजा था । शमूएल शाऊल के सिर पर अभिषेक के तेल को उण्डेलता है । इसके बाद स्वर्गीय अभिषेक आने की भविष्यवाणी की गयी । जब तू परमेश्वर के पहाड़ पर पहुचेगा, जहाँ पलिशतियों की चौकी होगी, और जब तू वहाँ नगर में प्रवेश करे, तब नबियों का एक दल ऊँचे स्थान से उतरता हूआ तुझे मिलेगा, और उनके आगे सितार, डक, वासुरी और वीणा होंगे , और वे नबूबत करते होंगे । तब यहोवा का आत्मा तुझ पर बल से

उतरेगा । और तू उनके साथ होकर नबूबत करने लगेगा । और तू परिवर्तित होकर और ही मनुष्य हो जाएगा । और जब यह चिन्ह तुझे दिखाई पड़ेगें, तब जो काम करने का अवसर तुझे मिले, उसमें लग जाना, क्योंकि परमेश्वर तेरे संग रहेगा (१शमु १०:५-७) बहुत से बाईबिल विधवान इस स्वार्थीपूर्व बातों पर अराधना करनेवाले याजको में भी नही सोचा (नही जाना), उन्हे ऐसा लगता है कि ए बातें नही आई । तथापि, उस जमाने के लोगो ने समझा कि वे विशेष दल के लोग है । वे यह भी जानते है कि परमप्रधान परमेश्वर का आत्मा उनके मध्य में कार्यरत है । न देखने वाले प्रश्न पूछे :- उनका पिता कौन है ? यह शक्ति है कि कुछ विशेष चीज पिता से पुत्र में उतर आया है (शमू १०:११ और आमोस ७:१४) अत: ऐसा लगता है कि एक आत्मिक ढाचा पाढियों से मौजूद था । इनके कई वर्षो बाद भी एलियाह और एलीशा के समय से काफी बाद में भी बड़ा दल याजको में साथ – साथ कार्य किये (राजा २०:३५, २ राजा २:१-१५, ४,३८ ५:२२, ६:१, ९:१)

परमेश्वर का शाऊल पर सामर्थ के साथ उतरने से इस परिभाषा में कोई संदेह नही रह जाता कि यह उतरना केवल शब्दो से कही ज्यादा आगे की बात है (१शमु – १९:२३-२४) जब उन सभों ने जो उसे पहले से जानते थे यह देखा किय वह नबियों के बीच में नबूबत कर रहा है, तब आपस में कहने लगे, कीस के पुत्र को यह क्या हुआ ? क्या शाऊल भी नबियों में का है ? इस गधांश के लिए एक बाईबिल विध्दवान ने इस तरह टिप्पणी की अवतरण में आत्मा के अलैकिक शक्ति पर केंद्रित है । शाऊल को वह करने के लिए बाध्य किया जिनके पूर्व उसने कभी नही किया था । यह शाऊल और उसे देखने वाले लोंगो को सम्भवत : चकित कर दिया था । उसके साथी सब निहार रहे थे । जो सुन रहे थे वही देख कर उनके लिए आश्चर्य करना स्वाभाविक था । ऐसा लगता है कि आत्मा की शक्ति भविष्यवक्ताओ को हटकर करने की शक्ति दी जिसे वे सुन और देख रहे थे । शाऊल के लिए बाते जानी पहचानी थी उस परिवर्तन क्रिया को देख रहे थे । आत्मा के शक्ति का प्रभाव घटनाओं के साथ समयो तक बना रहा । शाऊल और शाऊल के लोगों को परमेश्वर ने भविष्यवाणी करने की सामर्थ दी

वर्षो पश्चात, जैसे परमेश्वर का आत्मा से हर्षित वातावरण छा गया तो कोई भी इस घटना पर संदेह नही किया । दाउद को पकड़ने के लिए शाऊल एक जबरदस्त सेना की टुकड़ी भेजता है । वे अपने राह पर वेदारी हो इस के लिए कभी भी तैयार नही थे, जब शाऊल के दूतों ने नबियों के दल को नबूवत करते देखा, तब परमेश्वर का आत्मा उन पर चढा, और वे भी नबूबत करने लगे । इसका समाचार पाकर शाऊल ने दूत भेजे, और वे भी नबूबत करने लगे, फिर शाऊल ने तीसरी बार दूत भेजे वे भी नबूबत करने ले (१ शमू – १९:२०-२१)

हमारी कल्पनाएँ परमेश्वर के आत्मा का इन भविष्यवक्ताओ से होकर गुजरने की प्रतिबिम्ब को देख सकते है । इन सेना के अगुवों को भविष्यवाणी करने के लिए आश्चर्य चकित कर दिया । यह स्पष्ट है कि उनकी इच्छा के विरुध्द अनुभव था । उनके पास चुनाव नही था । जब शाऊल को इसके बारे बताया गया, उसने और ज्यादा लोंगो को भेजा और वे भी भविष्यवाणी करने लगे । शाऊल तीसरी बार लोगों को भेजा । फिर वही सब भविष्यवाणी करने लगे । यह एक उत्केंन्द्र का उदाहरण है, या एक विशेष केन्द्र स्थल, का जो अभिषेक और आत्किम शक्ति का था । लोग वहां गये और आत्मिक अलैकिक अनुभव को प्राप्त किए ।

अन्तत: (शाऊल)स्वयं रामाह के लिए निकलता है – और उसने पुछा, शमूएल और दाऊद कहां है । किसी ने कहा है , वे तो रामा के नबायोत में है तब वह उधर, अर्थात रामा के नबायोत को चला, और परमेश्वर की आत्मा उस पर भी चढा, और वह रामा के नबायोत को पहुँचने तक नबूबत करता हुआ चला गया । और उसने भी अपने वस्त्र उतारे, और शमूएल के सामने, नबूबत करने लगा, और भूमि पर गिरकर दिन और रात उस रात नंगा पड़ा रहा (१शमू १९:२२-२४)राजा जेम्स संस्करण में लिखा है । वह उस दिन और रात नंगा पड़ा रहा यह संक्षिप्त करते हुए कहा गया कि यही बातें उन दल के सेनाओ के साथ हुई, इसलिए, शाऊल का प्रतिक्रीया भी वैसी ही भविष्यवाणी करने लगा जैसे सैनिक कुछ समय तक भविष्यवाणी करते रहे थे । सैनिको के समान ही, शाऊल की इच्छा का पाप नही था । यह शाऊल उत्साही में से नही था, न ही, यह शाऊल क्षमा प्राप्त किया जन किन्तु आत्मा ने उसे पकड़ लिया था । उसके शरीर, आत्मा और प्राण को अधिकार में कर लिया था । यदि शाऊल के हिलने की दशा, हर्षोन्माद, जैसे ऐतिहासिक सभा के दौरान देखा और सुना गया, जैसे वर्तमान काल की समाओं में होती है, अनिश्चित है । किन्तु सम्भावनाओं से इन्कार नही कर सकते । शाऊल आत्मिक उत्केंद्र में भविष्यवक्ताओं के मण्डली में प्रवेश किया और उनके समान हो गया । परमेश्वर के पास अधिकार है कि अभी भी जो हमारे लिए उचित लगता है उसे आरम्भ करें जो आत्मिक अनुभव के लिए बिलकुल अजनबी हो सकता है । हमें यह बात ठिक से जान लेना है कि परमेश्वर ही परमेश्वर है और हम नही ।

स - गिरना

आजकल गिरना या आत्मा में उमड़ना सर्व सामान्य प्रकटीकरण पाया जाता है। वर्षो से पेन्टीकोस्टल और चमत्कारिको को आत्मा में बंध किय गये कहलाते थे। पेन्टीकॉस्टल और चमत्कारिक अनुभव से कोसो दूर रहे। प्रत्येक पंथ और कलीसियाई पार्श्वभूमी के मसीहियों एव विश्वस्ती सदियों से इस प्रकटीकरण के विषय गहन जाँच करके लिखते आए है। सत्य यह है कि प्रकटीकरण का प्रेरणा परमेश्वर के वचन बाईबिल के अनुसार है। परमेश्वर के उपस्थिति में खड़े न रह पाना, गहरी निद्रा और परमेश्वर के चरणों पर मृत समान गिर पड़ना जैसे वचनों का प्रयाप्त विवरण मिलता है। (उप्तति १५:१२, २ इति ५:१४, ७:२, प्रका १:१७) दानिएल का बाबूल में गिरना ही केवल एक अच्छा उदाहरण नही है, परन्तू उदाहरण यह भी है कि जब उपासक उपासना में उमण्डलने लगता तब कई बाते भी हो सकती है। मै दानिएल अकेला उस दर्शन को देखा, जो लोग मेरे साथ थे वे नही देख पाये, परन्तू डर उनके ऐसा समाया कि वक वहा से भाग खड़े हुए और अपने आप को छुपाया। अत: में अकेला रह गया, उस अद्भूत दर्शन को निहारते हुए, मुझमें कोई शक्ति नही बची थी, मेरा चेहरा पीला पड़ चुका था, मैं निसहाय था, तब उसे यह कहते सुना, और जैसे मैं उसकी सुना, मैं गहरी नींद में सो गया, मेरा मुँह जमीन की तरफ था, एक हाथ बढकर मुझे स्पर्श किया और स्थिर किया मेरे हाथ पांव कॉप रहे थे। उसने कहाँ हे दानिएल, अति प्रिय पुरुष, जो वचन मैं तुझसे कहता हूँ, उसे समझ ले, और सीधा खड़ा हो, क्योंकि अभी मैं तेरे पास भेजा गया हूँ, जब उसने मुझसे वचन कहा तब मैं खड़ा तो हो गया, परन्तू थरथराता रहा। फिर उसने मुझसे कहाँ, हे दानिएल, मत डर (क्योंकि पहले हि दिन को जब तू ने समझने – बुझने के लिए मन लगाया और आपने परमेश्वर के सामने अपने को दीन किया, उसी दिने तेरे वचन सुने गये, और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया हूँ। फारस के राज्य का प्रधान, एक्कीस दिन तक मेरा सामना किए रहा, परन्तू मीकाएल जो मुख्य प्रधानों मे से है, वह मेरी सहाय्यता के लिए आया, इसीलिए मैं फारस के राजाओं के पास रहा। अब मैं तुझे समझाने आया हूँ, कि अन्त के दिनों मे तेरे लोगो की क्या दशा होगी। जब वह पुरुष मुझसे ऐसी बाते कह चुका, तब मैने भूमि की ओर मुह करके चुप रह गया। तब मनुष्य के संतान के समान किसी ने मेरे होठ छुए, और मैं मुँह खोलकर बोलने लगा, जो मेरे सामने खड़ा था, उससे मैंने कहाँ, हे मेरे प्रभू, दर्शन की बातों के कारण मुझमे पीड़ा सी उठी, और मुझमें कुछ भी बल न रहा। इसलिए प्रभू का दास, अपने प्रभू के साथ कैसे बातें कर सके ? क्योंकि मेरे देह में न तो बल रहा, और न कुछ सास ही रह गई, तब उस मनुष्य के समान किसी ने मु छुकर फिर मेरा हियाब बंधाया और उसने कहाँ, हे अति प्रिय पुरुष मत डर तुझे शांति मिले, तू दृढ हो और तेंरा हियाब बंधा रहे (दानिएल – १०:७-१९)

दानिएल का अनुभव आश्चर्यजनक है, यहा तक के वह अपने गिरने को लिखता भी नहीं, केवल यह कि उसमें बल न रह गया और डर से वह असहाय हो गया दानिएल इतना होश में था कि वह केवल सुन सकता था। वह जानता था कि वह गहरी निंद्रा में मुँह जमीन की ओर है, उसके हाथों और पैरों को परमेश्वर द्वारा शक्ति मिली देखा। दूसरा, दानिएल परमेश्वर के आज्ञानुसार खड़ा हुआ और जमीन पर साष्टांग प्रणाम किया अबोल उसकी अवस्था थी उसने मना कि वह परमेश्वर की महिमा के कारण पूरी तरह घिर गया था। वह इतना शक्ति से कमजोर हो गया था कि मुश्किल से सांस ले पा रहा था। उसने कहा कि गिरना तो सबसे चिंता की बात थी। दानिएल की शक्ति और बोली अखिरकार मनुष्य जैसे दिखने वाली शक्स के शारीरिक स्पर्श से लौट आई .

बाईबिल में, सम्पूर्ण झुण्ड इस तरह प्रभावित हो सकता था। इसका एक उदाहरण सलेमान द्वारा भव्य मंदिर का समर्पण है। उत्सव मनाना महिमा भरा था। पुरनिए, लोगों मुखिए, याजक गण एवं संगीतज्ञ सब वहाँ पर मौजूद थे। और जब तुरहिया बजाने वाले और गाने वाले एक स्वर से यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे, और तुरहिया और झांझ आदि बाद्यो को बजाते हुए यहोवा की स्तुति ऊँचे शब्द से कैसे लगे, वह भला है और उसकी करुणा सदा की है और बादल के कारण याजक लोग सेवा टहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का तेज परमेश्वर के भवन में भर गा था। (२ इति – ५:१३-१४)

ये लोग महिनो इस सुअवसर के लिए तैयारी से थे वे ऐसी सेवकाई करने वाले थे जो उनके सेवा के जीवन का मुख्यांस था। तब, अचानक उनमें से कोई वो सेवा न कर सके वे सबके सब पूरी तरह शक्तिहीन बन गये थे। क्षेणा पश्चाताप, जब राजा सुलेमान प्रार्थना के साथ मंदिर का अर्पन पूरा किया, स्वर्ग से आग गिरकर होम बलियों तथा अन्य बलियों को भस्म किया, और यहोवा का तेज भवन में भर गया। याजक यहोवा के भवन में प्रवेश न सके, क्योंकि यहोवा का तेज भवन में भर गया था। (२ इति -७:१-१२) एक ही दिन में दूसरी बार, जैसे वे उम्मीद किए थे, वैसे एक भी आदमी नही कार्य कर सके, क्योंकि वहाँ आकस्मिक घटनाए घटी।

ड - आत्मा मे हँसना

कलीसीया मे कई लोगों पर आत्मा में हंसने का शानदार प्रकटीकरण कुछ मसीहियों में निराशा का कारण बना लोंगो को कलीसिया मे हँसना चाहिए ? यह आदरणीय नही लगता, वहा हँसी के बजाय आसू नही होना चाहिए। हमे नही कहना चाहिए, हमेशा नही, आत्मा से

भरे जाने का आननद का स्वभाविक प्रत्युत्तर होना चाहिए ा क्योंकि परमेश्वर का राज्य .... धर्म, और मेल मिलाप और आनन्द है, जो पवित्र आत्मा से होता है (रोमि – १४:१७) चसमुच आत्मा का प्रेम, आनन्द , शान्ति और (गला -५:२२-२३ देखे) आपके नजर से आनन्द कैसा दिखना चाहिए ? आनंद का हंसी में प्रकट करना इतना अटपटा क्यों लगता है ? आखिरकार दोनो साथ – साथ चलते है ा

भजन १२६:१-३ में परमेश्वर द्वारा यहूदियों को सियोन में वापस लाने के समय का विवरण लिखा है ा हमारे मुख हंसियों से हमारे जीभ आनन्द के गीतो से, भरे थे ा तब यह बात राष्ट्रो में बताया गया था, उनके लिए परमेश्वर ने महान कार्य किए, परमेश्वर ने हमारे लिए भी अद्भूत कार्य किए है, और आनन्द से भर गये, इसके विरोध में बहूत कुछ लोग सकते है, हंसना आनन्द से सम्बधित है, हर्ष केवल गहन संतुष्टि का प्रतीक नही ा बंधुवाई से छुटे यहूदी नाचे और कुछ, उनका मुख हंसी और हर्ष से भरपूर था ा हसंना और आनन्द कलीसिया में आज भी साथ – २ चलना चाहिए ा संक्षिप्त में, यहाँ पर और अधिक बातें होना चाहिए एक बोलती पशु (गिनती-२२:२८) पानी पर चलना (मती १४:२९) स्वर्गदूतो के संग उड़ना (२ राजा -२:११) हडियां जो मृतको में से जीवित हो उठे (२ राजा १३:२१) दिखाई देनेवाले परमेश्वर से मल्लयुध्द (उत्पति३२:२४-२८) और तिसरे स्वर्ग तक स्वर्गलोक के दर्शन के लिए उठाया जानाँ २ कुरिन्थि – १२:२-३)

सुलेमान ने अपने वचनों मे इसे ठिक ही लिखा है, क्या ऐसी बात है, जिसके विषय में लोग कह सके कि देख यह नई है ? यह तो प्राचीन युगों में नई थी (सभो १:१०) बाईबिल में आत्मिक अनुभव जो स्त्रियो एवं पुरुषो ने किया बहुत अच्छा था कि वे एक दूसरे के मन को देखके चकित हुए ा और तब भी वह नया नही था ा ये बाते इतिहास के बिभिन्न समयों में होते आए है ा असामान्य प्रकटीकरण (प्रदर्शन) जिसे आज हम देखते है उसे तुरन्त भ्रम या डर से चुनौती नही दे सकते ा किन्तु बिरीया के लोग (प्रेरित १७:११) हमें स्वतंत्रता है कि हम उन्हे वचन में ढूढे की बाते ऐसी ही है या नही ा जब एक बार देख लेते है कि परमेश्वर अनरीति कार्य नही करता (हमारे मन के अनुसार) तो हमे और अधिक प्रार्थना करना चाहिए कि परमेश्वर और अधिक सामर्थ्य के साथ उपस्थित होकर कार्य करे कि हम भी बाईबिल के जमाने के लोगों के समान बनें ा

अब तक हमने सुपली मर तक पानी को अनुभव किया ा हमें इतना प्रयाप्त पानी के लिए प्रार्थना करना चाहिए कि हम उसमें तैर सकें – एक ऐसा नदी जिसे कोई पार न सके (यहे – ४७:३-५)

उपसंहार

हम वचन को दबाव डाल नही सकते कि वचन का मतलब ऐसा नही है ा तथापि, बाईबिल की सूचनाएं फर्क और धिरा हुआ है ा इसलिए यहाँ पर आत्मिकता की राह पर प्रर्याप्त, स्वाभाविक, भावनात्मक एवं मानसिक अनुभव परमेश्वर की तरफ से नही आता है ा क्या आत्मिक, शारीरिक और भावनात्मक बाईबिल के अनुसार है ? क्या हम यह कर सकते है? सब बातों में स्वयं में, प्रकटीकरण (दर्शन) बाईबिल सिंध्दातों के बिपरीत नही है ा इसे स्वभाविक कहा जा सकता है – सामित मानव का प्रत्युत्तर शक्तिशाली, अपरिमित परमेश्वर के उपस्थिति में हो ा हम प्रत्येक प्रकटीकरण का जिसे हम देखते है ा और तुलना प्रमाणित लिखी वचनो से नही करते, क्योकि वचन को जैसा का तैसा के रुप में नही माना गया है ा बाईबिल के कालो में हुआ होगा या नये नियम के संत्तो में जिसे अंकित नही किया गया ा उदाहरण और शिक्षाए जो पवित्र शास्त्र में पाया जाता है ा वह इंकार करने से अधिक मानने की अनुमती देती है ा

यहाँ पर नही मानने का कोई कारण नही है, कि बाईबिल में लिखी बाते विरोधाभास है क्यों हम धर्मशास्त्र में हमारे पूर्वाग्रह नुसार वचन नही पाते ा बल्कि, जो भी प्रत्येक छोटी घटना का सामना वैसे ही आश्चर्य वाली और परमेश्वर में अनुभव हमने देखा और पूर्व से करते आए हैं ा

अंतिम टिप्पणी

आत्मिक, शारीरिक, एवं मानसिक प्रकटीकरण वास्तविक मामला नही कि यें तथ्य वहां हुए ा आत्मा के (प्राण) सम्बध में हम स्रोत, शान्ति या अकस्मात घटना के पीछे सच्चाई हम क्या देखते हैं ा

आत्माओं के परख का आत्मिक वरदान (१ कुरि-भ-१२:१०) आत्मा द्वारा दिया गया क्षमता (बल) है जिससे हम पूरा कर रहे है ा जान सके कि वह पवित्र आत्मा से है, मानवीय आत्मा से या दुष्टात्मा (शैतानी) आत्मा से है ा

यदि यह पवित्र आत्मा से है पासबान इसके लिए प्रेरणा दे, यदि यह मानवीय आत्मा के तो पासबान सिखाए और अनुशासित करे, यदि यह शैतान (दुष्ट) आत्मा से है तो पासबान इसका सामना करें ा

हमने देखा है कि कुछ विश्वासी अन्याय भाष बोलते समय हिलने(कांपने) और चिल्लाने की आदत को विकसित करते है । हम इसे गलत करार नही दे सकतें है । प्रभू सर्वशक्तिमान है, और ऐसा होने पाये कि अच्छा हिलना और गम्भीर भावानात्मकता का अनुभव मिले ।

तथापि, प्रेरणा और शिक्षा, अधिकतर विश्वासियों का संभव अपने नियंत्रण जो आत्मा का एक फल है, (गला५:२३) तब उनकी भविष्यवाणीयां अधिक बुधिपूर्व सहज, और अधिक विश्वासियों द्वारा अविश्वासीयों द्वारा ग्रहण किए जाते हैं .... जीभ से साफ साफ बातें न कहो तो, कुछ कहा जाता है, वह कैसे समझा जाएगा ? (१ कुरिथि – १४:९)

बुरी आदतें तोड़ना

परिचय

जीवन-कुछ भली कुछ कम भली आदतों से भरा पड़ा है । हम आदतें पैदा करने वाले हैं । हम बढते समय आदतों को सिखने का कार्य किया है । कई आदतें अजनबी होती है, न पहचानने लायक, और थोड़ा असरदार । तथापि, कुछ आदतें जहरीले होते, स्पष्ट और हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव डालने वाले होते हे । जब हमने मसीह को स्वीकार किया, हमने पापमय आदतों और कृयाओं की छोड़ दिया । परन्तू बहुत सारे विश्वासी मसीहीयों को ऐसा करना कठिन, और जीवन बंधित आदतो को छोड़ना या तोड़ना होता है, इस अध्ययन में, बुरी आदतों को तोड़ने के विषय की चर्चा करेंगे । और सरल कदमों को बताएँगे कि वे उसे कर सकें ।

आदत क्या हैं ?

आदत यह है, प्रथापित व्यवहार, मानसिकता, व्यवहार के ढण्ग, यह एक व्यवहारिक शैली है जिसे हम दूसरो से बार- बार दुहराने से अपनाते हे । आदतें जिसे हमने सीखा अचेतना और बहुधा आवश्यक रुप सें करने के लिए प्रभावित करता है । यह एक रीति है जिसका बारम्बार करने से बना है । एक आदत हानिकारक या जान लेवा हो सकता है । यह चेहरे के हाव भाव से कुछ गहराई तक कमजोर चरित्र जैसा हो सकता है । इसमें इतना साधारण कि सही पैर पर जूते पहनना या कुछ गंम्भीर गर्द का जत व्यक्ति समान है ।

आदतें कितनी महत्वपूर्ण है

आदत अति महत्वपूर्ण हो सकता है । उनका हमारे जीवन में प्राय : एक व्यापक असर डालता है । यहाँ तक कि वे हमारे अनन्त गन्तब्य को भी प्रभावित कर दें । निम्न कहावतें इस सत्य का बयान करती है ।

विचार बोओ, कर्म काटो
कर्म बोओ, आदत काटो
आदत बोओ, व्यक्तित्व काटो
व्यक्तित्व बोलो, गन्तव्य पाओ (काटो)

यूकि हमारी आदतें हमारे जीवनों में महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते है । हमें इसको इतना नजरअंदाज या फालतू नही समझना चाहिए । जो आदतें लाभदायक है उसकी प्रशंसा करनी और जीवनों में उतारने चाहिए । जो आदते नुकसान दायक है उन्हे सावधानी पूर्वक जॉचना और अलग करने की जरुरत है ।

आदतों पर जाय पाने की चुनौती :

नुकसान देह आदतो पर जय पाने की चुनौती एक कठिन रुकावट बन सकती है । कुछ आदते हमारे जीवन में इस तरह स्थिरता कायम करत लेते है कि वे अपराभवनीय रुकावट लगने लगता है । आदतों के क्षेत्र में कुछ कभी -२ परिवर्तन मुश्किल लगता है । यिर्मयाह भविष्यवक्त एक प्रश्न को जो असमंजस की व्यापक स्थिती को बताया है । जिसका प्राय: हम बुरी आदतों को तोड़ने के लिए चुनौती पूर्ण सामना करते हैं । क्या हबसी अपना चमड़ा या चीता अपने घटबे बदल सकता है? यदि वे कर सकें तो तू भी, जो बुराई करना सीख गई है, भलाई कर सकेगा (यिर्मयाह – १ ३ : २ ३)

निराशा का एक स्रोत :-

आदतों के साथ संघर्ष करने से प्राय: एक गहरी निराशा महसूस होता है शराबी, गर्द पीनेवाला, धुम्रपान करनेवालों के आदत पर जय पाने की प्रमाण देखकर थकान वाली अनुभव पाते है । पापमय स्वभाव पर जीत का हमारी पिछली नाकामी आशाहीन और निराश चेतना के रुप हावी होना आरम्भ हो जाता है । जो हमेशा यह कहते है कि इन पर जय पाना आसान है । जल्दी ही महसूस करते है कि ये

बात आसान नही है । यह समस्या नहीं कि किसे सरल उतर या झट-पट विदाकरण से हल करते हैं तथापि, किसके विषय में सफलता पूर्वक मसीह द्वारा समस्या का उतर दें

क्या कही कोई वास्तविक आशा हैं ।

हाँ, सफलता पूर्वक पापमय आदतों से सामना करने से पहले हमें, यह समझना जरुरी है कि मसीह में कोई निराशा की बात नहीं है । हमारी आदतें उनके अछूता नहीं है । (१कुरि ६:९-१०) में पौलुस ने पापमय स्वभाव की सुची जिसे कुरिन्थियों के लोग में आदत थे । उन्होंने जैसे मतवालापन, समलैगिकता और चोरी करने वालों को शामिल किया है, ग्यारहवें पद में, वह इस महत्वपुण बातों को लिखा और तुम में से कुछ है । यह पद एक मजबूत प्रेरणा है जो जीवन को प्रभावित करनेवाली आदतों से हमेशा के लिए छुटकारा पाना चाहते हैं । शब्दो को भूतकाल में लिखा गया है थे पौलूस जिन बातों को असंभव दिखने वाली में परमेश्वर ने कैसे सम्भव किया है बताया है । हमारे पुराने रास्ते यीशु मात्र अस्थाई, आधा-अधूरा हल नही देते । वह प्रत्येक व्यवहारिक आदतों पर स्थायी हल देते है । यदि वह उनके लिए ऐसा करता, तो वह हमारें लिए भी करेगा ।

क्या कोई समाधान है ?

निश्चिय, यह वचन का वादा है । जो मुझे सामर्थ देता है उसमें में, सब कुछ कर सकता हूँ (फिलि ४:१३) जो भी हो, कुछ मसीहियों ने यह माना कि ये असम्भव है । वे कई सफल तरीके अपनाएँ कि आदतों पर जय पायें जिसे वे अपना चुने है । जिसमें वे असफल हैं, वे आरम्भ करने से पहले ही आपने आप में हार जाते हैं ।

हमें कुछ लड़ाई हारना पड़ सकता है, किन्तु हमने युध्द नही हारा । पिछली असफलताओं के बावजूद हमें पूरी हार नही मानना चाहिए । हमें पुन: परमेश्वर के बताए विजयी अनुदेशो का पालन करने के लिए समर्पित होना चाहिए । इस अध्ययन मे हम वचन से जॉच करेंगे कि स्थाई विजय पाने के लिए क्या कदम है ।

१. हम इमानदारी से पश्चाताप करें :-

यदि हम अपने पापों को मान लें तो हमारे पापो को क्षमा करेंगे में विश्वासयोग्य और धर्मी है । (१ यूह-१:९) सच्चा पश्चाताप पहला कदम है । कोई मसीही पापमय आदतो को हराने से पूर्व, हम यह पहचाने कि यह पापमय कर्म है । यदि इस बुनियादि सत्य को पकड़ने में असफल होते हैं । तो हमे उसमें जीत पाने में असफल होंगे । हमें केवल दुखित मन को हल्का करने या पापमय स्वभाव जीत हासिल करने का प्रयास मात्रक नही करना चाहिए । हमारी मन:स्थिती अनिवार्यता या दूसरों के मशविरा पर ही अधारित नही रहना चाहिए । यह बात ईश्वर परायण मानना परमेश्वर को प्रसन्न करना और पाप तथा शुध्द करने की शक्ति पर आधारित होना चाहिए ।

२. परमेश्वर के सामर्थ को शीर्ष पर ही रखे :-

समस्या पर परमेश्वर की सामर्थ को लाने से सर्व हमे यह समझना चाहिए कि हमारे पास समस्या है । यदि इसे अनदेखा करते, कम महत्व देते या नजरअंदाज करते है । हमारी पापमय स्वभाव ही स्वयं में बलप्राप्त करता है । इसका पहचाना करे और इन आदतों की हमे सावधानी से उसके परित्र फासला और दिखाई देने पर विचार करें । जब हम समस्या के क्षेत्र में प्रचुर ध्यान दिया, हम सफलता पूर्वक उसके विरुध्द युध्द आरम्भ करते हैं । समस्या के घेरने के बाद, हमें लगातार प्रार्थना द्वारा उस पर आक्रमण करना चाहिए । यदि हम प्रार्थना द्वारा मसीह के सामर्थ नीचे खीचना आरंम्भ कर देते है, वह आवश्यक शक्ति प्रदान करेगा । हमें अपनी शक्ति पर भरोसा नही करना चाहिए, किन्तु पवित्र आत्मा के अलौकिक स्रोतो से पापमय आदतों से लड़ाई करें

३. हमें परिवर्तन के लिए संघर्ष करना चाहिए :-

पवित्रशास्त्र सिखाता है कि परिवर्तन हमारे जीवन का मसीह में विकास का एक अति महत्वपूर्ण हिस्सा है (२ कुरिथ – ३:१८) पापमय आदतों पर विजय पाने के लिए परिवर्तन की प्रक्रिया एक मुलभूत आवश्यकता है । बिना बदले, हमारे आदतें निरंतर

बने रहते है । यद्यपि, परिवर्तन मात्र पापमय आदतों के व्यवहार में लाने से रोकने से कही बात ज्यादा है । बहुत सारों ने इस तरह का प्रयास बिना प्रयाप्त सफलता के कोशिष करतें रहते हैं ।

परिवर्तन केवल नही कहने से अधिक होना चाहिए । बदलाव केवल इच्छा शक्ति की बात नही, मनुष्य हल ढूढता, या निर्णय को बदलता । यह नये पत्ते का निकलना या दृढ निश्चय छोड़ने के लिए नही हैं । समाप्त करना परिवर्तन नही है, यह केवल एक अधुरा प्रत्युत्तर जो अपूर्ण परिणाम देता है । यदि यह कि हमें बदलना है, हमारा बदलाव केवल अस्थाई होगा । शास्त्र के अनुसार परिवर्तन में दोहरी प्रक्रिया कार्य करता है । वास्तविक परिवर्तन केवल पापमय आदतो का रुकना नही, किन्तु इन्हे ईश्वरी स्वभाव से बदलना चाहिए, केवल जब हम अपने कर्मो को बदलना आरम्भ करते, और सकारात्मक आदतों को सीखते तो सचमुच हम लंबी विजय की ओर बढते हैं । पौलुस इस दोहरी प्रक्रिया को कुलु – ३:८ में अंकित किया । वह हमें उत्साहित करता कि हम पुराने मनुष्यत्व को उतार दे । फिर उत्साहित करते है कि नये मनुष्यत्व को पहन लें (कुलु – ३:१०) यह उतारना परिवर्तन का नकारात्मक पहलू है । हमें सकारात्मक पहलू को लागू करना जिसका अर्थ पहनने से बाईबिल का चुनाव दिया है । यह सफल परिवर्तन की चाबी है ।

४. पवित्र आत्मा में परिपुर्ण हो :-

दाखरस से मतवाले न बनों, क्योंकि इसमें लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपुर्ण होते जाओ (इफि-५:१८) यह पर परिवर्तन के दोनो पहलू नकारात्मक एवं सकारात्मक (पहलू) को प्रकट करता है । अपने आप पर पुरानी आदतों को प्रभावी होने देने के बजाय, हमे प्रतिदिन के जीवन में पवित्र आत्मा को हमारे जीवन में प्रभावकारी होने के लिए संघर्ष करना चाहिए । जब हम उसके उपस्थिती से भरपूर होते है, हम आवश्यक शक्ति को पाते है, सहयोग और इच्छा शक्ति शरीर की अभिलाषा पर सफलता पूर्वक जीत हासिल करते है । (गला ५:१६-१७) हमें अपनी पुरानी आदतो को सृजनात्मक चयन से बदलना चाहिए । पौलुस कुछ व्यवहारिक कदमों की चर्चा इफि ५:१९-२० में पूर्ण करने की बात कही है ।

५. वचन के शुध्द करने शक्ति को अपनाना :-

जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुध्द रख सकता है, तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से (भजन ११९-९) परमेश्वर का वचन हमारे पुराने पापमय मार्ग को शुध्द करने के लिए प्रभावकारी स्रोत उपलब्ध कराती है । कलीसिया के प्रति प्रभु की इच्छा को पौल लिखता है उसको वचन के द्वारा जल के स्नान से शुध्द करके पवित्र बनाए (इफि ५:२६) वचन हमारे विचार, इच्छाएँ और अभिलाषा का युध्द करनेवाला अभिकर्ता है । हमें उन शास्त्र के वचनों को सावधानी से सोचना, जो खास बात को लेकर ईश्वरीय परिवर्तन की आवश्यकता और उसकी सहायता की योजना पर सोचना चाहिए । यदि हम परमेश्वर के वचन पर मनन करते, और सम्मति पर ध्यान देते, यह आहिस्ता आहिस्ता हमारे आदतों का पवित्रीकरण और शुध्दता का आरंम्भ होता है ।

६. हमें अपनी आदतों को आधीनता में लाएं :-

परन्तु मैं अपनी देह को भारता कटूता और अपने वश में रखता हूँ, ऐसा न हो कि औरो को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा रहू । (१कुरि ९:२७) हम अपने पापमय स्वभाव को अनुशासित करने के लिए कड़े कदमों को उठाने का अभ्यास करना चाहिए । हमारे पुरानी रीतिनुसार तारीफ करने की धारणा का सामाना और दबाया जाना चाहिए । यदि हम अपने मनों को अयाशी की अनुमति या पापमय स्वभाव को हमारे मनो में सम्भावित कार्य करने दे तो हम इसका दु:ख उठा सकते हैं

विजय दृढ निश्चय पर निर्भर है, जब हमारी पापमय स्वभाव के कारण लगातार परीक्षा होती है । हमें परमेश्वर के वचन से इच्छाओं पर चुनौती देना चाहिए । परीक्षा की सेवा भी हमारे जीवन को हिदायत देता है प्रभु में प्रार्थना के लिए । हमारे त्वरीत निर्णय हर आदतों से सामाना के लिए जो लेते है, असफलता की एक सुरक्षात्मक साधन है ।

७. हमें उचित सम्बधों को बनाना चाहिए :-

पवित्रशास्त्र गलत सम्बध के विनाशकारी नतीजो का खुलासा करता है, धोका न खाओ, बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है (१कुरि१५:३३) नाशवान सम्बध केवल पापमय स्वभाव ही पैदा करती है (नीति-२२:२४-२५) पुराने दोस्तों और सहयोगी नाशक प्रभाव डाल सकते हैं । हमारा अधिक समय व्यतीत करने की आदत पापमय स्वभाव से सामना करने में समझौता करने की स्थति ला सकती है ।

यह तथ्य एक ईश्वरीय विकल्प की माँग करती है, हमें दोस्तो से सम्बध काट लेना चाहिए जो हमारे राह के लिए रुकावट है। और उन लोंगो से जिनका सम्बध परमेश्वर के साथ उचित हैं के साथ सम्बध बना लेना चाहिए, अपने सम्बंध को मसीही संगीत से मजबूत और कलीसिया के कार्यक्रम में सम्मिलित होना तथा विश्विसिया के संगति में बढना चाहिए। (इब्री चाहिए)

८. हमें आशा नही छोड़नी चाहिए :-

चाहे धर्मी सात बार भी गिरे तौभी उठकर खडा होता है (नीति – २४:१६) बिजय पाने की कश्मकश में, कभी कभार हम कमजोर हो सकते है, तथापि, उठ खड़ा होकर आगे बढ़ना चाहिए। हमें बने रहना चाहिए ताकि विजय हासिल कर सकें। हमें अपनी असफलता निराशा या हताशा को हावी नही होने देना चाहिए वे हमें निराश न करने पाये। यह ईश्वरीय विकल्प को अपनाने (स्थापित) में समय लगता है। झटपट निपटारा जैसा कोई उपाय नहीं हैं। लगभग ३० दिन ईश्वरीआदत को सीखना लग जाता है। इसलिए, निरन्तर और दृढ निश्चय की आवश्यकता होती हैं।

विश्वासियों के जीवन में समस्याओं पर विजय
(गढों को गिराना)

स्वभाव, उत्पति और समस्याओं का समाधान (गढ)

अ. समस्याएं जीवन का अंग हैं :-

प्रत्येक विश्वासी समस्या का सामना करता है। वे जीवन का अहम हिस्सा, और हमें जब यह बाते आती है तो आश्चर्य नहीं करना चाहिए। मनुष्य के पापमय स्वभाव के कारण जीवन में समस्यांए भरी रहती है। मनुष्य का जन्म स्वयं की इच्छा और राह को पूरा करने की दृढ इच्छा के साथ हुआ है। दुख की बाम, यह कि परमेश्वर की इच्छा के बिना मनुष्य के जीवन में होता हैं। उसका उद्देश्य जीवन में स्नेह, आनन्द और शांति उत्पन्न करना हैं। हमारा जीवन हमारे और दूसरो के लिए समस्याओं से भरा जीवन उन्तन्न करत हैं, निरंतर हमारे जीवनों में निरंतर चलनेवाली समस्याएं , जो हमारे जीवनों में मजबूत पकड़ बना लेता है उसे गढ कहते हैं। परिणाम स्वरुप जीवनों में इसकी आवश्यकता पड़ने लगती हे। यह हमारे समस्याओं के अदृश्य दरवाजे है, जिसे परमेश्वर अपने प्रेम की शक्ति से छुटकारा और चंगाई से छूना चाहता है।

हां परमेश्वर हमारी परीक्षा और समस्याओ को लेकर प्रयोग कर अधिक ये अधिक यीशु के समान बनाना चाहते हैं। एक समय से, तब, हम इनको बैरी के समान नही वरन मित्र के समान स्वागत करते हैं। अन्त में वे हमारी भलाई करेंगे बजाए बुराई के। यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा है। इसलिए वरन हम क्लेशो में भी घमण्ड करें, यह जानकर कि क्लेश से धीरज, और धीरज से खरा निकलना, खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है, और आशा से लज्जा नही होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो दिया गया है। उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है। (रोमियो ५:३-५)

ब. सम्बध बनाने से हमारे जीवन की समस्याओ का क्षेत्र प्रकट होता है :-

बहुत सारी छिपे गढ दूसरों के साथ रिश्ता बनाए रखने से हमारे जीवन के सतह में जा बैठता हैं। दूसरो के साथ कार्य करना और जीने से जीवन में एक बेहतर राह निकालना हैं और बेहतर अपने जीवन में हमें खुद के लिए जो हकीकत है लिए संघर्ष करना पड़ता हैं। परमेश्वर इन सम्बधो का प्रयोग हमारे (विश्वासियोंके) जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता को प्रकट करने मे करता हैं। मैं एक जवान युवती से सुना कि वह अपने आप को विवाह के लिए कैसे तैसार कर रही थी। मैंने पुछा वह कहा रहती है ? आह, मैं तो एक खुद के छोटे कमरें में रहती हूँ, मुझे एक तरह से बड़ी स्वतंत्रता है। मैंने कहा कि उसे डूसरों के साथ कैसे जीना है सीखना चाहिए, यदि विवाह के लिए तैयार होने का लाजवाब और शीघ्रता की उत्तम राह हैं। वह सहमत हुई और जल्दी ही अपने साथ एक दूसरी महिला के साथ रहने लगे। दिन ब दिन वे एक दूसरे पर दोषा उछालना नजरियों पर शब्दो व कार्यो से, शुरु कर दिया। ठिक समय पर उनके जीवन के दरार नरम होने लगे। उन्होने सीखा कि कैसे दयालु बनना चाहिए एक दूसरों के विचारो, आवश्यकताओं व इच्छाओं को ध्यान रखते हुए क्षमा करना चाहिए। इस प्रक्रिया में, वे अधिक यीशु की समानता में हुए, और सर्वोतम तरीका है जब कोई शादी के लिए अपने आप को तैयार करता है। हाँ, परमेश्वर समस्याओ और गढो को बाहर निकालने के लिए सम्बधों का प्रयोग करते हैं। तब वह हमारे बीते समयों के घाव और चोट को चंगा करके छुटकारा देते है।

क. हृदय की गलत धारणाएँ ज्यादा समस्याओं का मूल हैं :-

जैसे कहा गया है, दिल हमारा केन्द्र है, यह जीवन का नजरिया ही है जो हमारे जीवन को दृष्टि प्रदान करता हैं। हृदय की मनसा हमारे मन की दिशा को प्रमाणित करता हैं। इस कारण, जब परमेश्वर हमारे समरु के जड़ मे जाना चाहते हैं, वह हमारे दिल को देखते हैं। यह हमारे गढ का स्त्रोत है ं।

बाहरी व्यवहार में बदलाव की कोशिष से अपने हृदय को परिवर्तन करना मुश्किल हैं। यदि आप तुनक मिजाज, हैं तो आप में आंतरिक समस्या की मांग अपने गुस्से को नियंत्रण करने से नही सुलझा पायेंगे। आप चिल्लाना छोड़कर समय के लिए संघर्ष कर सकते हैं, किन्तु आग अंदर जलता रहता हैं। जब दबाव बढ़ता हैं, तब वह फूटकर बाहर आ सकता हैं, या इसका प्रभाव रक्तपात अथवा इस तरह की शारीरिक समस्याओ ंका कारण बन सकता हैं परमेश्वर श्रोत (जड़) का इलाज करना चाहता हैं , केवल लक्षण

का नहीं । आप कँसर का इलाज दवाई लेकर कर सकते है, जो केवल दर्द में राहत देता हैं । तुम्हे दर्द के कारणों को हटाना चाहिए + जो स्वयं कँसर हैं । नही तो जब तक पूरे शरीर में फैलता नहीं बढता जाता हैं । परमेश्वर हमारे गढों का प्रकट कर देता है, ताकि वह हमारे सब अधार्मिकता से शुध्द करे – जो हमारे नजरिये और कृतिनुसार ठीक नही है । वह चाहता है कि हमारा जीवन धार्मिकता पूर्ण ताकि उसके प्रिय के सामर्थ से शास्त्र कर सके, प्रेम व आनन्द के साथ । हमारी भलाई के लिए उसने आत्मिक नियम दिये हैं । – जिसे हम पूर्ण आशिष में पा सकते हैं । आज्ञाकारीता सच्ची आत्मिक स्वतंत्रता का मार्ग है । उसके विधि को तोड़ना हमारे जीवन में बंधन लाता हैं । हम हमारे स्वयं के गढ में कैद हो जाते हैं । इस कारण, हमारे चरित्र के गढो का गहराई के साथ अध्ययन करने की महत्व को समझना चाहिए ।

गढ़ों की प्रकृत्ति ओर श्रोत

अ - गढ़ों की परिभाषा

जैसे उपर कहा गया है, हृदय की आंतरिक मनसा गढ हैं । वे मुख्य स्रोत से आते हैं ।

१. बड़े प्रभावों की ओर भी गलत नजरिया जो हमारे जीवन को आकार प्रदान करता हैं । ये वे लोग हैं, स्थानो ंऔर घटनाए जो हमारे जीवनों के हर पहलू को प्रमाािणित किया है ।

२. परमेश्वर की ओर गलत धरिणा । गलत धारणाओं का निम्न बिन्दुओ से परिमाणित या विवर्णित कर सकते हैं ।

अ. **गलत विश्वास** :- उसके चरि के विषय गलत विचार

ब. **अविश्वास** :- शंका और उसके प्रेम शक्ति बुध्दी पर भरोसा न करना

क. **न्याय** :- अपनी समस्या के लिए उसको दोष देना ।

ड. **नाराजगी** :- हमारी समस्या के कारण उस पर गुस्सा और ठेस ।

छ. **बलवा** :- अनासाकारी और उसके इच्छा के विरुध्द होता ।

झ. **कड़वाहट** :- नाराजगी का एक गढ़ ।

परमेश्वर के प्रति गलत धारणाए उपरोक्त क्रम मे कभी – कभी विकसित होते हैं । हम परमेश्वर की छबी की गलत अनुमान के साथ आरम्भ करते हैं । हम चाहते हैं कि वह हमारे समझ के अनुसार हमारे जीवन में कार्य हो । यदि यह विचार आता है कि वह निष्ठुर और पक्षपाती हैं, तो जब भी हमारे जीवन में पक्षपात या निष्ठुरता का सामना होता है, उसे दोष देते हैं । यदि हम ऐसा सोंचे कि वह हमारी हरेक इच्छा को पूरी करें, यदि न पूरी होती है तो उसे दोष देते हैं । अन्य मामलों मे, हमारी परमेश्वर के प्रति गुस्सा, नाराजगी व ठेस में बदल जाती हैं । परिणाम स्वरुप, हम दसके इच्छा का हमारे जीवन से बदलवा और विरोध करते है । दु:खद घटना यह कि हमारी खुद की इच्छीत जीवन, आगे परमेश्वर प्रति हृदय को कठोर कर देता हैं । इसके पहले ही हमारा पूरा जीवन जहरीले शक्ति के कड़वाहट से भर जाता है । यह अंतिम गहरा जड़ का गढ़, जिसे केवल पवित्र आत्मा ही तोड़ सकता हैं ।

ब. गढ के तीन पहलू

गढ़ों को तीन तरीकों से परिभाषित किया जा सकता है:

१. जैसे हम अपने गढ को समर्पित करते, हम खुद के राज्य को बनाने के लिए वास्तव मे हम आहार देते हैं । प्रत्येक बात कैसे सोंचते हे । अनुभव और कर्म करते हे । पर केन्द्रित हैं । उसी समय परमेश्वर का राज्य हमारे जीवनों में कमजोर होता होता हैं, हम अपने आप की सेवा खोज करने लगते बलाए उसके राज्य की खोज करें ।

२. **पाप का घरौंदा गढ है** :-

स्वयं का जिद्द पाप के घरौंदे की ओर लेता है, क्योंकि स्वार्थी इच्छा पापमय धारणा और कर्म की ओर अगुवाई करता हैं। एक बार पाप की शैली जीवन में स्थापित हो जाने, से तोड़ना कठिन होता हैं। हम पश्चाताप करते और उसी – उसी पाप में बार-बार गिरते हैं। हम रोकना चाहते हैं, लेकिन दूसरी बार जब वक्त आता हैं, नही कहता कठिन जान पड़ता हैं। परिणाम स्वरुप – हम आगे – पिछे पाप और आनंद मय जीवन में झूलते रहते है। हमारी समस्या का मूल वही हैं। – हमारे पापमय चरित्र के तल में बैठ जाता हैं।

३. **पाव रखने की जगह गढ है :-**

पाप शरीर मे प्रवेश करता हैं वही वह पाप रखने की जगह कायम करता शैतान खड़ा होने का स्थान बनाता है। इसके बाद हमारे जीवनों के किसी क्षेत्र में अपना गढ बना लेते हैं। जैसे वे हमारे पाप से जीते, वे और मजबूत होते जाते है , हम आसानी से रास्ते हटा नही सकते। यह वैसा ही होता हैं, जैसे हम परमेश्वर की शक्ति को समर्पित करते उसकी आत्मा बिजली करता और हम स्वतंत्र हो जाते हैं। गढ ढहाये जाने से पूर्व उसके बारे में हमें अधिक जानने की जरुरत है, और वह हमारे जीवन में छाप छोड़ता हैं। हम चाहते हैं कि इस विषय में जरा और गहराई मल्यांकन करेंगे।

क. गढ को कैसे अभिव्यक्त करें

हमारे जीवन के सतह से गढों को विभिन्न तरीको से देखा और जाना जा सकता हैं हम उनमें से सर्वसामान्य बिन्दु पर चर्चा करेंगे।

१. **अति लोग कर्मठ और अमि संवेदनशीलता के कारण :-**

कुछ लोग बहुत संवेदनशील होते हैं। और अपने भावना मे जल्दी ठेस महसूस करते हैं। वास्तव मे वे अति चपलता और डर के गिरप्पत, गुस्सा और आत्मग्लानि में आ जाते हैं। वे कुछ लोग जो लू पीड़ीत जैसे होते हैं। हम नही जान सकते यदि कफोले (जले) को हल्के कपड़े से ढक कर रखते हैं। तथापि, यदि हम उन्हे थप थपाकर अभिनंदन करते, वे तुरन्त प्रतिक्रिया करते हैं , वे अपना बचाव करते चीखते हुए एवं हाथ हटाते हुए। लोग जो आंतरिक ठेस और आघात लोग ऐसा ही प्रतिक्रिया करते हैं। यदि ऐसा विषय जिनका सम्बध उनके दर्दनाक परिस्थिती से जुड़ा हो, वे तुरन्त अपना बचाव करते हैं। वे चुपचाप अपने को अलग करते, मजबूती से आंसूओ से शब्दो से सामना करते हैं। ये चिन्ह परमेश्वर के चंगाई देनेवाली सामर्थ से नम्रता पुर्वक गढो को हटाने की जरुरत होती हैं।

२. **गुस्सा या निराशा :-**

हम बहुधा महसूस करते कि मुझमें कुछ अधिकार हैं, जिसका सम्मान किया जाना चाहिए। हम विश्वास कर सकते है हमारी आवश्यकताएं हें और इच्छाए हमारी भलाई के लिए पूरी की जानी चाहिए। यदि ये उम्मीदे पूरी नही होती, हम अति उत्साहित होकर गुस्सा और क्षोम, असफलता, निराशा के साथ प्रत्युत्तर देते हैं। हम अपने को दूसरों से अलग कर लेते हैं।

३. **डर, चिंता, दु:ख और असुरक्षितता**

कुछ लोग भय और चिंता के गहरे बादल मे जीते हैं वे महसूस करते है कि उनके अपने प्रिय और शुभ चितंको से खतरा हैं। थोड़ा सा भय, चिंता और डर के साथ बड़ी प्रतिक्रिया करता हैं। वे कभी भी पूर्ण सुरक्षित एवं आश्वस्त महसूस नही करते। जब कि तनिक भी चिंता, की बात, वे अशांत महसूस करना लाजमी समझते हैं। इसकी जड़े गहराई तक होती हैं।

४. **आत्मदया (स्वपराणण)**

आत्म दया दु:ख और गलती के लिए स्वयं दया महसूस करना हैं। यह तब होता है जब हम विश्वास करते कि हमारे साथ ठिक से बिना व्यवहार दया किया हैं। हमारी भावानाओं को चोट लगती है, और हम अपने ही बनाए गहू में घसीटते रहते हैं।

यह केवल दया की खाई नही, किन्तु आंतरिक दर्द की एक सताव हैं। जितना अधिक दर्द के सोंचतें, खाई उतना ही गहरा होता जाता हैं। और चढ़ना उतना ही कठिण होता जाता है। एक वक्त, हमें दूसरों की सहायता की जरुरत इसे तोड़ने और मजबूत गढ़ से निकलने का रास्ते के लिए पड़ती हैं।

५.	**आत्मग्लानी और शर्म :-**

पाप आत्म ग्लानि और शर्म पैदा करते है, किन्तु यीशु माफ करने आए, छुटकारा और पाप से स्वतंत्रता पाने के लिए मसीह यीशु में कोई ढण्ड नही जो आत्मा के चलाए चलते हैं। (रोमि ८:१)

फिर भी बहुत लोग भारी मन से जीते हैं। वे सोचते कि वे कभी अच्छे, पवित्र परमेश्वर को खुश करेन के लिए नहीं हो सकते। वे यह भी विश्वास करने लगते कि वे भला बुरा किए कि वे परमेश्वर के अनुग्रह से कोसो दूर हो चुके हैं। दु:खद बात, कुछ प्रचारक परमेश्वर के भय को धार्मिक नियमों में बताए रखने के लिए सक्ती के साथ प्रयोग करते हैं।

६.	**भावनात्मक एहसास की कमी :-**

कुछ लोग इतने बूरी तरह ठेस खाऐ होते है कि वे अपने मन को कठोर कर देते है, कि किसी प्रकार के एहसास का असर नही होता। वे अपने भावनाओं के इर्द गिर्द ऐसे दिवार बना लेते हैं। कि और किसी दर्द के लिए तैयार नही होते। परिणाम स्वरुप, उनकी संवदनाएँ शून्य या लगभग भरा हुआ हो जाता हैं। ऐसे झुण्ड कभी भी खुशी या गम में अपनी अच्छाई या बुराई में व्यक्त नही करते – हंसी या आंसु से। वास्तव में, वे किसी व्यक्ति के साथ गर्माहट के सम्बन्ध में प्रवेश नहीं कर पाते, वे अपने आप में, व्यवस्त है, और दूसरों के साथ अपने दुखों को नही बांटते। ये चिन्ह गंभीर गढ जिसके लिए अधिक प्यार और बुध्दि की जरुरत पड़ती है कि नाश किया जा सके

७.	**बलवा :-**

बलवा या अज्ञानकारी पुराने पापमय चरित्र का हिस्सा हैं। फिर भी, कुछ लोंगो के लिए अधिकार की बात तुरन्त और तीव्र संवेदनशीलता का बलवा उनके हृदय में भड़क उठता हैं। वे किसी भी प्रकार के नियम व नियंत्रण का विरोध करते हैं। उनके बलवाई आत्मा को प्रभाव उनके जीवन के रुई क्षेत्रों में समस्याएँ केवल दूसरो के लिए नही वरन स्वयं के लिए पैदा करते हैं। वे बलवा करना ही चुनते हैं यूकि आज्ञाकारिता उत्तम आशिष ला सकता था दु:खद बात, बलवा उनके जीवन को नियंत्रण करने की शकित और गढ बन जाता हैं।

८.	**बन्धन या पाप करने के आदि (लत) :-**

एक लत या पाप का बन्धन एक इच्छा है जिसे नियंत्रण करना मुश्किल हैं। इससे भी अधिक, यह हमारे जीवन का केन्द्र बिन्दु बन जाता हैं। अन्यु दूसरे क्षेत्र भी जीवन में घुमकर दस तरफ मुड़ जाता हैं। हा, अपने जीवन शैली को इसके इर्द गिर्द बनाते हैं। और यह हमारे सब विचारों को प्रभावित करता हैं। निर्णयों, प्रक्रियाओं को भी, कुछ लैगिक पाप या शराब या तम्बाकू, इस बात के अच्छे उदाहरण हैं।

९.	**ग्रसित और आधीन होने से बचना चाहिए :-**

कुछ लोंगो ंको नियंत्रण करना ही पड़ता हैं। वे ऐसी स्थिती में हो कि वे लोगो को अगुवाई, चीजो, घटनाओ और कार्यक्रम की दिशा दे सके। यह इस बात पर आधारित होता है कि यदि उसके जीवन को दूसरे नियंत्रित करेंगे तो उनका जीवन क्या होगा। इसलिए, वे हमेशा स्वयं या दूसरों के लिए उपर रहे चाहे मूल्य कितना भी चुकाना पडे

१०.	**हठीलापन (अडियल) :-**

हठीलापन मन का मजबूत शक्ति है, वह नही बदलेगा जब उसे बदलना चाहिए था तब भी। अडियल लोग किसी व्यक्ति को कुछ लेन देन नही करते (व्यवहार में सम्मति में) वे हमेशा अपने को सही समझते है। और कभी अपनी गलती नही सुधारते। स्पष्टत, ऐसे लोगो की इच्छाए मजबूत और घमण्ड के समस्या से ग्रसित होते हैं। अनोखा, ऐसा लगता हैं, वे भी डर के मारे खींचे होते हैं। वे डरते है कि परिवर्तन उनके कमजोरी को प्रकट कर देता हैं, जिसका का वो सामना नही कर सकते।

११. एक जटिल, न्यायी आत्म :-

कुछ लोग हीन भावना को गहराई से महसूस करते हैं । वे समझते है कि दूसरे उससे अच्छे हैं । इसलिए, वे अपने आप को दूसरों के समक्ष बड़ा बनाने की कोशिष करते हैं । दु:खद बात, वे दूसरो को कठिनाई से गिराकर, न्याय पथ से ऐसा करने की भरसक प्रयास करते हैं । हीन भावना की उनकी बड़ी एहसास, वे जितना अधिक जटिल होते एक वक्त में उनका यह धारणा एक जीवन का केन्द्र बन जाता हैं ।

१२. स्वार्थीपन :-

एक स्वयं केन्दित जन हमेशा अपने बारे में सोचता हैं । उसकी इच्छा, आवश्यकताएँ एवं उद्वेश्य । सब चीज और प्रत्येक को जाँचना है कि उससे वह कितना पायेगा या उसे कितना फायदा होगा । यह आसानी से लालच और जलन की ओर खींचता है ं।

स्वार्थीपन, डर जो किसी न किसी तरह वे जीवन मे होगें के आधार पर होता हैं । पालक जो बच्चों को जो भी चाहिए पूर्ण करने के कारण भी ऐसा हो सकता हैं । इसलिए, वे केवल अपने बारें सोंचतें हैं दूसरा के बारे में नहीं

१३. **तिरस्कार और संकुचित :-**

कई लोग तिरस्कार के दर्द को सहते हैं – कल्वना और वास्तव में भी । वे अप्रिय, प्रेम न किया जाना, उसकी किसी को जरुरत नही, अयोग्य की भावना महसूस होती हैं । परिणाम स्वरुप वे शंकुचित तथा और कुछ शुरु नही करते हैं । वे छोड़ दिये, अलग करने, या कम से कम महत्व देने की स्थिती का सामना नहीं कर सकते । अपने को बचाने की शक्ति से उन्हे कितने घाव हुई इस बात पर निर्भर करता हैं । इस शक्ति को डर का आत्मा जितता हैं, जिसे केवल परमेश्वर के प्रेम की शक्ति से हटाया जा सकता हैं ।

ड. गढ :- शक्तियाँ और उनका मौसम (वातावरण)

विभिन्न मनुष्यों पर इन गढो की शक्ति अलग – अलग होती हैं । हम कुछ कमजोरियों और व्यक्तित्व को विरासत में पाते है । अन्य बुरी विशेषताओ को अपने पालको से मित्रो से, रिश्तेदारों से सीखते है । घटनाएँ और प्रभाव जो हमारे जीवन को आकार प्रदान करती है । वह विभिन्न होता हैं । इसलिए, हमें सावधान रहना चाहिए, कि किसी का न्याय, करे इसलिए कि जिस क्षेत्र में हम ना कामयाब थे अब विजय पा ली । जहा हम मजबूत हैं वहा वह कमजोर, और जहा हम कमजोर है वहां वह मजबूत हो सकता है । स्पष्ट हैं, व्यक्तिगत गढे सब व्यक्तियाँ के लिए समान नही हैं । उदाहरण के लिए – कुछ लोग परिवार में अनिच्छा से बढे, यदि वे उनसे प्यार से व्यवहार न किया जाए, वे उन पुरानी घाव को पकडे बैठे रहते हैं । वे क्षमा करने से इन्कार करते और कहते कि जाने दो । यहा तक कि वे दूसरों को बदला भी चुकाते हैं । दूसरे परिवार आदतन दूसरों के प्रतिक्रिया से अपने आप को परेशान नही करते । जीवन इतना छोटा है कि इन गलत धारणाओ को पकडकर वक्त बरबाद न करें । ये “क्षमा करना और भूल जाना बहुत आसान हों जाएगा । स्पष्ट है, जो बच्चे ऐसे परिवार में पलते है दूसरे तरीके से अनिच्छा से बढने कि समस्या से जुड जाते है । इस तरह के गढ एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति पर अधिक प्रबल हो सकता है ।

कुछ गढ जीवन के अलग २ मौसम (समय) में प्रकट होते है । बुढा होने का डर, उदा – जीवन के अंतिम समय तक दिखाई नही देता । दुसरे गढ भी जब एक शक्ति मिलता है तो उसे बल मिलता है । कुछ केवल अंतिम दिनों मे ही शिखर पर दिखाई देता हैं । उदा :- हमारे पास वक्त ही नही रहता जब हमें आत्म दया के गढ को विकास करने के लिए हम मौनावस्था में होते है । हमारा समय व ध्यान परिवार एवं कर्तव्य और नौकरी ले लेता हैं । यदि बीज वहा हैं, तथापि, वे हमारी मूल पकडते और बुढापे की आवश्यकता में शीघ्रता से बढते है । उम्र के आखरी दौर में हमारे नकारात्मकता और बुरे अनुभव को बदाने के लिए प्रयाप्त समय होता हैं । यदि हम करते , वे हमारे जीवन को कब्जा कर लेंगे, और उनको जो हमारे आस पास हैं हां, हम बुरी धारणा को जिसे जवानी में बोया था काटेंगे यदि इन समस्याओ से अभी नहीं निबटते ।

अत: हम देखते है – विभिन्न लोगो पर, अलग मौंसम (समय) मे, अलग-अलग लोंगो पर इन गढो की शक्ति का प्रभाव मे भिन्नता रहती है ।

इ. अन्य समय जब गढे पगकट होती है

१. **सताव, परीक्षा और कष्ट के समय**

"धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा मे स्थिर रहता है, क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पायेंगा, जिसकी प्रतिज्ञा यीशु ने अपने प्रेम करने वालों से की है , (याकूब -१:१२) प्रत्येक के जीवन में परीक्षा, किन्तु एक प्रकार से मसीहीयों को ही "कठिन परीक्षा" आती हैं। यह सताव और परेशानी के वक्त ही परमेश्वर की अग्नि हमारे जीवनो को युध्द करता हैं। हमारे जीवनो को बाधने वही रस्यियों को जलाकर हमें स्वतंत्र करता हैं। जैसे शत्रु की पकड कमजोर होती है। हम मजबूत, और मसीही चरित्र का विकास करते है। यह बात मसीह यीशु में सब साबित होता है।

मुझे मौका मिला एक व्यक्ति से मिलने का जिसे मसीह पर विश्वास करने के कारण भयानक तरीके से सताया गया था। उसने कहा मैं १७ वर्षो तक पीडित किया गया दर्द भरी व्यवहार किया गया, क्योंकि मैं एक विश्वासी मसीही बना था। वह मेरे लिए उत्तम बात थी। मैं कडवा या बेहतर चुन सकता था। मैने बेहतर होना चुन लिया। सच, परेशानी और परीक्षा को परमेश्वर हमारे जीवन में आने देता है। वह ऐसा इसलिए करता है ताकि शैतान के जाल को जो हमारे जीवन में फैंलाता है पूरी तरह नष्ट करे। परमेश्वर का तात्पर्य इससे बुरा नही भलाई है। वह कडवाहट को जड सहित हटाकर, अपने आत्मा की मधुरता से बदलना चाहता हैं। हम सम्भवत: हमेशा ऐसी होने वाली चीजों को न समझे। किन्तु एक बात समझ लेना चाहिए : इन सबके मध्य, परमेश्वर अपनी शांति देना चाहता है। हम अपने विरोधीपन में लटके रह सकते है, और दूसरो के लिए भी पकड सकते हैं - यहाँ तक कि परमेश्वर के लिए भी। या हम इसे परमेश्वर पर छोडकर और उसके भरोसे हमारे दिल को चंगाई तथा पुनस्थापना के लिए दे देते है। हम कठोर या बेहतर हो सकते है, चुनाव हमारे हाथों हैं।

२. भय और शंका के कशमकश के समय "क्योंकि परमेश्वर ने हे भय का नहीं पर सामर्थ और प्रेम और संयम की आत्मा दी है। (२तिमुथी १:७) परमेश्वर हमारे जीवनों मे शंका और भय का समय आने देता है। ताकि हमारा विश्वास सिध्द और परखा हुआ हो उसकी इच्छा नही है कि हम छोड दें, घुस जाए, या राह तलाशे, बल्कि वह हमे देने की प्रतिज्ञा का है।

(अ) पूर्णमन (ब) विजय पाने की शक्ति और (क) उसके प्यार का सहयोग।

हाँ, बिपत्ती का समय परीक्षा का वक्त होता है, समय आते है। छिपा भय और शंका जीवन को सतह में लाने के लिए जोर डाल सकता है। परमेश्वर का उद्देश्य – और प्रतिज्ञा यह है कि, उसका प्यार, शांति हमारे हृदयों में विजयी सामर्थ्य दिखाता हैं। प्रेरित पौलुस परमेश्वर को सच पाया। परमेश्वर की सेवा में जिसका विश्वास परखा हुआ, शाबित हुआ ऐसे कारण यह कहता हूँ, क्योंकी मैंने यह सीखा है, कि जिस दशा में मैं हूँ, उसी मे संतोष करुं, मै दीन होना भी जानता हूँ, और बढना भी जानता हूँ, भूखा रहना, और बढना, घटना सीखा है। जो मुझे सामर्थ देता है, उसमें में सब कुछ कर सकता हूँ (फिलि ४:११-१३)
पौलुस के कलम से लिखी बातें सबसे आश्यर्चजनक है। वह वास्तव मं ऐसे स्थान में परमेश्वर की संगति मे आया, कि उसके शांति को किसी तरह की बाधा हो। वह थोडा या अधिक मे संतोष करना, कठिन या "सहज समय" में सीखा। वह बाहर, घटनाएँ, परिस्थितीयाँ से नियंत्रित नहीं हुआ। अब वास्तविक स्वतंत्रता हैं। उसके लिए जेल में न बाहर कोई महत्व नहीं रखता। उसका आत्मा स्वतंत्र था। न हीं, वह जेल खाने मे कैद नहीं था शंका या भय में। वह सुरक्षित, ठिक और आश्वस्त परमेश्वर के प्रेम में था। और एक पक्का मन शांत आत्मा उत्पन्न करता है। इससे ज्यादा हमें क्या चाहिए ?

३. **किसी व्यक्ति को खोने (मरने) के समय :-**

वस्तुओं के विधी में ही व्यक्ति को खोना बनाया गया हैं। यह जीवन का अपेक्षित हिस्सा हैं। हम सब अपने प्रियो के खोने का अनुभव पायेंगे। यह सत्य हैं। चाहे हम कितना भी इसका इन्कार करें। या इस पर बात न करें, तब भी यह सत्य हैं। हाँ, हम सबको प्रिय जन, प्रिय स्थान, या वस्तु को खोने के वेदना को अनुभव करना ही हैं। किन्तु फिर भी, परमेश्वर ऐसे वक्त का इस्तेमाल हमारे जीवनों के गढो को प्रकट करके चंगाई देने में कर सकता हैं। यदि हमारे खोने का दु:ख भय समयांतर में घटता या बढता नही हैं तो हममें में एक गढ बन गया। यहा हमेशा किसी व्यक्ति या वस्तु के खोने का वास्तविक दु:ख का अनुभव जो हमारे लिए विशेष होते है, करते हैं। किन्तु जब इस दु:ख का प्रमाण समय के अनुसार कम नही होता तो, सम्भव है कि जीवन में गहरी जड पकडने का चिन्ह हैं। यदि हम एहसास करते हैं कि ऐसा नुकसान परमेश्वर अनुभव करे तो, वो ऐसा हो सकता है, जो हमने शांति से भरा हमारे जीवन में

खोया वह परमेश्वर को शायद हमने परमेश्वर पर कम और अपने प्रियजनों पर अधिक भरोसा किया । वे हमारे भलाई और सुरक्षा के वास्तविक स्रोत बनें । इसलिए, हमारे नुकसान कठिन होता है । हमारे दिल में खाली स्थान रह जाता है जो बेहतर के बजाय बढतर होता जाता है । यह एक सचमुच दु:खद परिस्थिती है ।

किन्तु यहां एक आशा है । यहाँ बिन्दु पर परमेश्वर की इच्छा है कि वह प्रकट कर अपने आप को जो हमारा आशिषित दिलासा देने वाला हैं । वह हमारी नुकसान की भरपाई करना चाहता है । वह अपने आप को प्रकट करने के द्वार चाहता है कि साबित करे कि सच में वही हमारे हरेक आवश्यकता का स्रोत है । वह चाहता कि हमारी सुरक्षा उसमें है । क्योंकि हमारे जीवन में चाहे कोई भी मार्ग मुसीबत आए वह असफल नही होने देता है ।

वह चाहता है कि हम जाने कि वह हमारी चिंता करते हैं । और वह हमेशा हमारी परवाह करेंगे । वह हमारा प्रभू है, और उस पर हम भरोसा रख सकते है । वह हमारी शांति, और उस पर हम आराम कर सकते है । उसके उपस्थिति में और कोई बात बढकर नही होती है । हृदय में आशा और विश्वास के साथ भविष्य में उसे उसके चेहरे को पा सकेंगे । सच, हमारे खोने मे एक गुप्त आशिष है यदि हम परमेश्वर को महान रुप में प्रकट होने के लिए हमारे जीवन में अनुमति देते है । वह ऐसा करना चाहता है और इन्तजार करना है कि हम उसकी ओर ताकें । यह उसकी प्रतिज्ञा, और हमारी उम्मीद और आशा हैं । वह हमें गिरने नही देगा । वह कभी भी निराश नहीं होने देगा ।

हाँ, उसके चंगाई और छुटकारे से हमारे जीवनों में, भविष्य का सामना बिना भय कर सकते हैं । हमने विजय पा ली जो जीवन भर बना रहता हैं । तब हम पौलुस के समान हम कह सकते है । "मैने सीखा है कि जब मैं धनी होता हूँ या गरीब तो उसी पर संतोष करु । थोडा हो या अधिक, "हमारे पाने या खोने के द्वारा हमारा नियंत्रण नही हो । मसीह अब हमारे जीवन का प्रभू हैं । और उसमें हमारा शांति है – अभी और हमेशा के लिए । और यही सच्ची स्वतंत्रता है ।

४. **व्यक्तित्व का संघर्ष :-**"तुम में लडकियाँ और झगडे कहाँ से आ गयें ? तुम लालसा करते हो ...... वह तो और भी अनुग्रह देता है । इस कारण यह लिखा है, "परमेश्वर अभिमानियों का सामना करता और पर दीनों पर अनुग्रह करता हैं ..... हाँ, इसलिए तुम आपस में एक दूसरें के सामने अपने २ पापों को मान लो, और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो । जिससे तुम चंगे हो जाओ (याकूब ४:१-६, ५:१६)

इस अध्ययन मे हमने व्यक्तित्व संघर्ष के विषय बाते की यह अच्छा है, तथापि, ऐसे समय स्मरण रखना चाहिए कि कुछ गढों (भेदों) का प्रकट होना और चंगाइ हो । जैसे हमने सीखा कि नम्रता पूर्वक प्रभू मे चलना, हम एक दूसरे को चंगाइ और उसी के लिए सहायता करते है । दूसरों के घाव में नमक छिडकने के बजाए, परमेश्वर के प्रेम और समझ की चंगाई को उण्डेल सकते है । यह मसीही सम्मति का उत्तम राह हैं ।

५. **परमेश्वर के उपस्थिती में पवित्र समय के दौरान** - "परमेश्वर ज्योति है .... यदि हम ज्योति मे जीते है, हम एक दूसरे के साथ सहमागिता रखते है । और यीशु मसीह उसके पुत्र का लहू हमे सब पापो से शुध्द करता है, ... यदि हम अपने पापो को मानले वह हमारे पापो को क्षमा करने, में विश्वासयोग्य और धर्मी हैं । वह हमारी सब अधार्मिकता से शुध्द करता हैं । (१यूहन्ना १:५, ७, ९) प्राय लोग परमेश्वर की उपस्थिति का इन्कार करते है, क्योंकि वे अपने पापो का दिखने का डर होता है । फिर भी प्रकटी हमारे में आशिषमय हो सकता है ।

वास्तव मे परमेश्वर चाहता है कि हम अपने पापों को देखे ऐसा नहीं कि वह हमें शर्मिंदगी मे, आत्मग्लानि और निराशा मे ढकेलना चाहता है । यह इसलिए कि वह क्षमा करना चाहता है । छुटकारे और प्रेम मे स्थापित करना चाहता है ।

परमेश्वर नहीं चाहता कि हम अपने आप का स्मरण कर सोचते रहें और आत्मग्लानि महशूस करते रहें । वह चाहता है कि हम उसके तरफ उध्दारकर्ता, चँगाईकर्ता और महान छुतकारा देनेवाले के रुप में निहारें । परमेश्वर कि ज्योति और प्रेम सदा साथ – साथ चलता । अन्यथा हम परमेश्वर के सिंहासन के समक्ष पहुँचने का साहस नहीं कर पाते, जैसे वह है वह चाहता है कि जैसे हम है वैसे ही उसके पास आज्ञाकारी और नम्रता के साथ आएँ । वह मसीह यीशु में खुशी से ग्रहण करते है, वह खुशी से उठाता, साफ करता

और पवित्र करके हमें अपने संतान कि मानिंद पेश आता है। परमेश्वर का न्याय चोट पहुँचना, नीचा करना और हमे नाश करना नहीं है। उनका उद्देश्य साफ करना, चँगाई और छुटकारा और प्रस्थापिता करना है विश्वासियो के लिए परमेश्वर का न्याय भला है। यह ऐसा है कि हमारी भलाई के लिए उसका आमंत्रण करें। हाँ यह प्रेम, आनन्द, शान्ति, ताजगी और स्वतंत्रता से भरा जीवन की चाबी है।

गढों को कैसे ढाएँ

A) दृढ विश्वास: (दावे करना ओर अपने पापों को मानना)

"यदि हम कहें कि हमने कुछ पाप नहीं किया, तो अपने आप को धोखा .... और हममे सत्य नहीं..... यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने में विश्वास योग्य है।...वह हमारे जीवन की सारी बातों से शुध्द करता है।(1कुरिन्थ 1:8-10).

1) **नाम लें दावे करें ओर अपने पापों का पश्चाताप करें**:

हमें पहचानना चाहिए और हमारे वादे और गढों के लिए के न्याय, के लिए जबाबदार हैं। हमें अपने पापो को देखना, दावे और उसका पश्चाताप ऐसे करें जैसे खुद के हैं।हम अपनी गलतियों का दोष दूसरों पर नही लगा सकते, यदि हम पाते हैं कि मेरे अंदर गुस्सा का गढ है, तो स्वीकार करें कि यह मेरी समस्या है। मूलत: यह किसी दूसरे का समस्या नहीं है, कि उस परिस्थिति के कारण मुझे गुस्सा आ गया।पाप हमारा है, ओर इसे अपने तक रखें, इसके अतिरिक्त यदि यह हमारे अंदर तक, न्याय तक गुस्सा किया तो हमने दूसरों पर दिष मढा -जो पक्षपात और बेइमानी से व्यवहार का है। हमें स्वीकार करना चाहिए, शायद वे नही कर सकते- हमारी आवश्यकता और उम्मीदें, प्यार और ध्यान को पुरा नहीं कर सकते, हम खेदित, और गुस्सा होते हैं।इसलिए कि उसके असफलता का न्याय किया। किन्तु उनका गलत व्यवहार हमारे न्याय को सही नही मानता, यह गलत था और गलत है। हमारा न्याय करने की मानसिकता ही पाप है। हम तब प्रतिज्ञा कर लें यह जानते हुए या अनजाने में कि इस तरह का व्यवहार कभी भी किसी के साथ न करे जो हमारे दर्द के लिए कोई दूसरा मूल्य चुकाए। हमारा (बदले की कृति) गुस्सापूर्ण शब्द या चोट पहुंचानेवाली शैली से कर सकते हैं। जैसे यही रीति दुहराई जाती है, गुस्सा का यह स्वाभाव हमारे जीवन में घर बना लेता जो आगे चल कर गढ बन जाता है। यह जरूरी है कि इस तरह के कसम से पश्चाताप करें नजरिया और नकारात्मक पाप के समान है। हमने प्रभु और दूसरों के प्रति पाप किया है, हमारे पाप परमेश्वर के आत्मा को शोकित ओर जो हमारे ईर्द-गिर्द रहते हैं पर दर्द लाता है हमे इसे देखना चाहिए। दावा करें और स्वगीय पिता के समक्ष मान लें।

2) पाप द्वारा दोषी ठहराए हुए मान लें:

पाप का मानना और पश्चाताप दोनों साथ-साथ चलता है। यह तो पवित्र आत्मा है जो पाप के बिषय मनाता है,और दोष लगाता है। ये वह है वह स्पस्ट करता है पाप कैसे हुआ। हम केवल पाप, नही लेकिन अनुचित गलती थी को देखते हैं। यह परमेश्वर दूसरों एवं खुद के लिए दु:खद बात है, अपने पश्चाताप में हम सहमत होते हैं परमेश्वर के साथ कि वह कितना सच है जैसे वह था।

मसीही सलाहकार का कार्य एक व्यक्ति को उसके पाप को देखने, मान लेने, और पश्चाताप करने में सहयोग करने है। एक सलाहकार के नाते जो भी हो, आप पापी को दोषी न ठहरायें आपको स्मरण रखना चाहिए । सलाहकार मामलों को उठाता, प्रस्न पूछता, और आँतरिक मनसा को प्रकट करता है-इस प्रकृया में पवित्र आत्मा की सहायता की आशा करना चाहिए।सलाहकार के नाते आप उसे जोर न डालें कि चीजों को आपके नजरिए से ही देखें। यदि ऐसा करते हैं तो, उस ब्यक्ति के पाप को मानना, या पश्चाताप आप का होगा उसका नही। यह बात उस ब्यक्ति को हर समय आप पर भरोसा या निर्भर रहना सिखाएगा, और यदि समस्याएँ बरकरार है- तो आप ही वह ब्यक्ति होंगे जो उसको दिष देंगे। -

B) पश्चाताप:

अपने पापों से मुडने की ईच्छा पश्चाताप किसी ब्यक्ति के पापमय स्वभाव से ह्रदय और मन से पूर्ण बदलने की ईच्छा को कहते हैं। केवल तभी गढों की शक्ति को तोड़ा जा सकता है। परमेश्वर तभी कार्य करेंगे जब हम उसमें कार्य करेंगे, कोई अन्य राह नहीं हमें समझना चाहिए, जो भी हो, बदलने की ईच्छा और परिवर्तन खि सामर्थ में भिन्नता है। एक तरह से जरुर परमेश्वर के कार्य करने की अनुग्रह पूर्ण प्रकृया है। मनुष्य की सथिति उसके तरफ से जैसा भी हो, यह उसका भाग औरपरमेश्वर का कार्य है। मनुष्य का भाग परिवर्तन नही चुनता, उसके ईच्छा कि प्रकृया, परमेश्वर का हिस्सा उसको परिवर्तन की शक्ति देना- उसका विशेस कार्य है।

यह देखना महत्वपूर्ण है कि कोई भी मनुष्य गढों के पकड़ को अपनी इच्छा शक्ति से नहीं तोड़ सकता। यह हमारे शरीर का कार्य है, यदीपि यह इश्वरीय ईच्छा हो सकती है किंतु यह कार्य नहीं करेगा। प्रेरित पौल स बात को इस तरह रखते हैं:-"क्या तुम ऐसे निर्बुध हो कि आत्मा कि रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अंत करना चाहते हो" (गला-3:3) यह तो मुर्खता है।--केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थ हमारे दिष, घाव और बंधन को तोड़ सकता है, दुर कर सकता है। हम अपने आप को बदल नहीं सकते।

यह केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थ हमारे दोष, घाव और बंधन को तोड़ सकता है।यह अपने आप में बदल नही सकते, केवल यीशु मसीह ही ऐसा कर सकते हैं। "इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिहाँसन के निकट, हियाव बांध कर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पायें, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।" (इब्रानी-4:16)-ाँ तैयारी और वफादारी से प्रभु के पास सच्चा पश्चातापी मन के साथ आना हमारा भाग है। हमें अपनी पापमय स्वाभाव और कर्म से, पूर्ण मुड़ने की ईच्छा होनी चाहिए, जैसे हि ऐसा करते हैं परमेशवर भूतकाल की शक्ति को तोड़ने का उपाय करता है। इसके बाद तब हम उसके सच्चाई और प्रेम की रोशनी में विजय बनकर आगे बढ सकते हैं।

C) सामर्थ:

स्तुति और अराधना, हमारी प्रार्थना का उत्पादन "किसी भी बात की चिंता मत करो, परन्तु हर एक बात में, तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के व्दारा, धन्यवाद के साथ परमेश्वर के संमुख........एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो कि तुम्हे चंगाई मिले।धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।" (इफि -4:6;याकूब 5:16) जब हम प्रभु कि संगती में चलते, हम एक घनिष्ट सम्बंध को अंजाम देते हैं। प्रभु यीशु मसीह के साथ जो हमारा उध्दारकर्ता और शक्ति का स्रोत है, केवल उसके उपस्थिति का, सामर्थ का हमारे दीर्घ जीवनों में सच्चा बदलाव कर सकते हैं।इसीकारण उसकी इच्छा है कि भय से, समस्यायों से, परीक्षाओं और परेशानि से उसका सामना करें। उसके पास केवल उत्तर नहीं वही उत्तर है- इसलिए कहा गया है-"परमेश्वर प्रार्थना के व्दारा सबकुछ कर सकता है। उसके बिना कुछ नहीं" प्रार्थना ओमने सामने संगती का शक्तिशाली प्रारुप है।

प्रभावशाली प्रार्थना के विभिन्न प्रारूप

जैसा कि हमने देखा है। जैसा कि हमने देखा, प्रार्थना के कइ तरीके हैं, गढों को तोड़ने के लिए सब कारगर हैं। इसे सावधानी पूर्वक बुध्दिमानी से, अपने सोंचविचार से मूल्यांकन करना चाहिए।---

1. **स्वीकार करना:-** हम नाम लेते, मान लेते और परमेश्वर के साथ सहमत होते हैं कि हमने उसके विरूध और दूसरों के प्रति पाप किया।
2. **क्षमा करना:-** हम क्षमा माँगते हैं और उसकी क्षमा को प्राप्त करते हैं, हमे भी दूसरों के पाप क्षमा करके और उनसे क्षमा प्राप्त करना चाहिए।
3. **त्याग:-** हम छोड़ते या त्याग देते, बाहर और दूर कोई भी बात जो परमेश्वर की नजर में गलत है, यह निश्चय है। अंतिम और पक्का वचन, इसके लिए कभी भी और ज्यादा कुछ करने की जरूरत नहीं-यह स्थिर वचन जिसे हमारे और दुसरों के लिए घोषणा करते हैं।
4. **छुटकारा:-** हम मसीह के प्रभुता में स्वीकार और समर्पित कर देते हैं। क्रूस की शक्ति व्दाराहमारे जीवन कि पकड़ को और दूसरों के जीवन को स्वतंत्र करते हैं।
5. **शुध्दता:-** मसीह यीशु के शुध्द करने की शक्ति का हम घोषणा करते हैं और दिष, शर्म, ग्लानि सेछुतकारे की स्वतंत्रता को स्वीकार करते हैं।
6. **प्रकाशन:-** हम पवित्र आत्मा से पूछते हैं कि हमारी सम्सया का जड़ प्रकट करें जो हमारे प्राणों में है।इसे बिना भय के करें, क्योंकि उसके सच्चाई के रोशनी में उसके प्यार की सामर्थ आती है।
7. **चंगाई:-** यीशु मसीह को हमारा महान वैधी के रूप में कबुल और दावा करते हैं।उसके हाथों से हम हम हमारे आंतरिक चोट और हृदयों के घावों के लिए चंगाई पा सकते हैं।

चंगाई और उपवास:-

कठिन समस्यायों में प्रार्थना व उपवास प्रभु के अनुग्रह को खोलने का शक्तिशाली साधन है। यीशु ने अपने चेलों को कहा:- कि बलवान ढीठ "आत्मा" उपवास और प्रार्थना के सिवाय और किसी रीति से नहीं निकलता, (मती:17:21) खानें और अन्य बातों से परहेज(अलग) करना परमेश्वर की वाणी को सुनने के लिए सहायता करता है, जैसे ही अपने देह की अभिलाषा को त्याग देते हैं, तो पवित्र आत्मा हमारे जीवनों में अधिक शक्तिशाली और प्रभावशाली तरीके से कार्य कर सकता है। उपवास परमेश्वर को हमारे प्रति अधिक अनुग्रही या दयालु नहीं बनाता, हम परमेशवर के कृपा में अपने कार्यो से जोड़ नही सकते। तथापि, जब हमारे शरीर कि शक्ति कमजोर पड़ती है तो उसके अनुग्रह को पाने के लिए हमारे जीवनों को आसान जरूर बना देता है। हमने प्र्र्थना उपवास के प्रभाव को देखा है, जब लोग कठिन समस्याओं पर सम्मति देते हैं, समस्या का जड़ उनके शरीर के णिचले ब्यवहार में छिपे र- ते -ँ। इन समस्याओं के जड़ को खोजना कठिन होता है, उनके जीवन में गहरी पैठ बना लिए होते हैं, वे नहीं जानते ये कहाँ और क्यी हैं ? उपवास से शरीर कमजोर होता है, समस्याओ के कारणो तक पहुँचने में स- ायता - ोती -े। पवित्र आत्मा प्रगत करता है और उस ब्यक्ति के ब्यक्तिगत समस्या दर्द के मूल समस्या को हटा देता है। दूसरे शब्दों में उपवास हमें उत्तम स्थान पर परमेश्वर के अनुग्रह में उत्तम कार्य करने के लिए रखता है।यह दोनें ब्यक्ति सम्मति देने ओर पाने वाले के लिए सत्य है।

अराधना और स्तुति की शक्ति:-

उसने जो हमारे शरीर के लिए किया उसके बड़ाई में कहना स्तुति है, उसकी और पुनरूत्थाने व्दारा जो जो कुछ उसने हमारे लिए किए हैं, उसके हाथ में जो कुछ भी पाया, यही अन्य दानों की बुनियाद है। स्तुति में हम धन्यवाद और कृतज्ञ्यता प्रकट करते हैं। पिछली विभिन्न रीति से उसकी भलाई जो हमारे जीवन मे प्रकट हुआ उसके लिए प्राथना के उत्तर मे हम स्तुति करते हैं। □ हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के होते हैं , आराधना में जो कुछ भी है उसके लिए प्यार दिखाते हुए महिमा करते हैं, उसके सुन्दर रूप और प्रिय स्वभाव पर सोंचते हुए उसके समक्ष झुक कर उसके अद्भुत उपसिथति का आनन्द लेते हैं। भलाई और अनुग्रह से गर्माहट के साथ भरे उसके दिल को उसके चेहरे पर कभी भी देख सकते हैं।

अराधना और स्तुति दोनो में हमारे हृदय और मन परमेश्वर पर होते हैं। जैसे हमारा ध्यान उस पर लगा रहता है, हमारे दर्द और समस्या कौ शक्ति क्षीण होती है। हमारा विश्वास हमारी जरूरत के उठकर परमेश्वर के उत्तर का दावा कर सकती है। हम विश्वस करना आरंम्भ कर देते हैं कि वह हमारे छिपे घावों को चंगा करने में योग्य और विश्वासयोग्य है। परमेश्वर हमसे अधिक हमारे हमार विषय में जानते हैं, इसलिए जैसे हैं वैसे ही उसके पास आने से वैसे ही स्वीकार करते हैं। हाँ वह ऐसा करता है, क्योंकि वह अपने पुत्र से हमारी भिन्नता को अपनी आत्मा और वचन,को हमारे जीवन में बना सकता है। हम उसके हुजूरी में आ सकते हैं, हम अपनी गूढ से गूढ समस्या को बिना भय बातें कर सकते हैं, किन्तु विश्वास से उससे भी महत्वपूर्ण बात वह भी हमसे बाते करेंगे। हमे आशा करना चाहिए कि वह प्रयाप्त विश्वास और ज्योति दे कि दूसरा कदम बढा सकें। ये सब नये आरम्भिक चाल की उसके अलौकिक स्वाश्थ और प्रसनंता में शुरुवात है।

D) वचन:- धार्मिकता में चेतावनी

"- र एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश.और...

- ❖ समझाने..... साुधारने.......
- ❖ धर्म की शिक्षा देने ......

परिणाम स्वरूप परमेश्वर के जन हमेशा तत्पर होगा- पूर्ण तैयारी में-प्रत्येक भले कार्य के लिए" (2तिमु-3:16) हमारी जीवन के लिए परमेश्वर का वचन उचित विचार, बोलना और करनें में मार्ग दर्शक है, दिशा के बिना आसानी से हम राह से भटक जाते हैं जिसके कारण ही जो समस्यायों का सामना करते हैं जानना भला षै तथापि परमेश्वर का वचन हमारे लिए मार्गदर्शक एवम् परोपकारी हर्षितकर्ता और काफी उपयोगी ही है । परमेश्वर की प्रतिज्ञा जैसे मुठिया ही हो जिसका हम अपनी समस्याओं से निकलने के लिए इस्तेमाल करते हैं। अपने समय के दबाव व बिगत कालों के समस्याओं के दिशा में आगे नहीं बढेंगे - झुकेंगे। परमेश्वर का वचन स्पष्ट (स्थिर) भूमि है, जषां हम स्तिरता से खड़े रह सकते हैं। यह एक अधिकार है, जिसमे परमेश्वर के वचन में स्पष्ट स्थिरता से लगातार स्थिरता से चल सकते हैं।

लिखित वचन जीवनदायी वचन बनें:-

"आत्मा तो जीवन दायी है शरीर से कुछ लाभ नहीं, जो बातें तुमसे मैं कही है वे आत्मा और जीवन दोनों भी है" (यूहन्ना: 6:63) हमें परमेश्वर को जानना चाहिए - कि हमारे ब्यक्तिगत जीवन में उसका कितना मतलब और प्रभाव है।

Logos (लोगोस) सामान्य सिध्दऄतों में परमेश्वर का वचन यूनानी में लिखा है। RHEMA (रेम) परमेश्वर का जीवित वचन □ लोंगो के ब्यक्तिगत जीवन में ब्यवहारिक प्रयुक्त होता है। जब परमेश्वर के वचन को सोंचते मनन करते, प्रार्थना करते हैं, पवित्रात्मा हमारे हृदयों मे जीवन ले आते है। यह हमारे जीवन का हिस्सा, नजरिये और कर्म को विशेष तौर से ब्यवहारिकता में प्रभावित करते है। एक रेह्मा वचन से हमारे ब्यक्तिगत जीवन में यह धर्म की शिक्षा देने, बुध्दि और शक्ति देने का उपाय करता है।

परमेश्वर का शक्तिशाली वचन का मस्तिक के लिए रेह्मा (प्रकटिकरण का वचन)

"इस संसार के सदृष्य न बनो, परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से, तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाये जिससे की परमेश्वर की भली और भावती और सिध्द ईच्छा को अनुभव से मालूम करते जाओ" (रोम-12:2) यदि हम आपने अप कि प्रकत करते हैं और हमारे जीवन में अनुमति देंगे तो परमेश्वर का वचन शुध्द और चँगाई प्रदान करेगा। "इसलिए हम कलपनाओं का और हरेक ऊँची बात को, जो परमेश्वर के विरूध्द में उठती है खण्डन करते हैं, और हरेक को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं" (2 कुरिं-10:5)

देखा गया कि हमारी स्वम् से बातें करना हमारे जीवनों में महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है, कुछ लोंगो का तो विश्वास है कि हम आपने आप से 25,00,000 शब्दों व्दारा प्रतिदिन बातें करते हैं। स्पष्ट है कि हमारे हृदयों में बातें करने का स्वभाव है हमारे कर्म और धारणा को प्रभावित करते है (नीति-23:7akjv) हम अपने आप से क्या करते हैं ? एक तरह से आपने प्राणों से परमेश्वर के वचन या संसार की झूठी बातों की चर्चा करते हैंजो शरीर और शैतान से आती है। वही हमारे जीवन को आकार देता षै शायद यही कारण है कि हम मे से कुछ लोग इस दु:खद परिस्थिति व बुरे वातावरण में हैं। आप यह परमेश्वर के वचन के द्वारा हमारे मनों को नया और हमारे ानों के विचारों को नियंत्रण कर सकते हैं। हमें परमेश्वर के लिखित वचन को पढना लिखना और मनन करना चाहिए जब तक कि परमेश्वर का लिखित वचन हमारे जीवन का वचन नहीं बन जाता है (यहोशू-1:। इफि-4:8) झेसे हम परमेश्वर के सच्चाई को आपने प्राणों से बातें करते हैं हमारे आत्मा मे जीवन ले आता हैं भजनकार इस शक्तिशाली सिध्दाँत को पा लिया था, बार-बार फिर बार-बार अपने ड़जन में दाउद अपने प्राण "आत्मश्वास" को एत्साहित शब्दों से प्रेरणा और श्वास भरता है। हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और जो कुछ मुझमें है वह उसके नाम को धन्य कहे- हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी भी उपकार को न भूलना, वही तेरे सब रोगों को चँगा करता और अधर्मो को क्षमा करता है"

- वह हमारे सब अधर्मो को क्षमा करता है,
- वह ापके बीमारी को चँगा करता है,
- वह हमारे जीवन को नाश होने से बचाता है,
- तेरे सिर पर करूणा और दया का मुकुट बाँधता है,
- वही तेरे लालसाओं को तृप्त करता है,
- वही तेरे जवनी को ाब की नाई बनाता है (भजन-103:1-5) स परमेश्वर का वचन आत्मिक ोजन और आत्मा के लिए दवा है।

E)जड़ें:- छिपी बातों को प्रकटीकरण:

क्योकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी चोखा है, और प्राण और आत्मा को गॉठ-गॉठ और गुदे गुदे को अलग करके आर-पार छेदता है और मन की भावनाओं के विचारों को जांचताहै, वरन जिससे हमें काम है, उसकी आखों के सामने सब वस्तुएँ खुली और प्रकट है। (इब्रानी-4:12-13) परमेश्वर का वचन और परमेश्वर का आत्मा दोनों ही हमारे जीवनों में छिपे गढों को गिराने और छुटकार देने के लिए आवश्यक है। बहुत सारी हमारी समस्याएँ, जब हम परमेश्वर की ओर मुड़ते और प्रर्थना करते है अपने आप धुंधला हो जाता है, लम्बे समय का चोट और छिपा गढ, जो भी हो थोड़ा गहराई तक खोदना तो जरूरी होता हैं , यह सत्य है कि जब हम यीशु मसीह की सेवा और अज्ञापालन करने कि सोंचते-महशूस करते है कि हम बुरि लत और धारणा में बंधे हुए हैं। इसके लिए समस्या के मूल में जाना और उसके शक्ति को खत्म करना जरूरी हो जाता है। हम इसलिए नहीं खोदते कि मात्र खो्दना चाहिए, हम एन पुरानी, बीती पॉपों को उजागर करने में रूची नहीं रखते, हम पवित्रात्मा से निवेदन करते हैं कि वह हमारी आत्माओं तक पहुँचे, हम जानना चाहते है कि यदि कोई बिगत दर्दनाक, मूल जिससे हमे छुटकारा पाने की जरूरत है "हे परमेश्वर ुझे जँच कर जान ले , मुझे परख मेरी चिंताओं को जान ले! और देख ले कि मिझमे कोई बुराई है कि नहीं और अनंत के मार्ग में मरी अगुवाई कर" (भजन-139:23-24) हमारा सच्चा सम्मति`नेवाला पवित्रात्मा है, हमारी ईच्छा है कि हम उस समस्या के जड़ को इंगित करके बताएं. हम सीधे तौर से उसके शक्ति को नाश करने का काम करते हैं। इसके लिए कई बार परमेश्वर को कार्य करने के लिए देते है। जो चँगाई और छुटकारा इस तरह अनुशासन करते है अधिक स्थाई होता है।

सम्भवत: बचपन में हम ज्यादा ही निराश या चोट खाए हो सकते हैं; परिणाम स्वरूप जो नकारात्मक वाचा बांधने में सब्कि होते हैं कभी भी इस तरह चोट फिर से न दें का न्याय करते हैं। बुरी धारणा और कर्म जो इस स्थिर गढों के निर्णय का ुशरण करते हैं नाश होना जरुरी है। परमेश्वर चाहता है कि हम अक्षमा का कोई भी पाप, क्रोध, गुस्सा, न्याय, प्रतिज्ञा और नजरिए के पाप का अंगीकार करें। वह हमारे घायल हृदय और चोट खाए हृदयों को चँगा करता है। वह हमें शैतानी प्रभाव से भी जो यदि शामिल है, छुटकारा देगा और वह हमारी समस्याओं के छुटकारे का बिशेष और सीधा समाधान का साधन है। हमारे पिछले जीवन के पिछले प्रभाव की शक्तियॉ पहले से ही टुटा है, यह समझने वाली मतलब की बात है।यह क्रूस पर मसीह व्दारा

बुराई पर जय पाने से नाश किया गया है फिर भि शैतान एक धोखेबाज यह चाहता है कि हम विश्वास को ऐसा कहें कि हमारी समस्या पर कुछ भी फर्क नहीं पड़ा है। यहॉ एक बात महत्वपूर्ण है कि हम विजयी, क्षमा प्राप्त, चँगाई जो मसीह में हों मिला ह ैकबूल करें बिगत कालों में हमारे जीवनों पर पकड़ बनाने की ताकत उसमें अब नहीं है। तथापि, यदि हम मसीह में अपनी स्वतंत्रता को बूल करेन में असफल होते हैं, तो हम अब भी पिछले कालों के बंधन में ही हैं।हमें सब छोड़कर "आगे बढने की हित" यह हमारे खेल का हिस्सा है, और परमेश्वर ऐसा करने की शक्ति देता है दूसरे शब्दों में प्रभू, पवित्रात्मा को हमारे लिए अनुमति दे कि वह कुछ समस्या आरम्भ होने के चिन्ह को बताये।यह हमारा जीवन है जहॉ प्रवेश करना है, यही वह स्थान है जहॉ क्रूस के छुटकारे की शक्ति का दावा करना है।

मसीह में गढ पहले से ही टुट चुका होता है, इसलिए हमें आगे बढने के लिए स्वतंत्रता है। अब हमें कोई पकड़ नहीं सकता है। और ईसे हम अपने में बाएं रखें। इस तरह दो गढ नाश किए गये। यह विलकुल सच है :- उदा:- ब्यक्ति ो कामुक है अशलिल चित्र निहारने और गंदी लैगिक संबन्धी चित्रों को देखने की समस्या है, ऐसे मामलों में यह जानना आवश्यक होता है कि स बुराई का बीज कब उसके मन में पड़ा। इसमें स्थान लोग और ऐसे कृयाकलाप शामिल हो सकते हैं। यद तब हम परमेश्वर को क्षमा के लिए पुकारते हैं, शुध्दता और छुटकारे के लिए वह तुरंत ही आगे आते हैं। जो ादतें हमें पकड़ रखीं थीं. टुट जाता है कि हम उन्हें "त्यागकर" और प्राप्त विजय में स्वतंत्रता पूर्वक शक्तिशाली रूप में बढते जाएँ। इसका अथ7 यह नहीं कि अब जीवन के इस क्षेत्र में कोई परीक्षा नषिं आएगी इसका मतलब है कि हमें कहने कि शक्ति मिली : नहीं ह्रदय के शुध्द, पवित्रता और मन के नए हो जाने से नए पन की आत्मिकता में बढ़ते जाएँ।

F) चँगाई:-

ीवन के घावों से ुटकारा:- "रोग में मनुष्य अपनी आत्मा में संभलता है, परन्तु जब आत्मा हार जाती है तब इसे कौन जान सकता है।" (नीति-18:14) केवल यीशु टुटे ह्रदय को चँगा कर सकते हैं, आप उसे स्वम् निबता नहीं सकते आप अपने मनोविज्ञान से सीख सकते हैं, और मसीही सम्मति पा सकते है। ारन्तु अन्तत: वह यीशु ही है और केवल वही - जो जड़ तक पहँच सकता है हम सब घायल चँगाई करने वाले हैं। वह परमेश्वर जो भूतपूर्व बातों से चँगाई देता है हम उसकी सेवा दूसरों को दे सकते हैं। हम जानता है कि कैसे सोंचते हैं और महशूस करते हैं वहॉ हम स्वम् थे। यह जानना मार्ग षे, परन्तु जब वहॉ हम यीशु से मिले, और वह भी मिल सकते हैं हॉ अब उसकी सेवा तरस तथा शक्ति और बुध्दि के साथ करते हैं। जैसे हम प्रभु में लगातार बढ़ते हैं पश्चाताप और चँगाई जीवन की जीवन शैली(प्रकृया) बन जाती है क्योंकि वस्तविक और महिमामय आशा हम सबके लिए है।

"परन्तु जब हम सबके उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप स प्रकार प्रकट होता है कि जिस प्रकार दर्पण में तो प्रभु के व्दारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश -अंश करके बढ़ते जाते हैं।" (2कुरिन्थ-3:18)

G) छुटकारा:-

शैतान के कामों और शक्ति से छुटकारा:- " उसी ने हमें अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया है" (कुलु-1:13) "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है .. .. .देखो, ढ़ें तुन्हें सॉपों और बिच्छुओं को रौइदने का और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है। और किसी वस्तु से तुन्हे हानि नहीं होगी (मती – २८:१८ , लुका १०:१९) शैतान हमारा शत्रु वास्तविक है, किन्तु वह शक्तिमान नहीं है । उसका अंधकार का राज्य भी परमेश्वर के राज्य के द्वारा जीता जा चुका है, मसीह हमारा राजा सलीब पर फतह हासिल किया है । उससे भी अधिक, जब हम उसके स्वामित्व में आधिन होते हैं असने शैतान का सामना करने का अधिकर दिया है, कि हम असे भगा सके (याकूब- ४:७) शत्रु को हमारे जीवनों में कदम रखने का कोई हक नहीं है । जब हम ही अज्ञानता, शंका, अनाज्ञाकारिता, और भय से असे जगह नहीं दे देते, यह महत्वपूर्ण है । इसलिए हम जानते हैं कि परमेश्वर के राज्य में हम कौन हैं ?

हम परमेश्वर के परिवार के राजकीय संतान, राजकुमार, और राजकुमारी हैं । हमें शक्ति और अधिकार एवं बंधको को छुटकारे का अधिकार दिया गया है । हाँ यीशु के नाम में शैतान के गढों को ढा देने , नाश करने का अधिकार, सामर्थ हमारे जीवन और दूसरों के जीवनों पर भी अधिकार दिया गया है ।

सलीब :

स्वयं का पूर्ण समर्पण यदि कोई मेरे पिछे आना चाहे, तो अपने आप का इंकार करे, और अपना कूस उठाए, और मेरे पिछे हो ले । क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह असे खोएगा, और जो कोई मेरे प्राण के लिए अपना प्राण मेरे लिए खोएगा वह उसे पाएगा (मती – १६:२४-२५ , रोमि -१२:१ भी देखें) हम अपने आप से खुद को नहीं पा सकते, हमने अपने प्रयास से अपनी

अभिलाषाओं को पूर्ण नहीं कर सकते, हम अपने आप को जान सकते हैं और अपने आप में ही रह सकते हैं – केवल स्वयं के समर्पण द्वारा प्रतिदिन हमे आपे सृष्टिकर्ता और जीवन के पुत्र को समर्पण करना चाहिए केवल तभी हम जिसके लिए सृजे गये, बुलाए गये, उसको पूर्ण कर सकते हैं । जैसे हम अपने जीवन को उसमे बदलते या परिवर्तन करते, हमें उसकी समानता में बनने की शक्ति होती है । ठीक उसी समय, जो हमने सोंचा था , खोया हुआ जीवन वैसा ही जीना चाहिए । अब हम प्रेम , क्षमा, सहायता और दूसरों की चँगाई कर सकते हैं । उसके प्रेम, क्षमादान, चँगाई करने की शक्ति । हाँ यह उसका जीवन है और वही हमारे जीवन को योग्य जीवन बनाता है ।

यीशु हमारा विजेता

१ कुरिन्थ -१५:५७ में हमारे हृदय की प्रार्थना को प्रकट करता है , जब वह कहता है : परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु के द्वारा हमें जयवन्त करतो है । हमारे जीवन के विरुध भेजे गए दैत्य शैतान पर भी हमारा यीशु बिजयी हुआ है । वह कलवरी के सलीब पर पहले ही हराकर नाश किया । अत: तुमको व दैत्य से डरने कि आवश्यकता नहीं । शैतान के उपर विजय पाना कोई कार्य नहीं जिसे पूरा करने की जरुरत हो । बिजय पूर्ण हो चुका है, आपको जो करना है वह उसके नाम से दावे के साथ ले लेना है । याकूब ४:७ में तुम्हारी भर्तस्ना की है इसलिए तुम परमेश्वर के आधीन हा जाओ, शैतान का सामना कर तो वह तुम्हारे सामने से भाग जाएगा आप शैतान का सामना करें, और उसे याद दिलाएँ कि यीशु ने क्रूस पर उसे हराया है, और इसलिए आगे आपको संघर्ष करने की आवश्यकता नाहीं क्योंकि वह हारा हुआ शैतान है आप अपने हक के विरासत को दावा करें और प्रार्थना के माध्यम से पवित्रात्मा आपको विरासत देगा । पुराने नियम में इस्राइलियों के संतान यरदन नदी को सूखी भूमी पर पार कर के कनान के रहने वालों को हराते गए । वे इस शासवती से गए कि परमेश्वर उन्हे विजय देगा । जब तक उसके आशवासन के सत्य में बने रहते हैं । प्रत्येक विजय उनका है । यरीहो के दीवाल के चारोंर तरफ सात बार चक्कर लगाने के बाद जैसे परमेश्वर ने आज्ञा दिया, और दीवार गिर (ढह) गया । वे प्रत्येक शहर के विरुध गये, और परमेश्वर ने उन्हे विजय दी । वे किस तरह विजय पा रहे थे, वह महत्वपूर्ण नहीं था । परन्तु महत्वपुर्ण यह था कि वे परमेश्वर के आज्ञा में कैसे विजय में चल रहे थै । ईस्राइलियों के संतानों को जब तक वे परमेश्वर के आज्ञा में बने रहे बिजय प्राप्त करते गए । परन्तु जब अकान ने सोना , चाँदी , और वस्त्र छिपा रखा, तब परमेश्वर ने उन्हे दूसरे शहर के बिरुध्द युध्द में हार का मुँह दिखया क्योंकि वे आज्ञापालन में असफल हुए, परमेश्वर अपने संतानो से आज भी उसी तरह पेश आते हैं, -१ शमू -१५:२२ , में. शमूएल कहता है : ------- कि आज्ञापालन बलिदान से उत्तम है … आज आप आशिष आज्ञापालन पर ही पायेंगे । आप अपने उत्तराधिकारी को परमेश्वर के वचन जो प्रकट है के आज्ञाकारिता से पवित्रआत्मा द्वारा दावे करने से पा सकते हैं ।

महिमा जो तुम्हारा उत्तराधिकारी है, प्राप्त करने के लिए आपके जीवन के विरुध्द भेजे गए भयानक शैतान पर अधिकार जताना जरुरी है । उनमें से प्रत्येक दैत्य का यीशु के नाम से सामना करके भगाना होगा औरे प्रत्येक आत्मिक दैत्य को यीशु के नाम से आज्ञा देंगें कि वह छोड दे और तुम्हारे जीवन में प्रभव न रखे । मसीह के नाते पाप की श्रेणी भी बनाया जो एक से दूसरा अधिक नाशक होता है, परमेश्वर के नजरिए में प्रत्येक पाप एकल और उसके विरुध्द बलवा करने वाला है, यहाँ ऐसा कोई अलौकिक शक्ति नहीं है जिसका सामना यीशु के नाम और अधिकार से आपके विरुध भेजे गए सामर्थ का सामना न कर सकें , पवित्र आत्मा से पूछें कि आपके विरुध्द कौन सी अलौकिक शक्ति शैतान कि ओर से भेजा गया है । और प्रगट होने पर , प्रत्येक को यीशु के नाम से घुडके और भगा दें । आज्ञा दें कि आपके जीवन को छोडके यीशु के नाम से चला जाए । उदा. के लिए यदि पवित्रात्मा प्रकट करता है कि वे तिरस्कार के भावना से सताए गये हैं , सरलता से कहें , आत्मा का तिरस्कार , यीशु मसीह के नाम में यदि सम्भव है किसी के साथ प्रार्थना करें, जो प्रार्थना में आपको उठाए जब आप शैतान को निकालने में ब्यस्त हैं, और अधिकार के साथ उसका सामना करें जिसको आपके विरुध्द भेजा गया है ।

लोंगो के विरुध्द भजे जाने वाले दैत्य शैतान निम्न है :

घमण्ड,	ईर्ष्या	शंका,
अविश्वास,	हीन भावना,	दोष
बलवा,	भेदभाव तिरस्कार,	अकेलापन,
हार,	क्रोध,	घृणा
चिंता,	नाराजगी,	कडवाहट
तनाव,	आत्महत्या,	चिंता
भय,	अक्षमा,	मोह,
माया,	ज्ञानीपन,	झूठ
निराशा,	दुविधा,	टालमटोल,
निस्सहाय,	आत्मदया,	चिढना,
डर,	स्वेच्छा,	नुक्ताचीनी,
अस्वीकृति का डर, असुरक्षा	, निराशापन,	खण्डन करना
ग्लानि,	हताशा,	स्वयं धोखा,
प्रत्यियोगिता,	असफलता का डर,	धोखा
शोक,	कंजूस,	लालच
मृत्यु उदारता,	शोक,	अनुदारता,
दु:ख	पेटूपन,	ब्याभिचार
लालसा	थकान	छिपा पाप गृहदेवता झूठा धर्म।

- ❖ शराब, तम्बाकु
- ❖ गर्द प्रेत्मावादीय

उपरोक्त सूची से होकर जाए और पवित्रात्मा से पूछे कि वह आपको प्रत्येक विन्दु में नकारात्मक ाक्ति या दैत्य या आत्मा जिसे शैतान आपको हराने के लिए प्रयोग करता है, प्रकट करे। प्रत्येक नकारात्मक बात के लिए सिजे प्रवित्रात आपके विरुध्द प्रकट करता है , उस नकारात्मक आत्मा के विरुध्द अधिकार के वचन का बराबर प्रयोग करे ----------------- का आत्मा यीशु के नाम से बाहर आ

शैतान को घुडकने की शक्ति और उप पर अधिकार करने कि शक्ति का परमेश्वर आपके जीवन में उपाय करेगा। जैसे ही उस सामर्थ का प्रयोग करते हैं, परमेश्वर आपको नया बल और अधिकर देते हैं और वह सब जरुरी बंते भी जिससे तुम विजय को पूरा कर सको। अब पवित्रात्मा के सामर्थ में यीशु मसीह से तुम्हारे दिल और मस्तिक सच्चा अधिकर दे जिसका परमेश्वर आपके लिए प्रतिज्ञा की है। यीशु से प्रार्थना करे कि वह आपको आनन्द, शांति का आत्मा, और सांत्वाना परमेश्वर के साथ मधुक सम्बंध बनाने से आता है । यीशु से मांगे कि वह अपना प्रेम , ऐसा प्रेम नहीं जो संसार की रीति पर है, किन्तु , स्वयं यीशु का प्रेम, परमेश्वर का स्नेह () अगापे एक अलौकिक प्रेम जो हमारे जीवन के हर पहलू के संम्बन्ध मं फैलता है। यीशु से माँगे कि आपके जीवन का हरेक खालीपन उसके आत्मा के फल, सब सकारात्मक ताकत से – पवित्रात्मा में पूर्णरुप से भर जाए।

स्मरण करें :-

केवल शैतान को बांधने और तमाम नकारात्मक ताकतों को भगाना प्रयात्प नहीं है। अपने आत्मिक मंदिर को स्वच्द- पवित्र रखना कि फिर कभी ये नाकारात्मकता वापस ना (भरे) आ जाए। (लूका -११:२४-२६, मती – १२:४६-४५ देखें) यीशु से मांगे कि वह पवित्रात्मा के फलों से हमेशा भरा रहे।

सावधान शब्द, प्रत्येक मनुष्य जो गलत करते हैं उसमे हमेशा जैसे विवरणीकृत किया है उसमें शैतान ही न देखें। कुछ लोक अपने बुरे वर्ताव के लिए शैतान को दोष देने मं आनन्दित होते हैं। जबकि ऐसे समय मे आत्मसंयम और ईच्छा शक्ति का अभ्यास

करना चाहिए I यह भी याद रखें कि मसीही, दुष्टात्मा से ग्रसित नहीं पर सताए जा सकते हैं I शैतान तुम्हे डराने ना पाए, और उसे जितना देना है उससे अधिक महत्व ना दें I

दूसरा कदम आत्मिक चँगाई है –

स्मरण शक्ति के चँगाई के लिए प्रार्थना :- यदि आपको भय का आत्मा है, परमेश्वर आपको केवल सताव से छुटकारा नहीं देना चाहता, किन्तु वह उस घटना की याद को भी जब हम डरे थे, चँगाई देना चाहता है I

एक अधिक बिचारणीय गढों की सूची निम्न प्रकार है।

गढ - पहचान और छुटकारे के लिए सूची

कृपया प्रार्थना पूर्वक निम्न सूची में जाएँ जो आपके जीवन का सम्भावित गढा हो सकते हैं, जहाँ उचित हो चिन्हित करें , ताकि (सभा) के बाद में पढाई कर सकें I आपने जीवन के गढों को घुडके (भगाएँ) और यीशु के नाम से स्वतंत्र हो जाएँ I

- मेरे माता/पिता से कमजोर सम्बंध रहे हैं, इसलिए शायद मैं यह समझता हूँ कि पर परमेश्वर मुझसे बहुत प्यार नहीं करते हैं I
- बिगत समयों मे किए पापों को क्षमा करना मेरे लिए कठिन है I
- भूतकाल में चोट खाई और दु:ख झेले, मेरे लिए इससे छुटकांरा पाना कठिन महशूस करता हूँ, कि अंदर ही अंदनर गुस्सा कितना आता है जब तक बात को याद करता हूँ I
- लोगों से सम्बंध बनाना कठिन लगता है, मैं लोगो पर भरोसा नहीं करता I
- मै निराश मे गिर जाता और कभी-कभी आत्मदया मुझ पर हावी हो जाता है I
- मुझमे गलत आदतें और पाप हैं जो मुझे नियंत्रण करता है, मैं रोकना चाहता हूँ, पर सफल नहीं हो पा रहा हूँ
- मेरे लैंगिक जीवन मे समस्या हैं, मैं इस क्षेत्र के पुरानी आदत से छुटकारा नहीं पा सका हूँ I
- मुझमे अब्यवहारिकता है :- जैसे – अधिक खाना , जुआ खेलना, अति रंजन करना, अधिक सोना, धूम्रपान करना, गर्द पीना I
- कभी –कभी लगता है कि रुपयों कि चाहत या संसारिक वस्तुए प्राप्त करने कि आदत नियंत्रण करता है I
- कभी-कभी मै गुस्से को नियंत्रण नहीं करत पातात हूँ अन्दर ही अन्दर आग बबूला होकर नियंत्रण से पूर्व भडक जाता है I
- मुझे चिंता करने कि समस्या है, कभी – कभी तो मुझे ही पता नहीं होता कि मै किस लिए चिंता कर रहा हूँ I
- मेरे जीवन मे कई प्रकार के भय हैं, अंधेरे का भय, अकेले , बीमारी, मृत्यु और दुर्मिति का भय I
- मेरे मन में आत्महत्या का विचार आता है I
- प्रार्थना व बाईबल अध्ययन मे एकाग्रता कठिन होता है, मैं थका महशूस करता हूँ I
- पिछले कामों मे मैं रहस्यमय (Occult) पापों में लिप्त था I
- भुतकाल मे मुो मूर्ति को समर्पित किया गया था I
- आज भी हमारे घरों मे मूर्तियों कि वस्तुयें एवं रहस्यमय पापों की चीजे हैं I
- मेरे माँ /पिता मुझे भगवान को समर्पित किए थे I
- मेरे माँ/पिता या पालक गुप्त सभा के सदस्य के रुप मे सरीक है I
- मेरे माँ / पिता का तलाक हुआ है I
- मेरे दादा/दादी मॉ-पिता के जीवन में ब्याभिचार का इतिहास है I
- मेरे मा/पिता दादा/दादी – परदादा /पतदादी मे से किसी ने कत्ल (गुनाह) किया था I

- मेरे परिवार खानदान में जातिवाद का दृष्टिकोण है ।
- मैंने अपने शरीर पर छेद अथवा गोदना गुदवाए है ।
- मेरा नाम स्थानीय मूर्ति या देवता के नाम पर रखा गया है ।
- मैं सामान्यत: तैरने का सपना देखता हूँ ।
- मैं बहुधा सोने मे खात हूँ ।
- मैं बहुधा स्वप्न में अपने दम्पति के अलावा दूसरों से शारीकि सम्बन्ध बानात हूँ ।

क्षतिज अनुभवें :- (खोने के दु:ख का अनुभव)

अपने जीवन के किस चरण में ?

निम्न पाँच श्रेणी में इसको वर्णन करें :-

▪ जन्म
▪ बचपन
▪ किशोरावस्था
▪ जवानी
▪ पूर्व जवानी

	किस श्रेणी में ?
	प्रिय जन के मृत्यु पर
	लैंगिक दुर्व्यवहार :
	तलाक :
	गम्भीर शारीरिक पीडा :
	क्षतिज दुर्घटना :
	अति दण्ड :
	अन्याय :
	गर्भ में पालक द्वारा तिरस्कार :
	मेरे माँ/पिता गर्भपात कि कोशिष की :
	क्षतिज पैदाईश :
	शल्य चिकित्सा या अन्य जटिलताएँ :
	मेरे माँ /पिता विपरीत लिंग को चाहते थे :

बहुधा जीवन में प्रभुत्व और प्रकट होने कि दृष्टिकोन और अनुभव

असंयम :	
वेदना :	
आक्रमक:	
कडवाहट :	
चिन्ता :	
आत्मदया:	

ईर्ष्या :	
जलन :	
प्रतियोगिता :	
भ्रम ग्लानि :	
निराशा :	
हार :	
परेशानी :	
हत्या करने की इच्छा :	
मरने की ईच्छा :	
अनाज्ञाकारिता :	
नाश :	
आत्मविश्वास की कमी :	
स्वर्थी :	
हीनता :	
दुर्भिति:	
मानसिक हीनता :	
हठ (दुराग्रह) :	
थकान :	
गैरजिम्मेदारी :	
हताशा :	
महत्वाकांक्षा :	
लालच :	
तीब्रकृया :	
मानसिक मूर्तिपूजक :	
धार्मिक अंधविश्वास:	
नकारात्मक या शैतानी सोंच :	
असंयम :	
मानवीय सोंच :	
असमंजस:	
उदासीन:	
अपकर्ष (घटियापन):	
असुरक्षा:	
अनिद्रारोग :	
बुध्दिवाद:	
उतेजन :	
मानसिक स्वाश्यय समस्या:	
श्रापित:	
डर:	
मृत्यु का भय:	
हताशा:	

घृणा:	
प्रताडना:	
घमण्ड:	
निष्कृयता:	
सताव:	
चिंतन	
तिरष्कार:	
आध्यात्मिकता:	
तीव्रप्रतिक्रया :	
अकेलापन:	
अंधविश्वास:	
निद्रामय:	
दु:खित:	
प्रतिशोध:	
हिंसा:	
स्वेच्छा:	
अन्य:	

बिनाशकारी आदतें जो आपको नियंत्रित करत है:

शराब का दुरोपयोग:	
गर्द:	
जुआ खेलना:	
तुनक मिजाज:	
काँपना:	
चोरी करना:	
मतवालापन:	
अधिक खाना:	
लाँटरी (सटटा) :	
झूठे :	
दसवाँश न देना :	
बहस करने की मनोवृति :	
स्वयं का अंगछेद :	
संसारिक संगीत (राँक, भारी मेटल, डिस्को, रैप, सीनेमा, गीतें) :	

लैंगिक क्षेत्र जिसमें आप समस्या का सामना करते है

पाशविकता :	
गर्भपात:	
विकृति:	
द्विलैंगिकता:	

संगीतमय :	
ब्याभिचार:	
समलैंगिकता:	
कौटुम्भिक ब्याभिचार:	
हस्तमैथुन:	
अशलित चित्र:	
अन्य:	

झूठी धर्मिक विचार जिससे आप जुडे थे

काथलिक सिध्दाँत परायण:	
उदारवाद:	
निरूपण धार्मिक :	
ठहरना या गुप्त सभा का सदस्य:	
भौतिकता:	
मानवता:	
नयायुग:	
गैर मसीही मनोविज्ञान:	
गैरमसीही तर्क विज्ञान :	
जादू टोना:	
अन्य:	

धार्मिक संम्प्रदाय जिससे आप जुडे है :-

बुध्द धर्म :	
मसीही विज्ञान :	
हरे कृष्णा :	
धर्म विधि:	
मुसलमान:	
नास्तिकता:	
नया युग :	
यहोवा साक्षी :	
और अन्य का अर्पण (बलिदान) :	
अन्य पथ :	

जीवन मे प्रवेश के गुप्त पाप द्वार :-

मनन या कुछ इसी प्रकार का चिन्तन :	
ज्योतिषविदया (सितारों की सहायता से भविष्य बताना)	
ताश का पत्ता (Tarot Card)	
प्रयोग भविष्य बताने में किया जाता है	
चुम्बकीय गुणों का सम्मति :	

ब्यक्ति जो आत्माओं के साथ बात-चीत करे	
हस्तकला:	
शकून विचारना (जादू के सहयोग से भविष्य कहना, भविष्य देखना)	
विमोहन (आत्मा में बेठना)	
डरावनी सिनेमा के साथ आत्माओ का समावेश (शगून, अपशकून, अपदूत, भगाना)	
जादु टोना (जादू या डायन का कर्य करना)	
जादू (सम्मोहित काल का प्रयोग)	
रहस्यवाद अनुभव:	
रेखा चित्रावली : (हस्तलिखित और विश्लेषण) :	
सम्मोहन (बाहरी प्रभाव, नियंत्रण मे गहरी निद्रावस्था मे जान)	
विश्वास चँगाई :	
एक्यूपंवर : (चिन की वैदयकीय प्रणाली सुईयों को चुभाना) रहस्यमय पापों के किताब को पढना :	
अन्य प्रकार के शक्ति का चँगाई के लिए प्रयोग (जैसे रेकी, विपशयना इत्यादि)	
स्फटिक (क्रस्टिल गेंद/चमत्कार)	
दिशा निर्देशन :	
राशिफल (ग्रहों की स्थति जानना और जीवन के भविष्य को बताना)	
विडियो या अन्य खेल	
रहस्यमय चरित्र वाला खेल हो :	
दूर भाषी (एक तांत्रिक कृया दुसरो पर जो दूर में है थोपना :	
आध्यात्मिक (धार्मिक) विवाह पारिवारिक मूर्ति या देव देवता के साथ करना :	
महाद्वीप चिंतन (सामना या अलौकिक चिंतन से आगे):	
दोलन (किसी वजन को हिलाकर जो संप्रभावित निर्णय के लिए सलाह	
डे जा यू (De Ja U) नया हल का अनुभव, यदि पहले प्रकत हूआ होत तो) :	
शैतान पूजा, आत्मा की पूजा का अधिवेशन (------------------)	
ताबीज का प्रयोग या संभाल कर रखना (जैसे पहला प्राप्ति या दिखान के लिए फैशन के लिए रखना) :	
पाँच ज्ञानेन्द्रियों के बाहर का अनुभव करना (ESP) युध्द कौशल (जैसे कराटे) :	
योगा (शारीरिक व मानसिक अभ्यास के माध्यम से भला चंगा रहने की कोशिष का हिन्दु पध्दति)	
कोई अन्य :	

धार्मिक त्यौहार में शामिल होना जैसे :-

होली	
दीपावली	
दशहरा इत्यादि :	
पानी के त्योहार में शामिल होना :	
बुध्द धर्म के त्योहार :	
पवित्र दिन मानना सम्मान करना ३१ अंक्टूबर की शाम को पवित्र संध्या , सर्व संत दिन) :	
शैतानी रीति रिवाज :	
मृत्आमार्थ प्रार्थना करना :	

रँगरेलियाँ , अन्य :	

अपने अन्दर अलौकिक क्षमता का विकाश करने जैसा :-

आत्माओं का दर्शन (अदृश्य चीजों को देखने जैसा अनुभव):	
जादूगरी (अलौकिक शक्ति की घटनाओं को प्रमाणित करना) :	
शारीरिक अनुभव से आगे (Astral) यात्रा :	
शकुन विचारना (भवष्यि कथन, भवष्यि दर्शन, प्रेरणा या जादू) :	
सम्मोहन (ऐसा मोहित करना की स्वयं का नहीं वरन बाहरी शक्ति के अनुसार कार्य करना) :	
वस्तु को चलाने या चलाने की शक्ति :	
उठाना (शरीर को हवा मे दैवीय रूप से उठाने की शक्ति) :	
अन्य :	

- क्या दूत गण शैतान है, या ऐसी जानी पहचानी आत्मा आपके परिवार से जुडा है
- अपका नाम झूठे ईश्वर के नाम से जुछा है या पीडियो की आत्माए,
- क्या आपमे कभी शैतानी प्रकटीकरण हुआ है ?
- क्या आप कभी रक्तपात पूजा या लहू बहाने की वाचा को बांधा है ?
- क्या आपके वंश में कोई श्राप कृयाशील है ?
- क्या आप और गैर मसीही विश्वास के परंपरा में शामिल हिते हुए आए हैं ।
- क्या आपके परिवार में शैतानी नमूना है ? जैसे – कलंगी, आदर्श वाक्य (ऊँ ऊँ नम: शिवाय, श्री समर्थ इत्यादी) ?
- क्या आपको कभी झूठे भविष्यवाणी मिली या पाया था ?
- क्या आप कभी झूठे सिध्दाँत या अपधर्म में संलग्न थे ? (एक ब्यक्तिवाद, केवल यीशु, संस्कारवादी, बपतिस्मा से नया जन्म मण्डली)

उपरोक्त बिन्दुओं मे जो बातें नहीं लिखी हैं जो आपके जीवन की समस्या है :-
——
————-

छुटकारा की प्रार्थना :

भाग १ पश्चाताप :

प्रिय प्रभु परमेश्वर , मैं यीशु मसीह हमारा प्रभु और ऊध्दारकर्ता क नाम से आता हुं । जिसने अपना बहुमूल्य रक्त कलवरी के क्रूस पर मेरे उध्दार और पाप क्षमा के लिए बहाया । प्रिय प्रभु आज, महशूस किया, और विशेषकर निम्न पापों के लिए पश्चाताप करता हुँ : (उन विशेष पापों को चिहित करें और प्रत्येक पापों के लिए एक एक करके पश्चाताप करें) प्रभु आपके वचन के प्रतिज्ञा के लिए मैं धन्यवाद करता हुँ । जैसे मैं अपने पापो को मान लेता हूँ । तू मेरे पापों को क्षमा करना में विश्वास योग्य और धर्मी है । और यीशु का लहू मेरे सब पापों से शुद करता है । प्रभू मैं अभी आपके क्षमा को प्राप्त करता हूँ । यीशु मसीह के मूल्यवान लहू से साफ करने के लिए धन्यवाद करता हूँ । यीशू के नाम में प्रार्थना करता हूँ – आमीन ।

भाग -२ त्यागना :

धन्यवाद प्रभु यीशु, तू प्रभु और उध्दारकर्ता है, और मै आपका हो गया ा यीशु के लहू के सामर्थ में यीशु के अधिकार प्राप्त नाम, परमेश्वर का संतान, मैं शैतान के हरेक पकड और संसारिकतापूर्ण मेरे जीवन को, उसके अधीकार मे प्रत्येक पायदान या शत्रु के प्रवेश का तरीका (जिक्र करें, छोडे और पश्चाताप करें) को त्यागता हूँ, यीशु के नाम में - ''आमेन"

भाग -३ पवित्रात्मा का ताजा परिपूर्णता

प्रभु यीशु मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि तू मेरा स्वामी, उध्दारकर्ता, और छुटकारा देनेवाला है, हे प्रभु मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू अपने ताजा पवित्रात्मा से भर दे और शक्ति दे कि मैं तेरे लिए जीऊँ ा पवित्रात्मा आ ा मेरे हृदय को तेरे लिए खोलता हूँ , मुझे भर, अगुवाई कर, और ढाल कर अधिक से अधिक अपने जैसा बना यही मेरी प्रार्थना है ा अमीन ा

सीढी दर सीढी सम्मति के लिए कार्यप्रणाली

एक जायज सम्मति में पहुँचने के लिए तीन चरणों मे इसे बाँट सकते है :

१) ढूढना : सम्मति पानेवाले के साथ मेलजोल कायम कर उसके समस्या के स्वभाव को समझना.

२) पहिचानना : छिपे समस्या के जड को लक्ष्य बनाकर उघाड,

३) समाधान : बाईबिल कि सच्चाई और सिध्दॉत बताया जाएकि ब्यक्ति समस्या पर हावी हो जाए ा

समस्या को ढूढने के पश्चात या जिन मामलों से ब्यक्ति जूझ रहा है, सम्मतिदाता समस्या के पहिचान के चरण कि ओर बढ सकता है ा पहिवान के चरण मे , निम्न कदमरो का पालन करना चाहिए :

- समस्या को पहिचाने – अनुभवों से सम्बन्धित
- समस्या को जॉचे – आदत के आधार पर
- समस्या को प्रकट करें – विचार के आधार पर
- अपूर्ण जरूरत और चाहत को प्रकट करें

इस चरण के अन्त में सलाहकार समस्या के गहराई और अवधारणा के कारणों के जड को स्पस्ट समझने में योग्य होना चाहिए ा **दूसरा** चरण समाधान है जिसम जानना चाहिए वह यहॉ पर फरियादी (परामर्शी) को परिवर्तन के साथ अंतिम सहायता और समस्या पर जीत हासिल करने के लिए, जब वह एक बार निर्णय करता है कि वह समस्या का समाधान चाहता है और सलाह को अपने जीवन में लागू करतया है ा

समाधान चरण में निम्न बातें अनुशरण के लिए आते है :

- ✓ एक नये आत्मनिर्भरता के लिए मसीह पर भरिषा करने को उत्साहित करे ,
- ✓ समस्या को परमेश्वर के वचन और सिध्दॉत से ठीक करें – नये विचारधारा के साथ,
- ✓ दिए गए सलाह को पूरा करने के लिए योजना बनाऍ और उत्साहित करं – नये ब्यवहार को अपनाऍ
- ✓ कैसे ब्यवहार में लाऍ असे सिखाऍ - मन आत्मा के आधीन हो ा

एक स्पस्ट समाधान और निर्णियात्मक ईच्छा नई शुरुआत, स्वतंत्रता और सफलता, जीत हासिल करने के राह पर ला सकता है,

कोई ब्यक्ति जो कई समस्याओं, जटिलताओं और बंधनो में जीवन बिता रहा है उसे कैसे सलाह दें अगले अध्याय में स्पस्टता से वर्णित किया गया है ा

घर :- पालक और किशोरों के बीच के मामले

घर :- मॉ -पिता और किशोरो के बीच का संघर्ष -

भूमिका :- हमारे तेज दोडते अपविदयुत युग मे, बच्चे शीघ्र बढते और अपने जीवन में जल्दी स्वतंत्र होना चाहते हैं, जितना हमारे मॉ-पिता नहीं किए थे । बहुधा मॉ-पिता के लिए अपने बच्चों को बदलते माहौल में छोडना कठिन होता है, परिणाम स्वरुप संघर्ष होता है । ऐसा लगता है कि एक दिन, एक बालक मॉ-पिता के गोद में है और दूसरे दिन पाठशाला जान आरम्भ कर रहा है । मित्रों को घर मे लाना, घर के कार्यो में सहयोग करना, एक अच्छा प्रयि बालक । तब अचानक , घना अंधेरा आता, वह बातें करना शुरु करता, नियमों पर सवाल करता, और तोडना है, कभी –कभी वे रुठते और बाते नही करते । किशोरावस्था आ गया, मॉ-पिता के पकड से बाहर आने को पूर्ण तैयार । संघर्ष कई क्षेत्र मे हो सकते हैं । उनके मित्र (उनमे से कितनो को हम न स्वीकार करें) सजावट, घर के आस पास मण्डराना, भत्ता (जेब खर्च) एक दूपहिया वाहन, पाठशाला और गृहकार्य और अनुशासन ये तो कुछ नाम हैं, वार्तालाप में रुकावट का विकाश, मॉ-पिता अपने बच्चों से ऐसे बिषय पर बातें करना विशेषकर लैंगिक और जन्म के क्षेत्र में बिलम्ब करते है । मॉ-पिता के द्वारा नियंत्रण बढा दिया जाता है, और किशोरो कि स्वतंत्रता का अधिकार भी कडा होता जाता है, फासला बढता है , वे विरोधी होते है, लाडाई आगे बढती है ।

बलवा, निरंकुश , अनुशासनहीनता, शनकी और संघर्ष खुशहाल घर मं सम्बंधो को खराब करता है । किन्तु परमेश्वर मे रुचित रखता है , आपकी शादी, आपके संताने । वह भी हमारे लक्ष्य, आदर्श को प्रकट करता है । वह हमारी सहायता करना चाहता है …….. क्या आपने परमेश्वर कि ईच्छा जानने कि कोशिष की ? क्या आपने बच्चों को अपने घुटनों मे आकर उसके हवाले किा ? क्या आप उन्हे अपने साथ रखते पारिवारिक चिंतन, प्रार्थना में समय को रूचिकर बनाते है ? उत्तर आपके जीवन और हृदय को मसीह यीशु को समर्पण करने में है ताकि परिवार के सब लोग यीशु से प्यार करें और उसके वचन को जाने ।

सम्मति नियम (कला) :-

बच्चो को सलाह देने मे माँ-पिता उलझ पडते है, अपने घरों कमरो को आत्मिकता के साथ ठीक ठाक रखने के लिए आग्रह करें ।

१. उन्हे सलाह दें कि घर में परमेश्वर की शान्ति बनी रहे, उनके हृदयों मे प्रथम परमेश्वर कि शांति बनी रहनी चाहिए यह यीशु मसीह के साथ ब्यक्तिगत सम्बंध बनाने से आता है ।

२. मॉ-पिता को यहोशू के समान दृढनिश्चय लेने कि लिए जिसने कहा :" …. आज चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोग ….. परन्तु मैं अपने घराने समेत यहोवा की ही उपासना करेंगे" (यहोशू – २४.१५) वे निश्चय करें कि उनका घर मसीह को उठानेवाला वातावरण हो ।

३. ईश्वरीय स्रोतों पर निर्भर रहने के लिए सलाह दें जो प्रार्थना द्वारा उपलब्ध होता है, वे परमेश्वर के साथ वाचा मे रहे जो उसने देनेकि प्रतिज्ञा की है (याकूब – १.५) और अपने बच्चो के उचित आत्मिक विकाश के लिए सहायता की दावा करें । (फिली – ४.६) वे अपने बच्चों के साथ अपने लिए भी प्रार्थना करना सीखें ।

४. मॉ-पिता को परमेश्वर के वचन के ईर्द -गिर्द पारिवाकि जीवन को बनाने के लिए प्रयास करें उनके जीवन के नजरिए को समझते हुए प्रत्येक सदस्य को सहायता करें, और उसके लिए भी प्रेरित करें :-

अ) प्रत्येक अपने उध्दार के लिए प्रयास करे ,

ब) परिवार कि कृयाविधी कलीसिया या संगति में बाईबिल की शिक्षा को केंन्द्रित बाना कर वातावरण बनाएँ,

स) बच्चों के आत्कि शंकाओ को दूर करने में संयम रखना चाहिए ।

५. मॉ-पिता के अनुशासन के स्थापित करे, जो बार-बार मानने योग्य और पूरा करने योग्य हो (बहुत ऊँचा न पूरा करने योग्य नही हो)

६. मॉ-पिता के उदाहरण और स्थिरता बच्चों पर कोमल असर डालता है, एक अच्छा खुशहाल विवाह, जवानो के जीवन को अनुशासित और निगरानी से अधिक बनाने में लगता है । एक स्थिर प्रदर्शन मसीही तथ्यों का जैसे प्रेम, संयम, समझ –बूझ, प्रोत्साहन और भरोषा किशोर मे तनावग्रस्त और बदलती मामहौल में लंगर उपलब्ध कराता हूँ । अनुभव और अनुकरण के विश्वास से मॉ-पिता कभी भी न डगमगाएँ । विशेषकर घर में जिएँ जो प्रचार करते" की जीवन शैली को अपनाएँ ।

७. किशोर के संग मधुर वार्तालाप संघर्ष को दूर करने मे बडा भूमिका अदा करता है । इसका अर्थ केवल मतलब का ही बातचीत नहीं, किन्तु कीमती समय उनके साथ ब्यतीत करें । ऐसा करना ब्यक्तिगत ध्यान रखना सकारात्मक , आत्मसमान

और परिवार की मजबूत किले बन्दी बनाती है । शारीरिक प्रेम प्रकट करने में न हिचकिचाएँ, पिता का अलिंगन एवं मातृत्व चुम्बन बच्चों के जीवन मे स्वीकार और प्रेम करते है जैसी बातों को सहयोग प्रदान करती है ।

वचनों का प्रयोग हो :-

लडके को उसी मार्ग की शिक्षा दे, जिसमे उसको चलना चाहिए, और वह बुढापे में भी उससे नही हटेगा (नीति-२२:६) हे बच्चें वालो अपने बालको को तंग न करो, ऐसा न हो को उसका साहस टूट जाए" (कुलु – ३:२१) '' इन बातों को जिसकी आज्ञा मै तुमको सुनाता हूँ , चित लगाकर सुन, कि जब तू वह काम करे जो तरे यहोवा की दृष्टि मे ठिक और भला है, तब तेरा और तेरे बाद तेरे वंश का भी सदा भला रहे"(ब्यवश्या-१२:२८)

हे बालको, प्रभु में अपने पिता के आज्ञाकारी बनों, क्योंकि यह उचित है, अपनी माता पिता का आदर कर (यह पहली आज्ञा है जिसके साथ अपनी प्रतिज्ञा भी है) कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे, हेबाल-बच्चे वालों अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु कि शिक्षा, और चेतावनी देते हुए उनका पालन पोषण करो '' (इफि-६:१-४) धर्मी जो खराई से चलती है, उसके पिछे उसके बाल-बच्चे धन्य होते है" (नीति-२०.७)

घर :- बच्चो का पालन-पोषण और अनुशासित करना :-

भूमिका :-

बच्चो को उदाहरण द्वारा, प्रशिक्षण, और सिखाने के लिए बाईबिल में एक संपूर्ण बिषय है । ब्यवश्थाविवरण के किताब में बच्चो को ईश्वरीय मार्गमें सिखाने के बारे में सुस्पष्ट लिखा गया है । और ये आज्ञाएँ जो आज मै तुझे सुनाता हूँ, वे तेरे मन में बनी रहे, और तू इसे अपने बच्चो को समझाकर सिखाना करना, और घर बैठे, मार्ग में चलते, लेटते, उठते इनकी चर्चा किया करना (ब्यवश्या ५ ६:६-७)

नीतिवचन की किताब परमेश्वर के संतानो के लिए बुध्दि का संग्रह है, परिवार और बच्चो का लालन – पालन के विश्वास में एक मजबूत अवधारणा है । लड़के को उसी मार्ग की शिक्षा दें, जिसमें उसको चलना चाहिए, और वह बुढापे में भी उससे नहीं हटेगा (नीती-२२:६) तिमोथी को बचपन में ही बचन कि शिक्षा दी गई थी, जो परमेश्वर कि आज्ञा और सहूदियों कि परंम्परा के अनुसार है । और बचपन से पवित्रशास्त्र तेरा जान हुआ है जो तुझे मसीह पर विष्वास करने से उध्दार प्राप्त करने के लिए बुध्दिमान बना सकता है । (तिमाथी – ३:१५) पौलुस लगातार बच्चों को प्रशिक्षण और अनुशासन सिखने की बात वाही है । निरंतर और लगातार आवश्यकता पर जोर दिया हौ मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है, जो पहले तरी नानी, लोईस और तेरी माता यूनीके में थी, और मुझे निश्चय है कि तुममे भी है (तिमोती -१:५) बाईबिल माता पिता को निर्देश दिया है कि वे अपने बच्चों को परमेश्ववर के वचन का प्रशिक्षण और अनुशासन में परमेश्वर को सम्मान करने के अनुशासन को सिखाने की जिम्मेदारी है ।

घर में खुशी न होने का मुख्य कारण है कि हमने परमेश्वर को महत्व नही दिया, हमने परिवार के प्रति उसकी योाजनाओं का आज्ञाओं को जानने से इंकार किया । परिवार के सदस्यों ने भी बाइबिल में बताए जिम्मेदारी को स्वीकार करने से इंकार किया । यह स्पष्ट है कि आज्ञाकरिता स्वभाव ही से नहीं आती है । इसे पढाना और सिखाना चाहिए । बच्चो को उतना ही आज्ञाकारिता सिखाना चाहिए जितना कि वे कर सकते है एवं पढ लिख सकते हैं ।

सम्मती के नियम का पारलन हो :-

१. माता पिता को प्रोत्साहन करें कि वे ऐसा घर बनाएँ जहाँ ठोस आत्मिक और मानसिक विकाश की प्रेरणा मिले, इसमें निम्न बातें आती है :-

A - एक स्थिर, शांतिमय और प्ररणामयी घर ,

B - परिवार केंद्रित जहाँ भाई चारा का माहौल हो, आपसी आदर और प्रोत्साहन । एक ऐसा घर जहाँ घर के लोग बातों को एक साथ, विशेषकर एक साथ रखना चाहिए ।

C - एक ईश्वर केंद्रित घर जहाँ प्रत्येक घर जहाँ प्रत्येक को अधिकार है कि वे मसीह में परमेश्वर के प्रेम का प्रत्सुतर दें । और अत्मिक परिपेक्ष में कैसे जीना चाहिए के बारे में सिखाना । जहाँ संतुलिन किन्तु पवित्र भय और आदर परमेश्वर कास भी हो । देंखे

नीती – २२:६ (यह एक उचित समय होगा कि हम पालकों से पूछ सकें कि वह अपने जीवन में यीशु मसीह को प्रभु और उध्दारकर्ता के रुप मं ग्रहण किया है ?

D - एक कलीसिया या संगति का घर – बच्चो को पालना आसान होता है, जब उनका जीवन और उनके परिवार के लोग, और मित्र कलीसिया केंद्रित या संगति के कार्यक्रम में मग्न हों ।

E - मॉ-पिता को चाहिए कि अपने बच्चों को उनके मस्तिस्क को उदाहरण और अभ्यास के वचनो से रुबरु कराएँ । यदि मॉ-पिता पढने वाले हैं बच्चे भी पढने वाले ही होंगे । अच्छे किताब और बच्चों के स्तर का पत्रिका घर मं लाकर सिखाना चाहिए, संगीत अध्याय, रुचि और खेलकूद जब बच्चे स्कूल के प्रथम वर्ष में प्रवेश करते हैं तभी से सिखाया जाना चाहिए । जब बच्चे किशोरावस्थाा में पहुँचते हैं, यह एक अच्छा सुरक्षा कवच का काम देगा ।

२. बच्चों का अधिकार है कि उन्हे प्यार और ग्रहण किया जाए,

A - बच्चों को अधिकर जताने का भी अधिकर दें, जो स्वाभिमान, सुरक्षा और विशिष्टता के चेतावनी का, विकाश हो ।

B - बच्चो को अधिकार है कि उनके मॉ-पिता खास लगाव और सम्मान का प्रदर्शन प्रत्येक पर देख सकें प्रौढता का उदाहरण , मसीही ब्यवगहारिकता जरूरी है कि मॉ-पिता तनाव और अन्य समस्या का कैसे निराकरण करते है ।

C - बच्चो को लगातार और पक्षपात के बिना सजा और सुधार करना जरूरी है ।

- ❖ बच्चो से आवश्यकता से अधिक उम्मीद न करें जितना कि वह नहीं दे सकता ।
- ❖ सजा या दण्ड देते समय पक्षपात नही के बराबर हो । ज्यादा माँग और शारीरिक दण्ड तत्काल विरोध और बलवाई कि ओर अग्रसर करता है । पालको को लचीला होना और नियम का कडाई से पालन की माँग करना चाहिए ,
- ❖ गुस्से में दण्ड न दें या जब आपकी मानसिक दशा ठीक न हो ।
- ❖ हमेशा उसे बताएँ कि क्यों उसे दण्ड दिया गया ताकि वह समझे , बाद में उसे सहलाएँ , प्यार और ग्रहण भी करें ।

३. मॉ-पिता को प्रोत्साहित करें कि बातचीत का रास्ता हर हाल में सबके सामने खुला हो :

A - मॉ-पिता को समय निकाल कर एक स्रोता भी बनना चाहिए, और प्रोत्साहन पूर्ण वातावरण के लिए ओ आना चाहिए । लैंगिक बिषय, गर्द , नशा , अच्छे दोस्ती का विकाश, और उज्जवल भविष्य आदि पर खुल कर बातचीत करना चाहिए ।

B - मॉता-पिता ईमानदार हो, बच्चों को उनके स्तर और विश्वास के बिषय प्रश्न पूछने दें । ऐसे मौके पर अपनी रक्षा कने के बिषय में समझा सकते हैं । इसके द्वारा आपका बच्चा स्वयं अपने विश्वास और स्तर तथा मूल्यों को तैयार कर सकता है । आप उन्हे जीने के लिए लक्ष्य निर्धारित करने और चुनौती के लिए सहायता प्रदान कर सकते हैं ।

वचनों से परामर्श लें :-

'' धर्मी जो खराई से चलता है, उसके पिछे उसके बाल बच्चे धन्य होते है । '' (नीति-२०:७) '' हे बच्चे वालों अपने बालकों को तंग न करो, न हो कि उनका साहस टुट जाए '' (कुलुसी – ३:२१)

हे मेरे पुत्र यहोवा कि शिक्षा से मुंह न मोडना , अब जब वह तुझे डॉटें , तब तू बुरा मत मानना, क्योंकि यहोवा जिससे प्रेम करता है उसको डॉटता है । जैसे कि बाप उस बेटे को जिसे वह अधिक चाहता है । (नीति ३/११-१२)

हे बालको प्रभु में अपने मॉ-पिता के आज्ञाकारी बनों क्योंकि यह उचित है , अपने मॉता-पिता का आद करना (यही पहली आज्ञा है जिसके साथ प्रतिज्ञा भी है) कि तेरा भला हो और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे, हे बच्चे वालों अपने बच्चों को रिस न दिलाओ, परन्तु प्रभु कि शिक्षा और चेतावनी देते हुढ उनका पालन पोषण करों '' (इफि-४:१-४)

अन्य पद :- नीति – ३१:१०:२६-२८ , नीति -३०:११, ब्यवस्था – १२:२८ ।

घर :- मॉता-पिता को मसीह में जीतना

भूमिका :-

पौलुस तिमुथी को सम्मति देते हुए लिखता है कि कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए, पर वचन और चाल-चलन और प्रेम और विश्वास और पवित्रता में विश्वासियों के लिए आदर्श बन .... अपनी और अपने उपदेश कि चौकसी रख ा इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा, तो तू अपने और अपने सुनने वालों के लिए भी उध्दार का कारण होगा ा (१ तिमुथी - ४:१२,१६) यदयापि, यह सलाह करीब २ हजार साल पहले दिया गया था, यह आज भी जवान ब्यक्तियों कि लिए जिन्होने यीशु को ग्रहण किया है ा और अपने माता-पिता के आत्मिक चिन्ता के बिषय में भलाई चाहते है ंकारगर है ा हाल ही में एक पासबान ने एक किशोर को जो नया जन्म पाया था को साक्षी कैसे देना चाहिए के बिषय जानना चाहा, उसने उसे सीधे घर जाने को कहा जाकर अपने कमरें मे, अपने बिस्तर को अपना पालक बना ले ा और मुस्कुलाएँ दूसरे लोगो की सुने और तब तक इन्तजार करें जब तक कि स्वयं के माता-पिता यह न कहें कि उसका जीवन यीशु को ग्रहण करने के बाद बदल गया ा

सर्वप्रथम , मेरा सुझाव है कि आप पालकों के साथ धीरज से काम लें ा वे चाहते है कि यीशु के साथ आपका यह अनुभव केवल पानी र्वे बुलबुले समान खत्म हो जाने वाला नहीं है दूसरी बात मसीह आपमे इतना घुल मिल जाए कि आपमें वे स्वयं परिवर्तन को देखें, तीसरी बात- उनके लिए प्रार्थना करें कि वे तुम्हे ऐसा महशूस होगा कि वे कानो को बन्द किये है ा किन्तु वे जितना तुम सोंचते हो उससे अधिक सुनते हैं ा यह एक ही हप्ते में नही होता, महिना और कभी कभी सालों तक किन्तु परमेश्वर का आत्मा हमेशा कार्यरत रहता हैं ा याद रखें, बाईबिल बताती है हम भले काम करने में साहस न छोडे क्योंकि यदि हम ढिले न हो तो, ठिक समय पर कतनी काटेंगे '' (गलाती – ६:९) और आगे बोलने का अवसर देखें फिर भी नम्रता के साथ, जो आपसे वरिष्ठ है उन पर अपने विश्वास को जोर जबरदस्ती से न थोपें ा

सम्मति के नियम :-

१. गवाही के बिषय में सम्मति ढूढने वाले जवानो को बधाई दें, यह आत्मिक चिन्ता औसत से अधिक जोश की निशानी हैं ा

२. निम्न बातों पर जोर दें :-

१ तिमुथी – की पत्री ४:१२, १६: का उदाहरण अच्छा वचन है ा घर मे यह आदर के साथ प्रस्तुत करने का उत्तम मार्ग है ा आज्ञाकारिता और दया के साथ प्रेम करना ा एक पुरानी कहावत को याद रखें – जो आप करते हैं इतना आवाज देता है कि जो आप कहते हैं वह सुनाई नहीं देती ''

मसीही जीवन को पक्का करने का निश्चय करें, एक दिन उपर तो दूसरे दिन नीचे न हो ा

३. उनसे आग्रह करें कि परमेश्वर के वचन का अध्ययन, प्रार्थना (अपने मॉ-पिता का नाम सबसे उपर रख सकते हैं) से अपने आत्मिक जीवन के विकाश के लिए पाठशाला में एक अच्छा छात्र बनकर, और मसीही कार्यक्रमें मे कलीसिया के अन्य जवान लोगों के साथ भाग लेकर विकसित करने का दृष्टिकोण होना चाहिए ा करनें मे ध्यान दें, (प्रार्थना में अपने माता-पिता के नामो को सूची मे सबसे उपर रख सकता है) अपने पाठशाला मे एक छात्र बनकर, और मसीह कार्यक्रमो मे सहभागी होकर जो कलीसिया में या दल में है ा

४. गवाही देने की प्रत्येक अवसर के लिए लगातार प्रार्थना करते रहने के लिए सलाह दें ा इसके लिए आप व्यक्तिगत तौर पर या परिवार के साथ विशेष मसीही समारोह मे या सुसमाचारीय सभा मे बुलाकर भी कर सकते है ा

५. जवानों के साथ प्रार्थना करे पौलुस तिमु थियुस को सलाह देते है कि अपने जीवन मे वह वास्तविक रहे ा शायद बात उसके लिए अच्छा न लगे, किंतु अनुभव बताता है कि यह सर्वोतम है, यदि कोई रास्ता जाने को नही है

बॉटने के लिए वचनें

''कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाये, पर वचन और चाल चलन, और प्रेम और विश्वास और पवित्रता में विश्वासियों के लिए आदर्श बन जा ा जब तक मैं न आऊ, तब तक पढने और उपदेश करने में और सिखाने में तौलीन रह ा उस वरदान के प्रति जो तुझ में हैं, और भविष्यवाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला है, निश्चित मत रह ा इन बातों को सोंचते रह और उन्ही मे अपना ध्यान लगाये रह, ताकि तेरी उन्नती सब पर प्रकट हो ा अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख ा इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने और अपने सुनने वालों कके लिए भी उध्दार का कारण होगा" (१ तिमु थियुस ४:१२:१६)

किसी भी बात की चिंता मत करो परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सन्मुख उपस्थित किए जाए । ताकि परमेश्वर की शांति, जो समझ से परे है तुम्हारे हृदयों और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु मे सुरक्षित रखेगी " फिलिपी ४:६-७, '' परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे, और यरुशलेम और सारे यहूदिया और सामारिया मे और पृथी की छोर तक मेरे गवाह होगे" प्रेरित १:८ '' इसलिए परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो, कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको" इफि ६:१३

किशोरों के साथ सम्माति

किशोरों को सम्मति देना दुसरो को देने से कठिन है । मूल अवधारणा और तकनीक सभी आयु वर्ग के लिए सम्मति एक समान है । फिर भी, किशोरों के साथ काम करने के लिए विशेषता प्राप्त करना चाहिए जबकि छोटे बच्चो और बडे लोगो के लिए उतना आवश्यक नही होगी ।

१. <u>किशोरों को समझना</u>

''एक नवजवान सलाहाकर को किशोरों को समझने से मधुर बम्बन्ध और भाइचारे की रिश्ते को कायम करता है " यह किशोर को उसके व्यवहार में किसी खास सूचना के बगैर सलाहकार या विरोध के ग्रहण करना आसान होता है । किशोर भी जब एक जवान उसे समझता है तो अनुभव करता है और स्वभाविक तौर से प्रत्युतर देकर खुले तौर से और आदर के साथ ग्रहण करता है ।
एक किशोर '

i) एक व्यक्ति जो बदलाव में बढ रहा है ।
ii) एक ऐसा जिसका जीवन शैली पारदर्शक है ।
iii) जिम्मेदारियों का गठ्ठा ।
iv) आदर्श के आखों से देखना ।
v) सक्षम किन्तु अनुभव की कमी ।
vi) एक ऐसा जो शीघ्रता से शारीरिक परिपक्वता और बुध्दि मे बढता है ।
vii) ऐसा जन जो चुनौती का प्रत्यत्तर दे ।
viii) जों जानने की ललक रखता है ।
ix) जो कार्यक्रम कें का चाहत रखता है ।
x) जो अपने संयम को प्रयोग करता है तब उसे आनन्द मिले ऐसी आवश्यकता वाला जन
xi) वह जिसे परमेश्वर चाहिए ।

२. <u>किशोरों की इच्छाएँ :</u>

एक सलाहकार स्वभाविक बातों की नजरअंदाज न करें, परमेश्वर प्रदत रुचि । जब वह इच्छुक है, वह सीखने को तैयार है । इसलिए, अपने आपको व्यवस्थित करें कि उसके रुचि के आसपास से सम्मति दें ।

i) जो मौज मस्ती मे रुचि रखते ।
ii) जो मित्रभाव में लगाव रखते ।
iii) जो माता-पिता मे रुचि रखता ।
iv) जो शिक्षा मे रुचि रखता
v) जो व्यक्तित्व विकास मे इच्छुक है ।
vi) जो साज सजा (दिखावा) में रुचि रखता ।
vii) जो शिष्टाचार मे रुचि रखता ।
viii) जो वार्तालाप की शैली (कला) का इच्छुक ।
ix) जो लडका / लडकियों से मिलना पसंद करे ।

x) विवाह

xi) अत्मिक मामलों मे ।

३. **<u>समवस्यस्क की दशाओ में किशोरों को प्रभावित करता है ।</u>**

समवस्यक के एक साथ रहने से बहुत सारी उग्र और शीर्घ बदलाव जवानों को आमने – सामने नई समस्याओं को और निर्णय को लेकर आया ।

i) झुण्ड का अगुवा होने के बजाए व्यक्तिगत जीवन का अगुवा होना अधिक कठिन है ।

ii) तकनीकी और राजनैतिक फैलाव और परिवर्तन के कारण स्कूल पश्चात शिक्षा की ओर चिंतातुर करता है ।

iii) अधिक आय वाले लोगों के साथ, हमारे शहरो के परिवार, में अपनी पहचान बनाने के लिए कठिनाईयों का सामना करना पडता है ।

iv) महिलाओं की बदलती भूमिका ने लडकियों और लडको के जीवन की संकटकालीन मामलों को उजागर किया है ।

v) आज के किशोर बहुधा व्यवसायिक चुनाव का सामना करते है । क्योंकि उनके पालको का ज्ञान और अनुभव सीमित होता है

vi) जीवन के हर क्षेत्र में भौतिकतावादी आत्मा ने घुसपैठ किया है, सबसे दुर जनता का छाप लगा देता है । वे ऐसे वातावरण मे पलते बढते है जहा ईश्वर को भुला दिया गया है ।

४. **<u>किशोरों की सम्मति के लिए मूल मार्गदर्शन</u>**

किशोर बदलाव के दौर मे जी रहे है - वह अभी या कभी नही ।

a) उनके भरोषे को जीते – बोलने के अधिकार पाए ।

b) किशोरों के दृष्टिकोण समस्याओं को पहचाने, आप अपनी पौढ नजरों से नही ।

c) यहां समस्या का समाधान होना चाहिए न कि उपदेश देना ।

d) बहुत अधिक सलाह देने से बचे जब तक आप यह न समझ ले कि आप किशोर समस्या और उसके स्थिति समझ लिया है ।

e) परिपक्ता को समझे और प्रौढ के समान व्यवहार करें बच्चो के समान नही ।

f) जवानों को चुनौती दे ।

g) किशोरों को सहायता करें कि वे अपने आप को ग्रहण करें ।

h) हमेशा यह बात ध्यान में रहे कि उसका परिवार भी उन्हे धार्मिक पार्श्वभूमि मे पोषण कर रहे है ।

i) समकक्ष व्यक्तियों दलों के दबाव को अनदेखा न करे । एक (गैंग) दल किशोरों का शक्तिशाली बल है ।

j) किशोरों को उनके समझ और सूचना के अभाव का सहूलियत दें ।

k) किशोरों को मसीही कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करे ।

l) किशोरो के शारीरिक विकाश मे रुँचि और लौगिक शिक्षा से सम्बन्धित उनके बाल्यवस्था के वृधि को ध्यान से देखना ।

m) संयम के विकाश मे उन्हे सहयोग करें ।

n) संघर्षमय परिस्थिती में गम्भीर समस्यावाली बातों मे भी प्रकट होने दं । (कठिनता को अनदेखा न करे)

o) आप ही स्थिरता और सुरक्षा के संतुलन है ।

p) किशोर के शक्ति (क्षमता) को कम न ऑके ।

q) धीरज जरुरी है ।

r) किशोरों को माता-पिता के साथ घनिष्ट सम्बध बनाने मे सहायता करना ।

s) किशोरावस्था में मसीह की ओर ....

५. **<u>किशोरों से सबन्धित बातों को सीखना</u>**

‘‘ युवा कार्य मे सहभागी होने के इच्छुक लोगो द्वारा हमेशा प्राय: पूछे जाने वाले प्रश्न”

‘‘ किशोरो से कैसे कैसे सम्बध बनाए ?

इन जटिल आयु वर्ग से सम्बध बनाने के कुछ गुर निम्न है :

A) अपने सम्बन्धो को कायम करे ।

i) इसमे समय लगता है .... धीरज रखें ।

ii) इसमे शक्ति लगता है .... लगातार बने रहें ।

iii) इसमें वार्तालाप करना पडता है .... खुले रहें ।

iv) इसमें त्याग चाहिए .... स्नेही बने ।

B) अपने समझ को बनाएँ

i) वचन मे जाए ...... इश्वरीय अवधारणा से समाधान सींखे

ii) लोगो के व्यवहार को परखें ...... दुहराने वाली समस्या को पहचाने ।

C) अपने अवबोधन को बनाए रखें

i) प्रार्थना में परमेश्वर का वाट जोंहे

ii) परमेश्वर के वचन का मनन करें

iii) अपने बालकों के परिस्थितियों के हरन के लिए परिवार के सम्पर्क मे रहे ।

iv) अपने जिम्मेदारी को याद रखें ।

चिता इस बात को निधारित करता है : उतरदायित्व का पूर्व कल्पना कि परमेश्वर का इरादा इसके लिए नही था कि मुझे दे ।

D) दया और सत्य को बनाए रखें

(‘‘ युवाओं में कार्य करने सफलता की कुँजी यही दो बातें दया और सत्य का कब और कहां प्रयोग करने पर निर्भर है।)

E) अपने अलौकिक सामर्थ्य का प्रयोग करें

a. बुधि और समझ के लिए परमेश्वर से मांगे ।

b. परख और अगुवाई प्रभु से मांगे ।

c. समस्या में आत्मिकता ढूंढे जैसे बुधि और ज्ञान का वचन, इत्यादि ।

d. युवा का सबसे अधिक आवश्यकताएँ क्या है । जवानो की आवश्यकताओ की सूची निम्न है जो हम समझते हैं कि विशेष , महत्वूपर्ण और प्राथमिकता पर भी निर्भर करता है ।

१. यीशु और कलीसिया के लिए समर्पक की आवश्यकता ।

२. अधिकारियों एवं पालको का आवरण की आवश्यकता

३. मसीह में स्वयं का भरोषे की आवश्यकता ।

४. दूसरों के साथ मसीह की सहभागिता की आवश्यकता ।

५. मन और शरीर का शील की आवश्यकता ।

६. मसीही साहसिक कार्यो की आवश्यकता ।

७. ईश्वर प्रदत शक्ति की चुनौती का आवश्यकता ।

८. ईश्वरीय मार्गदर्शन के सम्मति की आवश्यकता ।

९. दूसरों के प्रति तरस की आवश्यकता ।

१०. उनके पास जो कुछ है उसके लिए धन्यवादी और संतोष करने की आवश्यकता ।

विवाहित और पारिवारिक समस्याओं को सम्मति

परिचय

एक अच्छे विवाह की परिभाषा

एक विवाह (या परिवार) जिसमें जितने लो सरीक होते है उनके अधिक से अधिक मौके, आपसी प्यार (अगापे) मे ईश्वरीय अभिप्रय की परिपूर्णता में बढते हुए व्यक्तिगत क्षमता के विकाश और मसीह मे अपने गन्तव्य को पहुचना । शैतान के आक्रमण का पहला उद्देश्य विवाह है , आज के दिन मे । वह जानता है यदि वह शादियों को तोड सके, वह परिवारों को बरबाद कर सकता है और क्योंकि परिवार ही कलीसिया का आधार स्तम्भ है । परिवार का टूटना यानि कलीसिया की तबाही, एक अच्छा विवाह को मजबुत नींव की जरूरत है ।

१. विवाह के लिए ईश्वर के क्या उद्देश्य है ।

सर्व प्रथम हमे यह समझना चाहिए कि शैतान और परमेश्वर के आत्मिक सघर्ष के मध्य मानव प्राणी का सृष्टि हुआ, मनुष्य के पत्तन के पूर्व पूर्ण सद्भावना और एकता के साथ रहते थे । परमेश्वर कई उद्देश्यों से विवाह स्थापित किया ।

१) परमेश्वर के प्रतिरुप के लिए (उत्प. १८२६-२७)

२) बहुगुणित होकर धरती पर भर जाने के लिए (उत्पति१-२८)
और ईश्वरीय वंशज को पैदा करना कि शैतान को हराया जा सके ।

३) ईश्वरीय सृष्टि को परमेश्वर के प्रतिनिधित्व अधिकार और शासन के अधिन प्रबंध करने के लिए (उत्पति १:२८) ।

४) स्त्री व पुरुष के आपसी परिपूर्णता के लिए (उत्पति २:१८, २ कुरि- ११:११)

५) मसीह के साथ कलीसिया के सम्बन्ध का चित्र, जो उसकी दुल्हिन है (इफि -५:३१-३२)

२. एकता

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए, इसके लिए आवश्यक है कि विवाह में एकता मौजूद हो, दुसरों शब्दों मे, दम्पति परमेश्वर के इच्छा और उद्देश्य के पूर्ण अनुबंध है । इस अनुबंध को दो स्तरों में अभिव्यक्त कर सकते है :- उर्ध्वता सम्बन्ध परमेश्वर के साथ और क्षीतिज सम्बन्ध एक दुसरे के साथ ।

१) पती – पत्नी का एकता त्रिएकता को प्रदर्शित करता है जो ईश्वरीय स्वरुप को संसार में प्रकट करना है ।

२) ईश्वरीय वंश उत्पन्न करने के लिए एकता जरुरी है । भविष्य में सफल विवाह के लिए तैयार करना जैसे वे अपने माता-पिता की ईश्वरपरायणता और एकता को करीने से निहारते है । अत: घर ही बच्चों के लिए उत्तम प्रशिक्षण मैदान और अगापे प्रेम को समझन का सीखने का स्थान है ।

३) एकता के बगैर एक दम्पति ईश्वरीय राज्य को प्रबध नही कर सकता ।

४) एक दुसरे की संगति (सहयोग पूर्ण), परिपूर्णता के लिए एकता जरुरी है व्यक्तित्वपरवयं केंद्रित एकता को नष्ट कर देता है ।

५) उसकी कलीसिया के साथ सम्बन्ध का नमूना के लिए एकता जरुरी है - यीशु नेतृत्व करता, प्रेम और कलीसिया की सेवा, जिस समय सन्मान के साथ कलीसिया उसके आधीन होता है ।

उपरोक्त बिन्दुओ से हम देख सकते है :-

अ) जितना आपने समझा है उससे भी शादी अधिक महत्वपूर्ण है ।

ब) आत्मिक युध्द भूमि आपका शादी है उसे पहचाने, प्रेमालाप का आलिंद नही ।
आपने विवाहित सहयोगी के विरुध यानि परमेश्वर के प्रत्येक उद्देश्य के विवरीत होना ।

३. विवाह के एकता में क्या डर है ?

१) आज का हमारा रीतिरीवाज सफल विवाह को सहयोग नही करती – सच तो यह है कि आज का विवाह संसार भर में अधिक तनाव-दबाव बना है जितना इसके पूर्ण कभी नही रहा ।

२) कई शादियाँ गलत कारणों और मान्यताओ, जैसे भवनाएँ (प्रेमान्ध) लैंगिक आकर्षण, परम्परा का दबाव बचाव

३)	मसीही दम्पति कई कारणों से परमेश्वर के योजना के लिए सुसज्जित शादी के लिए नही है – केवल संसारिक योजना, वे खत्म होने वाली जल के लिए भागते है । संसार की योजना मे ५०/५० सम्बन्ध है, जैसे – अभिनय के आधार पर ग्रहण, विशेषता का आधार बनाना, भावनाओं पर आधारित कर्म के लिए अभिप्रेरणा, संक्षिप्त मे, आप अपना भाग करें और मै अपना हिस्सा ।

४)	स्वयं केंद्रित एकता को भडकाता है – मंगनी के दौरान , यह स्वयं केंद्रित निष्क्रिय पडा रहता है और दम्पति के साथ पूर्वाग्रहीत नहीं रहता – और न ही एक दूसरे के देह के लिए पार्टी कुछ छूट देती है । सराहना और स्वीकृति हताशा और तिरस्कर में तुरन्त बदल जाता है ।

५)	कई दम्पति अपरिहार्य कठिनाइयों को कार्यो द्वारा पूर्वानुमान लगाने मे असफल हुए और कठिनाई जो प्रत्येक वैवाहिक जीवन मे आता है यह एकता को भयभीत करता है । जिस तरह वे अपनी कठिनाईयों का प्रत्युतर देते हैं उससे वे या तो एक दुसरों से दूर चले जाते या करीब आते है । ऐसे कठिन कालों के दौरान अवश्य परमेश्वर के सामर्थ्य मे कार्य करे, जब वे सोंचते है कि विवाह मे कुछ गडबडी की आशंका नही है । एस दुसरे को संतुष्ट करना जरूरी है ।

६)	कई दम्पतियाँ शैतान के आक्रमण और उनके विरुध शैतान का खडा होने कको पहचानने मे असफल होते है (इफि - ६:१२-१३) और कलह को जगह देते कि एकता को नष्ट करे (याकूब -३:१६)

७)	गलत प्राथमिकताएँ एकता को बरबाद करता है । कार्य योग्य प्राथमिकता केवल मती ६:३३ है, जब भविष्य भौतिक वस्तु प्राप्ति या अन्य कार्यक्रम को प्राथमिकताएं दी जाती हो, तब विवाह बरबादी को और अग्रसर होता है ।

८)	कई शादियाँ निम्न कारणों से असफल होते है :

अ)	वार्तालाप का अभाव

ब)	दो सहयोगियों का मिलन की आवश्यकता , इसके वजह से कमजोर संगी बलशाली द्वारा दबाया जाना विवाह में निराशा लाती है । इसका मुख्य वजह प्रेम की कमी जो इन चार बातों को दिखाता है :

१) दूसरे व्यक्ति के विषय मे ज्ञान
२) दूसरे जन का ख्याल रखना
३) दूसरों का आदर करना
४) दूसरे जन के लिए जिम्मेदारी

९)	कई शादियाँ संघर्षमय हालात में चलते है कारण आरम्भिक जीवन का अभव का कष्ट जो विक्षिप्त विचारधारा की और अगुवाई करता है, जिसमे विरोध को बढा चढाकर बताना, विरोध , इन्कार करना, अस्थिर, और बलबल स्वभाव । जब ऐसी और इसी तरह की समस्याओं से व्यक्तिओं से व्यक्तियों का मुठभेड (सामना) होता है तो सामान्यत: आंतरिक चंगाई और छुटकारे की आवश्यकता है ।

४. बडे दस :

१)	**रूपया** (मुद्रा) सब बुराईयो का जड रुपया नही है, किन्तु इसका प्रेम और इसपर असहमति इसका विभाजन कैसे करें, दे खर्च करे, बचाएँ , निवेश रुपयों के बारे मं हो ऐसा कि :

कोई रहस्य नहीं	-	आय और ब्यय में ।
स्वामित्व नहीं	-	यह सहयोगी के लिए है, केवल कमाने वाले का नही ।
बेईमानी नही	-	सिंध्दातों पर सहमति और वचनो के आधार पर चलना ।
पक्षपात नही	-	प्रत्येक खर्च करने के लिए दूसरे के समान स्वतंत्र हो ।
मुद्रा	-	एक हथियार नही – पत्नी को आधीन रखने सम्पति नही कि बच्चों के समय थोडा-थोडा खर्च करें । व्यक्तिगत प्रेम का इजहार करने का वस्तु नही, मती ७:१२

२)	**सेक्स (लैंगिक)**

लैंगिकता (सेक्स) सुन्दर, खुशियों भरा, आवश्यक है क्योंकि परमेश्वर ने ऐसा बनाया है I यह अकेले का एक अभिव्यक्ति है, एक पूर्ण समर्पण, एक पूर्णरुपणे स्वयं को देना I एक पवित्र नियम I सेक्स (लैंगिक) :

- अधिकार नही - कि स्वार्थ से दावा करे
- पक्षपात नही - कि स्वार्थ के लिए रोके रखे
- एक हथियार नही - दूसरे को आधीन करे
- एक इनाम नहीं - अच्छे स्वभाव के लिए

प्रत्येक दूसरे को संतुष्ट करने के द्वारा परिपर्ण महशूस करता है, शरीर उसका स्वयं का नही है – किन्तु संगी का – पूर्ण आनन्द लेने के लिए, अदलाबदली हर्षित करने के लिए निश्वार्थ प्रेम (२ कुरि – ७:५)

३. **बच्चे**

प्रत्येक संतान की पूरी जिम्मेदारी माता-पिता दोनो की है I माता-पिता दल मे है, एक सहभागिता, एक सहयोगी, एक अनुशासक नही है पर एक प्रेमी एक कोइ न्यायी नही – किन्तु शॉन्तवाना दायक, मा-पिता एक साथ आम लोगों मे खडे होते, असमति को नीजि रुप मे सुलझाते है I अत: दल न्याय करता है – सुधारता और संतान इसे समझ जाता है I

शंतानो को प्रेम से अनुशासित करें - संसार इसें मुहब्बत बिना करता है I
आज्ञाकारिता के लिए अनुशासन - गल्ती या दुर्घटना के लिए नही I

अनुशासन तुरन्त करे उसके गलतीनुसार, बिना क्रोध , - यह प्रेम का प्रमाण है I इफि – ६:४

४) **मोहब्बत**

प्रणय निवेदन जारी रहे I प्रसन्न करने से प्रेम शुरु होता है, स्मरण करना, अपने संगी की प्रशंसा करना, यह उसी तरह बढता है I

मोहब्बत को चाहिए :

समूह अभिव्यक्ति - ‘‘ मैं प्रेम करता हू ,” ‘‘तू मुझे चाहिए, ” ‘‘ मै आपकी सराहना करता हूँ I ”
शारीरिक अभिव्यक्ति - स्पर्श, आलिंगन, चुम्बन, एकात्मता, स्नेह , खुशी I
सामाजिक अभिव्यक्ति - स्मरणार्थ विशेष दिवस, थोडी दयाभाव, बाहर जाकर खाना, सप्ताह में अकेला, एक अनियोजित यात्रा I

हमारा प्रमुख व्यवसाय एक दूसरे मे प्रेम का आमंत्रण करना है कि सहजता से प्रेम करें, और प्यार पायें I यूहन्ना – ३:१८

५) **<u>अपेक्षाएँ (आशाएँ)</u>**

विवाह कभ असफल नही होता – लोग असफल होते है I वे जरुरत से ज्यादा उम्मीद करने से असफल होते है, कार्य से अधिक बाते, करने से अधिक सपने देखना I

विवाह किसी एक व्यक्ति के द्वारा सम्भलता नही – इसे दो करते है दो बरकरार रखते है

विवाह विस्तारीत सुहागरात नही है – विवाह एक कठिनकार्य, एक परीक्षा, एक सुखद संघर्ष है I

विवाह एक ऐसा सौभाग्य है जिसमें आप पूर्णरुपणे दे देते है I

विवाह एक खाली बक्या है – न तो संगी उसमे से कुठ निकाल सकती है जो नही डाली I लू – ६/३८

६) **<u>अपेक्षाएँ</u>**

मातृत्व – पितृत्व साथीदार से आगे चलना चाहिए I एक पुरुष पहले है, पिता दूसरा, व्यवसायी तीसरा, एक महिला पहले पत्नी, एक मां दूसरी, कामकाजी तीसरी है I एक मजबूत विवाह मजबूत परिवार को लिए चलता है I

विवाह स्थायी है - मातृत्व – पितृत्व अस्थायी है I
शादी केन्द्रीय है - मातृत्व – पितृत्व दूसरी
ब्याह केन्द्र स्थल है - संताने अविछित्त तारे है I

संतान – केंन्द्रित घर - बच्चों को कम प्रशिक्षण, दुर्बल , वैवाहिक सुरक्षितता, खाली घोसले की दुर्बल तैयारी जीवनसाथी प्रथम, संतान से पूर्व, नोकरी , भविष्य , इफि – ५:३३

७. बॉटना

एकल अभिनय, स्वार्थीपन, प्रत्येक शादी की आधार है, पाप का महक, प्रत्येक सेव के कीडे । वह है : स्वयं मार्ग की चाहत लैंगिकता से, मुद्रा , समय, निर्णय अपने सुविधा, खुशी, अधिकारों , को स्वयं सोचना , अपने स्वयं की योजनाओ को महत्व देना, संगी के भावना व इच्छा को अनदेखी करना (कही - अनकही)

अपने छोटे दायरे मे जीना, एक मील जाकर सेवा करने की बात का नीजि जगत से इन्कार , दी गई बातों को अनुकूल बनाना, समर्पण ।व्यक्तिगत विजय को मजबूत सम्बन्ध से अधिक महत्व देना । हमेशा इस कुँजी सवाल को पूछना ‘‘ क्या मैं स्वार्थी बना या इस बात में मै अभी स्वछन्द बना” १ कुरि – १३:५

८. क्षमा करना

सच मे क्षमा तुरंत होता है, पूर्ण , और बिना क्रोध के, जैसे लिखित नोट को हमेशा के लिए छिपा दिया गया जिसे अपने संगी के विरुध्द कभी स्मरण न किया जाएगा । झगडे क`ढाचे को खोद निकालना यानि कभी भी उसे उन्होने दफनाया नही था ।पिछली बातो को जिसे दूसरो ने प्रकट किया था को पकडे रहने से चालाकी करना स्वयं धार्मिकता है । जितना अधिक आप अपने कमजोरियों को जानेंगे । असफलता और पाप, उतना अधिक क्षमा करने वाले होंगे । पहला कदम लेने की इच्छा विशेष दीनता है, दोष को कबूल करना, माफी माँगना, एक दूसरे की गलती से सीखना और शुध्द ह्दय से छुना आरम्भ करना, मती ६:१८.

९. बातचीत करना

सकारात्मक सहानुभूतिशील वार्तालाप समझ की कुँजी है । सद्‌भावना और प्यार । मूल्य चुकाना पडता है यानि: खुलापन , इमानदारी , बॉटना, स्वयं खुलापन , सम्भावित त्याग । फिर भी वह बढता है, परिपक्वता, खुशी में

वार्तालाप आपके अपने संगी की पूर्ण स्वीकृति पर आधारित है , और इमानदारी से समझ और प्रत्युतर देने की चाहत हो सुनना – कोई नुस्ख्या ढूंढने की कोशिष किए बगैर, बहस में कमजोरी निकालना, खण्डन करने के लिए समय निकाले वगैरे सहमती हो ।

झब एक जन पिछे हटता है - सुनने के लिए इन्कार या सत्य को प्रेम से बोलन – वह अपने संगी से कह रहा है, तुम कमजोर हो, महत्वहीन, असराहनीय , इफिसी – ४:२.

१०. सिद्धता

जो व्यक्ति अपने संगी को सताता (लज्जित) है कमजोरियों को लोगो के समक्ष लाता दुसरों पर कीचड उछालना (जोक मारना) वह दु:ख उठाता: स्वाभिमान की कभी, स्वयं धार्मिकता की असुरक्षितता, अपनी ही असफलाओं मे अंधा रहना । प्रेम संगी को वैसा ही ग्रहण करता । करती है जैसा वह है आदतें और सर्व, उसके परिवर्तन की बात किए बगैर, विचारपूर्ण स्वीकृति और दयालुता से संगी को सासवती देना ।

संगी के विषय में यह मानना कि वह प्रर्याप्त महत्वपूर्ण है स्मरण के लिए ज्यादा कुछ शिष्टाचार की आवश्यकता नही । उनके वाणी मे हमेशा प्रेम हो (१ कुरिन्थ -१३:७) वहां कोई असफल शादी नही – केवल विवाहिता । विवाहित संगी की अपरिपक्वता …….. वढता नहीं सीखना, सामना, मानना, कबूलना और बदलना ।

५. पती और पत्नी के भूमिका

जिनका वैवाहिक समस्यांए है उन्हे प्रभावशाली तरीके से सम्मति आपको स्पस्ट समझदारी केवल परमेश्वर के योजना और उद्देश्य विवाह के बारे में नही , किंन्तु प्रत्येक संगी का परमेश्वर के वचन से ठोस स्पष्ट भूमिका – आपका सम्माति इन्ही क्षेत्रों मे हो ।

स्मरणीय बिन्दु

a) परमेश्वर ने परिवार में जिम्मेदारियों का क्रम निर्धारित किया है (१ क्र. ११:३)

b) परमेश्वर होने की योजना बनाई है। १ कुरि ११:११

c) परमेश्वर पती और पत्नी को एक समानता में नियोजित रखा है। (१ कुरि -११:१२)

<u>पती की भूमिका</u>

१) अपने घर की अगुवाई करना (इफि ५:२३) नेतृत्व शामिल है :

- a) जिम्मेदारी
- b) सेवकाई
- c) प्रबन्धन

२. अपने पत्नी को प्यार करे (इफि ५:२५)

३. अपने पत्नी की परिवरिस करना (इफि ५:२८-३०)

- a) उसकी जरुरत को समझना (१ पत-३:७)
- b) परमेश्वर के बाद उसे प्राथमिकता देना
- c) अपना जीवन उससे बॉटना।

४. पती इन बातों को कर सकेगा यदि वह प्रभु यीशु मसीह मे पूर्ण समर्पित और आत्मा निर्देशित है।

<u>पत्नी की भूमिका</u>

१. पत्नी की सर्वप्रथम कर्तव्य है कि वह आधीन हो (इफि ५:२२-२४, १ पत ३:१) कई स्त्री (पुरुष) में गलत धारणा है और आधीनता के बारे मे इसलिए समस्याएं इस क्षेत्र में आती है। आधीनता का युनानी शब्द ‘‘ हूप्पो तासी (Happo Tasso)” यानि परिपूर्ण ‘‘ साथ आकर फासला को भर देना” और ‘‘क्रम को इस तरह सजाना कि छेद को पूर्ण कर देना ” पत्नी के समर्पण मे निम्न बातें है :

- a) अपने आप को परमेश्वर मे सराबोर करना
- b) चिर सद्भावना घर में रखना (१ प्रत – ३:१-३)
- c) अपने पती के प्यार की दीवानी
- d) अपने पती के प्यार को प्रतिषिम्बित करना

२. <u>पत्नी की दुसरी जबाबदारी है आदर करना (इफि – ५.३३) उसका आदर करना :</u>

- a) उसे जानना
- b) उत्साहित कर बनाना
- c) पूर्ण करना (बनाना)

पत्नी इसे तभी कर सकेगी यदि वह यीशु को प्रभु के रुम में समर्पित है - अपने पति के आदर और आधीनता का वही तो आधार है।

६. <u>घर में संतानें</u>

१) संतान परमेश्वर के दिए दान हैं (भजन १२७:३०५)

२) यह माता-पिता की जिम्मेदारी है कि :

परमेश्वर के राह मे बच्चों को बढाना (नीति – २२:६, इफि ६:४)

संतानों प्रेम मे अनुशासित करना (नीति-१३:२४, २२:१५, २३:१३-१४)

बच्चों को जानना और दिशा दिखाना (नीति २७:२३)

३. संतानो की जबाबदारी है कि वे अपने माता-पिता का आज्ञापालन और आदर करें (इफि ६:१-३)

वे जो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करना चाहते है उन्हे सम्मति देना :

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा का विषय एक सबसे रुचिकर विवादित, महत्वपूर्ण, और बाइबिल की विषय की गलत फहमी है पूरा मसीही जगत विषय के कारण विभाजित और प्रत्येक विचारवन्त मसीही वचन के खोजने की पहुच तथा बाइबिल की प्रत्येक वक्तव्यों के

लिए खुलामन जिससे किसी प्रकार की रोशनी विषय पर पडे । उन्हे पवित्र आत्मा पाने की सम्मति देना कि वचन की मूल में अनुभव प्रकट हो । यह बात आपके बपतिस्मा के गवाही से जुडा हो , और पवित्र आत्मा के आपके जीवन मे कार्य एक महत्वपूर्ण बात सम्मति के दौरान ठहरता है ।

१. पवित्र आत्मा के बारे मे यीशू ने क्या कहा :

१) यूहन्ना १४:१६-१७

यीशु ने प्रतिज्ञा किया कि वह पिता से कहेगा जो तुम्हे एक सहायक देगा, सत्य का आत्मा और वह तुममें तुम्हारे साथ बना रहेगा ।

२) यूहन्ना १६:१७

यीशु न कहा कि हमारे लाभा की बात है कि वह हमसे दूर जाएँ ताकि पवित्र आत्मा आएगा ।

३) यूहन्ना १६:१३

पवित्र आत्मा प्रकट करेगा कि क्या होने वालाहै पवित्र आत्मा की" '' सत्य का आत्मा स्वयं को प्रकट करेगा और पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का महत्व बताएगा ।

४) यूहन्ना १:३२-३४

यूहन्ना बपतिस्मादाता पहचान गया कि यीशु पवित्र आत्मा का बपतिस्मादाता है ।

२. पवित्र आत्मा में बपतिस्मा के बारे में सामान्य तथ्य :

१. कि वहां पवित्र आत्मा का बपतिस्मा है ।

मती – ३:११, २०:२२-२३, मरकूस -१:८, लूक – ३:१६

यूहन्ना – १:३१-३४, प्रेरित – १:८, प्रेरि – २:१-३९

२. यीशु वह पहिला है कि जो पवित्र आत्मा से बपतिस्मा हुआ ।

मर्क – ३:१६-१७, २०:२२-२३, लूक ३:२१-२२, प्रेरि-१०:३८

यूहन्ना – १:३१-३४

३. भविष्यवाणी का बपतिस्मा मे परिपूर्णता था

यशा ११:२, यशा ४२:१-७, मती – ११:२१-२२, प्रेतिर -१०-३८, यूहन्ना – ४:१६-२१

४. यीशु के शिष्य चेन्तीकोष्प त्योहार से पूर्व ही आत्मा से परिपूर्ण हुए थे ।

मती -१०:१-८, १६:२०, १६:१७ , मार्क -६:१३-१७, लूक १०:१-२४, यूहन्ना १७:१४, २०:२२

३. पवित्रआत्मा में बपतिस्मा क्या है ?

अ) पवित्र आत्मा में बपतिस्मा का अर्थ है कि विश्वासी का आत्मा में डूब जाना – जिस वक्त पवित्र आत्मा उसके जीवन में प्राप्त होता है सब '' परिपूर्णता" और '' उपर से सामर्थ का दिया जाना" यह मसीह के कार्य के क्रम मे करना है

१. यह ठीक वही अभिषेक जिसे मसीह मे प्राप्त किया था ।

यशा – ११:१-२, ४२:१-७, मती ११:४-६, १२:८, लूक ४:१६-२१

२. यह पवित्र आत्मा का अन्दर प्रवेश , उपर, भरना और उमण्डना, मदकोश होना अभिषिदत और पूर्णशक्ति से इसे पुराने नियम के दिनों से नही माप सकते ।

३. यह परिपूर्णता पेन्तीकोस्ट के दिन मे मनुष्यों मे हुआ वही है ।

ब) पवित्र आत्मा का बपतिस्मा एक उध्दार का आज्ञाधीन अनुभव है ।

कुछ लोगों को सिखाया गया है कि जब एक व्यक्ति बचाया गया तभी पवित्र आत्मा उनमें आ गया (जागरुकता से सत्य में है, कि हम शब्द और आत्मा में नया जन्म पाया) किन्तु हमें पवित्र आत्मा की सब बाते चाहिए जो

पवित्रात्मा में होना चाहिए । हमें विश्वास से जो परमेश्वर देना चाहता है को प्राप्त करें । ताकि हम भी जयवंत मसीही जीवन यापन कर सके । तथापित हम इसे पवित्र वचन से देखेंगे कि उध्दार का आज्ञाधीन अनुभव है ।

१. सामरिया मे फिलिपुस की सेवकाई - प्रेरि – ९:१२-१९

२. पौलुस – प्रेरित – ९:१३-१४

३. इफिसुस – प्रेरित – १८:१-७

क) पवित्र आत्मा का बपतिस्मा एक निर्णायक और निश्चित अनुभव है ।

१. आप जानते है कि ऐसी बाते हुई ।

२. इसकी तेजस्वी खो सकती है यदि तुरन्त आत्मा के अनुसार उसमें चलते नही ।

४. पवित्र आत्मा में बपतिस्में का उद्देश :

१) पवित्रआत्मा से बपतिस्मे का उद्देश्य प्राण को बचाना, उसे शुध्द करना, उसे परमेश्वर का संतान बनाना, या स्वर्गरोहण में उठाये जाने के लिए तैयार करना नही है ।

२) पवित्र आत्मा से बपतिस्मा का मात्र उद्देश्य यह है कि स्त्री व पुरुष को उपर से दिये गये सामर्थ मे यीशु ही के समान कार्य करें ।

अ) चीजों को चालू रखना '' जिसे यीशु ने करना और सीखाना" दोनों आरम्भ किये थें । प्रेरित – १:१-२, मती २८:२०.

ब) मनुष्यों को '' सफल गवाह" बनाने के लिए प्रेरित करना -१:८

क) सच्चे विश्वासी का प्रमाण लोगों के लिए और प्रभु को अभिव्यक्त करने के लिए अलौकिक बुलाहट । मरकुस – १६:१५, यूहन्ना १४:१२, प्रेरित – १:८

पौलुस पूर्ण सामर्थ से कार्य करके प्रभावित करता था कि वह परमेश्वर द्वारा भेजा गया है ।

२ कुरि ६:४-७, १०:३-११, १२:१२, १३:१० गलाती – ३:३-५

जो सुसमाचार का विरोध करते है उन्हे हराने और दण्ड देने के लिए जो धर्मी जीवन नही व्यतीत करते ?

प्रेरित – १३:६-११, १ कुरि – ४:१८-२१.

- लोगों को आज्ञाकारी बनाने के लिए । रोमि -१५:१८-१९, कुरिन्थ ४:१८-२१

- विश्वास के लोगों मे परमेश्वर परस्थापित करने के लिए । रोमि – १:११, कुरि- २:१५

३) यदि पवित्र आत्मा मे बपतिस्में का मुख्य उद्देश्य लोगों को शक्ति मे डुबना कि उपर कहे वचनों को पूर्ण करें, इस तरह यह सब महत्वपूर्ण अनुभव आज के विश्वासियों की यदि वे चाहते है कि वे सुसमाचार में सफलता से कार्य करें ।

अ) यीशु अपने शिष्यों से यह बात स्पष्ट किया था कि जगत में सुसमाचार सुनाने के लिए जाने से पूर्व पवित्र आत्मा में बपतिस्मा अत्यावश्यक था । लूक - २४:४०, यूहन्ना १४:१२-१७, यूहन्ना -१६:७-१५, प्रेरित -१:४-८

ब) कई सौ अनुयाइयों मे यीशु के १२० चेलों को यह आज्ञा जरुरी लगा । १ कुरिन्थ – १५:६, प्रेरित १:४-५, १२-१५.

५) पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का धर्मशास्त्र का प्रमाण :

अ) प्रेरितों के काम की किताब की तरह

१.	पेन्तीकोस्त	-	प्रेरित -२:४
२.	सामरिया	-	प्रेरित -८:१५-१९

३. पौलुस - प्रेरित -९:१७
४. कुरनेलियुस का घराना - प्रेरित -१०:४५-४६
५. इफेसुस - प्रेरित -१९:२

ब) अन्यान्य भाषा में बोलना क्यो आवश्यक है ? और कैसे यह हमारी सहायता करता है ?
पवित्र आत्मा के अन्यान्य भाषा में बाते करने के कई फायदे है –

१. यह शाश्वती होती है कि आप पवित्र आत्मा में परिपूर्ण है। प्रेरित – १०:४४-४६
२. यह आपको बढाता है – बनाता है - १ कुरि – १४:४
३. यह कलीसिया को बढाता है – १ कुरि -१४:५
४. यह आपको परमेश्वर मे प्रार्थनामय जीवन की ओर ले चलता है – १ कुरि -१४:२, रोमि -८:२६
५. यह आपको परमेश्वर की स्तुति (बडाई) मे सहायत करता है। १ कुरि -१४:१५, प्रेरित – १०:४६

६. <u>पवित्र आत्मा से बपतिस्मा कैसे पाये ?</u>

ब्यक्ति को विश्वास के इस स्तर तक सहायता करना निम्न सुझाव के कदमो को अपनाएं

१. वरदान पहले ही दिए जा चुके है
अ) उसे वाढ जोहने की जरुरत नही
ब) उसे भीख मांगने की आवश्यकता नही
क) यह ब्यक्तिगत पा लेने पर, जिसे विश्वास से किया जाना चाहिए (गलाती – ३:२)
२. उध्दार ही सर्व प्रधानताएँ है – प्रेरित – २:३७-३८
फिर भी वहां होना चाहिए, परमेश्वर के लिए अखिर भूख एवं प्यास का होना (लूक -११:९-१३)
३. आत्मा से भरे विश्वासियों द्वारा हाथ रखना सहायता कर सकता है।
४. यीशु को उसके विश्वास की आत्मा देने के लिए धन्यवाद देना - १ यूहन्ना – ५:१४
५. विश्वास से पवित्र आत्मा प्राप्त करे, और जो भी भाषा देता है उनमे बातें करना, किन्तु याद रखें आपको बातें करते रहना चाहिए (यूहन्ना ७:३७-३९, प्रेरित २:४)
६. जबा आत्मा सहायता करता है तो अन्यान्य भाषा मे बाते करते रहना (रोमि – ८:२६)

शारीरिक चंगाई के जरुरतमण्दो को सम्मति

<u>परिचय :</u>

चंगाई के सिंध्दात बाईबिल मे का एक सबसे उतकृष्ठ विषय है I अलौकिक चंगाई को '' विश्वास की चंगाई" से भ्रमित नही करना चाहिए I विश्वास एक नहर है जिससे चंगाई प्राप्त किया जाता है I चंगाई का स्त्रोत क्या, क्यों कैसे ? को निर्धारित करता है कि देवीय है या नही I

अलौकिक चंगाई क्या है और अरोग्यता नही

यह चंगाई और आरोग्य स्वाभाविक उपाय द्वारा नही, कल्पना , इच्छा शक्ति, ब्यक्तिगत आकर्षण, धातुविज्ञान, भूतसिध्दि, आत्मवाद, मृत्यु का रोघ क्षमता, परमेश्वर के इच्छा की को कम मै परिकल्पना करना, मन पर वस्तु , पाप के सरला तथ्य का इन्कार करना, रोग और बीमारी, या स्वभाविक चंगाई विरासत नियमों द्वारा , और मनुष्यो के शरीर मे सूजनात्मक शक्तियाँ I

अलौकिक चंगाई और आरोग्यता क्या है ?

यह एक निश्चित प्रकृया विश्वास मसीह यीशु में पवित्र आत्मा की सामर्थ्य द्वारा परमेश्वर का, परमेश्वर का वचन, यीशु का बहुमूल्य लहू, जहां मानव शरीर का सम्पूर्ण शरीर का इलाज होता है, चंगाई , मरम्मत, और बीमारी से छुटकारा , और सामर्थ पूर्णरूपेण बनाता, स्वश्य और भला जैसे आक्रमण के पहले था I

क्या बीमारी और दुर्बलताऍ, पवित्र शास्त्र में पढाया जाता है ?

एक आशिष था एक शाप :-

१. वे शाप कहलाए (कहे गये हैं) व्यवस्था – २८:१-६१

२. पाप और बीमारियाँ मानव जाति पर आदम के अनज्ञा के कारण आती है I रोमि ५:१२

३. मसीह हमें शाप से छुटकारा कलवरी के क्रूस से किया I गलाती – ३:१३

चंगाई के और अन्य बिभिन्न स्त्रोत क्या है ?

१. स्वभाविक चंगाई - नीति १७:२२

२. औषधि से चंगाई - मती – ९:१२

३. देवीय चंगाई - भजन १०३:१-४ इस प्रकार की चंगाई मे परमेश्वर स्वभाविक और मनुष्य दोनों पर हावी होकर चंगाई लाते है I

अलौकिक चंगाई के स्त्रोत क्या है ?

१. पापों की क्षमा - यशा ५३, मती - ८:१६-१७ (प्रायश्चित)

२. प्रायश्चित में चंगाई का मतलब मसीह यीशु केवल पाप और पापों को नही देखता, किन्तु हमारी बीमारी को अपने शरीर में लेकर क्रूस पर चढाया १ पत – २:२४

बीमारी और रोग के कारण

अ) परमेश्वर नियम का बनाने वाला I

पाप या बीमारी का कारण सीधा परमेश्वर नही है I परमेश्वर की इच्छा कभी नही रहा कि कोइ व्यक्ति अपने जीवन में बीमारी या पाप में रहें I उसने सुसमाचार के माध्यम से बहुत सारी योजनाएँ बनाई कि लोग अपने सम्पूर्ण पाप और बीमारी से चंगाई पायें उसने आरम्भ से ही नियम बनाया कि मनुष्य जो बोयेगा वही काटेगा, किन्तु नैतिक दलाल को छूट नही दिया कि नियम को तोडे I वह न्यायी नही हो सकता और काटने से जिसे बोया है अलग नही करता, यदि वे अनाज्ञाकारीता के लिए वे अपने आप को निर्धारित कर लिए हैं I (गलाती ६-७-८)

ब) <u>शैतान नियम का टीका करने वाला</u>

पाप के नियम का टिप्पणी करने वाला सीधा शैतान ही है, बीमारी और मृत्यु । पाप में गिरना परिणाम बीमारी है जिसका प्रभाव होता है । मती १२:२२-२८, लूका १३:१४, यूह – १०:१०, प्रेरि – १०:३८

क) <u>मनुष्य नियम तोडने वाला</u>

मनुष्य नियम तोडनेवाला सबसे बडा है जिसने जो बोया है उसे काटना ही चाहिए । मनुष्य ही पहला है कि वह पाप (के लिए जिम्मेदार है ।) और शैतान, और शैतानी शक्तियों जो पापमय परिस्थिती का लाभ उठाने और सब प्रकार की दु:ख और असफलता उनके जीवन में लाती है ।

चंगाई कैसे प्राप्त कर सकते है ?

चंगाई कैसे प्राप्त कर सकते है ?

१. मसीह में विश्वास – इब्रानी -११:६, मती -६:५
२. विश्वास की प्रार्थना और तेल से अभिषेक - याकूब -५:१४
३. विश्वासियों के हाथ रखने से – मरकुस -१६:१७
४. प्रार्थना के कपडे – प्रेरित -१९:१२
५. वचनों को भेजना – भजन -१०७:२०, मती ८:८
६. आत्मा के वरदानें -१ कुरि -१२:९-१०
७. प्रभु की मेज – १ कुरि -११:२३-३२

चंगाई के रुकावटें क्या है ?

१. पाप- यशा ५९:२, मती – १३:५
२. विश्वास की प्रार्थना और तेल से अभिषेक - याकूब -५:१४
३. विश्वासियों के हाथ रखने से – मरकुस -१६:१७
४. प्रार्थना के कपडे – प्रेरित -१९:१२
५. वचनों को भेजना – भजन -१०७:२०, मती ८:८
६. आत्मा के वरदानों -१ कुरि -१२:९-१०
७. प्रभु की मेज – १ कुरि -११:२३-३२

निश्चित प्रमाण कि यह प्रभु की इच्छा मे चंगाई

१. परमेश्वर लोगों को दोनो नियम मे चंगा नही किया होता यदि – उसकी इच्छा नही होती जो उसके पास विश्वास से चंगाई के लिए आते है । परमेश्वर लोगों का सम्मान करतें है । रोमि – १२:३ ।
२. यीशु ने लोगों को जब उन्होने शास्वत जो शैतान से प्रताडित थे चंगा करके परमेश्वर की ईच्छा को प्रमाणित किया । प्रेरित – १०:३८
३. मती – ८:१६-१७, यूहन्ना – १०:१०, यूह – १२:१४-१५
४. ‘‘ मै चाहता हूँ ” यीशु ने का – मती ८ , युहन्ना – ५:६

आंतरिक चंगाई के जरुरतमण्दो को सम्मति देना

हमे यह समझना चाहिए हम परमेश्वर के प्रतिरुप मे और अनुरुम मे है । आज के आधुनिक युग में हमने अपने जीवन में इस तकनीक का अनुभव, इस कदर किया कि हम मानवीय गुणों से वंचित और वही हमारे जीवनों को नियंत्रण करने लगा है । हमें अपने मूलों मे लौटने की जरुरत है । यदि आप नही जानते कि आप कहा से आए है , आपका बाईबिल आधारित ईश्वरीय जडे, आप जानते नही कि आप कौन, या कौन होना चाहिए या कहा जा रहे है नही जानते है ? परमेश्वर हमें प्रेम लेने और प्रेम देने की क्षमता में बनाया है यूहन्ना १०:१० , मै आया हूँ कि तुम जीवन पाओ और बहुतायत का जीवन पाओ ।

आंतरिक चंगाई निश्चित है

यह आंतरिक मनुष्य की चंगाई है , मनकी बातें, भावनाएँ, दु:खद यादगारें , और कभी – २ सपनें । प्रार्थना के द्वारा विरोधी बातों से जो, उपेक्षा, आत्मदया, निराशा, भय , दु:ख , घृणा , हीनता, दोषीपन, या अयोग्यतापन और बहुत सी अन्य बातें से हमारा छुटकारा हुआ है ।

हमारी रचना शरीर, प्राण और आत्मा का संगम है (१ थिस्लु- ५:२३) हमारी आत्मा जो परमेश्वर दिया है वह एक माध्यम (बिषय) है जिसके द्वारा वह बातें करता है । हम भावनाओं से बडे पैमाने पर निर्यायत होते है । परमेश्वर हमारी भावनाओं से स्वतंत्र करना चाहता है कि हम स्वतंत्र जीवन ब्यतीत करें । जीवन में घाव चोट का दर्दनाक एहसास रहता है जिसे हम मन में याद नही रखते, परन्तु आत्मा जानता है । '' मनुष्य के मन को किसने जाना जो मनुष्य के आत्मा को बचाता है" यदाकदा ये गुस्से के रुप मे अपने को प्रकट करता है, जैसे , घृणा, प्रतिकार इत्यादि मनुष्य परमेश्वर के प्रतिरुप में बनाया गया है । उसकी मूलभूत आवश्यकताए मधुर वार्तालाप से पूरी होती है । जब उपेक्षा प्रवेश करती, मनुष्य प्रेम को इन्कार करता, सुरक्षा, स्वीकार, पहिचान, और अहमियत को भी । वह प्रेम करने का प्राप्त करने के काबिल नहीं रह जाता, परिणाम उस ब्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन के अपंग और विनाशकारी बना देता है । जैसे उपेक्षा का श्रेणी होता है जिसका असर अनुपातिक होता है । हम अपने जीवन के अनुभव का पैदाईश है । हमारी वर्तमान का परिस्थिती का कृया कलाप पिछले जीवन के लिए करते है । हमे इसे विगत बातों मे समाप्त कर वर्तमान मे प्रत्युतर नही देना चाहिए ।

यीशु को कोडे लगाये गये –

'' .... हमारे अधर्मो के लिए कुचला गया .... " (यशा ५३:५)

'' तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले .... " (यशा ५३:१०)

और उपेक्षा को सहा :

१. करीबी दोस्त से पकडवाया गया ।

२. तिरस्कृत किया गया (यशा – ५३:२-३), तुच्छ, त्याग दिया गया ।

३. झूठा दोष लगाया गया (मती – १२:२४)

४. घृणा किया गया ।

५. छोड दिया गया ।

उपंसहार : '' .... हमारी शांति के लिए ताडना पडी और उसके कोडे खाने से हम चंगे हुए .... " (यशा ५३:५) ' जो समाचार हमे दिया गया , उसका किसने विश्वास किया ? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रकट हुआ है, क्योंकि वह उसके सामने अंकुर के समान और ऐसी जड के समान, उगा जो निर्जन भूमि मे फूट निकले, उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी, कि हम उसको देखते , और न उसका रुप ही दिखाई पडा कि हम उसको चाहते । वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ , वह दु:खी पुरुष था, रोग से उसकी जान पहचान थी, और लोग उससे मुंह फेर लेते थे । वह तुच्छ जाना गया , और हमने उसका मूल्य न जाना । (यशा – ५३:१-३)

तिरस्कर

तिरस्कार एक गहरा कोडे का घाव है जो मनुष्यो को पूर्ण रुप से बरबाद कर देता है ।

१. उपेक्षा के स्त्रोत

अ) माता-पिता /संन्तानो के सम्बन्ध

<u>माता –पिता /बच्चा उपेक्षा :</u>

जन्म के पूर्व - लूक १:३९-४५, लूक – १:४६-५५

अनिच्छित संतान, असफल गर्भपात बचपन में ही डर और तिरस्कर आ सकता है – मा के द्वारा संचारित होता है जैसे – दुर्घटना या अचानक मृत्यु के मामले स्थित का झटका : संतान की तरफ अधिकार की ऊँगली का भूमिका भी आश्रित पर प्रभव डालता पिता, शिक्षक, बडा भाई , चाचा इत्यादि ।

<u>उपसंहार :</u> एक उपेक्षित संतान प्रेम न देने – लेने की क्षमता में विकाश करता है । एक संतान जिसका दुर्ब्यवहार किया डर में या विनाश में खिसक सकता है जो बलवा के द्वारा आता है ।

- गोद लिया संतान
- माता-पिता जो प्रेम को संचारित नही कर सकते ।

    १. माता-पिता जो उपेक्षा सहते
    २. पियक्कड, माता-पिता ।
    ३. प्रेम के लिए वस्तुओ के साथ चुनाव रखना ।
    ४. पूर्व विकृत
    ५. अधिकार करना
    ६. आलोचनात्मक (परिपूर्णत्व का माग)

उपसंहार : पिता द्वारा प्यार न किया गया संतान को परमेश्वर पिता से सम्बन्ध बनाने मे कठिनाई होता है (परमेश्वर के प्रति उसके धारणा को स्वभाविक पित-संतान सम्बंध के सम्बन्धउ के द्वारा परमेश्वर पिता की समझ को मोड दिया गया)

- एक सांतन जो उपेक्षा में बढता हैं वह परमेश्वर से प्रेम के बजाय उपेक्षा कि प्राप्त करेगा ।
- माता – पिता उस पर एक नमूना की परछाई है जो बच्चे द्वारा परमेश्वर से सम्बन्ध बनाता है । यह निर्धारित करता है कि वह परमेश्वर को कैसे देखता है ? (मार खाया (तोचकाया) पिता का परछाई)

ब) <u>समकक्ष ब्यक्ति से सम्बन्ध :</u>

    १) निर्दयी विचार
    २) गुटबंदी और अकेला
    ३) सफलता की कमी

क) <u>समाज :</u>

कुछ समाजिक मूल्यों के अनुसार असफलता को स्वीकारना उपेक्षा लाती है ।

ड) <u>परमेश्वर के संग सम्बन्ध :</u>

१. मनुष्य पाप की उपेक्षा के कारण अति संवेदनशील है ।

२. पाप की ग्लानि स्वयं त्याग (उपेक्षा) लाती है ।

उदा. आदम हवा अदन के बाग में अंजीर के पत्तो का आवरण बनाया ।

F- fear (डर)
I- inferiority (हीनता)
G- guilt (ग्लानि)
L – loneliness (अकेलापन)
E- Exile (बंन्धक)
A- axiety (चिंता)
F- frustration (निराशा)

३. ग्लानी के कारण , मनुष्य प्रेम के बजाय तिरस्कार को ग्रहण करने की क्षमता रखता है ।

उपसंहार : पापियों के लिए उपेक्षा जीवन का राह बनता है (जैसे – कैन)

२. <u>तिरस्कार के परिणाम</u>

(१) मानसिक अपरिपक्वता

अ) एक छोटा लड़का और छोटी लड़की प्रत्येक विवाह में आते है।

ब) एक लड़की जो पिता का प्यार न पा सकी विवाह के बाद पिता के प्रेम की आशा करती है।

क) प्रेम, स्वीकृत, और भावनात्मक परिपक्ता के लिए स्वीकृति जरुरी है।

(२) एक प्रेम वायु : (शक्ति) खाली स्थान)

१) एस रिक्तता को कोई नही भर सकता (मित्र, परीवार इत्यादि)

उदा. शादी में प्रेम की खाली जगह (नीति ३०:२३)

अ) मनुष्य घना धुँआ से आच्छादित है।

ब) मनुष्य की पूजा की गई (जीवन का केन्द्र और सम्मोहित किया गया)

क) ब्यक्ति का घृणीत किया गया (दास बनाना)

<u>उपसंहार :</u> एक ब्यक्ति का टुटे रिश्ता का इतिहास दु:खद घटना में गिर जाता हैं जो उसमे प्रेम की कमी का स्थान बना लेता है।

२) ध्येय और चीजें खोखला को नहीं भर सक्ता।

१. सम्पति समृधि को दर्शाता है।

२. नौकरी स्वीकृति देता है।

३. बुध्दीवादी पहिचान प्रदान करता हैं।

उपसंहार :- चरम समर्पण आंतरिक खोखलापन को प्रकट कर सकता है।

३) सम्पूर्ण स्वयं केंद्रित ब्यक्ति

अ) हर्ष - स्वयं धन्यवादी

ब) धर्म - बचाने वाले की प्रतिमा

उपसंहार :- स्वयं एक दुष्ट ईश्वर है जो कभी संतुष्ट नही होता।

(३) तन्हाई और डर

१) ''स्वयं'' के चारो तरफ दीवाल बनाना कि आगे को चोटें न लगे

- अंतरात्मा असुरक्षा से परिपूर्ण तनहाई, भय, स्वयं दया और ब्यर्थता।

- बाहरी तौर पर दब्बु या प्रतियोगात्मक

२) तिरस्कार के भय से कायल

(४) स्वयं उपेक्षा

१) स्वयं के मूल्य को खोना

- दूसरों के उपेक्षा को सह लेना अपनी अयोग्यता को प्रकट करता है।

२) नकारात्मक – स्वयं – प्रतिमा

- अपने आप की दूसरो से हमेशा तुलना करना गलत है।

३) नुक्ता चीनी के दो नजरिये

- अपने स्वयं का विरोध (गल्ती निकालना)

- दूसरों का विरोध (मती ७:३) गलती निकालना)

(५) स्वयं की पहिचान खोना

१. उपेक्षा ब्यक्ति के पहिचान को बरबाद कर देता है।

२. किशोर समकक्ष दल मे पहिचान ढूढता हैं।

३. वयस्क पेशे में, कलीसिया मे, क्लब में इत्यादि पहिचान ढूंढता हैं।

उपसंहार :- मनुष्य परमेश्वर की समानता में बनाया गया हैं और केवल उसी मे वह अपना पहिचान ढूंढ सकता है। परमेश्वर एक नया रुप दे सकता है , रोमि ८:२९, २ कुरि -३:१८, मसीह के समानता में उसके समान्ता में परिवर्तित, हमारा नये नियम में पहिचान मसीह में पा सकते है।

(६) परमेश्वर के साथ अस्थिर सम्बन्ध :

१. जब तक उपेक्षा बना रहता है तब तक वह परमेश्वर के सच्चे संगति मे प्रवेश नही कर सकता।

अ) कार्यो को देखकर परमेश्वर से सम्बन्ध बनाना

ब) '' व्यस्तता" से प्रेम का चुनाव (कृया कलाप)

२. उपेक्षा जड से कटा विश्वास (अयोग्य महशूस करना वस्तुओं को प्राप्त करने में)

उपसंहार:- उपेक्षा की समस्या को जिसका सम्बन्ध परमेश्वर का साथ नही है अच्छी तरह प्रकट करना है।

(७) तिरस्कार का निश्चित चिन्ह ब्यक्ति प्रेम करने व देने मे अयोग्यता प्रदर्शित करता है।

३. <u>कोडों के घाव के कारण मरहम पट्टी :</u>

१) जो हम को चोट पहुँचाते है उनसे कोडों के घाव मरहम पट्टी बाँधता है।

२) चोट से जो कडवाहट महशूस करते है उससे कोडों के घाव मरहम बांधता है।

३) प्रेम देने लेने में कोडों के घाव मरहम बांधता है।

उपसंहार :- केवल पाप ही हमेशा अवसर नही होता कि किसी के जीवन मे शैतान स्थान ग्रहण कर ले। (मसीही सेवा और बढत घावों और मरहम के बंध से तौला जाता है। जैसे हमारे पाप से)

४. <u>कोडो के घाव का कारण कडवाहट :</u>

१) गहरी चोट उन्ही से आती है जो हमारे करीबी है।

अ) माता – पिता के संम्बन्धों से चोटे

ब) पती-पत्नी के सम्बन्धों से चोटे

२) कडवाहट किसी के सम्पूर्ण पध्दति प्रदुषित करता

अ) किसी के बोलने से आता है

ब) किसी के कर्म को देखकर

क) किसी के नजरिये में प्रकट होना।

ड) शारीरिक देह का नुकशान।

३) कडवाहट अलगाव की दीवारें बनाती है

अ) आगे की चोट का भय

ब) लागों का अविश्वास और डर

क) आंतरिक चोट का डर और कमजोरी के प्रकट होने का भय।

ड) अकेलापन

इ) जीवन में लागों से अलग होना

ई) भरोषा का आधार नहीं

उ) दूसरों के प्रति काफी निन्दनीय नजरियां

<u>टुटे सम्बन्धों का नुकसान</u>

१. टुटा रिश्ता काला धब्बा है (१ यूहन्ना – २:९-११) अंधेरे में चलता है, दिशाहीन, ठोकर खाने का कारण अपने

आप को न देख पाना, दूसरों को न देखना, इत्यादि

अ) काला धब्बा बुध्दिमानी के साथ कार्य करने के लिए रोकता है

ब) काला धब्बा अपने आप को देखने से रोकती है

क) काला धब्बा दूसरों को वास्तव मे जैसे है वैसे देखने नही देता ।

२. असंबेदनशीलता का कारण टुटा रिश्ता

अ) जीवन स्वयं केंद्रित हो जात है

ब) दूसरों के जरुरतो के प्रति उदासीनता

३. अपरिपक्ता का कारण टुटा सम्बन्ध है

अ) जख्म के वक्त भावनात्मक विकाश नही होता

ब) शरीर के साथ ब्यक्तित्व परिपक्व नही होता

(दोनों मामलो में छिपा शिशुता)

अक्षमाशीलता के दुष्प्रभाव (विनाश)

अ) विरोध कड़वाहट में बदल जाता है ।

ब) दोष घृणा बन जाता है ।

क) धोखा विकृत बन जाता है ।

कड़वाहट शैतान के कार्य के लिए कोठी है । यह किसी भी मसीही को सत्यनाश कर देगा । इससे बचने का उपाय क्षमा के आत्मा मे लगातार बने रहना । जब शैतान कोड़े लगाने आता है, चोट की न ले (इफि ४:२७) तुरन्त क्षमा द्वारा निकाल दे ।

यीशु आए :

"...कुचले हुओं को छुड़ाऊँ।" लूका ४:१८

"...हमारी ही शांति के लिए उ पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ।" यशायाह ५३:५

तिरस्कार में से बाहर निकलने के कदम:

१. उन्हे क्षमा करो जो तुम्हे उपेक्षित किया ।

२. तमाम तिरस्कार को यीशु पर छाड़ दें (यशा – ५३:१३)

अ) यीशु उपेक्षा को लिया

ब) परमेश्वर द्वारा उपेक्षा को सहा

क) पतिज्ञा : यिर्मयाह ३०:१७

प्रेम में स्वीकार किए गये हो इय तथ्य को ग्रहण कर लो (इफि १:६)

३. मसीह मे अपनी पहिचान को तलाशें :-

अ) उसकी प्रतिमा (समानता) (२ कुरी – ३:१८)

ब) उसकी हाथ की कारीगरी – (इफि २:१०)

क) नयी सृष्टि – (२ कुरि – ५:१७)

४. अपने को स्वीकारें

अ) अपने विगत बातों के लिए क्षमा करें

ब) पिता के प्रेम को प्राप्त करने के द्वारा

(रोमियों – ८:१५, ३८-३९)

५. अपनी छुटकारें का दावा करें और आंतरिक चंगाई पायें ।

छुटकारे की सेवकाई उपक्षा की जड़ को काट देता है। बन्धन औ ताड़ना अवश्य टुटना चाहिए जैसे धोखे का झूठ। शैतानी शक्ति जरुर इस क्षेत्र में कार्य करता है। याद रखें – परमेश्वर में कोई उपेक्षा नही है।

यीशु की उपेक्षा की गई ....
.... वह हमारे ही अधर्मो के लिए कुचला गया (यशा ५३:५)
तौभी परमेश्वर को यही भाया कि उसे कुचलें ...... (यशा – ५३:१०)

अ) करीबी मित्रो द्वारा पकड़वाया गया
ब) तिरस्कार किया गया – (यशा– ५३:२-३)
क) दोषी ठहराया गया – (मती -१२:२४)
ड) फरीसियों द्वारा घृणा किया गया
इ) ठीक जरुरत के वक्त उनके ही शिष्यो ने छोड़ दिया (इब्रानी – ५:७-१०)

आंतरीक चंगौंई का उद्देश्य है : शांति

(रोमियो – १६:२०)

अ) दूसरो के संग शांति
ब) अपने आप केसाथ शांति
क) परमेश्वर के संग शांति

आंतरिक चंगाई के सीढ़ियाँ

१. सुनना
अ) समस्याओं का अवलोकर करें
ब) मूल समस्या और उपरी समस्या के फासले को पहिचाने
१) उपरी समस्या में घटनाओं की गलानी और डर से भरा होना
२) मूल समस्याएं कई विचलित करनेवाली यादों पर एक मूल जड जर (गुंथी) बनी होती है।

२. भूतकाल को भूल जाएं
क्षमा के द्वारा
पिछले दिनों मे यीशु के साथ थे, के द्वारा
शैतान के बंधनी को तोडने के द्वारा

सावधानियाँ

१. आंतरिक चंगाई मे भूतकाल की कुडे करकट को खोदना नही है।
२. अर्न्तनिरीक्षण में मशगूल न हो।
३. चंगाई की सेवकाई परमेश्वर की सेवकाई है।
कोई एक संवदेनशील रहे ताकि देखे कि कोई क्या रहा है।
४. आत्मा के कार्य को विधिवत में न बांधे
५. दुर्दनाक यादों को सहने के लिए ब्यक्तियों को विश्वास मे प्रयाप्त मजबूत रहना चाहिए। धक्का न दें।

चोटों को क्षमा द्वारा स्वतंत्र (छोड) करें

परिचय : कई मसीहीयों का प्रताडित शत्रु द्वारा किया गया कारण अक्षमा। अक्षमाशील शत्रु को वैधानिक दॉव देता है कि वह सताव और दु:ख देने मे आगे बढे। कडवाहट, अक्षमा के वजह से बनता है। यही प्रत्येक बुराई का जड है। शैतान मसीहियों और विश्वासियों का आदर करता है जब वे अक्षमलीलता मे चलते है।

वचन : स्वतंत्र करो / भूल जाओ तो तुम भी स्वतंत्र किए जाओगे (लूक – ६:३७)

शोध : कडवाहट को छोडने की चाबी क्षमा है।

क्षमा की परिभाषा :

मती -२८२-३५, '' कर्जदार दास"
'' .... छोड दिया और कर्ज भी माफ कर दिया" (मती – १८:२७)
पद ३५ '' अपने .... ह्रदय से क्षमा"

यूनानी शब्द '' अवुल्लो "

१. आजाद करना – किसी वस्तु से स्वतंत्र करना
उदा. .... हे नारी तू अपनी दुर्बलता से छूट गई (लूक १३:१२)

२. जाने देना – बन्धन से खोल देना।
उदा. तब दास के स्वामी ...... उसे छोड दिया और उसका कर्ज भी माफ कर दिया (मती-१८:२७)

क्षमा विगत चोटों से छुटकारा करता हैं

१. जो बिते चोट के बंधन को लिए फिरता /उसी से नियंत्रित भी होत है।
अ) वर्तमान में जीना मुश्किल
ब) भूतकाल की कडवाहट वर्तमान के सम्बन्धो में बहता है।

२. जों विगत चोट को लिए फिरता है पुराने लोगो से बंन्धन में रहता है (अलग)
अ) अक्षमा द्वारा दूसरों के पाप के कारण आप अधिकार में रख सकते है (यूहन्ना – २०:२२-२३)
ब) दूसरों के पापो को बनाए रखने के द्वारा आप उनके समान हो जाते है।

३. जो चोट को लिए रहता प्रताडित होता है
उदा. एक दास जिसने क्षमा करने से इन्कार किया (मती १८:२१-२५)
अ) दास को दुष्ट कहा गया है – (मती – १८:३२)
ब) परमेश्वर की दया की ज्योति मे, दूसरों के प्रति हमारी नजरिया कैसी होनी चाहिए ?
क) छुटकारे की प्रार्थना क्षमा के बाद आती है
नमूना प्रार्थना : .... दुष्टता से हमें छुडा .... (मती ६:९-१३)

क्षमा परमेश्वर को स्वतंत्र करता है :

१. आपके लिए परमेश्वर की क्षमा आपके क्षमा से छूटती (बहती) है (मती -६:१४-१५, मरकु -११:२३-२८)
सिध्दांत : क्षमा कर परमेश्वर के समान ही, प्रति धारण कर उसके समान बन जिसने आपको चोट पहुँचाई।
क) अक्षमा समय के बाद भी नही बदलता ?
अ) अक्षमा का पाप शैतान को स्थान देता है।

ब) छुटकारा क्षमा के साथ बराबरी का है (इफि -१:७)

२. क्षमा दूसरों के लिए परमेश्वर का क्षमा बहाता है। जो भी तुम पृथ्वी पर खोलोगे .. (मती-१८:१८)

३. यदि आप मे से दो सहमत हो .... (मती -१८:१९-२०)

४. क्षमा आप पर परमेश्वर की चंगाई लाता है

१. कुछ स्वयं को क्षमा करने की आवश्यकता

२. दूसरों मे ईश्वरीय छुटकारे की जरुरत.

उपसंहार :

१. क्षमा एक इच्छा का कर्म है : आप क्षमा करना चुनते हैं एहसास बाद मे आता है। जैसे आप किसी को छोडते है, परमेश्वर आपको चोट और चंगाई कार्य करनी है।

२. क्षमा करने मे परमेश्वर के समान हो

अ) विगत बिगडे सम्बन्धों की सुचि बनाए

ब) कारण जानने की विवेचना करे

क) प्रत्येक सम्बन्ध से निपटे और क्षमा करने के द्वारा लोगों को स्वतंत्र करें।

ड) आपको उस ब्यक्ति से क्षमा मांगने की जरूरत है जिसके लिए आप दोषी थे आपके उस अक्षमा नजरिये के लिए।

समलैंगिकता

परिचय : स्वयं के पहिचान को खोने के आखिरी पर व्यक्ति लैंगिक भूमिका के भ्रम से आता है । इस परिस्थिति में, शरीर ईश्वर बन जाता, जोश स्वछन्द संभोगी जीवन जिसमें प्रेम नही होता मोड दिया जाता है किन्तु यह अभिलाषा से शासित होता है । बलवा और असुरक्षा ब्यक्ति को वहा तक खीचता है जब वह पाप में पूर्ण रुप से नहीं डूब जाता ।

अ) समलैंकिकता के लिए पवित्र शास्त्र के नजरिये

१. *परमेश्वर किसी को समलैंगिक सृष्टि नहीं की*

अ) आरंम्भ मे परमेश्वर ने मनुष्य को नर और नारी करके बनाया (उत्पति- १:२७)

ब) पुरुष और स्त्री वे दोनो एक तन होंगे, (उत्पति- १:२८, २:२४)

२. *समलैंगिकता परमेश्वर के विरुध्द बलवा के कारण* (रोमियों -१:२४-२७)

अ) अविनाशी परमेश्वर की महिमा मनुष्य विनाशकारी मे बदल डाला । और अपनी महिना को खो दिया ।

ब) सच्चाई मे जीने के बदले, मनुष्य झूठ मे जीना चुन लिया और परमेश्वर उन्हे निम्न श्रेणी का पद दिया ।

३. *निम्न लिखित वचन समलैंगिकता के विषय में परमेश्वर के दृष्टिकोण की स्पस्ट करता है ।*

- लैब्य – १८:१२ ब्यवश्धा – २३:१७-१८
- लैब्य – २०:१३ रोमि – १:२४-२७
- ब्यवश्था – २२:५ १ कुरि – ६:९-१०

४. *समलैंगिकता निश्चित रुप से आत्मा के खिलाफ है।*

उदाहरण : सदोम के पुरुष – (उत्पति – १९)

बिन्यामीन के लोग – (न्यायी – १९)

५. *समलैंगिकता ही उनका ईश्वर है ।*

- देह और स्वयं परितोषण ।
- दूसरे वंश का लिंग देवता के साथ पुरुषागमन

२) समलैंगिकता एक चुनाव है ।

१. माता-पिता द्वारा चुनाव को प्रभाक्ति किया जाता है , रिश्तेदार, परिस्थतियां, इत्यादि निम्न उनके उदा.

अ) श्रीमान '' अ''

- घृणा और उपेक्षा अपने पिता की ओर
- ब्यक्तिगत पहिचान नहीं
- परिवार मां चलाती है
- तिरस्कार से जीवन प्रभावित है ।

ब) श्रीमान '' ब ''

- जानता है कि उसका पिता प्रेम करता, किंतु अपने पिता से डरता है ।
- भाइयो ने ग्रहण नही किया , लगातार नीचा किया ।
- अपने से बडे लडके से लैंगिक सम्बन्धो के कारण स्वीकृत महशूस किया
- १४ वर्ष मे लैंगिक बलात्कार - बहुत अकेलापन जीवन में ।

क) श्रीमती '' क''

- उपेक्षा का जीवन, लेपालक,
- पिता कम बाहों मे लेते, कभी खुश नही किया
- माता-पिता से हमेशा कडवाहट ।
- असुरक्षितता ।

- हमेशा अपने को पसंद न करना ।

ड) श्रीमती '' ड''

- माता-पिता द्वारा उपेक्षा ।
- बचपन में क्रूरता सहना ।
- स्वयं – घृणा और पूर्ण स्वयं उपेक्षा ।
- महिलाओं की ओर उपेक्षा, पुरुष का प्रतिमा लेना ।

<u>उपसंहार</u>

१. सबका अने माता-पिता से रिश्ता कमजोर रहा ।

२. आरम्भिक आयु मे सबने लैंगिक समस्या का पहचान में बधाएं पायी ।

३. बलवा उन्हे समलैंगिकता जैसी तत्वों की ओर मोड दिया ।

४. तिरस्कार खींचने की शक्ति बना कि समलैंगिकता में स्वीकार किया गया ।

३) समलैंगिकता अपने आप का विरोध करता है ।

१. उनके डर विनाशकारी होते है ।

१) सामान्य सम्बन्धों मे डर
२) तिरस्कार का डर
३) असफलता का डर

२. स्वयं उपेक्षा के प्रकार ।

१) स्वयं के लिंग का घृणा ।
२) अपने आप की ओर घृणा ।
३) स्वयं (अहमियत) पहिचान नहीं ।

३. दूसरों के उपेक्षा के प्रकार :

१) कडवाहट स्वयं अपना शिकार ढूंढता है ।
२) उपेक्षा का डर जीवन का मार्ग बन जाता है ।

टिप्पणी – समलैंगिकता आक्रमक और अल्पभाषी दोनो है ।

४) बहाने :

१) जिस तरह मैं बनाया गया हूँ मे सहायता नही कर सकता ।
२) दूसरों के समान ही मुझे भी अपनी लैंगिक आवश्यकता पूरी करने का अधिकार है ।
३) चिकित्सा से मे अपना लिंग बदल लूँगा और तब समाज मुझे ग्रहण करेंगी ।
४) समलैंगिक होकर मैं परमेश्वर की सेवा करूँगा परमेश्वर ग्रहण करेंगे जैसे भी मै हूँ ।

४) समलैंगिक की सेवकाई करना

१- बलवा के जड को ढूँढे ।
२- टूटे रिश्ते को घर मे ही पुन: स्थापित करें
३- सामान्य लैंगिक भूमिका में स्वयं के पूर्ण स्वीकार को ढूंढना – नवीनतम प्रतिमा ।
४- उपेक्षा से व्यवहार और तिरस्कार का भय ।
५- मन को नया बनाया – पाप के साथ निपटना ।
६- जीवन शैली में परिवर्तन ।

टिप्पणी – कुछ लोग जीवन के अंतिम दिनो में. लोगों के द्वारा परिस्थिति के कारण समलैंगिकता मे लाए गये, जैसे- जेल में, फौजी नौकरी, दो ब्यक्तियो के लैंगिकता का अनुभवे, इत्यादि । इनका आरम्भिक बचपन में गहरी जडे जमाने की समस्या नहीं है ।

उपसंहार : यहां पर समलैंगिकताओं के लिए सहायता और छुटकारा है (१कुरिन्थ – ६:११) मसीह के प्रेम में उन्हे ग्रहण करना, सच्चाई में अगुवाई करना । अपने कदम स्थिरता से उन्हे तिरस्कर किए वगैर हों । मूलों के साथ सौदा करना । छुटकारे की सेवकाई करना ।

गूढ और दुष्ट आत्माओं से निबटना :

आगे बढने की प्रकृया के लिए, मैं उन्हे जताना चाहता हूँ जो इस अध्यायन को ले रहे है – वे बाइबिल की शिक्षा से जागृत है ।
अ) शैतान और दुष्टआत्माओ का अस्तित्व में होना ।
ब) सच्चाई यह है कि यीशु मसीह शैतान और उसके दूतो पर पूर्ण सफलता प्राप्त की हैं और क्रूस पर निहत्था कर दिया ।
क) यीशु मसीह अपने नाम में अधिकार और शक्ति दिया है और आज्ञा दी है कि जैसे उसने कार्य किया और निकाला वैसा ही करें ।

इसलिए हमे कुछ व्यवहारिक बाते शामिल है उस पर विचार करें ।
शैतान मसीही को हासिल नही कर सकता, किन्तु किसी एक में बस सकते हैं, सताना, ताडना देना, बांधना, भ्रमित , धोखा देना और सामान्यत: तनाव में मसीही को रखता है । शैतान को अधिकार है कि धरती के धरातल पर चले किन्तु उन्हे अधिकार नही हे कि किसी मनुष्य के जीवन में आमंत्रण के बगैर आक्रमण करके प्रवेश करे । या अन्य अनुकूल मौको पर । एक मनुष्य अपने इच्छा को स्वयं नियंत्रण करता है । जो भी हो वे नियंत्रण पाते या निम्न बातों मे वे प्रभावित करते है ।

दृष्ट आत्माएँ नियंत्रण प्राप्त कर सकते है ।

अ- मनुष्य द्वारा जानबूझ कर आदर या अराधना के चुनाव द्वारा । यह मूर्तिपूजा में, योगा, सब प्रकार का जादूटोना, तंत्र-मंत्र इत्यादि । सब प्रकार का रहस्यमय कर्म । मूर्तिपूजा आत्मिक ब्यभिचार है और पौलुस कहता है कि जो वेश्या से एक होत है उसके साथ एम तन हो जाता है, उसी प्रकार जान बूझकर मूर्तिपूजा या ऐसी कृयाकर्म मनुष्य के जीवन में अधिक बन्धन सिवाय अन्य पापों के क्योंकि वे अपनी आत्मा में समर्थक पैदा कर लेते है । अत: सामन्यत: मसीह के पास आने के समय का पश्चाताप प्रयाप्त नही होते है ।
ब- हमारी तरफ से दूसरों का चुनाव – सामान्यत: बच्चों पर ताबीजों को पहनाना, या शिशु को किसी देवी या घटना के लिए समर्पित करना । श्राप भी ब्यक्ति को सताने का कारण हो सकता है ।
क- सदमा कभी-कभी बडी शोक के परिस्थिती में, ब्यक्तियों का स्वभाविक संचय फैलते है । (चूर-चूर हो जाते) है । और शैतान इसका पूरा फायदा उठाता है । यह प्राय : आत्माओं के भय की स्थिति में लागू होता है । या सदमा पर आक्षित होना, सम्भवत: अभिलाषा, हिन्सा आदि ।
ड - अपने स्वइच्छास में लिपटे रहने, आदत और नजरिया, लालसपूर्ण विचारों को रखकर प्रोत्साहन देना, अभिलाषी धारण बनाता है, और तुरन्त अभिलाषा का आत्मा अपना स्थान को लेने दौड पडता है । यही बात झूठ बोलने की आत्मा के साथा सच शाबित होती है, और अन्य दूसरे । जिन्हे हम सम्मति देते, जैसे विश्वासी और मसीही अधिकतर प्राय : इसी तरह आत्माएं पकड प्राप्त करती है, जब तक उनका पिछला जीवन अन्य देवी देवताओं के अराधना में बीता हो इत्यादि ।

दुष्ट आत्माओं के उपस्थिति को कैसे पहिचाने :

१) पवित्र आत्मा के वरदान के द्वारा – आत्माओं के परख या बुध्दि और ज्ञान के वचन द्वारा ।

२) कुछ विशेष लक्षणों के उपस्थिति द्वारा –
   अ) खीचना – नोचना, चीजों को करने का दबाव, विशेष कर बेजोड बातों में ।
   ब) परिवर्तन में अयोग्यता, प्राय: इसे लम्बित करना और खास प्रयास करना ।
   क) महशूस या कर्म करने की बडी उत्सुकता भावना में, बातों में, मन में, या लतो के कारण में ।
   ड) ब्यक्ति स्वयं जानते है ।
   इ) तू स्वयं आखों में उठाने की परिवर्तन से, निद्रास्थति या जैसे भी आप ब्यक्तिगत तौर से भी पहचाने ।

उनके साथ कैसे ब्यवहार करें :

कठोर पकड के मामले में निश्चय ब्यक्ति स्वयं नियंत्रण मे नही होता, किन्तु अधिकतर मामलों मे हम कलीसिया मे मिलते है और जो होश में स्वयं आया है जिसको हम सम्मति देते है । इसलिए यह आवश्यक है कि उस ब्यक्ति से सच्चाई (ईमानदारी) की अपेक्षा कर कार्य करें । उनका सहयोग सफलता को निश्चित करता हमें शैतान को बाहर निकालना चाहिए । किन्तु सलाहकार इस विषय पर अब तक इसमें सकारात्मक विचार किया है ।

कदम जिसे लेना

- आत्माओं की पहचान, सम्मती के दौरान यह स्पष्ट हो जाता है ।
- जिसमें वह बैठता उस भूमि को हटा दें , यही भी बात को स्पस्ट करता है । इस पर नियंत्रण कैसे पाया इसलिए पापों कि लिए पश्चाताप जरुरी है, शामिल होने की छोडने, जिसे आप सम्मति दे रहे हैं उनको जिससे चोट पहुचाई है क्षमा करना ।
- उसे नाम से पुकारें हमें परमेश्वर से न मांगे कि वह करं, या यीशु ही बाहर निकालेगा, उसने हमसे काह है कि हमें शैतान को निकालना है । मरकुस १६:१७
- बांध दे उसे – मती – १२३२९, १८:१८, १६:१९ यह ऐसे क्रम में है कि यह सम्मति प्राप्त करने वाले को या किसी को भी हानि नही पहुँचाता है ।
- उसे यीशू के नाम में आज्ञा दे कि निकल जाए । यह सम्म्ति प्राप्त करने वाले के लिए अच्छा है, अन्यथा वे अपनी ही प्रार्थना और धुडकना, उनके साथ आगे का सम्बन्ध, या आपके बार प्रार्थना का दुहराना, जो उसके नजरिये की सही सही अभिब्यक्त करता है ।
- पवित्र आत्मा में भरने के लिए प्रार्थना – बुराई के वजह से घायलों को मरने की सबसे बडी आवश्यकता विशेषकर उन दानों और दया जरुरत है । जैसे झूठ बोलने वाली आत्मा को निकालने के बाद सत्य के हथियार के लिए भी । परामर्शी को अनुकूल पवित्र वचन देना उनके मनन के लिए और उन्हे उत्साहित करने के लिए पुनः भेंट दे ।

समाप्ति

यह अच्छा है कि सम्मति के दौरान जितनी चर्चा की गई सब बातें परमेश्वर के हाथो मे वापर सौंप दिया जाए ।

पाप जो कबूल किया उसे भूल जाने में उसके साथ सहमत होना ।

आप देखे कि परामर्शी के पास लिखित वचन है, जो सन्मति के दौरान दिये गये ।

एक दूसरे को सहयोग करना यीशु के नाम, उसके प्यार और संरक्षण में ।

यह सरल किन्तु प्रभावशाली गहरी अभ्यास और विशेषकर कलीसिया में हमे किसी अन्य पर निर्भर होने से स्वतंत्र करता है, और एक दूसरों की जीवन में शामिल होने को देता है ।

शैतान ग्रस्त और भूत प्रताडित की सम्मति देना

अ – क्या शैतान वास्तविक हैं ?

वे क्या है और वे क्या करना चाहते है ? उनका उगम क्या है, और वे शैतान की सेना के हिस्सा जिनके विरोध में संतो को विश्वास की कुश्ती लडनी पडती है (आत्मिक यध्द) कि जय पायें ? मरकुस – ५:२, मती – ४:२४

ब- शैतान के आक्रमण के तीन कट

संसारिक ब्यक्तियों के साथ शैतान तीन क्षेत्रो में सीमा पार करता है, किन्तु मसीहियों के मामले में केवल दो रास्तों से प्रवेश करते हैं – शरीर और प्राण (या मन) । वह लालसा करता है, चाहे जो भी हो विश्वासियों के आत्मा को निमंत्रण करता है ।

हमारी लडाई आत्मिक कमजोरियों के विरुध और अंधकार के शासकों पर (इफि – ६:१०-१२, २ कुरि-१०:३-४) युध्द चौथाई लडाई में सिमट गया और तुम अंधकार की शक्तियों के संग उस चौथाई में हाथापाई कर रहे है यह भी दबाव की नितियों का प्रस्ताव भी । उसका राज्य उच्च संगठित शैतान के यह धर्माधिकारी से है । अत: शब्द अधिकार या राज्य सीमा और शैतानी राजकुमार का राज्य । शक्ति शब्द का अर्थ प्राधिकार दिखाता है कि शैतान को सीमा पर शक्ति दिया गया है । फिर भी महान प्राधिकार कलीसिया को दिया गया हैं (मरकुस – १६:१७-१९, लूक – १०:१९, लूक ९:१) हाल्लेलूयाह ।

विशेष नोट :

शैतानी आत्माएँ सीमा पार कर सकती हैं, परन्तु मसीहियों के विरुध्द उन्हे कोई वैधानिक अधिकार नही है (लूक – ११:२०-२२) , में दुष्ट आत्माएँ और पतित दूत के केवल एक कार्य और उद्देश्य है – दुष्टता (यूहन्ना १०:१०) पिशाच की शक्तियों को क्रम से रख कर और शैतान द्वारा अधिकार देकर समस्त संसार को नियंत्रण और अपयकारक उत्पात से काम करना है । हम, कलीसिया इस चुनौती को लेकर उसका सामना करना और देखना कि वह भाग गया (याकूब – ४:७) शैतान आपको सर्वनाश और आपके परिवार, कलीसिया, समाज और राष्ट्र पर फतह हासिल करना चाहता है । क्या आप शत्रुको उखाड फेकने के लिए आगे बढकर आक्रमण कर रहे है । याद रखे, युध्द प्रार्थना नहीं है (२ कुरि -४:३-४, १ तिमु -४:१)

क – छुटकारे का मूल्य

एक विश्वासी के नाते कोई दाग या झुर्री नही होना (इफि – ५:२५-२७, प्रका- १९:७, याकूब – १:२३-२५, २ कूरि -३:१६)

ड- शैतन कैसे प्रवेश करते या उन्हे क्या अनुमती है देता कि प्रवेश करे ?

दुष्ट आत्माओं को बुराई करने की जबाबदारी - ये आत्माएं है और परमेश्वर और मनुष्य के शत्रु हे । उनका मुख्ख्य कार्य परीक्षा, धोखा , दोष , और दोषी ठहराना है । आप दुष्टात्मा को गलियों में चलते-फिरते संसारिक लोगों से उठा नही सकते, वे द्वार के माध्यम से भी प्रवेश कर सकते है ।

निम्न लिखित द्वारों को ध्यान देना चाहिए :

१. देह के पाप – बहुत अनुग्रह और गलत दया (स्वयं क्षमा)
   गलाती – अध्याय ५ से शरीर के १७ कार्यो की सूची बनाएँ ।

२. जीवन के परिस्थितियाँ : (आंतरिक चंगाई के लिए जरूरतों को रेखांकित करना)
   १) बचपन में तिरस्कार
   २) माता-पिता का तलाक
   ३) माता-पिता के नशीले लत

३. अनुवांशिक या वंशजो के दूत (भूत)-

(परिवार पर श्राप को तोडने की आवश्यकता)

४. सदमापूर्ण अनुभवें –(घनिष्ट मित्रों का मृत्यु, वाहन दुर्घटना)

५. रहस्यमय बातो में मन लगाना – लैब्य – २०:६, गला ५:९-२१)

६. परमेश्वर के वचन का किसी भी प्रकार का अनाज्ञाकरिता ।

७. झूठी सिध्दांत – अपने सिंह को सच्चाई से न बाँधना ।

जैसे : झूठी – धर्म, मसीही –गुप्तपाप, रहस्यम और आत्माओं का खेल, गलत सिध्दांत ।

इ) छुटकारे के लिए विभिन्न रास्तों का निर्धारण करना :

१. आत्माओं के परख का वरदान – (१ कुरि – १२:१०)

२. ज्ञान और बुध्दि के वचन का दान – (१ कुरि – १२:८)

३. अवरोध – लोगों की सामान्य निगरानी और उनके कर्म को जानना कि दुष्टात्मा के उपस्थिति का प्रकृति । यीशु के समय मे लोग शैतान के संग अच्छी तरह जान –पहचान थी ।

कुछ सर्व सामान्य लक्षण शैतान को पता लगना निम्न हैं ।

३.१ भावनात्मक समस्याएँ और अस्थिरता, जो जारी रहता या स्मरण आता हैं ।

३.२ मानसिक समस्याएँ ।

३.३ बोलने की समस्या-तोतली भाषाएँ, झूठ और शाप, दोषारोपण ।

३.४ लैंगिक समस्याएँ ।

३.५ बुरी लत ।

३.६ शारीरिक दुर्बलताएं (लूक १३:११)

३.७ धार्मिक गलतियाँ – एक बडा सहयोगी (यूह – ८:३२)

ई) छूटकारें के सीढियाँ –

१. इमानदारी – भजन – ३२:५, १३९:२३-२४

२. नम्रता - याकूब – ४:६-७

३. पश्चाताप – महेजकेल – २०:४३

४. आत्मत्याग – मती – ६:१४-१५, योएल – २:३२

५. प्रार्थना

६. संग्राम – मरकुस – १६:१७, लूक -१०:१९, भजन -१ ८:२

उ) छुटकारें को बनाये रखने का कदम :

१ - परमेश्वर के सारे हथियार पहन लेना – (इपी – ६:१०-१८)

२- सकारात्मक कबूली हो - यह विश्वास का अभिब्यक्ति है (मरकुस- ११:२३)

३- वचनों मे ठहरना – (भजन – १:१-३)

४- देह को क्रूस पर चढाना और सीखने के लिए समर्पित (गला -५:१९-२४)

५- अराधना और स्तुति जीवन में विकसित करना – (१ थिस्लु -५:१७)

६- आत्मिक सेवकाई और संगति के जीवन को बनाएं रखना

७- मसीह और कलीसिया के साथ पूर्ण समर्पण

८- सही सम्बन्ध और सही दृष्टिकोणे को हासिल करना ।

जारी रखने के पूर्व - कृपया निम्न ११ बिन्दुओं को ध्यान दें (१-११)

१) *पश्चाताप के लिए कोई दूसरा सोपान नही है।*

१- मनुष्य अपने ही चुनाव और प्रत्युतर के लिए जबाबदार हे।

२- पश्चाताप के दृष्टिकोण के द्वारा मसीही जीवन को बनाए रखना (क्षमाशीलता के साथ जीना)

२) *संयम (स्वयं सुधार) के अलावा कोई सोपान नहीं है।*

१- छुटकारा ब्यक्ति को अनुशासन नहीं देता।

२- अनुशासन सीखना और अभ्यास करना चाहिए।

३- ब्यक्तियों के जीवन में अनुशासन क्रम (संस्कृति) लाता हैं।

४- दुष्टआत्माएं अधिकतर कार्यो को अंधधुंध तरीके से कार्य करती है।

३) देह का सलीब पर चढाने के कोई दूसरा वजीरहीं

१- कोई दूत को सलीब पर नहीं चढा सकता।

२- कोई शरीर को फेंक नही सकता।

४) गलतियों को कबूल करने और क्षमा के लिए कोई दूसरा प्रतिनिधी नहीं :

१- छुटकारे के लिए क्षमा द्वारा जरुर मैदान बनाना चाहिए और गलतियों तथा पापों को कबूल करना

२- कडवाहट केवल क्षमा द्वारा छुटकारा पा सकता है।

५) जब ब्यक्ति स्थान देता है तभी दूत प्रवेश करता है : शैतान को स्थान मत दो (इफि ४:२७)

१- कुछ चीजे हे जो शैतानी दूत को जगह देते है : आत्माओ कों बुलाना, दृष्ढता से किया गया पाप।

२- एक मसीही जो उसके लिए द्वार खोलता है उसका वह आदर नहीं करता है।

६) दुष्ट आत्मा बाहर निकाल सकते है, परन्तु जिस स्थान पर वह था उसे बाहर नहीं किय जा सकता हैं।

१- जब तक कि उस स्थान से निपटते नहीं, स्थायी समाधान नहीं प्राप्त किया जा सकता है।
(मती -१२:४३-४५)

२- अपने युध्द के हथियार से शैतान के गढो को गिरा डालों कि शत्रु भागना ही चाहिए।
(नीति – २१:२२, २ कुरि – १०:१४)

७) छुटकारे के श्रेणी हैं।

१- श्रेणीतर के लिए सत्य को ग्रहण करना, कि परमेश्वर का आत्मा छुटकारा लायेगा।
(यूहन्ना -८:३१-३२)

२- समझ की श्रेणी शत्रु के विषय में और स्थान, से कोई भी प्रभावशाली सामना कर सकता हैं।

८) छुटकारा प्राप्त करने के लिए पवित्रशास्त्र का आधार सच्चाई है।

१- मसीह के पूर्ण छुटकारे की सत्यता को हासिल करें (१ यूहन्ना – ३:८)

२- शैतान के कार्यो के विषय की सच्चाई को प्राप्त करना (यूहन्ना १०:१०)

३- स्वयं के विषय सच्चाई को समझना (रोमि- १६:१९-२०)

९) अपने स्वयं की जबाबदारी को स्वीकार करना सच्चाई प्राप्त करने की बात है।
(फिली – २:१२-१३, रोमि – १२:२)

१- जो भी वह है उसके लिए मनुष्य स्वयं जिम्मेदार है।

२- जैसे ही वह इस जिम्मेदारी को कबूल करता है छुटकारा वही है।

१०) जो सिध्दांत हमारा है वह अपने आप अनुभव में नही है।

१- किसी के जीवन का क्षेत्र अनछुआ तब तक हो सकता है कि मसीह मे विश्वास के साथ छुटकारे के लिए उस क्षेत्र में काम नही करते।

२- लहू का वाचा शैतान के शक्ति को तोडता है , वाचा के साथ विश्वास जुडा रहना चाहिए ताकि इसमे फायदों को प्राप्त किया जा सके।

११) शक्ति के बिपरीत सामर्थ्य का प्रयोग होना चाहिए ।

१- शैतान अपने से अधिक शक्तिमान का आदर करता है (१ यूहन्ना ४:४)

२- कोई भी शत्रु के विरुध्द आक्रामक होना चाहिए ।

३- बलशाली पुरुष जरुर बांधा जाए (मती १२:२९)

उपसंहार : परमेश्वर का आत्मा जीवन में आने से सो शत्रु को कार्यो को छिपा कर नही रख सकता । जैसे ही आत्मा उसके कार्य को प्रकट करता, विश्वासी को उठ खडा होना, और अपने आप को विश्वास से ढककर शत्रु के विरोध मे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को स्वतंत्र करने लिए खडे होना जैसे परमेश्वर उसके लिए चाहता है ।

ऊ) खाली मकान को भरना – (मती – १२:४३-४५)

पवित्र आत्मा के सामर्थ के साथ नौ वरदानों में प्रचालित होना । परमेश्वर के आत्मा का अलौकिक वरदान शैतान के कायो का विरोध और घृणा करता है । पवित्र आत्मा का बपतिस्मा जरुरी है । आत्माओं के फल (गलति – ५:२२-२३) प्रेम, आनन्द, शांति, धीरज, भलाई, मेल, कृपा, विश्वास, नम्रता और संयम है । शैतान इसके ठीक बिपरीत चरित्र का फल और यीशु के विरुध्द है । मकान को भरापूरा रखना चाहिए ।

ए) शैतान के प्रकटीकरण :

दुष्ट आत्माएँ कभी – कभी अपने स्वभाविक गुणों की निम्न खास मार्गो तरीकों से प्रकट करना है ।

१- सर्प के समान करना – जीभ, शरीर इत्यादि ।

२- नाक – फूॅफकारना, फूॅफकार आवाज निकालना ।

३- झूठ का भरना - या बेहोश होना – शरीर ठण्डा हो जाता है । और आत्मा के मृत्यु की दशा मे दिल का दौरा भी नही महशूस होता ।

४- सांस सूँचना ।

५- कई ऊँची आवाज से चीखते है ।

६- घमण्डी या लगभग गर्व से भरा दिखना ।

७- लय के साथ नाचनेवाला आत्माऐं शारीरिक गतिविधी से प्रकट करते हैं ।

८- अट्टाहास हंसी ।

९- दर्द

१०- रोना

११- हंसना

१२- वे निडर (अनाज्ञापूर्ण) होकर बोलना

ऐ) जब शैतान छोडते है तो प्रकटीकरण (चिंह)

दुष्ट आत्माएं सामन्यत: मुह या नाक से छोडकर निकलता और या इनसे चिन्ह पा सकते है ।

खांसना और बलगम लाना

उल्टी करना – बलगम

लार गिरना –

थूँकना – बलगम

झाग निकलना –

चींखना –

आहे भरकर दु:ख प्रकट करना

डकारना

हंसते हंसते लोट जाना

बुदबुदाना और गले के आसपास रुकावट महशूस कराहना ।

ओ) आप एक छुटकारा करनेवाला सेवक :

१- भय पर विजय पाना

२- व्यक्तिगत मांगे

- समय - प्यार और बुध्दिमान
- उर्जा - दोष मुक्त
- धीरज - दूसरों के भार उठाना
- समर्पण - प्रार्थना और उपवास
- आशिष और फायदे

औ) हमारी बुरी आत्माओं को कैसे निकाले ?

१- परमेश्वर का वचन आत्मा तलवार है (इफि – ६:१७)

२- यीशु का नाम – (लूक १६: १७)

छुटकारे का सेवक

परिचय :

मसीह के दह को छुटकारे की सेवकाई दी गई है कि कलीसिया के सेवकाई के पॉच सिध्दांतो के साथ मिलकर करें । मैं विश्वास करता हूँ कि प्रत्येक को विभिन्ना अभिषेक प्रदान किया गया हैं जिसमें आत्माओं के परख का वरदान प्रचालित हो, और हम पाते है कि शैतान के सताए हुओं की सेवकाई कर रहे हैं । यह सेवा छुटकारे को प्राप्त करने की के लिए ब्यकित को आत्मिक ताकतों के विरुध्द युध्द करने में प्रवेश करने की मांग करता है । वह निश्चय पूर्ण देह के सहयोग की आवश्यकता होती है ।

१) उसका ब्यक्तिगत जीवन :

१) अनुशासित जीवन में :

अ) प्रार्थना

ब) उपवास (अविश्वास का उपचार (मती – १७:२०-२१)

क) वचन

२) जीवन में संतुलन :

अ) आराम और चिन्तन (शक्ति प्राप्त करना)

ब) परिवार

क) सेवकाई

३) जीवन में ब्यक्तिगत शुध्दता :

" जो शत्रु के सिमा में बिना सताए गये में बढने के स्पतंत्र है उसी को धार्मिकता और बुराई के प्रति घृणा के लिए जोश है । "

१- शरीर और आत्मा के अशुध्दता को साफ करना (१ कुरिन्थ -७:१ १ कुरिन्थ – ९:२७)

२- परमेश्वर के भय में पवित्रता मे सिध्द होना (२ कुरिन्थ ७::१)

२) उसकी सेवकाई

१) जैसा चाहिए वैसे ही नियंत्रण :

अ- सेवकाई के लिए समय देना ।

१- शैतान को अनुमती न दे कि वह आपको सेवा में ढकेले । आप मौकों व्कोपकड़े आप नियंत्रण रखें ।

२- दिन और घण्टो को इस सेवकाई मे देने के लिए सीमित करें ।

ब- लोग जो सेवकाई प्राप्त करते हैं ।

१- क्या वह ब्यक्ति तैयार है या केवल लाभ पाना चाहता है ।

२- क्या ब्यक्ति केवल सेवकाई चाहता है और स्थायी छुटकारा नही ?

३- क्या उस ब्यक्ति को प्रयाप्त सच्चाई पता है कि ठुटकारे को बनाए रख सके ।

२) परचख के लिए प्रार्थना :

१- परख एक दान (१ कुरिन्थ – १२)

२- अनुभव और चतुराई (जागृति) से दोनों को विकसित किया जा सकता है ।

३) अधिकार और सामर्थ के साथ सेवकाई :

अधिकर अनुसार श्रेणी :

१- विश्वास के एवज में पवित्र आत्मा की शक्ति का श्रेणी ।

२- मसीह के अधिकर में कोई अपने आप को समर्पित करना ।

सिध्दांत : अधिकार के आधीनता में अधिकर प्रदान करती है ।

३- ब्यक्तिगत लोंगो के जीवन में विजय का श्रेणी । आत्मा की भरपूरी शक्ति प्रदान करती है ।

४) संसार का ज्ञान होना चाहिए ।

अ) शैतान झूठ और धोखेबाज पिता हैं ।

ब) झूठों कै शैतान को वचन के साथ ही मिनला चाहिए (मती -४: यीशु के समान यह लिखित है)

क) वचन अधिकर और शक्ति देता है ।

ड) वचन दोधारी तलवार होता है ।

५) परमेश्वर के तरस के साथ सेवकाई करें

१- शर्तहीन प्यार और स्वीकृति

२- सत्य को प्रेम के साथ मिलना ।

६) सेवकाई को पूरी गोपनीयता के साथ रखें ।

७) वयस्क ब्यक्ति के हुजूरी में सेवा करें

३) उसका अभिषेक

दाउद का अभिषेक (भजन – १८:५०)

१- परमेश्वर हमारा बल हो जाता है – (भजन १८:१-३)

२- सताये गयें लोंगो तक पहुँचना (भजन – १८:१६-१९)

३- हाथों की शुध्दता के अनुसार देना (भजन १८:२०-२४)

४- अलौकिक सामर्थ्य (भजन १९:२६-३६)

५- शत्रु पर विजय (भजन – १८:३७-४५)

६- सुरक्षा – (भजन – १८:४६-४९)

उपसंहार : मत ड़र क्योंकि मैतेरे संग हूँ, इधर उधर मत ताक क्योंकि मे तेरा परमेश्वर हँ, मैं तुझे दृढ करुँगा और मै तेरी सहायता करुँगा, आपने धमैमय दाहिने हाथ से मै सम्भाले रहूँगा । देख, जो तुझ से क्रोधित है वे जब लज्जित होंगे, जो तुझसे झगड़ते हैं । उनके मुंह काले होंगे । और वे नष्ट होकर मिट जाएंगे (यशा – ४४:१०-१३ और भजन १४९:६-९ भी देंखे).

छुटकारे को कैसे बनाएं रखें

परिचय : इस धरती पर शत्रु शैतान धोखे और बल से आया शैतान हरेक कार्य को विरोध और धोख का तड़नाही इसका चाबी है। ठुटकारे को बनाण रखना यानि सच्चाई में चलना और शत्रु का विराध करना।

वचन : मसीह मे स्वतंत्रता के लिए हमें स्वतंत्र किया है अत: इसी मे स्थिर रहो, और दासत्व के जुए मे फिर से न जुतो। गलाती – ५:१

१) प्रतिदिन वचन पर खड़े होना।

१- मसीह मे अपना स्थान पाप कि लिए मरा हुआ के समान स्थान लें (रोमियों ६:११)

२- वचन मे डूब जाए (भजन ९१) और अपने हदय में छिप जाओ (भजन ११९:११)

३- प्रतिज्ञाओं पर खड़े रहना (इफि ६:१७)

निम्न समस्याओ के मामलो मे, सत्य के वचन से प्रतिवार करें

डर (भय)

परिस्थिती में (यशा – ४३:१-२)

शत्रु या मनुष्य का – (यशा ५२:१२-१६)

असफलता में (२ तियुथि – १:७, २ कुरि- २:१४)

चोंटो के चंगाई - यशा (६१:३ ,यिर्म - ३०:१७, यशा – ४३:१८-१९)

उपेक्षा :

यशा – ५३:३, ५४:४, यिर्म ३०:१७, इफि १:६

- दोष लगाना और दोषी ठहराना :

रोमि ८:१, ३३-३४, पूका – १२:१०-११

- अकर्मणयता (निष्कृय)

लूक -४:१८, १ पंत :१:१३, मरकुस – ११:२३

४- धोखे को खींच बाहर करनें लिए सत्य को मौका दे :

सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हे स्वतंत्र करेगा (यूहन्ना – ८:३१-३२)

अ- अपने आपके बिषय धोखा

ब- परमेश्वर के बारे मे धोखा

क- दूसरो के बिषय धोखा

२) शत्रु का सामना (विरोध)

इसलिए परमेश्वर के आधीन हो जाओ और शैतान का सामना करो तो वह तुम्हारे सामने से भाग जाएगा। (याकूब -४:७)

१- यीशु मसीह के लहूँ के भुमिका मे विरोध करें (प्रकाशित- १२:११)

- अपने बिजय को कबूल करे और छुटकारे को यीशु के लहू द्वारा प्राप्त करें।

२. शैतान पर अपने अधिकार को मसीह मे अपनी स्थिती के सत्यता में दावा करें

- इफि- १:२०-२१, २:६, कुलु- २:१३-१५, लूक – १०:१७ मती -२८:१८
- यीशु के नाम मे शैतान को आज्ञा देकर निकाल दें।

३. विश्वास की ढाल का प्रयोग करें और परीक्षा के वक्त आत्मा की तलवार को इस्तेमाल करें।

- इफि ६:१६, १ पत-५:९, मती – ४:४, ७, १०

- अपने मुंह से वचन को बोले ।

४. परमेश्वर के सारे हाथियार धारण कर लो ।

- परमेश्वर के हाथियार को पहिन लेने से सच में युध्द मे बढने के काबिल बनाता है
- परमेश्वर की धार्मिकता का कवच शैतान (शत्रु) के दोष लगाने से बचाता है ।
- परमेश्वर के शांति के जूते आंतरिक विरोध से स्वतंत्र करता है ।
- उध्दार का टोप मन को नया बनाता है

५. प्रत्येक विचारां को मसीह के आधीन करें (२ कुरिन्थ -१०:५)

३) परमेश्वर के संगति मे चलना

१. अपने आप को परमेश्वर को सौपना

- याकूब के दूसरे पहलू (याकूब-४:७)

अ- आज्ञाकारिता का संगित

ब- वांट जोहने का संगति (१ पत ५:६)

२. आत्मा मे चलना

अ- देह के अभिलाषा को पूरी न करना (गला ५:१६)

ब- आत्मा के द्वारा, इच्छा, शरीर की इच्छा मृत्यु को पहँचाता है (रोमि- ८:१३)

३. अपने ध्यान (मन) को उपर की ओर लगाना (कुलु -३:१-३)

४. उसकी ज्योति मे चलना (१ यूहन्ना-१:७)

अ- ज्योति में संगति है ।

ब- ज्योति मे शुध्दता है ।

उपसंहार — सलीब का पूर्ण स्वतंत्रता हमारी है । इसे कृयाशिल विश्वास से हमारे जीवन के प्रत्येक भाग में नियमित करता है । आप स्वयं परमेश्वर के कार्य का एक सीधा हिस्सा है । विश्वास से प्रत्युतर और शत्रु का सामना करे ।

बच्चों के छुटकारे की सेवकाई

परिचय

जैसे एक व्यक्ति उसके जीवन को देखता है, वह कुछ चक्रों को दोहराए जाते देखेगा - उदासी, डर और हार के चक्र। शैतान के पास एक व्यक्ति के जीवन को निरन्तर इन चक्रों में गिराते रहने और जीवन में कुछ लक्ष्यों को प्राप्त करने से रोके रखने का एक तरीका है।

आधारः शैतान एक बच्चे को घायल करता है और घाव के द्वारा उसे वश में रखता या अयोग्य बना देता है यहाँ तक कि वह एक सामान्य जीवन जीने के लिए स्वतंत्र नहीं रहता।

I. बच्चों को अस्वीकरण की चोटें लगती हैं

1. शैतान जन्म से पहले बच्चे को चोट दे सकता है।
    1. एक माँ न जन्मे बच्चे को अस्वीकरण दे सकती है।
    2. अधिकतर गोद लिए हुए बच्चे अस्वीकरण के शिकार होते हैं।

2. बच्चों को माँ की आत्मा से छुड़ाए जाने की आवश्यकता होती है।
    1. एक माँ उसके अपने अस्वीकरण दे सकती है।
    2. एक माँ जो अस्वीकरण का शिकार है अनजाने में बच्चे का गला घोंट देगी।
    3. अस्वीकरण की इन बाधाओं को पिघलाया जाना और बच्चे के हृदय को उसके माता-पिता के साथ जोड़ा जाना जरूरी है।
    4. एक लड़की जिसने उसके पिता का स्वीकरण नहीं पाया है अपने को एक स्त्री के रूप में स्वीकार नहीं कर सकेगी।
    5. एक पिता के स्वीकारण के बिना एक लड़का एक पुरुष की भूमिका को निभाने में कठिनाई महसूस करेगा।

निष्कर्षः अस्वीकरण के चक्रों को तोड़ने के लिए माता-पिता और बच्चों दोनों की सेवा की जानी जरूरी है।

II. बच्चे जादूटोना के सताव से पीड़ित होते हैं।

1. सीखने की समस्याएँ बन सकती हैं।
2. घबराहट और चिड़चिड़ापन लक्षण हो सकते हैं।
3. डर और बुरे सपने लक्षण हैं।

निष्कर्षः जादूटोना में उसके लगाव को मान लेने के लिए व्यक्ति के पास माता-पिता होने चाहिए और अन्धकार के कामों को छोड़ने के बाद, बच्चे के लिए छुटकारे की प्रार्थना करो। जादूटोना के सताव का चक्र तोड़ा जा सकता है।

III. बच्चे डर और असुरक्षा का शिकार होते हैं

1. घर का वातावरण बच्चे को प्रभावित कर सकता है।

1. माता-पिता के डर दे दिए जाते हैं।
2. घर का वातावरण बच्चे में घुस जाता है।

2. एक दर्दनाक अनुभव में डर की यादाश्त हो सकती है।

निष्कर्ष: प्रभु से प्रार्थना करो कि उस समय आई डर की सारी यादाश्तें चंगी कर दे। अन्धकार की शक्तियों को डाँटो जो इन यादाश्तों के द्वारा पीड़ा देने की कोशिश करेंगी।

(४) माता-पिता के मृत्यु के हानि का सदमा बच्चे सहते है ।

अ- मृत्यु एक बच्चे के लिए चकनाचूर अनुभव हो सकता है ।

ब- असुरक्षा की भय, शोक, भय, इत्यादि मृत्यु के वक्त आती है ।

क- मृत्यु की अवधारणा की मसीही शिक्षा देने से बच्चो को मृत्यु के भय से बचा जा सकता है ।

उपसंहार : बच्चों को मृत्यु के बाद के जीवन की सेवकाई देना । जीवन के खालीपन को भने के लिए प्रभु से प्रार्थना करें ।

(५) तलाक से बच्चे दु:ख उठाते है ।

१. तलाक मृत्यु से बढतर हैं ।

अ- मृत्यु खालीपन किन्तु तलाक उपेक्षा छोड जाता है ।

ब-मृत्यु दु:ख (शोक) किन्तु तलाक चोट और कडवाहट छोड जाता है ।

२. बिछुडना सम्बन्धो में बच्चों की पूरी तरह फाड डालता है ।

अ- सम्बन्धो के टूटने की चोट को बच्चें मन मे लिए फिरते है ।

ब- इस कल्पनामय जीवन मे पीछे हटकर जीने का लक्षण या बलवा और शत्रुता बहुधा सम्बन्धो में अलगाव के परिणाम स्वरुप बच्चो मे पायें जाते है ।

उपसंहार : क्षमा करना चाबी है, समान्यत: एक शिशु एक पालक के चोटों कों लिये चल सकता है । दोनो पालक (माता-पिता) का ग्रहण किया जाना उनका प्यार बहुत महत्वपूर्ण हैं ।

(६) बच्चे दुर्बावहार से पीडा झेलते है ।

१) लैंगिक छेडछाड के दो परिणाम होते है (विशेषकर लडकियों मे लागू होता है)

अ- एक जीवन के तौर पर स्वतंत्र संभोगी या

ब- भय और ग्लानि लैंगिक भूमिका के क्षेत्र में उसमें उपेक्षा लाती है ।

२) दुर्ब्यवहार के समय शैतानी प्रभाव भी आ सकता है ।

उपसंहार : मनुष्यों के प्रति घृणा, क्षमा के द्वारा निकालना चाहिए । पिछले दु:खद अनुभव मे जाकर यादों के चंगाई और चोटों के घाव को दूर करने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करना चाहिए । जैसे वह प्रथम सृजी गई उसी रुप में पुरुष के बिषय दर्शन के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें ।

बलवाई के मूल

परिचय :

परमेश्वर मनुष्य को अपने प्रतिरुप में बनाया । मनुष्य के लिए एक अलौकि सम्बन्ध का इरादा था पाप के द्वारा, बलवा मनुष्य का स्वभाव बनता और देवीय सम्बन्ध टुट जाते है । इस देवीय सम्बन्ध के दबिना मनुष्य टूट जाता , ब्यक्तिगत खोया हुआ जो स्वार्थ और एकाकीपन मे जीवता है । जीवन का उद्देश्य और इरादा गायब रहता, वह खोया हुआ, उस ब्यक्ति का उध्दार तब आरम्भ होता है जब वह बलवा से फिर कर परमेश्वर पर निर्भर और मसीह के स्वामित्व को स्वीकार करता है ।
वचन : देख बलवा करना और भावी कहनेवालो मुरतों और गृह देवताओं की पूजा के तुल्य है । तू ने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना, इसलिए उसने तुझे, राजा होने के लिए तुच्छ जाना है । (१ शमूएल- १५:२३)

(१) बलवा के स्रोत :

१- घमण्ड - धोखा

उदा. लुसीफर घमण्ड से फूल उठा और परमेश्वर के विरुध बलवा करने के फलस्वरुप (यशा १४:१३-१४, यहेज २८:१४-१७)

२- कडवाहट

३- बलवा के सीढी

अ- चोट से बिरोध

ब- विरोध से कडवाहट

क- कड़वाहट से घृणा

ड- घृणा से बलवा

(२) बलवा अधिकार का इंकार करता है ।

१. बलवा ईश्वर के अधिकार का इंकार करता है

अ- ईश्वर रहित जीवन जैसे परमेश्वर नही है के समान जीना ।

ब- बलवा से मनुष्य अपना ही अधिकार स्थापित करता है ।

प्रश्न : क्या आप परमेश्वर के वचन को समर्पित होंगे ?

२. बलवा माता-पिता और सरकारी अधिकारी को अस्वीकार करता है ।

अ- परिपक्वता और सुरक्षा के लिए बच्चों को अनुशासित करना जरुरी है ।

ब- सामाजिक न्याय और ब्यवस्था के लिए सरकारी अधिकारी आवश्यक है । (इफि ६:१-३, रोमि- १३:१-७)

उपसंहार : इन क्षेत्रो में उपचरिक ब्यवहार करें कि बलवा के जड तक पहुँच सके । मानवता तो परमेश्वर के अधिकार के आधीनता को मनुष्य अस्वीकार करता है ।

(३) देह का ब्यक्ति पर हावी होने के परिणाम स्वरुप अधिकार के विरुध बलवा करता है ।

१) जो अधिकार के विरुध बलवा करता और अपने आप का गुलाम होगा ।

- विशेष लैंगिक समस्याओ में, सामान्यत: बलवा की जड माता-पिता के अधिकार की ओर जाता है ।

२) बलवा पर परमेश्वर के न्याय यानि देह की ओर मुडना है ।

- देह हमेशा परमेश्वर का शत्रुता करता है (रोमि ८:६-७)
- शरीर के कार्यो का फल बलवा है । (गला – ५:१९-२१)

(४) बलवा जादूटोना की ओर अग्रसर करता है ।

उदा. शाउल का तर्क परमेश्वर के वचन से महत्वपूर्ण बना (१ शमू – १५:२३)

१- जादू टोना परमेश्वर के भूमिका के स्थान में रखते है ।

अ- लोगों को नियंत्रण करना और काम लेने की इच्छा

ब- बुराई के बदले किसी से बदला लेने की चाहत

क- शक्ति पाने की चाहत ।

२- जादूटोना अवज्ञा है ।

अ- कोई तो अपना ही अधिकार स्थापित करता है ।

ब- अपनी सत्ता का शक्ति स्थापित करना उनका उद्देश्य बन जाता है ।

(५) बलवा और तिरस्कार दो जडे है जो ब्यक्तित्व में खण्डित मानसिकता को पैदा करता हैं ।

(‘‘ Schizein” सिजेन से छोडना , टूट । ‘‘Phren” फ्रेमन – मन)

१. तिरस्कार मनुष्य के अन्दर घुस जाता है :

- अकेलापन, - लज्जापन , संकोची
- स्वयं दया, - अतिकल्पना
- अभिलाषी
- असुरक्षितता
- स्वयं के प्रति नकारात्मकता , स्वयं उपेक्षा, स्वयंघृणा
- उपेक्षा का डर – जलन , बैर
- निराशा और आत्महत्या

२. उपेक्षा मनुष्य के अन्दर जाता है ।

- घृणा , हिंसा, हत्या
- कडवाहट और अक्षमापन
- नियंत्रण , प्रताडनापन, जादू टोना
- स्वेच्छा, न सिखाने योग्य, घमण्ड
- स्वयं भ्रांति, स्वयं धोखा, विकृत काम

उपसंहार :

१. खण्डित मनस्थिति (दोहरा ब्यक्तित्व) एक ब्यक्ति से दूसरे तक पहुचाना, संकोची फिर बिपरीत उपरोक्त लक्षण दोनों जडों में लागू होता है ।

२. खण्डित मनस्थिति अपनी पहिचान खोता और एक दूसरे जड को पिछे छिपता है ।

३. दोनों जडो में कार्य करना छुटकारे के लिए और ब्यक्ति को पहिचान मे लाना मसीह में जो उसका आवरण है । (१ कुरि – ६:१७)

४. छुटकारे को बनाए रखने की चाबी पहिचान ढूंढना है ।

घमण्ड का मूल

परिचय :

घमण्ड मनुष्य के ह्दय की धारणा को ही बोलता हैं जो उसके जीवन को दिशा निर्धारित करता है। एक अधर्मी का ह्दय और धोखा घमण्ड है। लुसीफर के गिरने की सीढों में, पवित्र शास्त्र कहता है : अपनी सुन्दर के कारण तुम्हारा ह्दय ऊँचा था तू अपने बुध्दि के कारण नाशवान महिमा के तर्क से हुआ .... (यहेज ....)

वचन : तू अपने मन मे कहता था कि स्वर्ग पर चढूँगा, मैं अपने सिंहासने को तारांगण से अधिक ऊँचा करूँगा, और उतर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर विराजूँगा, मैं मेघो से भी ऊँचे ऊँचे स्थानों कें उपर चढूँगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊँगा (यशा १४:१३-१४) ध्यान दीजिए घमण्ड से भरा मै बार-२ आया
सिध्दांत : इस जड का पेड बढना निश्चित है।

(१) पवित्र शास्त्र के वचन के शक्ति मे घमण्ड का जड और शक्ति होता है।

१. इस जगत का ईश्वर घमण्ड के कारण गिरा (यशा १४:१३-१४)
२. जगत घमण्ड के सिध्दांत पर प्रचाालित होता है (१ यूहना २:१५-१६)
- शरीर की अभिलाषा
- आखों की अभिलाषा, जीविका का घमण्ड।

३. प्रत्येक पाप और बुराई का जड घमण्ड और बलवा है।

उपसंहार : जहॉ कहीं भी इस घमण्ड की जडे हैं उनके उम्र के आत्माओं में है, नम्रता यीशु मसीह का सुगन्ध है, घमण्ड का नम्रता मे बदलना आवश्यक है।

(२) घमण्ड का एक फल पूर्णतावादी है।

१. परिभाषा : एक ब्यक्ति सामान्य आवश्यकता से परे की मानक को स्थापित अपने लिए करता है। इसे पहुँचने के लिए, अपने को दूसरों से उपर रखता और उनके लिए जो इस स्तर को स्वीकार नहीं करते उनके लिए कठिन होते हैं।

२. विवरण : प्रेम की कभी, दूसरों की आवश्यकता पूरी करने में भिन्नता, असंवेदनशिलता, न्याय में जल्दबाजी, बातों मे कटाक्ष, गम्भीर।

३. पूर्णतावादी के परिणाम है :

अ- दूसरों के प्रति रुखा अवधारणा और जिसका परिणाम चरित्र का दबदबा होता है।
ब- एक बहुत जटिल आत्मा
क- अक्षमा
ड - स्वयं धार्मिकता और धार्मिक घमण्ड
इ- परमेश्वर के साथ कमजोर सम्बन्ध
ई - तिरस्कार को बच्चो में प्रवाहित करना।
- बच्चा कभी सफलता के प्रति आधार के बिना स्वीकृत महशूस नही करता।

४. पूर्णतावादी परमेश्वर की ओर पूर्णतावादी के जैसे देखता है।

अ- क्या सफलता प्राप्ति के आधार पर परमेश्वर से नाता जोडेगा , अपने आप के लिए स्तर स्थापित करना।
ब- कार्यो के आधार पर परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त करता है।
क- जीवन से कार्यो से परिपूर्ण, किन्तु वह वास्तव में परमेश्वर से सम्बन्ध नहीं है।

उपसंहार : घमण्ड में सोचता है कि वह परमेश्वर को खुश कर सकेगा । हमारा परमेश्वर के साथ रिश्ता कार्यो के अनुसार कभी भी नही हुआ, किन्तु हमेशा उसके अनुग्रह के आधार पर । वह हमें वैसे ही जैसे हम है ग्रहण करता है । यह बातों का आरम्भ मात्र है ।

(३) घमण्ड का एक फल प्रतिस्पर्धा है ।

१. परिभाषा : दूसरों के उपर श्रष्ठ होने के लिए प्रतिस्पर्धात्मक संघर्ष - प्रथम या बेहतर- पहिचान बनाना ।

२. विविरण : स्वार्थी, स्वेच्छा , स्वयं तारीक, महत्वाकांक्षी, इष्यालु ।

३. प्रतियोगिता का परिणाम है :

अ- मनुष्यों के मध्य – शत्रुता (गलाती ५:२६, ६:३)

ब- दूसरों के संग अपने को हमेशा तुलना करना (२कुरि-१०:१२)

क-जीवन और विगत सफलता के साथ्ज्ञ असंतोष

ड- इर्षालु और जलन रखने वाला ।

उपसंहार : घमण्ड जड है जो कभी संतुष्ट नही होता । परमेश्वर के साथ प्रतियोगात्मक संघर्ष मनुष्य को प्रतियोगिता की आत्मा जीवन में ग्रहण करता है बुलाहट के अनुसार अपने जीवन की भूमिका मे कार्य करने से अलग हो जाता है ।

(४) घमण्ड का एक फल – अक्षमा है :

१. विवरण : अक्षमा, कडवाहट, मनमुटाव , गुस्सा, भावुक

२. अक्षमा के परिणाम

अ- ग्लानि और दोषीपन

- वह दूसरों छोडता नही, वह ईश्वरीय स्वतंत्र करने का गुण नही (अक्षमा)
- बिगत कालो के लिए अपने आप को भी माफ नही करता । वह परमेश्वर के माफी को भी प्राप्त नही कर पाता ।

टिप्पणी : घमण्ड अपने को क्षमा करने से रोकता है क्योंकि वह अपनी प्रतिमा तोड दी कि घमण्ड स्थिर हो सके ।

ब- अंधापन और धोखा

- वह अपने आप को जैसा वह है देखने में असफल होता है ।
- वह दूसरों को जैसा वे है देखने मे असफल होता है ।

क- कडवाहट और घृणा

उपसंहार : घमण्ड न्याय की गलत धारणा को पकडे रहता है जब स्वयं को दोष मुक्त करना होता है । घमण्ड क्षमा के बजाय प्रतिकार को बुलाता है ।

(५) घमण्ड का एकल फल अविश्वास है :

१. परिभाषा **:** घमण्ड का स्वभाव स्वतंत्र और आत्म निर्भरता लिए रहता है । विश्वास, के लिए, ज्ञान तो जरुरी है, एक कभी, एक सीमितपन तक । अत: अविश्वास अपनी स्वछन्दता और पूर्णतता को स्थापित करना चाहता है ताकि उसे किसी की जरुरत न पडे । घमण्ड अविश्वास का मूल है ।

२. वह जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं कर सकता और मुनष्य की महिमा पाना चाहता है । (यूहन्ना ५:४४)

अ- घमण्ड लोगों की तारीफे पसंद करता है ।

ब- विश्वास परमेवर की महिमा की इच्छा करता है ।

३. घमण्ड स्वयं परमेश्वर की आशिषों के गुणों कों हासिल करने की कोशिष करता है ।

अ- परमेश्वर के साथ संघर्ष करने के द्वारा

ब- परमेश्वर की इच्छा को जीवन में खोजने के बजाए ब्यक्तिगत लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सैध्दांतिक विश्वास पर कार्य करने के द्वारा ।

४. विश्वास और नम्रता एक समान मूल है -

अ- दीनता प्राण की विश्वास के लिए तैयार करता है।

ब- विश्वास और दीनता के उदाहरण

- सेनापती – मैं अयोग्य हूँ लूक – ७:२-१०

- नम्र नारी – परन्तु कुत्ते भी चुरचार खाते है (मरकुस- ७:२५-३०)

उपसंहार : घमण्ड के जड पर विश्वास नहीं बढता है।

(६) घमण्ड के जड को कैसे काटें ?

१. घमण्ड के धोखे को देखने के लिए प्रभु से प्रार्थना करें।

२. पश्चाताप

३. घमण्ड के धोखे को छोड देना

४. घमण्ड मे जीने की मानसिकता को बदलकर प्रेम मे जीयों

५. अपने आप को परमेश्वर के सन्मुख नम्र करे।

उपसंहार : प्रत्येक पाप का जड और बराई का घमण्ड है। सब नैतिकता का जड बिनम्रता है। घमण्ड हमें उकसाता है। उपेक्षा हमें नीचे धकेलता है। हमें इन दोनो से मुक्त होना और परमेश्वर हममें ऊँचा उठाया जाना चाहिए।

गोपनीय (Occult) के मूल

परिचय :

कुछ चीजे है जिसमें मनुष्य अलिप्त रहता जिसका असर केवल उनमें नही : किन्तु पिछली पीढी मे आता है I गुप्तपाप एक ऐसा जड है जो तीसरीं ओर चौथी पीढी तक फैलती है और उनके परिणाम गम्भीर होते हैं I इस प्रकार के ब्यक्तियों की सेवकाई करने से पूर्व ही उसके लक्षणों से सावधान रहना - यहा तक कि मासूम भी इसके शिकार होते है I

वचन : जब तू उस देश मे पहुँचे तो तेरा परमेश्वर यहोवा परमेश्वर तुझे देता है, तब वहां की जातियों के अनुसार घिनौना काम करना न सीखना I तुझमे ऐसा कोई न हो जो अपने बेटे या बेटी को आग मे होम करके चढानेवाला या न भावी कहनेवाला या न शुभ अशुभ मुहूर्तो का माननेवाला, या न भूतो का जगाने वाला हो I क्योंकि जितने ऐसे –ऐसे काम करते है वे सब यहोवा के सन्मुख घृणित है, और इन्ही घृणित कामों के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा उनको तेरा परमेश्वर निकालने पर है (ब्यवस्था – १८:९-१२)

शोध : गोपनीय में आलिप्त होना ब्यक्तियों पर वैधानिक अधिकार शैतान के दावे के लिए देता है I रहस्यमय के आध्यात्मिक बरदान पीढी आती है, जैसे शाप भी आता है I योहन १०:१०अ)

(१) मूतिपूजा और गोपनीयता उसी एक ही जड से हैं I

१. मूर्तिपूजा शैतान की अराधना करना है I

.... बे उनकी मूर्तियों की पूजा करने लगे .... उन्होने अपने बेटे बेटियों को पिशाचों के लिए बलिदार किया (भजन १०६:३६)

.... अन्य जाति जो बलिदान करते हैं, वे परमेश्वर के लिए नहीं परन्तु दुष्टआत्माओं के लिए बलिदान करते हैं I (१ कुरि १०:२०)

२. स्वाथ्री लक्ष्यों को पाने के लिए शैतानी शक्तियों प्राप्त करना गोपनीय (गुप्तपाप) है I सामान्य स्थति तैयार करने, से लोगों साथ करार में शैतान प्रवेश करते हैं I अलौकिकता द्वारा लाभ दिलाया जाता है हमेशा क्योंकि लाभार्थी को शाप भी आता है I अलौकिक बरदान के साथ शाप भी एक पीढी से दुसरे पीढी में चलता जाता है

३. दूसरें ईश्वर के समक्ष सिर झुकाने (दण्डवत) का शाप तीसरे और चौथे पीढीयोंतक चलता जाता हैं I तू उनको दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना, क्योंकि मै तेरा परमेश्वर जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ, और जो मुझसे बैर रखते है I उनके बेटों , पोतो , और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ (निर्गमन – २०:५)

(२) गोपनीय जड से कुछ सीधे विशेष परिणाम आतें हैं वे है :-

१. आत्मिक अवरोध

अ- अलौकिक नियंत्रण जो मनुष्य को यीशु पर विश्वास (कबूल) को स्वीकार करने से रोकती है I

ब- सब सता के खिलाफ बलवा की धारणा मे होना I

क- आध्यात्मिक अवरोध जो ब्यक्तियों को पवित्र आत्मा के आत्मिक लाभों (आशिषों) मे प्रवेश करने से रोके रखता है I

ड - बाईबिल को न पढ पाना, एकाग्र -चित, प्रार्थना और अराधना बे मन से करना I

२. शारीरिक लक्षणें

अ- पक्षपात के लक्षण, लकवा, नसों मे खराबी इत्यादि I

ब- बच्चों का जैसे सनकी पैदाईश, अपंगता , गूँगा –बहरा, नसो मे गडबडी, सीखने की समस्या, उत्पाती, सामाजिक ढाचें मे कार्य करने की अयोग्यता, भय , बुरु सपने इत्यादि I

३. भावनात्मक अस्थिरता

अ- हिंसात्मक स्वभाव

ब- घृणा और शाप देना

क- मासं पेशियों की रुकावटें

ड- असामाजिक ब्यवहारिकता

इ- हताशा

४. डर

अ- असुरक्षितता,

ब- निर्यास्मतप्रतांडित

क- बुरु ख्वाबें

५. मानसिक बन्धन

अ- सोंचने की रीति मे शंका

ब- सीखने की समस्यायें

क-मानसिक रोगी ।

(३) गोपनीय मूल के बिषय में लोगों की हमेशा तकलीफदायक प्रश्न है :

१. एक मसीही के लिए निरंतर दबाव को सहन करना कैसे सम्भव है ? या आधीनता क्योंकि यह आरम्भिक का, मत परिवर्तन के पूर्व का अनुभव है ?

उत्तर : अंधकार की शक्तियों के लिए द्वार खुला ही रहता है जब तक मनुष्य के ईच्छा के कार्यो से बन्द नहीं किया जाता । एक खुला दरबाजा दबाव के लिए आमंत्रण है ।

२. क्या एक मसीही जो कभी भी गोपनीयता के कार्यो मे शामिल नही हुआ दबाया या आधीनता में आ सकता है ?

उत्तर : गोपनीय (रहस्य) दबाव माता-पिता से बच्चों पर आ सकता है ।

- माता –पिता द्वारा गोपनीय आशिषों को प्राप्त करने के द्वारा बच्चें प्रभावित हो सकते है ।
- दूसरे ईश्वर के साथ अपवित्र सम्बन्ध बनाने से शाप प्रवेश करता है ।

(४) गोपनीय के जड को इनसे काटा जा सकता है :

अ- यीशु मे विश्वास कर स्वीकार करने और उसके अधिपत्य को अपने उपर स्वीकार करने से ।

ब- सब गुप्त पापों के लिए पश्चाताप द्वारा

क- शैतान को धुडकने और आज्ञा देकर मगते के द्वारा

ड- छुटकारे की प्रार्थना द्वारा

उपसंहार : एक अन्य ईश्वर से बंधे सम्बन्ध को आसानी सें तोडा जा सकता है । मसीह पर कृयाशील विश्वास और गुप्तपाप के शक्तियों को सीधे विस्थापित करना सम्पूर्ण विभाजन के लिए जरुरी है । बहुतों को अपने पूर्वजों के अपवित्र सम्बन्धों को काट कर छोडकर अलग होना जरूरी है । यीशु मसीह के लहू का वाचा गुप्त (रहस्य) शाप को तोड देता है । विश्वास अपने मुख द्वारा कबूल करता और पिछले अपवित्र प्रत्येक सम्बन्धों को तोडता है ।

गुप्तपाप के धोखा देनेवाली बातों का बारीकी से नकल

परिचय : धार्मिक जगत मे एक खालीपन है । कलीसिया पीढियों से अलौकिक कार्यो को जो पवित्र आत्मा के द्वारा वर्तमान समय के होने वाले कार्यो का इन्कार करता आया । बुध्दिवादी पर जोर देने के साथ उसके शक्तियों की विवेचना का स्त्रोत सिध्दांत और प्रयोग बन गया जो अलौकिकता को अलग (खारिज) कर दिया । इस हवा खालीपन में, गुप्तपाप का वेदारी उत्पन्न होकर अंधकार का साम्राज्य और देवीय राज । परम्परागत कलीसियाए इसके लिए ढाचा बना और अपना ही जीवन खो दिया । लोग इससे मुडकर वास्तविकता को इधर-उधर तलाश रहे हैं । क्योंकि मनुष्य तो मूलत: धार्मिक स्वभाव का है । गुप्तपाप की धोखा देनेवाली नकल इस कमी को पूरा करती है

वचन : क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित , और छल से काम करनेवाले, और मसीह के प्रेरित का रुप धारण करनेवाले है । यह कुछ अचम्भे की बात नही, क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रुप धारण करता है । इसलिए यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रुप धरें, तो कोई बडी बात नही, परन्तु उनका अन्त उनके कार्यो के अनुसार होगा (२ कुरिन्थ ११:१३-१५)

शोध : गुप्तपाप को देवीयता में वास्तविकता है ।

(१) गुप्तपाप के द्वारा, वास्तविकता का पता दुसरे मनुष्य के आयाम से लगा है ।

१. जगत का गुप्तपाप वास्तविक है

अ- कइ लोग आधार वाक्य मे जाते हे –

यदि यह हकीकत है तो यह सही है

ब- कईयों ने इस आत्मिक शत्रु की वास्तविकता को नजर अंदाज कर दिये ।

२. गुप्तपाप का जगत एक आलौकिक पैमाना है

अ- कई लोग आधार वाक्य पर जाते है –

यदि यह देवीय है, तब तो वह प्रभु है

ब- मनुष्य एक देवीय शत्रु है जो एक धोखा देनेवाला नकलची है ।

३. अन्य पैमानो का राज्य की स्थापना गुप्तपाप के द्वारा हुई है ।

अ- रहस्यमय के पास चाबी है कि इस आयाम के द्वार को खोल दे ।

ब- ये द्वार है भूत सिध्दि, आत्मिक प्रपंच, अतिसंवेदनशील अवबोधन, शकुन विचारना, जादूटोना ओर शैतान पूजा ।

(२) गुप्त पाप के द्वारा धोखा देनेवाली नकल की सच्चाई आयी -

१) पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना सच्चाई है जो देवीय है (योएल २:२८, प्रेरित १:५-८)

अ- सत्य में बपतिस्मा लेने से पवित्र आत्मा प्राप्त करते हैं

धोखा देनेवाली नकल से अशुध्द आत्मा पाते है

ब- पवित्र आत्मा पूर्ण मनुष्य को शक्तिमान बनाता है । अशुध्द आत्मा पूर्ण मनुष्य मे निष्कृयता लाती है और नियंत्रण करना चाहता है ।

क- यीशु ख्रीष्त बपतिस्मादाता है

धोखा देनेवाली नकलची के कार्य कला द्वारा, आत्मयान

२) पवित्र आत्मा के अलौकिक वरदान सत्य है – (१ कुरिन्थ १२:१-११)

अ- प्रकटीकरण के वरदान सच्चे है (१ कुरि १२:८-१०)

- आत्मा के द्वारा बुध्दि के वचन
- आत्मा के द्वारा ज्ञान के वचन
- आत्मा के द्वारा आत्माओं को परखना ।

धोखा देनेवाली नकलची आत्मा के प्रकार :-

- दिव्य दृष्टी और दिव्य श्रवण – (इएसपी वस्तुओ और घटनाओं का)
- पूर्वाज्ञान (घटना होने से पूर्व ज्ञान प्राप्त करना)
- विचारों को जान लेना (दूसरों के मन के विचारों को सीधे बताना)

ब- शक्ति के वरदान सचमुच है (कुरिन्थ १२:९-१०)

- आत्मा के द्वारा विश्वास का वरदान
- आत्मा के द्वारा चंगाई का वरदान
- आत्मा के द्वारा चमत्कारों को प्रभावशाली करने का वरदान ।

धोखा देनेवाली नकलीची उसी रुप आया वह :-

- विश्वास के द्वारा इच्छा और विचारों का एकाग्रता
- अलौकिक शक्ति द्वारा कलाओंसे चंगाई करना
- देवीय प्रकटीकरण (प्रदर्शन) (प्रका १३:१३-१५)

३) प्रेरणा के वरदान हकीकत में है (१ कुरिन्थ १२:१०)

- आत्मा की प्रेरणा से भविष्यवाणी के वरदान ।
- आत्मा की प्रेरणा द्वारा अन्यान्य भाषा का वरदान ।
- आत्मा की प्रेरणा से अन्यान्य भाषा का अनुवाद का वरदान ।

धोखे बाज नकलची आत्मा इस रुप मे आया –

- शकुन विचारना
- अन्यान्य भाषाएं दुष्टआत्मा की शक्तियों द्वारा होता है ।

उपसंहार : गुप्तपाप शक्तियां उन मनों में केंद्रित होते हैं जा से आत्मा द्वारा आत्मिक वरदान सच्चाई से निकलता और पवित्र आत्मा में सेवाए होती है । सत्य मे सेवाए दिव्य दृष्टी या दिव्य श्रवण की आवश्यकता नहीं होती । जहां कहीं परमेश्वर का आत्मा है वहा पर स्वतंत्रता है । (२ कुरिन्थ ३:१७) परमेश्वर का आत्मा किसी ब्यक्ति को उपयोग या दबाता नही । आत्मा के कार्य बढती के लिए और आत्मा के फलों के आदान-प्रदान के लिए है । धोखेबाज नकलची अंधकार के कार्यो व शरीर के कार्यो को संचारित करता है ।

(३) आत्माओं को परखना गुप्तपाप के धोखे को उघाडना है -

१) ज्योति के दूतों को आत्माओं की परख द्वारा उघाडा गया
(२ कुरिन्थ ११:१३-१५ प्रेरित १३:९-१०)

२) शकुन विचारने की आत्मा से वशीभूत आत्माओ के परख की आत्मा द्वारा धोखा की गवाही के आत्मा को खोला गया (प्रेरित १६:१६)

३) दुष्ट आत्माओं के सिध्दांत को परख की आत्माओं के द्वारा उघाडा गया (१ तिमु ४:१)

४) शैतानी चमत्कारी कार्यो के आत्माओं की परख की आत्मा द्वारा उघाडा गया झूठी सामर्थ और चिन्ह (२ थिस्लुनी – २:९) चमत्कारिक कार्य करने वाली शैतानी आत्माएॅ (प्रकाशित वाक्य में)

उपसंहार : गुप्त आत्माओं के साम्राज्य में आत्माओं को परखने का वरदान एक गहरा अलौकिकता है । यह आत्माओ के प्रकार को बताता जो ब्यक्ति में कृयाशील होता जो दैवीय ज्ञान और या शक्ति को प्रदर्शित करता है ।

गुप्त पाप का उद्गम

परिचय : प्रारम्भिक धर्म गुप्त पापों में जडे जमायें थे ये धर्म रहस्यमय धर्म कहलाते थे, क्योंकि अगुवो के द्वारा भेद भरी अनुष्ठानों का अनुभव प्राप्त किया । ऐसे परम्परा और धर्म का उद्गम स्थान बाबुल के विचारों का आरम्भ है । बाइबिल में अंतिम समय में धर्मिक प्रणाली के विद्यमानता को दर्शाया गया है । रहस्यमय महान बाबुल , वेश्याओं की माता, और पृथ्वी का घृणित वस्तु (प्रका १७:५) गुप्तपाप का प्रयोगो को बहुत आसानी सें इसे विवरणिंत किया गया है । गुप्तपाप का नाम का अर्थ जो छिपा हुआ है मनुष्य छिपे रहस्यों को ढूंढा जिसके कारण ही जगत में रहस्यमय का द्वार खुला । ये भेदपूर्ण रहस्यमय की बाबूल है । परमेश्वर पूर्ण बिनाश लाया उस प्राचीन बाबूल पर (यिर्म ५०) और बाबूल की आत्मिक विषरीत भाग अंत के दिनों का वैसे ही इंतजार कर रहा है (प्रका १८:२)

वचन : जिन सात स्वर्गदूतों के पास वे सात कटोरे थे, उनमें से एक ने आकर मुझसे कहा, इधर आ , मैं तुझे उस वेश्या का दण्ड दिखाऊंगा, जो बहुत से पानी पर बैठी हे , जिसके साथ पृथ्वी के राजाओ ने ब्यभिचार किया और पृथ्वी के रहनेवाले उसके ब्यभिचार की मदिरा से मतवाले हो गये थे । तब वह मुझे आत्मा में जंगल को ले गया, और मै ने उस लाल रंग के पशु पर, जो निंदा के नामों से भरा हुआ था और जिसके सात सिर और दस सिंग थे, एक स्त्री कों बैठे हुए देखा । यह स्त्री बैंजनी और बहुमुल्य मणियों से सजी हुई थी, और उसके हाथ में एक सोने का कटोरा था जो घृणित वस्तुओं से और उसके ब्याभिचार की अशुध्द वस्तुओं से भरा हुआ था । उसके माथे पर यह नाम लिखा था, भेद बडा बेबीलोन पृथ्वी के वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता (प्रका १७:१-५)

(१) इस गुप्तपाप की उत्पति मूर्तिपूजा मे से हुई

१) अन्य देवताओं (शैतान) की अराधना गुप्तपाप है ।

अ- ये देवताएं अलौकिकता से मूर्तिपूजा लाता है ।

ब- ये देवताएं मूर्तिपूजा में और धार्मिक प्रणाली में कार्य करता है ।

२) मूर्तिपूजा गुप्त अंधकार की शक्तियों का द्वार खोलते है ।

अ- ये शक्तियां शैतानी है (भजन १०६:३५-३ । १ कुरिन्थ १०:२०)

ब- प्रथम आज्ञा अन्य देवताओं के बारे मे कहता है (निर्गमन २०:१)

३) यह गुप्तपाप आध्यात्मिक शक्तियों को अपनी ओर करने की फिराक में रहता है ।

अ- ये शैतानी ताकतें अपने आप का इस्तेमाल करने की अनुमती देती है ।

ब- इसकी सेवा करने का मुल्य यानि ब्यक्ति पूर्ण दासत्व में चला जाता है ।

उपसंहार : गुप्तपाप में प्रवेश सम्मिलित होना अन्य देवताओं के समक्ष नतमस्तक होना ही है । अपवित्र सम्बन्ध आध्यात्मिकता के द्वार को खोल देता है । यहां तक कि जो इसमें आलिप्त है इन शक्तियों को कुछ समय तक अपने अधिकार मे कर लेता है । अन्त में पूर्ण रुपेण उसके आगोश मे चला जाता है ।

(२) परमेश्वर के विरुध बलवा गुप्तपाप का एक जड है ।

१) मनुष्य अदन के बगीचे में गुप्त ज्ञान को पाना चाहा – तुम्हारी आंखे खुल जाएंगी , और तू परमेश्वर के समान हो जाएगी .... (उत्पति ३:५)

अ- मनुष्य परमेश्वर आज्ञा के विरुध बलवा किया ।

ब- प्रतिबंधित ज्ञान उन्हे अंधकार के अधिकार के नीचे ला दिया ।

२) जल प्रलय के पश्चात, मनुष्य अपनी धार्मिक प्रणाली और राज्य स्थापित करना चाहा । आओ हम एक नगर और एक गुम्मट बना ले, जिसकी चोटो आकाश से बाते करे ..... (उत्पति ११:४)

अ- मुनष्य अपने को ही ईश्वर बनाना चाहता था

ब- आकाशें उनके अराधना के वस्तु बन गयें ।

३) बाबुल का राज्य वेश्यावृति का केन्द्र बन गया ।

अ- मनुष्य गुप्तपाप को खोज निकाला

ब- गुप्तपाप की शक्तियों को उपलब्ध किया गया ।

(३) ज्ञान और शक्ति गुप्तपाप का मुख्य घटक बन गया -

गन्तब्य स्थान और ज्ञान ढूढने के लिए गुढ (गुप्तपाप) है ।

अ- जीवन मे उद्देश्य और अर्थ के लिए जरुरी है ।

ब- लोग अज्ञान में वशीभूत होकर अलग हो गये है ।

क- सभी गुप्तपाप (रहस्य) भविष्य की बातों को बताने का प्रयास करती है ।

उपसंहार : गूढ बातें परमेश्वर के आधीन है (ब्यवस्था २९:२९) रहस्य शक्ति को हासिल करता और नियंत्रण और शासन करता है । तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे (उत्पति ३:५)

अ) मनुष्य के सम्भावित अद्योपतन से पृथ्वी भ्रष्ट हो गई ।

ब) मनुष्य दूसरों को नियंत्रण और अधिकार करना चाहता है ।

क) मनुष्य परमेश्वर से ज्यादा शक्ति चाहता है ।

उपसंहार : अपने आप को परमेश्वर के आधीन करने के बजाए , मनुष्य दूसरे देवताओं के पास गये कि वह अपने आप को शक्तिमान बनाकर मना लेगा ।

प्रेतात्मावाद :- मृत्यु के बाद का जीवन ढूंढना

परिचय :

प्रेतात्मवाद मृत्यु के बाद की दुनिया में गये अपने प्रिय जनों से मिलने की कोशिष है । मृत्यु के बाद जीवितो का घटनाओं को एकत्र करना, और आश्चर्य जनक रपट तैयार करना दूसरी तरफ मृत्यु के विचार को दूर करना जैसे कि मित्रो और रिश्तेदारों से अलग वास्तविक और अंतिम है । वे मसीहियों को कह सकते हैं तुम्हे मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास है हमारे पास प्रमाण है । प्रेतात्मावाद मान्यताप्राप्त धर्म हो गया है जो तीसरे प्रकटीकरण का दावा करती है जो मसीह के आगे यह प्रकाशन मृतक ब्यक्तियों के आत्माओं के द्वारा आता है । अलौकिक वरदान दिखाई देते है जैसे भविष्यवाणी अन्यान्य भाषा में बोलना, और भाषान्तर करना, चंगाई का वरदान ज्ञान का वचन इत्यादि । ये मसीहियों के नामों को अपना लिया है , परम्परा और आवरण यह धर्म में आसानी से मिल जाता है जहां मूर्तिपूजा प्रत्यक्ष विद्यमान है ।

वचन : बाजीगर या ओझो से पूछनेवाला , या भूत साधनेवाल , या भूतों का जगाने वाला हो । (ब्यवस्था १८:११)

(१) प्रेतात्मवाद का सिध्दांत है :

१. परमेश्वर अनन्त है न बदलनेवाला, सिध्दांत मे अपरिमित उसने सृष्टि की रचना की और जो कुछ विद्यमान है उसे बनाया हैं

२. मनुष्य एक प्रभु द्वारा निर्मित अपूर्ण आत्मा है । परमेश्वर इस अपूर्ण आत्माओं को देह मे रखा कि पूर्ण बनाए । जब एक बार आत्मा पूर्ण होता, वह परमेश्वर के पास चला जाता है ।

३. आत्माए हमारे इर्द गिर्द खाली स्थानों मे रहता है, इस स्वभाविक जगत में भला-बुरा कार्यो को करते हुए । जहां प्रेम और भलाई करने की चाहत पायी जाती है वहां ये उत्कृष्ट आत्माएँ आकर्षित होकर मिलना पसंद करते है । दुष्ट आत्माएँ मूर्खो और कायरो मे कार्य करते है ।

४. शैतान या दुष्ट आत्माएँ नही है, हम में दुष्टता भरी है ।

५. पाप केवल सीमा है वह अदृश्य हो जाएगा । प्रेत्येक पाप इस जीवन में कष्ट सहने के साथ समाप्त हो जाएगा । इस जीवन को छोडकर दूसरा नरक नहीं है ।

६. यीशु मसीह ही केवल ऐसा उदाहरण छोड गया कि नाशवान शरीर से अविनाशी मे प्रवेश करने के लिए कितने दु:खो से गुजरना पडेगा । उसे उत्कृष्ठ आत्मा का दर्जा हासिल है । पैगम्बर मुहम्मद या बुध के श्रेणी से अधिक श्रेष्ठ आत्मा । वह परमेश्वर नही था ।

७. मनुष्य के लिए मृत्यु एक बार नही है, यदि वह देह में मर भी जाए,वह दूसरे ग्रहों मे निवास करने को चला जाता है । मृत प्राणी को पुनरूत्थान का कोई स्थान नही दिया गया है ।

८. अनन्तकाल का न्याय या नरक जैसी कोइ चीज नही ।

(२) प्रेतात्मावाद के दो मूल विचार है –

१. मुर्दो और जीवतों के मध्य बातचीत सम्भव है । प्रेतात्मवादी निम्न पवित्रशास्त्र के वचन को प्रयोग करते है – वे – ब्यवस्था १८:११ से कहते है – मुर्दो के साथ बार्तालाप करना निश्चित सत्य है । रुपांतरण यह प्रमाणित करता है बार्तालाप को मुर्दो और जीवतों के बीच में (मती १७:१-१३) और शाउल का शमूएल के साथ बातचीत, जो शमूएल की मृत्यु के बाद की बात थी । (१ शमू -२८)

उपसंहार : प्रेतात्मावादी इसे शाबित नही कर सकते कि वें किससे बात करे रहें है । धोखा देनेवाली आत्मा ठीक से नकल कर सकता उस दिवंगत और उस ब्यक्ति द्वारा जाननेवाले ज्ञान उत्पन्न भी कर सकता है । यीशु हमेशा पिता से बात किया करता, मुर्दो से नही । मुसा और एलीयाह का प्रकट होना दिवंगत पश्चात जीवन को पुष्टि करता है । केवल वे ही जो रुपांतरित हुए यीशु से उस वक्त बातें किए । मैं उस घटना के कारणों पर अनुमान नही लगाना चाहता कि केवल एक बार घटी है । यीशु ने शिष्यों को पिता से प्रार्थना करने को कहा, मुर्दो से कभी नहीं ।

२ – अवतार

अवतार से सम्बन्धित प्रेतात्मावाद मे प्रयोग पवित्रशास्त्र के वचन है :

१. मती – ११:१४ यूहन्ना बापतिस्मादाता एलीयाह के आत्मा मे आया ।

टिप्पणी : यूहन्ना के गवाही मे यूहन्ना १:१९-२३ एलीयाह का आत्मा भविष्यवक्ता के चरित्र और भूमिका को दर्शाता है जो मसीहा के लिए आगे ले जानेवाला था ।

२. यूहन्ना ९:२ – अंधा मनुष्य । प्रेतात्मावादी का भाषान्तर : जन्म से अंधा जन्माना पिछले जन्म के पाप को दर्शाता है ।

उपसंहार : अंधेपन की स्थिति उसके या उसके माता-पिता के पाप के नतीजे को नही दर्शाता – (पद-३)

३. यूहन्ना – ३:३ – निकोदेमुस ? प्रेतात्मवाद : नया जन्म मसीहियत में अवतार को दर्शाता है
नया जन्म का अर्थ नयी पीढी (Regeneration) को दर्शाता है ।

टिप्पणी : नई पीढी मनुष्य के परिवर्तित प्राण और जीवन को और इंगित करता है, देह का परिवर्तन नही ।

उपसंहार : अवतार की सिध्दांत सुसमाचार के दिल कों नकारता है । मसीह के क्रूस द्वारा छुटकारा । मनुष्य स्वयं का मोक्षदाता और भौतिक दुनिया उसका सलीब होता है । मसीह यीशु अपनी इश्रत्व को खोया और संसार मुर्दो के राज्य से वचन (शब्दो) के लिए ताकता रहा । यह प्रेतात्मवादी का स्थिति है ।

(३) प्रेतात्मावाद मे बिभिन्न राहे दिखाई गई है ।

१. प्रेतात्मवाद को कला से प्रक्षेपित किया गया ।

२. मुर्दो से वार्तालाप नीर्जिव वस्तुओं से प्राप्त करना (मेज को उठाना प्रात्थान, प्रश्न फलक इत्यादि ।)

३. अपने आप लिखाई सीधे वार्तालाप के विचार को मान्यता देता है ।

उपसंहार : शैतान और दुष्ट आत्माए मनुष्य से बात करना चाहता है वे किसी भी मनुष्य से जो उसके बिषयों में बातें कर सकता है । और गुप्तपाप के लिए प्रदर्शित को तैयार हो । अशिक्षित भी इस बातचीत को अपने रिश्तेदारों के आत्माओं से आत्मिक राजय मे जिसे नही जानता है मिल सकता है । चाहे कला या चीजों द्वारा हो दृष्ट आत्माएं लोगों से बात करना चाहता है ।

मनोवैज्ञानिक (आत्मिक) प्रतिमाए

परिचय

आत्मिक प्रतिमाए आत्मा संसार के लिए द्वार खोलता है रोमांच और चपलता अलौकिक बहुत लोगों को इस द्वार से अगुवाई कराता है। पकटीकरणे बहुत और माशूम लोगों के आत्मा को फसाने के लिए योजनाएं बनाते है। मैं प्रतिमास निम्न बिन्दुओ में देख सकते है :

(१) आत्मा जगत में मनोविज्ञान प्रतिभाव द्वार द्वार

१. प्रेतात्मा :

अ- परिभाषा : शोर मचाने वाला आत्मा

ब- प्रेतात्मावादी अपने आप को एक दिवंगत (मृत) आदमी के आत्माओं के रुप में प्रगट करता है।

क- प्रेतात्मावादी अंधरों की ओर आकृष्ट होते है जहां गुप्तपाप क्रियायें किया करते है।

उपसंहार : आधुनिक युग मे प्रेतात्मावादी का वेदारी उन घरों मे आरम्भ हुई जहां अनोखी दर्शन प्रतिभाषा प्रकट हुए। जैसे वार्तालाप स्थापित थी, फॉक्स बहने कला क्षमताओं का विकाश किए और प्रेतात्मावाद को विभिन्न राज्यो व राष्ट्रो मे अपनाने का प्रचार किए । यह फॉक्स के मकान मे १८४८ मे आरम्भ हुई।

२. प्रोत्थान (आकाश गामिता) – उठाना

अ- परिभाषा : एक ठोस वस्तु की क्षमता गुरुत्वकर्षण के शक्ति के नियम का उल्लंघन कर अपने आप को उपर उठाना बिना किसी के सहारे।

ब- प्रोत्थान का यह विचार गोपनीयत और गुढ शक्तियों से जुडा जाना गया है।

उपसंहार : गोपनीयता की शक्ति प्राकृतिक नियमों का सामना और हावी होने का स्वभाव अविश्वास और आतुरता को फंसता है, वह अपने धोखे का शिकार बनाता। अर्न्तज्ञान चिंतन के संस्थापक, महर्षि महेश योगी, ने एक पाठयक्रम इजाद किया लोगों को सिखने के लिए कि वे इच्छा से उठे और प्रत्थान करें।

३. प्रश्न फलक

अ- परिभाषा : बातचीत के एक कला से एक आत्मा के प्रत्युतर को उस जिज्ञाशु प्रश्न कर्ता को उत्तर देता है

ब- एक अक्षति खेल (सुरक्षित खेल) आत्मा जगत से कोइ सम्पर्क कर बनाए रखता है।

४. विभाजित करना – (Telekinesis**)**

अ- परिभाषा : ठोस वस्तु का एक कमरे से दूसरे मे घूमना यहा तक कि न दिखाई देनेवाली दृश्य के साथ, चीजों को दीवारों और बंद कमरों से लिए चलना।

ब- ठोस वस्तु को हिलाने सरकाने के लिए प्रयाप्त शक्ति गोपनीय शक्तियों से भेजना।

उपसंहार : आध्यात्मिक उर्जा भौतिक वस्तु को इधर-उधर घुमा सकती है।

५. तारा प्रक्षेपण

अ- परिभाषा : एक ब्यक्तिगत जागृत अवश्था में भौतिक शरीर को छोडने की क्षमता रखना है।

लम्बी दूरी तक यात्रा करना, दुसरे लोगों की निगरानी करना, जो कहते व करते है की रिकार्डिंग करना, देह मे वापसी और जो देखता हे उसकी पुष्टि करता है।

ब- इस प्रकार के हालात में नशा भी प्रवृत्त करता है।

उपसंहार : इस क्षेत्र मे रहस्यमय ताकते कार्य करती है। और शैतानी धोखे मे आसानी से फँस सकता है। यीशु मसीह के काल में संसार भर के शैतानी राज्यों को बता दिया गया है।

६. अपने आप लिखाई -

अ- परिभाषा – आध्यात्मिक प्रभाव के दबाव मे जो लिखता है अन्त तक नहीं जानता कि क्या लिखा है।

ब- यह एक प्रकार का मुर्दो के साथ संवाद करना है।

उपसंहार : जब कोई अपने आप को अन्य बाहरी शक्तियोपर अवलम्बित होकर दबाव के कर्म को अनुभव से समझ सकते है । विभिन्न संदेश और सिध्दांते (पंथ) संवाद किया जो तथ्य को स्पष्ट वर्णन करता कि ये शैतानी पंथ है ।

७. मसीह के शरीर के कोडे के निशान :

अ- परिभाषा : चिन्ह और यहां तक कि घाव एक ब्यक्ति के शरीर पर अलौकिकता के साथ गोंदा गया, कि मसीह के घावों का नकल करें ।

ब- ये प्रति उन संवेदनशील ब्यक्तियों पर आता है जो अज्ञानता वश गोपनीय शक्तियां के साथ सम्बन बनाये ।

उपसंहार : इस प्रतिभाषा द्वारा चमत्कार और चंगाई जो अलौकिक त्यागों से जिन पर आता है उन पर दबाव और धोखा आता है । शक्तियों को पता है कि कैसे नकल किया जाए और आत्मिकता को प्रयोग कर लोगो को फसाया जाए । अब और लहू बहाने की जरूरत है नही ।

(२) मानसिक प्रतिभाष के बारे मे निगरानियाँ :

१. मानसिक प्रतिभाष विश्वास का सोपान है (ब्यव – १ ३:१)

२. ब्यक्ति जो मानोविज्ञान प्रतिभाष ढूंढता है , वह हमेशा उन्य देवताओं की अराधना करता है ।

३. मानसिक प्रतिभाष अलौकिक परमेश्वर का दूसरा सोपान है ।

४. स्वयं लिखित धोखेबाज नकलची है – पवित्र वचन के प्रेरणा का ।

उपसंहार : पवित्र शास्त्र धोखेबाज का वर्णन किया है , जो मनों के विचार में कार्य करता, जैसे …… जो शैतानी कार्यक्रम के साथ एक मन होकर आते है । सब प्रकार की झूठे चिन्ह, चमत्कार और शक्तियों, और नाश होने वालों पर दुष्टता और धोखे के साथ आता है । (२ थिस्लुनी २:९-१०)

अति संवेदी अवबोधन (EPS)

परिचय : अति संवेदी अवबोधन का प्रपंच मनुष्य के वैज्ञानिकता या तार्कित से आगे जाता है। यह प्रपंच मनुष्य की ज्ञान क्षमता से दूर जिसे वह अपने बुध्दि और ज्ञान जो तर्क करता है , उसे वह दैवीय साधनों के सिवाय नहीं समझ सकता। धोखा मनुष्यों को बिश्वास कराता कि उसके पास अवचेतन मन मे छिपि शक्ति है ं और वह इसे तभी स्वतंत्र कर सकता है जब वह प्राकृतिक सीमा से बाहर जीएगा। इस तरह, गोपनीय जगत के लिए द्वार खुल चुका। यह अति संवेदी अवबोधन के समान क्षमता बहुतों में, बिभिन्न तरीकों मे गोपनीय सन्मिलित और ये बातें जादू टोना के प्रयोग के द्वारा चलाया जाता है।

परिभाषा : ज्ञानेन्द्रियों के सिवाय अन्य साधनो से किसी से भी, सुचनाओं को प्राप्त करना

टिप्पणी : इन सुचनाओं का स्त्रोत गोपनीयता से आता है ।

(१) दार्शनिक स्वप्नें -

बाइबिल के उदाहरण और चेतावनियाँ

- दानिएल १:१७, १९-२०, २:२७-२८, ब्यवस्था १३:१-५

(२) दूर संवेदन

१. परिभाषा : ज्ञान ग्रहण करना .... ज्ञानेन्द्रियों के प्रयोग के बिना।

२. स्वामी के बारे में सुचनाओं को प्राप्त करने में वस्तुओं के साथ दूर संवेदन प्रयोग करना।

३. रिश्तेदार के मृत्यु के प्रकाशन को ब्यक्ति जो मृत्यु को घोषणा करता उसका प्रपंच का उतर दूर संवेदन से सम्भावित उतर मिलेगा।

४. दूर संवेदन किसी ब्यक्ति के मन की बातों को जानने का ज्ञान इस प्रपंच से भी प्रकट कर सकते है।

उपसंहार : ब्यक्ति को दूर संवेदी संवाद, मन को आधीन और सांकल्पिक बन्धनों मे ले जाता है। यह शैतानी शक्ति मे शैतान ग्रसित बिन्दु तक पहुँच जाता है।

(३) दिब्य दृष्टि (अंतर्दिष्ट)

१. परिभाषा : दिब्यदृष्टि से हमारा मतलब अति संवेदन प्रबोधन बिशेष तथ्यों से है। जिसके बिषय किसी को ज्ञान नही, जो ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग कर जाना जा सके।

अ- कुछ इसे द्वितीय दृष्टि का संकाय कहते है

ब- कुछ लोग इसे आत्मा की दबता शक्ति के रुप मे वर्गीकृत करते है, मनुष्य का प्राण शक्ति शैतान की कार्य रकने का माध्यम बन जाता है।

२. अंतर्दिष्ट के उदाहरण :

अ- जीनी डिक्सन

ब- एडगर केसी

उपसंहार : दुष्ट आत्माएँ मनुष्य के साथ संवाद स्थापित करने मे काबिल है और मनुष्य के ज्ञान से वार्तालाप, जिसे वह अपने ज्ञानेन्द्रियों से नही जान सकता है ।

(४) दिव्य दृष्टि के लिए प्रसिध्द :

१. परिभाषा : अविवेकशील, रोगों का निवारण करना।

२. विधियां :

अ- एकाग्रता

ब- स्फटिक गेंद को निहारना

क- हाथ से छुना   ड- आगे पिछे हिलने वाली छडी

उपसंहार : रहस्यमय शक्तियों से लाभ के लिए चंगाई पाना लोगों मे निराशा, और डर के हताशा की स्थति से बदतर अवश्था में ला खडा करता है, प्रत्येक जो चंगाई पाते है। वे भी मानसिक रुप से आकृष्ट हो जाते है।

शकुन विचारणा

परिचय : रहस्य साधनो द्वारा भविष्य की बातों को बताने की रीति है शकुन विचार करना । मनुष्य का जिज्ञासा और असुक्षितता उसके भविष्य में देखने के लिए खींचता है । अंधकार की शक्तियां कई रास्ते इजात कराते है, जिससे लोग परखते हुए वे बाबूल के पुराने लोगों के समान हो सकते है । क्योंकि बाबूल का राजा तिर्मुहाने अर्थात दोंनो मार्गो के निकालने के स्थान पर भावी बुझने को खड़ा हुआ, उसने तीरो को हिला दिया, और गृहदेवताओं से प्रश्न किया, और कलेजे को भी देखा । उसके दाहिने हाथ मे यरुशलेम का नाम है कि वह उसकी ओर युध्द के यंत्र लगाये, और गला फाड़कर घात करने की आज्ञा दे और ऊँचे शब्द से ललकारें, फाटको की ओर युध्द के यंत्र लगाए और दमदमा बांधे और कोट बनाए । (यहेज केल २१:२१-२२)

बचन : अपने तंत्र और मंत्र और बहुत से टोन्हो को, जिनका बालावस्था ही से अभ्यास किया है । उपयोग में ला सम्भव है, तू उनसे लाभ उठा सके या उनके बल से स्थिर रह सके । तू तो सुक्ति करते करते थक गई है । अब तेरे ज्योतिषी जो नक्षत्रो को ध्यान से देखते और नये चाँद को देखकर होनहार बनाते है, वे खड़े होकर तुझे उन बातो से बचाएँ जो तुझ पर घटेंगी । (यशा ४७:१२-१३)

(१) ज्योतिष विद्या

१. परिभाषा : ज्योतिष तारों और उनसे सम्बन्धित स्थतियों का अध्ययन है जो भविष्य बताने और लोंगो को प्रभावित करने के लिए कहा जाता है । राशिफल आकर्षण के केन्द्र बिन्दु बन गई है ।

२. भूमिका : बाबूल मे, ज्योतिष यजकों का विज्ञान था । जन्म कुन्डली के राजाओं और उनके ही जाति के लिए थी यह प्रयोग मिस्त्र कें और कालडियों मे फैल गया । यह प्रयोग मैक्सिकों के सता जाति और इंकास (Incas) के प्राचीन परंम्पराओं में प्रयोग करते पाया गया है । यह ४ हजार वर्ष पूर्व की बात है ।

३. ज्योतिष का अभिप्राय

अ- ज्योतिष भविष्य में छेद करने का प्रयास करता है ।

ब- ज्योतिष इस भागदौड़ भरी संसार मे ंजो अपना ध्येय खो दिया है उसमे अपना बर्चस्व कायम करना चाहता है ।

क- ज्योतिष गुणों के विशलेषण मे रुचिकर है

ड-ज्योतिष मनुष्य के उद्देश्य और शक्ति की अपील करता है ।

४. मसीहीयों के ज्योतिष को नकारने का वजह ।

अ- यह गुप्त (रहस्य) पार्श्वभूमि से आता है – तारें ईश्वरों के तुल्य है, धार्मिक स्वरुप मे वर्णित किया जाना,वैसा ही नियम पालन करना ।

ब- राशिचक्र की स्थिति में कर्क होता है जो कि पूर्वकाल के ज्योतिषियों ने साचा था, फिर भी वही नियम अब भी पालते जा रहे है ।

क- बैज्ञानिक सानिध्य की, और निगरानियों की अधीन ज्योतिष को नही रखा जा सकता ।

ड- यह भाग्यवादी है ।

- किसी के तकदीर को तारो के अनुसार निष्चित करना
- प्राचीन नियम : तारें से निकलने वाली किरण बच्चो के जन्म के वक्त उस पड़ने वाली किरण से भविष्य तय करना ।

इ- शैतान प्रबुध परिकन (Computer) है ।

ई - ज्योतिष के प्रभाव धोखादायक है, सम्मति और रहस्यमयी बातें ।

५. बाइबिल स्पस्ट कहता है ।

व्यवस्था - १७:२-५, यशा – ४७:१३-१५

यिर्म - १०:२

(२) ताश पत्ते (Cartomancy)

१. सदियों पुरानह दतिहास रखना ।

- रोमियों के पास छोटे छोटे ताश पत्ते समान खुदी (अंकित) संकेतो का पट्टिकाएँ सम्भाल कर रखा गया है ।
- ताश पत्ते आठवी शताब्दी में प्रकट हुए ।

२. ताश के पत्ते भविष्य बताने की एक कला है ।

- अटहत्तर ताश पत्ते भविष्य के लिए प्रयोग किए जाते है । ताश पत्ता हदयों के दस यानि ईच्छा पूर्ण होगी, हदयों के साथ यह प्रेम का पता है, फावड़े का दस भाग्य का पत्ता है, इत्यादि ।

३. खतरें : सम्मति और भविष्यवाणी के शक्तियाके के लोग शिकार होते है वास्तव में एक शाप होता

(३) हस्तरेखा विद्या :

१. इतिहास : प्राचीन रोम मे, ज्योतिष विद्या और हस्तरेखा के साथ मिश्रित था । हथेली को सात टीला ग्रहो के साथ चार मुख्य रेखाओ मे बिभक्त करते है ।

२. परिभाषा:

अ- हस्त सामुद्रिक भविष्य बताना रेखाओं के होथो से होता है ।

ब-हस्त सामुद्रिक वैज्ञानिक अनुवाद का रुप (आकार) और हाथ के रेखाएॅ हैं ।

क- लिपि विज्ञान हस्तलिख्ति का अनुवाद है । (रुपांतर)

३. तकनीक : चार मुख्य रेखाएँ

(४) दोलन के (दण्ड) छड़ी के साथ शकुन :

तरीके : दण्ड (छड़ी) को शरीर के प्रत्येंक हिस्से मे घुमाना पांचा छड़ी (द्विशाखा) छिपे पानी के स्त्रोत, खनिज संचय इत्यादि को पता लगाने के लिए करना ।

(५) दर्पन भपिष्यक्ता या स्पटिक बाल (गेंद)

तरीका : स्फटिक गेंद या दर्पण की ओर टकटकी लगाकर गति शक्तियों मे स्थापित को देखना जो अवचेतन हैं जिससे बाहरी मनुष्य में प्रवेश करने की शक्ति देता है ।

उद्देश : अनजानी चीजों को खोजना, बीमारी का इलाज

(६) मानसिक शक्ति की नाप

परिभाषा : एक वस्तु के बारे में विभक्त ज्ञान का निर्धारित अध्ययन, या ब्यक्ति के बारे में वस्तु से सम्पर्क द्वारा वे मानसिक शक्ति जानना ।

उपसंहार: भविष्य कहने की रीति हमेशा बदलती है, किन्तु इसके पिछे की आत्मा की शक्ति वैसा ही बना रहता है । बाइबिल निश्चित रुप से भविष्य कथन को मना किया गया है । पवित्र शास्त्र के निम्न वचनों को पढें – ब्यवस्था १८:९, भजन १०६:२८,३५-३८ महेज – २१:२१, आमोस -५:२६

जादू

परिचय : बाग में स्त्री के समक्ष शैतान प्रकट होकर शब्दो से उसकी परीक्षा की ...... तू परमेश्वर के समान हो जाएगी ...... (उत्पति ३:५) यह लुभावनी बातें मनुष्य के पतन की ओर ले गया । उसी समय से, मनुश्य शक्ति की खोज करने से नही रुका कि अपने में अधिकार और नियंत्रण करें । अंधकार के राज्य अपने अंधकारपूर्ण शक्तियों के भावी योजना द्वारा मनुष्य को लुभाया । इस अपवित्र सम्बन्ध से सूत्र और योग से मनुष्य अपना ही ईश्वर बनाया । जादू ने मनुष्य के इच्छा को सर्वोपरी करके स्थापित किया ।
बचन : जब तू उस देश में पहुँचे जो यहोवा परमेश्वर तुझे देता है , तब वहां कि जातियों के अनुसार घिनौना काम करने को न सीखना, तुझ में ऐसा कोई न हो जो अपने बेटे या बेटी का आग में होम करके चढाने वाला, वा न भावी कहनेवाला, वा न शुभ अशुभ मुहूर्तो का माननेवाला, वा न टोन्हा या तांत्रिक, वा न बाजीगर, वा न ओझो से पूछनेवाला, ना नभूत साधने वाला, वा न भूतों को जगाने वाला हो, क्योंकि जितने ऐसे काम करते है । वे बस यहोवा के सन्मुख घृणित है और इन्ही घृणित कामो के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा उनहो तेरे सामने से निकालने पर है, तू अपने परमेश्वर यहोवा के सन्मुख सिध्द बना रहना (व्यवस्था १८:९-१३)

(१) परिभाषा :

१. जादू सबसे अधक विवादित कला, या कम से कम प्रयास किया जानेवाला , यह जानते हुए कि मनुष्य के आत्मा को जानकर और बनस्पति जगत, तथा मृत जगत के साथ भी शासित करना है । यद्दपि अतिसंवेदी यानि (भेद शक्ति) जादूई संगति समारोह करना है :

२. काला जादू

अ- शत्रु पर जादू से हावी और आधीन करने का प्रयास है

उदा. कुछ राष्ट्रो में जवान महिलाएँ माता ५ पिता के ख्लािफ शादी करने और शाप मे मर जाते है ।

ब- ढग्ण : मुर्गे का बलि, शराब, तम्बाकू इत्यादि ।

३. सफेछ जादू

१- भाग लेने वाले परमेश्वर के सामर्थ का दावा करते है

अ- मसाही प्रतीक (नमुने, चिन्हो) का प्रयोग

ब- त्रियेकता का सम्भावित नामों का प्रयोग

क- प्रभु की प्रार्थनातीन बार दूहराना, तीन सलीब, तीन बाइबिल के वचन, तीन मामबत्ती इत्यादि ।

२- प्रार्थना विधी : सच्ची आराधना के विपरीत

अ- आहान करना – प्रार्थना का दूसरा पक्ष

ब- मोहक – वचन अध्ययन का प्रतिरुप

क- सांकेतिक कर्म - नकलची कर्म बपतिस्मा

ड- पूजा वस्तू -- प्रभु मेज का दूसरा पक्ष

३- काला जादू व सफेद जादू मे फर्क से लेवीय दंन्कार करते हैं ।

४- निगरायाँ

अ- विश्वास की सच्ची प्रार्थना परमेश्वर को समर्पित की जाती है, जबकि सफेद जादू मे परमेश्वर को कार्य के लिए बाहय किया जाता है ।

ब- मनुष्य की इच्छा सर्वोपरी होती है बजाय परमेवश्र के इच्छा ।

४. तटस्थ जादू

- प्रकृति की तटस्थ शक्तियों को चंगाई के उद्देश्यों के लिए प्रयोग करना ।

(२) शक्ति के लिए मनुष्य के खोज संतुष्ट करने के लिए पवित्रशास्त्र वचनों को शक्तियों का संचालन करना तू परमेश्वर के समान हो जाएगी (उत्पति ३:५)

जादू से शक्तियों को स्वीकृत किया जाना -

१. हाथ की जादूई कौशल द्वारा आत्माओं को वश मे करने की क्षमता।

२. स्त्री या पुरुष को प्रेम या आज्ञापालन कराना।

३. सब खजाने की खोज करना और उसके सम्पति का आश्वासन देना (सुरक्षितता)

४. चुराई समान की भरपाई करना

५. अदृश्य होने की शक्ति

६. सब खेंलो मे जीतना

७. ज्ञान

८. मनुष्य या पशु के मृत्यु के नुकसान की शक्ति रखना

(३) परमेश्वर के इच्छा और ब्यवस्था के विरुध बलवा ही जादू का प्रमाण है –

१. अधिकार विरुध बलवा से द्वार खुलते है –

अ- माता-पिता के अधिकार

ब-सरकारी अधिकार

क- अलौकिक अधिकार

२. छुटकारे के प्रार्थनामे, ग्यक्ति को बलवा के जड़ से निवटना जरुरी है (१ शमु १५:२३)

३. परमेश्वर की ब्यवस्था बाइबिल वे छठवे और सातवे मूसा की किताब में अलग से लिखा गया है। (यह सब शैतान ग्रसित किताबें है)

-प्रथम भाग मे मनुष्य कैंसे शैतान के साथ सम्बन्ध मे प्रवेश कर सकता है को प्रकट केया गया है ?

-दूसरे भाग में निदेश दिये गये है कि प्रकृति के शक्तियों पर ब्यक्ति कैसे अधिकार प्राप्त कर सकता है, उसी ्कार जादू के प्रयोग से स्वर्ग और नरक की शक्तियों पर कैसे कार्य कर सकते है ?

(४) बाइबिल मे जादू (डायन टोन्हा) के सन्दर्भ :

अ- मिश्र के जादूगर – (निर्ग ७:११-१२)

ब- वांछित – (ब्यवस्था १८:१०, लैब्य १९:३१)

क- जादू – टोना की शक्ति नही बचा सकती – (यशा ४७:९-१२)

उपसंहार : (१) परमेश्वर के सतांन यीशु के लहू के द्वारा सुरक्षित किये गये है।

(२) प्रार्थना जादू की शक्ति को रोकता है।

(३) पूर्ण छूटकारा यीशु द्वारा सम्भव है।

रहस्य और रहस्यवाद

परिचय : रहस्यवाद निर्धारित चिंतन से ग्रहण किए सहज बोध द्वारा आत्मिक सत्य के ज्ञान को दावा के साथ प्राप्त करने की सम्भावना पर जोर देता है र ज्ञान प्राप्त करने की मानवीय कारणों के माध्यम को किनारा लगा दिया गया है । इस प्रकार के सिध्दांतो को अभ्यास के अनुशससन जैसे योगा, जादू , किमिया, ज्यातिष गुप्तदल, ताओधर्म (चीनी दार्शनिक) तंत्र मंत्र और जिन्न । हमारे दिनों में यह प्रयोग बिभिन्न तरीको से चलाया जाता है जो अंर्तज्ञान (गूढ) चिंतन और कराटे और सुब्यक्त आदि रुपों में । सह सिदांत बुनियादी तौर से मसीहियत के ब्यक्तिगत परमेश्वर को इन्कार करता है । मनुष्य के देवीय विरासत को दावा कराना , नैतिक मूल्यों के वक्तब्य को अस्वीकृत करता है ।

(१) रहस्यवाद के चार मुलभूत विचार :

(१) सब एक है

अ- सब विशेषताए एक मात्र अविभाजित एकता मे मिला हुआ है ।

ब- समाप्ति : यहा केवल एक ही अस्तित्व (यर्थातता) की सच्चाई है ।

क- सब प्रत्यक्ष अलगावे और विपरीत वास्तविक नही है ।

ड- सब वस्तू और ब्यक्तिगत सब मिलाकर केवल झलक मात्र है ।

इ- असीमित स्थिति और बिनाशर्त जागृति ब्यक्ति के जीवनल में असीमित सच्चाई के चेतना को लाता है ।

(२) मनुष्य एव देव प्राणी है ।

अ- किसी को भी चिंतन मे उसके आंतरिक स्वयं को अनुभव करता है ।

ब- स्वयं जागृति ब्यक्ति में अपने अन्दर आत्मिकता को झांकने का अनुभव मिलता है ।

क- मनुष्य का स्वयं प्रभु है ।

३. जीवन मे परिपूर्णता का उद्देश्य अपने देवीय स्वभाव के विषय जागृत होना है ।

अ- तार्किकता का एक चमक मनुष्य में अंर्तज्ञानोदय लाता है, प्रदीपन, क्षतिपूर्ति , संगठन, या स्वयं आभूति ।

ब- ब्यक्तिगत, अधीनस्त और अनुभवनात्मक अर्थ और सत्य के स्त्रोत है ।

४. आत्मज्ञान, आत्मिक शिल्पशास्त्र के रहस्य की और मन: आत्मिक बल और अगुवाई (करता है)

अ- मनु- परमेश्वर स्वामी और अपनी वार्सवकता का सृजनहार हुआ ।

ब- अपने ज्ञान और आत्यात्मिक नियमों के प्रयोग से स्वयं के भावी विकाश को बनाने और मनाने की दशाओं पर या अन्य किसी में सक्षम होना ।

क- जैसे चेतना को हकीकत में स्थापित , करने मनुष्य होश के नियंत्रण करने से वास्तविक संयम को समझता है ।

ड- चेतना को नियंत्रण करने के द्वारा निर्मिति के ढाँचे को उलटना सीखाता – इस अवशथा में रहस्यवाद जादू बन जाता है ।

उपसंहार : रहस्यवाद के द्वारा मनुष्य अपने आपको प्रकृति मे घुल मिलकर प्रभु को खोजता और उसके साथ मिलकरा ब्यक्तित्व और पहचान का विघटन करता है । मनुष्य एक पुर्नजिवीत दैवीय और चेतना द्वारा संसार की वास्तविकता को नियंत्रण करने की क्षमता रखता है । नैसर्गिक उपासना द्वारा, मनुष्य परमेश्वर के स्थान पर बिराजमान हुआ है ।

(२) रहस्यवाद के चार मूलभूत अनुशासन जो गूढ (रहस्य) को प्रकट करता है -

१. लोकोतर चिंतन

२. लेखक, हिन्दुवादी वेदो के मान्यता प्राप्त अगुवा गुरुदेव के शिष्य महर्षि महेश योगी थे ।

ब – मनुष्य के प्रत्येक क्षेत्र की आध्यात्मिक बीमारी को चंगाई का न्यौता (आश्वासन) देना ।

क- ईश्वरीय - चेतना की स्थिति में लाने की प्रतिज्ञा जिसमें कर्म मनुष्य के जीवन, मस्तिस्क और शारीरिक रचना की रोक कर खराब करके आत्मिक योजना के स्तर में लाता है जो जिसका अन्त जीवन होता है ।

ड- दावा करना कि (TM) धर्म नहीं है, किन्तु आरम्भिक पूजा के मंत्र मे श्री गुरुदेव की (आराधना) होती है ा

इ- मंत्रोपचार का दुहराना आत्मिक जगत के उस क्षेत्र मे लाता है जहां आत्माओं सम्पर्क सम्भव होता है ा

२. योग

अ- योग मानवप्राणी से सब संसारिकता के साथ यतिधर्म, के सहायता से छुटकारे की रुपरेखा के विधियों का संकलन है ा शारीरिक ब्यायाम, श्वांस तकनीकी और चिंतन ा

ब- इसमें मुख्यत: पुर्नजन्म के चक्र पर जोर दिया जाता है, और प्राण के दुसरे प्राणी में जीवन प्राप्त करने को भी कहा जाता है ा

क- जब आत्मा पुर्नजन्म से शुद होता है, यह अन्तत: सर्वब्यादी आत्मा (ब्रम्हा मे) विलीन हो जाता है महत्व (जोर डालना) देता है ा

ड- मंत्र योग चिंतन (विज्ञान) कृयॉ विधि को जोर देकर विश्वब्यापी आत्मा मे अपने आपकी पहचान बनाना ा

इ- योग गूढ शक्तियों, मंत्रो और चिंतन के द्वारा बंधा हुआ है ा

३. इकान्कर (ECHANKAR)

अ- इकान्कर के स्वयं परिभाषा के अनुसार, यह परमेश्वर को अनुभव करने का जरिया प्राण यात्रा का प्राचीन विज्ञान है

ब- मनुष्य को सिखाने के पश्चात अपने मन को भूलना चाहिए और शून्य मे वापस, ईश्वरी राज्य में आना चाहिए ा

क-मानव जो आत्मा है, अपने शरीर से बाहर जा सकता है, अपनी ईच्छा और स्वतंत्रता पूर्वक संसारिक वस्तुओं के, शक्ति, उर्जा, ब्रम्हाण और समय को त्याग कर ा

ड- वर्तमान नेतृत्व , श्री डारविन ग्रॉस, मानसिक संगठन के साथ २०,००० अनुयायियों को संसार भर से एकत्रित कर लिया ा

४. कराटे

अ- बिना हथियार के युध्द कला जिसमें प्राचीन जुई जिद्स्यु सम्मिलित है ा यह बिशाल योध्दा विकसित करने का बुध्द धर्मवादी जिन्न से मिला हुआ हे ा

ब- आज कराटे विभिन्न रीति के अंर्तज्ञान चिंतन के साथ नेत्र श्लेश्मा मे हमेशा सिखाया जाता है ा

क- प्रत्येक ब्यक्ति के शरीर को ही हथियार के रुप में इस्तेमाल करना और सोंचे सांप के समान प्रतिक्रिया करने सिखाया जाता है ा

ड- आध्यात्मिकता में चिंतन के साथ हिंसा के मनोविज्ञान पर आधारित हे ा

उपसंहार : रहस्यवादी अपने सब रीति में गूढ कौशल का चेतना, पलटवार, गूढ सिध्दांतो से लिप्त जो आतरिक अर्थो के अनुभवो को प्राप्त करने के लिए रहता है ा अत: इस गूढवादी और रहस्यवादी को जो अपने अनुयायियों को समेटे हुए उसके जडो और अभिन्न अगुवों को उसी मार्ग मे अगुवाई करता है का अंत करते है ा

गूढ के प्रताड़ना से छूटकारा

(१) चार कारण जिससे रहस्य शक्ति और प्रताड़ना पैदा हो सकता है ।

अ- अनुवांशिक – दो संम्भवनाएं: जिन्न स या उपराधिकार

ब- शैतान को अपने आप को चढाना

क- गूढ प्रयोग करना

ड- रहस्य आदान प्रदार करना

(२) प्रश्न :

१- एक मसीही के लिए लगातार पीड़ा, प्रताड़ना या आधीनता कैसे सम्भव है, क्योंकि वह जीवन परिवर्तन पूर्व इसमे सम्मिलित था ?

उत्तर :- अंधकार के शक्तियों के द्वारा खुले ही रहते हैं जब तक वह अपनी इच्छा के कर्म से बंन्द नही करता है ।

२- क्या यह सम्भव है कि एक मसीही जो कभी भी इस प्रकार के (गुढशक्ति) बातों मं सम्मिलित नही हुआ अधीनस्त या प्रमाड़ित हो सकता है ।

उत्तर :- हाँ, कई तरह से – (१) माता – पिता के द्वारा आ सकता है (२) बच्चे प्रभावित हा` सकते है यदि माता – पिता किसी आशिष के लिए मान्नते मांगी हों । और (३) रहस्यमयी विशेष फिल्म या दूरदर्शन कार्यक्रम देखने के द्वारा ।

(३) छुटकारे की विधी :

१- मसीह में विश्वास की कबूली

२- रहस्यमयी पापों के लिए पश्चाताप

शत्रु के उपसिीति के हजूरी को जाहिर करना और उस पसंदीदा बिन्दु (क्षेत्र) जिसमें वह अपने शिकार को पकड़े रहता है – **फ्रीमैन**

३- शैतान को धुड़कना और आज्ञा देना कि भाग जाए ।

४- छुटकारे की प्रार्थना ।

(४) बातें जो रहस्यवाद को सहायता करता है ।

अ- अधिकार के विरुध बलवा

ब- नशा क-अश्लील चित्र-कामुक अभिलाषा

ड- टी एम (T.M.) इ – संगीत (अम्ल, रॉक)

मृत्यु शोक और वियोग में है उन्हे सांतवाना देना

भूमिका : शोक एक तीव्र दु:ख है, भावनात्मक पीड़ा ब्यक्तियों के खाने के कारण । वहां पर गहरा दु:ख, ब्यापक उदासी, सताव दर्द और संपात होता है । वियोग एक दु:या और एकाकीपन किसी ऐसे प्रिय जनों के मृत्यु (खोन) से पैदाद होती है । यह एक कठिन समय होता है । वियोगी बहुधा महशूस करता है कि उसका ही अनुभव विशेष है, वह सोंचता है कि नुकसान से कोई भी टिक नही सकता या जैसे वह दु:ख झेल रहा है । वहां परचंगाई के चक्र दु:ख के प्रकारानुसार है, जिससे दुखित ब्यक्ति को समयानुसार सम्भलने में सहायता करता है कुछ ब्यक्तियाँ, जों भी हो, लगातार लम्बे समय तक शोक मनाते है । कुछ में तो कोई भी इस नुकसान के दु:ख से पूरी तरह छुटकारा नहीं पायं है ।

<u>उपरोक्त चंगाई के चक्र, प्राय: निम्न विधि से चलते है :</u>

१. मृत्यु का आरम्भिक मानसिक प्रभाव इतना जोर का होता है जिससे कभी – कभी ब्यक्ति को लकवा के समान बना देता है ।

२. भावनात्मक स्वतंत्रता: रोने के एक समय के बाद ।

३. एकाकी पन और निराशा : क्षति का आशय हमेशा उस ब्यक्ति पर निर्भरता के स्तर से सम्बधित होता है । वहा पर निराशा के कई लक्षण है ।

४. ग्लानी : काश मै कुछ ज्यादा किया होता या मै कुछ अलग तरीके से किया होता इत्यादि ।

५. गुस्सा, (शत्रुता) : क्यों परमेश्वर मेरे साथ ऐसा किया ?

६. जडत्व का सींति : उत्साहीनता , मै इससे बाहर नही आ सकता मैं असासवधान नहीं

७. धीरे – धीरे आशा में लौटना जीवन चलता रहेगा मैं सहायता योग्य होऊँगा परमेश्वर इससे बाहर आने के लिए मेरी सहायता करेंगे ।

८. सामान्यतया और वास्तविक्ता में लौटने के लिए : क्षति को स्वीकार करना और अपने आप को असमायोजित करना ।

हमें यह याद रखना चाहिए, जो भी हो शोक न तो दु:ख को सूचीबध्द किया जा सकता है । कभी – कभी दु:खो का स्तरें मिला हुआ और परतदार महशूस होता है । शोकित दु:खो के कुछ चरणों मे छुटकारा महशूस कर सकता है । केवल इसे बदले मे पा सकता है । वास्तविकता के लिए शोकित ब्यक्ति को संम्मति आवश्यक है, विशेष संवेदनशीलता और स्नेहमयी, सान्तवाना , और सहानुभूति जरुरी है । हमें इसके लिए पवित्र आत्मा के अगुवाई पर निर्भर होना चाहिए । सुविधानुसार, धारा प्रवाह, या सान्तवाना दायक उतर सुरक्षा घेरा हो । हमारे शबद अर्थपूर्ण और सच्चा होना चाहिए । परिस्थितिनुसार चित्र बनाया जाता है क्योंकि वास्तविक सहानुभूति शोकित ब्यक्ति के लिए वही काम करता है जहां वियोग प्रकृया वास्तव में है ं प्रत्येक प्रश्न का उतर की नकल न करे । मानले कि आप क्यों या कैसे परमेश्वर क्या करता है आप नही समझते है । प्रोत्साहन अग्रणी जैसा न बने, वियोगी को उकसाकर हर्ष और भली इच्छा में लाने का प्रयार करने वाले भी न बनें ं शोकित जन को अधिक आत्मिक या परमेश्वर के करीबी का सुझाव न दें, कि दर्द कम हो जाए । याद रखे कि एक छोटी भेट उसकी प्रत्येक जरूरत को पूरा कर दे । हम जो कर सकते हैं किया , जो भी यीशु के बारें में, और वचन का संदेश बताना, हम परमेश्वर पर भरोषा रखते है कि वह अपना काम करेगा ।

सांतवाना योजना जिसका अनुशरण किया जा सके

१- जरूरत मण्द को बताएं कि आप उनकी चिंता और सहायता करना चाहते है । उससे भेट करके उसके इस क्षति पर कैसा आप महशूस कर रहे है कहें । एक धीरज स्त्रोता बने, जब ब्यक्ति शोकित हो तो ये बात उसको हल्का करने का काम करता है ।

२- शोक और मातम आगे उसे तंदुरुस्त करेगा । यह एक विश्वव्यापी मानवीय अनुभव है जिससे हम मे से हरेक को गुजरना है । किसी ने कहा है कि शोक परमेश्वर से वरदान है । हो सकता है कि भयावह झटके और भावनात्मक स्थिति के बाद हमारी प्रतिकृया मे हमारी सहायता करे यीशु ने कहा – धन्य है वे जो शोक करते है क्योंकि वे सान्तवना पायेंगे (मती ५:४) यीशु स्वयं लाजरस के कब्र के पास रो (यूहन्ना ११-३५)

३- उसे बताए कि ग्लानि के अनुभव को प्रकट करना गुस्सा, शंका या निराशा स अच्छा है । ये एहसाय दु:खित जन को बार-बार न लाया जाए या सलाहकार द्वारा ठुकराया न जाए उसके एहसास के बारे में बातें करने के लिए उत्साहित करें

४- उसे बताएं कि जो वह महशूस कर रहा है प्राय: शोकित प्रक्रिया में और स्वीकृति और चंगाई मे बहुधा आते है । सम्भवत: आहिस्ते से । परमेश्वर हमारे दिल के दर्द और हानि को लेना चाहता है , और अपनी दिलास और प्रोत्साहन लाना चाहता । इस वक्त चाहे जीवन मूल्यहीन लगे, किंन्तु स्मरण रहे, मसीह स्थायी है, ठोस चट्टान ,एक बुनियाद कि जीवन को फिर से बनाए ।

५- उससे बातें करे कि क्या उसने कभी यीशु को अपना मुक्तिदाता और उध्दार कर्ता के रुप मे ग्रहण किया है । सो यदि हम मसीह के साथ मर भी गये तो हमारा विश्वास यह है कि उसके साथ जीयेंगे भी । हमारा भविष्य का विश्वास उस तथ्य पर आधारित है कि परमेश्वर ने मसीह में क्या किया है । क्योंकि मसीह जीवित है हमे निराश होते की जरूरत नही, चाहे हमारे जीवन की परिस्थितियां चाहे जो भी क्यों न हो । अब यदि हम ...... मसीह के संग मरते, हम विश्वास रखते है कि हम उसमें जीएंगे भी ...... क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है परन्तु परमेश्वर का मुफत दान अनन्त जीवन हमारे मसीह यीशु मे है । (रोमियों ६:८-२३)

६- उसे बाताएं कि, मसीहियों के लिए, मृत्यु जीवन का अंत नही है । उसके मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा मसीह ने पाप और मृत्यु को हराया है, अत: उस में विश्वास करने का अर्थ : हम कभी न मरेंगे (यूहन्ना ११:२५-२६) हमे अनन्त जीवन है (यूहन्ना ३:१६) हमारे लिए स्वर्ग में स्थान सुरक्षित है (यूहन्ना १४:१-६) हम शरीर के पुररुत्थान में भागी होंगे (१ कुरिन्थियों १५:५१-५२) यदि हम विश्वास करे कि मरे हुओ मे से जी उठा है, वैसे ही परमेश्वर उन्हे भी जो सो गये है उसी के साथ ले आएगा (१ थिस्सिलु ४:१४) इस तरह, वहां एक महिमामय मिलन होगा उनसे जिन प्रियों को हमने खो दिया है प्रभु उसे एक दिन पूरा करेंगे ।

जिज्ञासु को नियमित बाईबिल अध्ययन एवं पठन के लिए उत्साहित करना, यह एक महान सांतवाना और बल का स्त्रोत है ।

७- उसे कहें कि परमेश्वर हमारे संसारिक जीवन को देखकर , स्वर्गीय महान आनन्दमय स्थान की तैयारी कर रहा है (मरकुस ८:३६) इस तरह , वह परीक्षाओं को अनुमती देता है, दुखों और प्रिय लोगो का मृत्यु का हमारे जीवन में आना ताकि हम उसकी तरफ भरोषा के साथ देख सके । हमने अपने मन से समझ लिया था कि हम पर मृत्यु कि आज्ञा हो चुकी है , कि हम अपना भरोषा न रखे, परन्तु परमेश्वर का जो मरे हुओं को जिलाता है । (२ कुरिन्थि १:९)

८- यदि वह किसी प्रिय के मृत्यु पर किसी बात के लिए ग्लानि अभिब्यक्त करता है (आत्महत्या की दशा मे यह बातें सामान्य है) सांतवाना दें दुसरी शंका बगैर इस वक्त केवल उसे ही । वह उस ग्लानि (क्षोभि) को जो उसने किया है या नही किया है । लिए नही चलना है, यह भूत काल है । और उसे यही सारे दु:ख को परमेश्वर पर छोड कर आगे बढने की जरूरत है । यदि उसे परमेश्वर के पास कबूल करना है, ऐसा करें , किन्तु उसके क्षमा के वास्तविकता को उसके क्षमा के वास्तविकता को उसके प्रकाश में ग्रहण करे (१ यूहन्ना १:९)

९- यदि उसे लगता है कि क्षति से वह उध्देलित हो गया, एकाकीपन भविष्य में क्या करेगा, इत्यादि, परिवार और मित्रों को चुपके से बताकर उसकी सांतवाना करें । और भावनात्मक सहयोग और प्रोत्साहन के लिए उन पर भरोषा रखें । कलीसिया इस खाली स्थान को भरने का महान कार्य कर सकता है । उसे स्थानीय कलीसिया में सरीक होना चाहिए । पासबान एक महान मानसिक सहयोग का भूमिका अदा करने में योग्य हो सकता है, यदि वह पहले से सदस्य नहीं है, वह बाइबिल से सिखाई जानेवाली संगीत ढूंढकर अराधना और गिरजा मे जाकर अपनी पहचान सबके साथ बना सकता है । जो भी हुआ है उसके लिए परमेश्वर की इच्छा को ढूंढकर ग्रहण करना । धन्यवादी दिल होना उसके सालों के प्यार जो उसने अपने प्रियों के साथ बाटें और सब प्रतिज्ञाएं जो आनेवाली थी, और मसीही प्रेम को पाने पहुंचना कि जो चोट खाए है उन्हे सहयोग करना । सब एक जैसे तथ्यों को सीखने में कि पूर्ण जीवन फिर से जिये महान उपचार और सेवा भी होगा ।

१०- उत्साही के मिलकर उसके समक्ष के लिए प्रार्थना करे, सांतवाना, और उसके जीवन को आशिष दें ।

संतानो की मृत्यु

बच्चों की मृत्यु मे विशेषकर बचे हुए माता-पिता के एवं परिवार को सम्भालना कठिन होता है इस तरह अल्पायु में मरणोपरांत हमेश ग्लानि, निराशा और ढेर सारी प्रश्ने उत्पन्न करता है । उपरोक्त अंकित सम्मति के नियमों अतिरिक्त निम्न बिन्दुओं को भी हम बताना चाहते है ।

१- यद्यपि हम नही जानते की शिशु क्यों परलोक सिधार गया, हम यह जानते है कि बच्चे परमेवर के लिए विशेष महत्व के है । यीशु ने कहा : स्वर्ग का राज्य ऐसो ही का है । (मती १९:१४) यह संकेत करता है कि बच्चे जो मर जाते है तुरन्त स्वर्ग मे उसके उपस्थिति मे ले लिए जाते है ।

२- जब राजा दाउद का संतान मृत्यु पश्चात अलग कर दिया गया । उसने कां : क्या मै उसे लौटा ला सकता हूं , मै तो उसके पास जाऊंगा , परन्तु वह मेरे पास लौट न आएगा ं (२ शमूएल १२:२३) इस तरह, यदि हम यीशु मे विश्वास करते है कि वह मरा ओर जीवित हो उठा, भरोषा रखते हुए कि वह हमारा प्रभु और उध्दारकर्ता, हमारे पास आशिषित आशा है कि अपने प्रियों को एक बार पुन: देख सकेंगे ।

वचन :

और वह उनकी आंखो से सब आंसू पोंछ डालेगा, और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक , न बिलाप न पीडा रहेगी पहिल बातें जाती रही ं । (प्रका २१:४) क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह और मर जाना लाभा है क्योंकि मै दोनो के बीच अधर मे लटका हूँ, जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहँ, क्योकि यह बहुत ही अच्छा है (फिलि १:२१-२३) यीशु ने उससे कहा । पुनरुत्थान और जीवन मै ही हूं जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह यदिमर भी जाए , तो भी जिएगा, और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्त काल तक न मरेगा, क्या तू इए बात पर विश्वास करती है ? (यूहन्ना ११:२५-२६) तुम्हारा मन ब्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो , मुझपर विश्वास रखों, मेरे पिता के घर मे बहुत से रहने के स्थान है, यदि न होते तो मै तुमसे कह देता, क्योंकि मै तुम्हारे लिए जगह तैयार करने को जाता हूँ, और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करु तो फिर आकर तुम्हे अपने यहां ले जाऊँगा, कि यह मै रहूँ वहा तूम भी रहो । (यूहन्ना – १४:१-३)

हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद दो, जिसने मसीह यीशु को मरे हुओं मे से जी उठने के द्वारा, अपनी बडी दया से, हमें जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया । अर्थात एक अविनाशी और निर्मल और अजर मिरास के लिए, जो तुम्हारे लिए स्वर्ग मे रखी है, जिन की रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से, विश्वास के द्वारा उस उध्दार के लिए, जो आनेवाले समय मे प्रगट होनेवाली है की जानी है (१ पतरस १:३-५) क्योंकि हम जानते है कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा, तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथो से बना हुआ घर नही, परन्तु चिरस्थायी है (२ कुरिन्थियों ५:१) भजन २३:६ भी पढे ।

मूर्तियों को चढाई भेंट को क्या विश्वासी खा सकते है ?

भारतीय जनसंख्या के ऑकडे सूचित करते है कि लगभग ८० टक्के लोग मूर्ति पूजा करते है। मसीहीयों का देश में केबल ३ टक्के ही अंशदान है। इस तरह, वे गैरमसीहियों के साथ दोस्तीपूर्ण सम्बन्ध बनाने के लिए सतत प्रेरित है। बिशेषकर हिन्दुओ के संग जिनका समाज मे बडा हिस्सेदारी हैं ताकि उन्हे परमेश्वर के प्रेम के संदेश को बांटा जा सके। जब वे जन्मदिन की पार्टी या जलसा के (क्रिसमस) के भोजन पर बुलाए जाते है तो हर्ष के साथ सम्मिलत होते है। धन्यवाद की प्रार्थना अर्पित करने के बाद खाने में उन्हे कोई हिचक नही होती है। किन्तु जब वे हमे बुलाते है या रात के खाने, मिठाईयाँ भेजते है, विश्वासी हिचकिचाते है और नाराज होते है। सम्बन्धो में दूरियाँ आ जाती है। कुछ विश्वासी कुछ भी स्वतंत्रता से खा लेते है, वही पर अन्य लोग चिंतित होते है। इसके बिषय में बाइबिल क्या कहती (बताती) है ?

नये नियम के प्रेरित जब पत्रों को लिख रहे थे तब यहि स्थिति उस समय विद्यमान थी। मूर्तियो को समर्पित प्रसाद को खाने के बिषय में संत पौलुस उस समय की नई -नई कलीसिया को लिख रहा था क्योंकि यह एक ज्वलंत मामला था। कुरिन्थियों के पहली पत्री मे इस बिषय पर चर्चा करते हुए दो अध्याय उन्होंने लिख डाले जो अध्याय ८ और १० को इसके लिए सावधानी पूर्णक पढ, यहां हम इन बातों को पाते है। सख्ती से कहते है कि मूर्तियाँ कुछ नही है (१ कुरिन्थयों ८:४, यशा ३७:१९, यिर्म १६:२०, जला ४:८) इस तरह कोई खाना जो मूर्तियां को चढाया गया हो अपवित्र नही हो सकता तथापि, मूर्तिपूजक श्रधालुओ के लिए इसको अलौकिक प्रतीक के रुप में प्रकट करते है। मूर्तिपूजक श्रधालु के द्वारा जब वे मूर्तियो को वस्तु चढाते है वे उनकी दृष्टि में पवित्र हो जाता है। कोई भी मसीही इस भोज्य पदार्थ यदि को मूर्तिपूजक देता है इसी मायने मे तो ग्रहण नही करेगा। (१ कुरिन्थि १०:२०, २१, २७) हम नम्रतापूर्वक हंसते हुए इंकार कर सकते है। यदि वे तब भी जोर दे, ले सकते है , ...

प्रेरित तीन स्थानों का जिक्र करते है जो चढाई गई भोज्य पदार्थ लोगों के सेवा मे दी जाती है। (१) मंदिर (२) घर (३) बाजारों मे। एक मसीही बिना किसी शर्त के किसी के भी घर खाने में शामिल हो सकता है। एक मूर्ति के मंदिर में (१ कुरि-८:१०) इस तरह का सार्वजनिक कार्य मसीह का अनादर करेगा और नये मसीहियों को निरुत्साहित करेगा जिसने मूर्तिपूजा छोडकर जीवित मसीह के सेवा को अपना लिया है। किन्तु मूर्तिपूजा करनेवाले परिवार मे खाने पर बुलाने पर बिना प्रश्न खने में शामिल हो सकते है (१ कुरि १०:२७) कोई भी सच्चा मित्र बालाम या जेजेबेल की तरह फंसायेगा नही। (प्रका २:१४,२०) दूसरा दुकानों मे क्या बिक्री होता है। मुस्लिम लोग पशुओं , पक्षियो के जबह के पूर्व मंत्रोपचार करते है। हिन्दु लोग भगवानो के छायाचित्र के समक्ष मिठाईयां और अगरबत्ती चढाते है, किन्तु आसानी से खरीदे और खाये जाते है जो वहां विक्रय होता है ...... बिना प्रश्न पूछे क्योंकि संसार और बहां की सारी चीजे हमारे प्रभु का है (१ कुरि १०:२५-२६) सभी पशुएँ, पक्षियॉ ,पौधे और समुद्री जंतु असली मे हमारे परमेश्वर का है और ये सब हमारे आनन्द और भोग के लिए है क्योंकि हम उसके है। सब वस्तुए प्रार्थना और धन्यवाद के द्वारा परमेश्वर के वचन द्वारा पवित्र होता है (१ तिमु-४:४-५) संत पौलुस १ कुरिन्थियों के ८ वे व १० वे अध्याय में रेखांकित सिध्दांत सिखाते है वैसे ही रोमियो के १४ वे अध्याय में सत्यता के ज्ञान बिना या मसीह मे स्वतंत्रा के कारण हम कमजोर दिलवालो को घायल और हमारे भाइयो और बहनो या उनके लिए रुकावट के कारण बन सकते है। (१ कुरि-८:९, १२) जब वहां कोई गलती नही, पूर्ण चेतना मे, जो भी खाने मे परोषा गया हो, यह पाप होगा यदि यह बात हमारें भाइयों के लिए ठेस का कारण या नाश का कारण बनता है। (१ कुरि ८:१३,११) दुसरों को कभी भी आक्रमण न करें (१ कुरि १०:२४, ३२, ३३) रोमियों – १४:१४-१५, २१)

स्मरणार्थ : सच्चाई पर समझौता न करें : मूर्तिपूजक दोस्तो के विरोधी मत बनना, कमजोर विश्वासियों को तुच्छ न समझे। (१ कुरि – १०:३२, को हम भावानुवाद की व्याख्या कर सकते है ..... दोष न लगाये चाहे नामधारी मसीही हो या गैर मसीही या विश्वासी मसीहियां को

गैर मसीहियों के शब्द और अवधारणाओं के शब्दावली

अहिंसा : प्राणियों के प्रति अंहिसा का सिध्दांत । चूकि हिन्दु लोग यह विश्वास करते है कि पशु और कीडे मकोडे बुरे कर्मो के कारण और भले कर्मो द्वारा किडे मकोडे व पशु से मानव प्राणी और तथा मानव प्राणी के बुरे कर्मो के द्वारा पुन: पशु एवं कीडे मकोडो में पैदा होते है । साग पात के अलावा अन्य किसी पशु पक्षी प्राणी को मार कर खाना नरभक्षी (स्व जाति भक्षी) के बराबर है । इसलिए प्राथ : हिन्दु शाकाहरी होते है । अहिंसा , जो भी हो आज हिन्दुओं के धर्मशास्त्र व कर्म में स्थिरता के साथ नहीं चल रहा । बहुत से हिन्दु आज भी पशु बलिदान करते है, और प्राचीन कालों से हिन्दुओं ने शत्रुओ के हत्या युध्द और क्रांति के दौरान कम नरसंहार नहीं किया ? केवल जो अंहिसा को कबूल किया । जो भी हो हिंन्दुओ ने गायो की हत्या से काफी दूर रहे हैं ।
आरती : एक धार्मिक परम्परानुसार पवित्र लौ को घुमाते है या धूप को कठौती मे दाहिये हाथ से पकडकर घडी के सुई की दिशा में गोल – गोल सेत या परमेश्वर के समक्ष घुमाते है । यह विधि कोई भी हिन्दू अपने पूजा कक्ष में कर सकता है ।

आश्रम : हिन्दी शब्द आसरामा, जीवन के चौथे चरण को दोहरा जन्म (उच्च जाति) हिन्दु :-

१) किशोर ब्रम्हचार्य शिष्य या शिष्या होते है ।

२) विवाहित गृहस्थ जिनके बच्चे होते है ।

३) जंगल मे मनन चिन्तन का एक समय कि धार्मिक कर्तब्यो और परम्परा को पूरा करने के लिए,

४) बुजूर्ग अवश्था, जब कोई ब्यक्ति अपनी सारी संम्पति को त्यागकर केवल गमच्छा, कमण्डल और पानी का पात्र, भिक्षा से जीवित रहना, और तमाम विधान और जिम्मेदारियों से मुक्त होकर रहना । यह पाली जीवन के तीसरे सीढों मे इसको अधिक जोर दिया जाता है । जैसे कि एक साधु का आश्रम होता है । आजकल इसे धार्मिक समाज के लोग लोकप्रियता से प्रयोग करते, भारत में ब्यतीत करते । जहां एक गुरू के आधीन अध्ययन करते, यहां तक कि भारत के दुसरे विश्वास के लोग भी अपने प्रार्थना अध्ययन केंन्द्र को आश्रम कहने लगे है ।

अवतार : वृध्द भाव से किसी भी भगवान का किसी जीवित प्राणी में अवतार लेना, प्रत्येक जातियों में सम्भावत: संकीर्ण विचार धारा से स्वयंका अवतार है । तथापित अवतार एक विष्णु का पुर्नअवतार (पुर्नजन्म) है । कुछ हिन्दु विष्णु भगवान के अनगिनत अवतार के मान्यता देते हैं, जबकि अन्य केवल नौ अवतार को ही मानते है, एक मछली, एक कछुआ, शेर, बारहा और एक बौना ओर एक राम, कृष्ण , बुध्द और मसीह । अवतार का प्रमुख भूमिका अदा करता है । मोक्ष के बिषय मे स्पष्ट नही है, किन्तु अवतार को सामान्यत: एक गुरू के रुप मे कार्य करना प्रत्येक पुर्नजन्म के रूपमे ग्रहण किया जाता है । बहुत से रूढिवादी हिन्दु काली पर यकीन करते, कि वह मसीह के बाद का अवतार है, उसका धरती पर प्रकट होन करीब ४२५००० वर्षो है, जो भी हो, आज हजारों गुरू है, जिनके बिषय मे उसके शिष्य उन्हे भगवान के अवतार मानते है ।

बाराही : हिन्दी शब्द बारह एक धार्मिक अनुष्ठान दिन को जब एक ब्राम्हण बालक जन्म लेता है, किया जाता है, जिस वक्त पंडित और ज्योतिषी बच्चे के भविष्य के बिषय मे भविष्यवाणी करते है ।
भगवत गीता : सबसे लोकप्रिय हिन्दु धर्मशास्त्र जो महाभारत का हिस्सा और हिन्दुओ द्वारा पूर्व से पश्चिम तक पवित्र ग्रंथ के रुप मे पढी जानेवाली किताब है, ईश्वर के श्लोक के रुप में जाना जात है । और बहुधा हिन्दुओं का सुसमाचार कहा जाता है, गीता शूरबीर अर्जुन और भगवान कृष्ण के मध्य वार्तालाप को अंकित किया गया है जो अर्जुन अपने ही रिश्तेदारों की युध्द में हत्या करने से अपने हाथ खींच लिया था, जो एक सारथी और युध्द मे एक महान योध्दा की बढियां भूमिका निभाने के लिए उत्साहित कर्ता रहा ।

भगवान : हिन्दी शब्द का अर्थ ईश्वर या देवता
भाई : इसका अर्थ प्रेम से भाइचारा निभाना, बराबरी का दर्जा या सम्मान सूचनक बोधक । बिरले ही एक बुजूर्ग हिन्दू धर्मी जन सम्बोधन मे किशोर को तो कहे पर बच्चों को कभी नहीं कहेगा । इसलिए जहा गोसाई रब्बी कहना आरम्भ किया, यह इस बात को प्रकट करता है कि वह उसे आदर दिया और अपने पिता को भूल गया ।

भजन : देवताओं (इश्वरो) के अराधना मे गाई जाने वाली भक्ति गीतें जो प्रयोग मे लाया जाता है ।

परमानन्द : एक ऐसी स्थिति को प्राप्त करना जिसका इस ब्रम्हाण के अस्तित्व से अलग महशूस करते है । जो शुध्द परमानन्द के ज्ञान का अस्तित्व है, जिसे ज्योतिर्मय और मनन द्वारा अलग कर दिया । और हर इच्छा थम गई । चूकि यह स्थति बिना दर्द या आनन्द से पा लिया,बुध्द , जिसने हिन्दू को जीवित किया जैसे कि शून्य द्वारा जिसे निर्वाण भी कहते है ।

ब्रम्हा : ब्रम्हाण के साथ आप भ्रमित न हो, जो सभी इश्वरों का प्रभु है, ब्रम्हा सृजनकर्ता , हिन्दू त्रिमूर्ती ईश्वरों मे प्रथम (यानि देवताऍं) अन्य में विष्णु, रक्षक देवता, और शिव जो विश्वसक है । माना जाता है कि प्रत्येक ४:३ २ अरब वर्षो मे शिव सब कुछ नाश करता है , ब्रम्हा फिर से रचते है । विष्णु फिर अवतार लेते है कि ब्रम्हा के राह को प्रकट करें । बहुधा एक विशेष नारंगी को चित्रित करता जो विष्णु द्वारा दिया गया (ऐसी प्रतीत होता है कि उसकी भूमिका सृष्टी के बिपरीत है ब्रम्हा को प्राय: चार सिर और चार हाथों मे बलि के औजार पकडे दिखाया जाता है, प्रार्थना मणिका और छोटी किताब भी ।

ब्रम्हाचार्य : पूर्ण रुपेणा धार्मिक जीवन, चार श्रेणियों मे प्रथम श्रेणी उच्च जाति में हिन्दु का जीवन है । चूमि ये वो समय होता है जब लैंगिक साधना अनिवार्य प्राचीन हिन्दु धर्म मे पालन करने के लिए वचन भी आए जिसका पालन आज भी प्रतिज्ञा के आधीन ब्रम्हचार्य जीवन यापन करते है ।

ब्रम्हमान : आधार भूत वास्तविकता : निराकार, अबोध , ज्ञानपरे, और अज्ञानी , न ही व्यक्तिगत अथवा अब्यक्तिगत दोनों सृष्टिकर्ता और निर्मित सब वस्तु, सब ही ब्रम्हा और सब मे ब्रम्हा है ।
हिन्दुओ के लिए मोक्ष और मूलभूत सत्य को समझना कि वह स्वयं ब्राम्हमन है । कि वह और सब दूनियां एक और कुछ प्राणी है । जो भी हो, ब्रम्हान मात्र अन्य देवता जो बाइबिल मे जिक्र है नही है । किन्तु एक विदेशी अवधारणा और यहूदी , ख्रीस्त परमेश्वर का विरोध करते है । ब्रम्हान सब कुछ है फिर भी कुछ भी नही, यह दोनो भले और बुरे का तुलना करता है । जीवन और मृत्यु स्वश्थ और बीमारी, और यहां तक की अवास्तविक माया का भी ।

ब्रम्हाण : यह ब्राम्हण जातियों में सबसे उच्च और ब्रम्हाण से घनिष्टता हजारो पुर्नजन्म से है इसलिए यह जाता है अन्य जातियों ब्रम्हान के बीच मध्यस्त रहा है । एक ब्राम्हण को पुजारी बनना ही चाहिए । यह ब्राम्हण को अन्य जातियो पर महान शक्ति कायम रखने मे सहायत करता है । किसी भी तरह से, ब्रम्हण को एक धार्मिक जीवन अन्य जातियों से अधिक आवश्यकता होती है । और निचली जातियों द्वारा कोई गलत कार्य होने पर उन पर भारी जुर्माना लगाया जाता है । संसकृत में जाति शब्द का अर्थ वर्ण जिसका अर्थ रंग है । ब्राम्हण लोग सम्भवत: गोरे रंग के आर्यो के वंशज जो भारत पर फतह किए हो सकते है । और आज भी ब्रम्हाणो का रंग अन्य जातियों के रंग से अलग हल्का रंग के होते है ।

जाति : एक सिध्दांत जो कृष्ण द्वारा गीता मे बताया गया है और सम्भवत: योजनापूर्ण तरीके से आर्यो द्वारा भारत पर आक्रमण किए ताकि काली चमडी वाले द्रविणो पर जय हासिल कर आधीन बनाए । चार वर्णो के विषय मे पढाया जाता है ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य और शुध्द जो वास्तव मे ब्राम्हण के शरीर से इनका प्रजनन हुआ । ब्राम्हण सिर से उत्पन्न हुआ और अन्य नीचे के भागो से पैदा हुए, कर्म का सिध्दांत और पुर्नजन्म को स्वाभाविक तौर से मानते है । यह भी पढाया जाता है कि निम्न जातियों के लोगो को जो भी उनके हिस्से मे दिया जाए सहर्ष स्वीकार करने के द्वारा अपने कर्मो मे उन्नति करके अगले जन्म चक्र मे उच्च जाति की आशा कर सकते है । अश्पृश्यता निम्न जातियों के लिए है, और ये हिन्दु धर्म ब्यवश्था से बाहर है । जब मुस्लिम भारत पर आक्रमण किए, अछूत लोग आसानी से परिवर्तित हुए, चूकि ईस्लाम उन्हे तुरन्त एक दर्जा दिया था, भारत मे बहुत सारे ईसाईयो के पूर्वज भी प्राय : अछूतों से है, बहुतो से केवल मात्र नाम के लिए ईसाइ धर्म स्वीकार किए कि इस अछूत के स्तर से अपने को ऊँचा रख सके ।

चानन : एक कोमल, चन्दन लडकी का सुगन्धित लेप का प्रयोग जातियों का चिन्ह और धार्मिक उद्देश्यों के लिए परम्परागत चिन्ह ब्राम्हण श्रधालु और ईश्वर के लिए लगाते है, सामान्यत: माथे और गले पर लगाया जाता है ं

दक्षिणा : शिव भगवान के बहुत नामों मे से एक, शब्द का अर्थ दाहिनी ओर और इसलिए ब्राम्हणो को अर्पण के रुप मे दिया जाने वाला मुद्रा के रुप में लागू होता है । जिसे दाहिने हाथ से ही दिया जाना चाहिए ।

देवताऍं : देवता या ईश्वर

दिया : एक छोटा मिट्टी का पात्र जिसमे बत्ती होती है और घी डाला जाता है, या कोई अन्य तेल और एक बत्ती होती है कि विशेष धार्मिक अनुष्ठान और विशेष त्योहार मे जलाया जाता है ।

धर्म : हिन्दुओं के लिए जीने का सही ढण्ग । पूर्ण नही, यह जातियों के लिए अलग-अलग हो सकता है और प्रति ब्यक्ति मे भिन्नता आ सकती है जिसे स्वयं ढूंढना चाहिए । नैतिक सिध्दांत नही है, इसमें खास अनुशासन जुडा है जो मनुष्यों को कल्पित ढण्ग से रहस्यमय तरीके से ब्राम्हमान के संगति की ओर अग्रसर करता है किन्तु यह जरूरी नहीं कि नैतिक मान्यता मे स्थिरता के साथ जुडे रहने और सही तथा गलत से मानवीय अंतरात्मा में विरासत मिले । किसी का धर्म सचमुच , गलत और सही के उपर हो सकता है ।

धोती : एक लम्बा कपडा जिससे पुरूष अपने तन को लपेट कर ढकता है । साधारणत: जमीन छुती हुई, किन्तु गर्मी मौसम या धार्मिक रीति को पूरा करते वक्त कमर तक कसकर बांधते है, कुछ लोग नीचे से कुछ फुट उपर पैर के बिच से घुमा कर ढीलाढाला पैंट के समान पहनते है । यद्यपि आजकल बहुत भारतीय शहरों मे पश्चिमी कपडो को पहनते है, फिर भी धोती गावों मे लोकप्रिय है, तथापित शहरों में भी सामान्यत: पुजारी और साधु संत धोती ही पहनते है । अन्यथा बहुधा सूटकोट भी पहनते है ।

घाट : एक विशेष क्षेत्र मनुष्यों के मृत शरीर को दाह संस्कार प्रकृया के लिए निर्धारित करना । इस प्रकार का शमशान भूमि भारत में कई जगह है । किन्तु सबसे लोकप्रिय पवित्र भूमि शहरों के आसपास है, जैसे बनारस , गंगा नदी के तटों पर, ताकि राख (अवशेष) को पवित्र नदी में बहाने मे आसानी से हो ।

घी : जो दूध से बनाया जाता है, जिसका भोजन मे और पूजा समारोह के उद्देश्यो को ध्यान मे रखते हुए कि बहुत पवित्र होता है क्योकि यह गाय के दूध से प्राणियों मे सबसे पवित्रतम आता है ।

गुरु : शाब्दिक अर्थ एक शिक्षक, किन्तु अन्तरात्मा के मान्यतानुसार ब्राम्हण का प्रकटीकरण है, हिन्दु धर्म शास्त्र को केवल पढने से तकनीकी तौर से नही समझा जा सकता, किन्तु उसे केवल गुरु से ही सीखना चाहिए, जिसने स्वयं किसी गुरु के चरणों में ही सीखा हो प्रत्येक हिन्दु को गुरु के आज्ञानुसार चलना चाहिए ताकि वह आत्मनिर्भरता को प्राप्त कर सके । जो गुरु के यह ज्ञान को प्राचीन साधु संतो से गुरूओं ने ज्ञान प्राप्त किया और नीचले पीढी को देते जाते है । (बाइबिल के बहुत विद्यार्थी भी इस अवधारणा के आत्मिक ज्ञानोदय का सम्बन्ध ज्ञान द्वारा और ज्ञान के वृक्ष जो मानव प्राणी को अदन के बाग में पतन का कारण बना) गुरु की भक्ति उसके मृत्यु पश्चात भी होती है और कुछ हिन्दु सिखाते है कि उनसे बाते करना पहले से अधिक स्पस्ट तथा मजबूती से होता है जब इस में उससे अधिक, क्योंकि उसके योजना मानो उच्च हो गये इसलिए बहुतो का विचार धारा है कि गुरु के दफन भूमि मनन के लिए उपयुक्त जगह होती है । उच्च अति संवेदनशीलता : योगा और चिंतन से आत्मज्ञान (अर्तविवेक शीलता) के कई स्तर खोले गये है, जिसे उच्चतम सिीति कहते है क्योंकि वे एक ब्यक्ति के सामान्य अंन्तरात्मा और अनुभव जो उसने निर्माण के मार्ग में महशूस किया फर्क करते है पूर्वी रहस्यवादीयों के बिभिन्न पाठशालाएँ उन्हे विभिन्न मार्गो से वर्गीकृत करते है । प्रारुपिक स्थितियाँ संगठित अंतविवेकशील होते है । जहां एक संगठित रहस्य के अनुभव जगत के साथ, और ईश्वरीय अंतर्विकेकशीलता जहां पर ब्यक्ति अनुभवों से महशूस करता है कि स्वयं एक भगवान है । मिलता-जुलता (अंतर्विवेकशीलता की स्थितियाँ) को सम्मोहन द्वारा मालूम करते हैं , कलात्मक समाधि, कुछ विशेष औसधि, जादू – टोना समारोह, तंत्र मंत्र, इत्यादि, और सब एकही गूढ तथ्य से विभिन्नता आयी महशूस होती है ।

हिन्दूवादी : भारत का बहुसंख्य धर्म, जिसमें बहुत सारी रास्ते और विश्वास मे विरुधार्थीयों के कारणें से अलग करना असंभव हैं । एक दुर्गाजी को, कोई तो बहु देववादी (३३ करोड़), एक देवता, नास्तिकवादी, या एक नास्तिक , या एक नास्तिक, नैतिकवादी, एकद्वैतवादी, बहुदैत्यवादी, अद्वैतवादी, नियमित मंदिर जाना और मंनन अलग:अलग देवताओं का करना । या धार्मिक परम्पराओं मे भाग लेना फिर भी हिन्दु कहलाना । हिन्दु सर्व धर्म समागम एवं हरेक धर्म के विश्वास को स्वीकार करने का दावा करती है । किन्तु कोई इसमे मिल जाए तो हिन्दु धर्म का भाग हो जाता है । इसी में मसीहियत को भी समन्वय करने की कोशिष मे गले लगाना धुएँ से भर जाता है किन्तु यह स्पस्ट है कि बाइबिल का परमेश्वर ब्राह्मण नही है । स्वर्ग निर्वाण नही हैं, यीशु मसीह केवल एक है और विष्णु का अवतार नहीं है, और मसीह का मृत्यु हमारे पापों के लिए जिस पर विश्वास करके उसके अनुग्रह द्वारा उध्दार पाने और पुनरुनाथ हिन्दुवादी शिक्षाको पूरी तरह विवादित बना देती है ।

जन्म : जो पुर्नजन्म पर यकीन करते हैं वे पूर्व जीवन के नामो को रखते हैं , यह इस चेतना के साथ वर्तमान अस्तित्व के राह साथ पैर रखने का प्रयोग करते है , जो दूसरा कदम लेने के लिए तैयार किया जाता है, एक जन्म अगले जन्म के बारे मे निर्धारित करता है ।

जीवन – मुक्ति भगवत गीता मे इसकी उच्च अमिष्ठ मानवप्राणी के लिए माना गया है इसे योगा द्वारा हासिल किया जा सकता है , जबकि शारीरिक अवश्था मे ही, ब्रह्ममान के साथ गूढ एकात्मकता के द्वारा ।

कर्म : हिन्दु के लिए नियमों का पालन और प्रभाग ही उसके (भविष्य) गंतब्य या तकदीर को निर्धारित करता है I सिध्दांत मे सिखया जाता है कि प्रत्येक नैतिक या आध्यात्मिक विचार, शब्द (बचन) या काम के लिए एक अपरिहार्य प्रभाव कर्म को उत्पन्न करता है I एह एक ही जीवन में पूर्ण करना संमभव नही है , इस तरह पुर्नजन्म कर्म के लिए आवश्यक है I प्रत्येक सफल जन्म की घटनाएँ पिढली जीवन कालों मे किसी के द्वारा किए कर्मो द्वारा ही अन्तत: निर्धारित होता है I काम में कोई क्षमा नही है , हरेक ब्यक्ति को अपने कर्मो का दण्ड भुगतना पड़ेगा I

कृष्णा : सबसे लोकप्रिय और प्रिय देवता तथा अनगिनत इतिहास के बिषय , उनमें बहुत से कामो द्वीपक है, पश्चिमी देंशो में कृष्णा को अच्छा जानते है क्याकि धर्म प्रचारको के गाने बजाने का उत्साह केसरिया कपडे पहनकर हरे कृष्णा कहते हुए बहुत शहरों मे देखा जा सकता है I वे मंत्रोपचार बार-बार करने के द्वारा मोक्ष और खुशियों को पा लेने की आशा करतें हैं I हरे कृष्णा हरे कृष्णा, हरे रामा , हरे रामा हरे हरे हरे राम और कृष्णा ही विष्णु के एक अवतार के समान मान्यता है I

कुण्डलीनी – शब्द का अर्थ कुण्डली देवी के नाम को प्रतिरुपित किया है एक सर्प के साढे तीन चक्र का कुण्डली, पूड को मुंह मे करके निद्रा में यह देवी , या सर्प का जीवन, अग्नि और बुधि मनुष्य के रीड ही हड्डी के नीचले भाग में वाश मान जाता है I जब बिना नियंत्रण के उठता, मनुष्य के अन्दर जहरीले सर्प के समान फूॅफकारता एक नामुमकिन सामाना के शक्ति के साथ I कहा गयाहै बिना नियंत्रण के, कुण्डलीनी आध्यात्मिक अतीद्रिया शक्तियाँ उत्पन्न करेगी, शैतानी स्त्रोत के सम्बन्ध से और अनत: सह नैतिक , आत्मिक और शारिरीक विनाश की ओर अगुवाई करता है फिर भी, इस कुध्डलीनी शक्ति जिसे मंनन और योगा को ऐसा बनाया गया है कि उठते को नियंत्रण किया जा सके I T.M. टी. एम. के उन्नत विद्यार्थी और अन्य तरीको के मंनन चिंतन पश्चिमी देशो में अभ्यास किया जाता और कुण्डलीनी का अनुभव प्राप्त केया जा रहा है I

लिंगम् : शिशन के लिए शब्द प्रयोग किया गया है (पुरुषांग) शिव भगवान को प्रतीक मानते है I आर्यो के आक्रमण पूर्व दिनों में ईन्दू घाटी में लिंग के आराणना के प्रमाण पाये गये हैं I सर्व प्रथम आर्य विजताओं द्वारा इसकी हंसी उड़ाई गई इस कामोद्वीपक प्रतीक को बाद मे उनके द्वारा अपनाया गया I यद्यपि सह प्रजनन रहस्य से जुड़ा हुआर है , तांत्रिक, और धार्मिक परम्पराओं में लैगिंक विकृति सम्मिलित है , शिव लिंग की पूजा करीब-करीब प्रत्येक हिन्दु मंदिरो का पूजा का लगभग महत्वपूर्ण मूर्ति बन गया है, केवल उन्ही के लिए नही जो विशेष रुप से शिव के लिए भक्ति करते है I

लोटा : एक छोटा कांसे का पात्र जिसमें पवित्र जल उण्डेलने , छिड़कने या धार्मिक समारोहों में पीने के बिभिन्न मौको पर प्रयोग किया जाता है I

महाभारत : हिन्दु धर्म शास्त्रो के कविताओ के दो महाकाब्यों मे से एक I उुसरा जिसे रामायण कहते है १,१०,००० युग हो, यह मसीही बाइबिल का तीन गुणा लम्बा यानि संसार भर मे सबसे बड़ा महाकाव्य संग्रह है , यह अनगिनत कवियों और सम्पादको के कार्यो का नतीजा है I जो लगातार बिना रुके जोड़ते गये, हटाते गये, और अनुकूलीत काब्यों को समायोजित करते गये I इनके सिध्दांतो में सांकेतिकता और लज्जा जनक विरोधात्मक बहुधा पाया गया, फिर भी , यह आज हिन्दुओं द्वारा पवित्रशास्त्र का सम्मान प्राप्त है I

मंदिर : हिन्दु पवित्र भवन का नाम

मंत्र : एक ध्वनि का प्रतीक या बहुधा अक्षरो के गुढ स्थितियों को प्रेरित करने के लिए प्रयोग किया जानेवाला स्व I यह एक गुरु द्वारा उसी के राग में उच्चारित किया जाना चाहिए और किसी भी तरह सीखने का प्रयास नही करना चाहिए I जिसका अर्थ किसी को नही समझा जाता हो , सत्य मे ध्वनि का बारम्बार उच्चारित किया जाना है, यह आत्मा यादेव कहने का प्रतीक है I और मंत्रो को कर्द बार दुहराने की क्रिया को मंत्रोपचार कहते है I इस तरह मंत्र एक ब्यक्ति विशेष मे प्रवेश करने जो इसका प्रयोग कर रहा है, और चिंतन करने वाले में एक शांत अवश्या निर्माण कर अस्तित्व को सरलता से मिला देता हैं

माया : प्रत्यक्ष अस्तित्व को जो समस्त संसार मे हे, को मन और शरीर मनुष्यों के द्वारा हिन्दु की ब्याख्या को अनुभव किया जाता है I चूॅकि ब्रम्हान ही वास्तविक है, सर्व सारे मिथ्या है, जो ब्रम्हा सृजनहार द्वारा उष्मा से आग परिवर्तित होती है मनुष्य के देखने की अक्षमता की अज्ञानता से वह असली से मिथ्या को ग्रहण करता या दुनियॉ अवास्तविक ढण्ग, और दर्द एवं पीडा को अपनाता है I मोक्ष इस मिथ्या को भगाने तथा ज्ञानोदय द्वारा आता है चूॅकि यह जगह सब निहारने वालो को एकसा दिखाई देता है और निश्चित नियमों का

पालन करता, कुछ हिन्दु पंथो द्वारा देवताओं के सपने की वास्तविकता के रुप सिखाते है और मनुष्य उसमें केवल अपना ब्यक्तिगत दु:ख की चेतना को जोडता है।

चिंतन : पश्चिमियों के लिए यह बुधिवादी गम्भीर मनन को दर्शाता है, किन्तु पूर्वी रहस्यवादी के लिए यह ठीक विपरीत है , इन बातों को देखते हुए पश्चिम मे भ्रम दिखता है , पूर्वी चिंतन (टी.एम.जिन्न इत्यादि) एक तकनीक (रीति) जिससे मनुष्य अपने आप को इस मायाबी जगत से अपने मन को कुछ समय के लिए स्वतंत्र करके या बुधिमानी विचार से जो एक उच्च स्तर की स्थति को महशूस करता है। चाहे पश्चिम मे कई नामों से लोकप्रिय बनाया गया, पूर्वी चिंतन का उद्देश्य इस संसार के साथ किसी भी जन का अत्यावश्य जुडाव को महशूस कराना है। यह शून्य का द्वार है जिसे निर्वाण कहते है। जिसे प्राय: विश्राम के नाम से बेचा जाता है, जिसमें रीति, चिंतन , होता है जिसका वास्तविक उद्देश्य और अंतत: किसी ब्यक्ति को इसके द्वारा रहस्यमय अंतरीक्षिय शक्तियों के आधीन समर्पित करने की और अग्रसर करता है।

मोक्ष : पुर्नजन्म के जीवन चक्र से छुटकारा पाना जगत की माया से बचकर उस श्रेष्ठता को प्राप्त करके ब्रम्हामान के साथ युग्म होने के लिए पहुँचना। हिन्दु लोग मोक्ष की ओर पीडा और दर्द के इती श्री के रुप में जो पुनर्जन्म द्वारा एक जीवन के बाद दुसरे जीवन में इसे देखते है। तथापित, रुढीवादी हिन्दुओं के अनुसार , कोई अंतिम बचाव नही है, और किसी को भी प्राय: मृत्यु के चक्र में घुमकर आना ही पडता है, फिर पुर्नजन्म , चुँकि एक बार मात्र ब्रम्हमान ही था, हिन्दु धर्म शास्त्र के अनुसार, उसी जीव मे वापस जन्म लेना ठीक नही होता है। मोक्ष एक अस्थाई विश्राम है, अस्तित्व के दुसरे चक्र के स्थिती में, जीवन चक्र में घुमता ही रहता है जिसका कोई अंत नही है। पुन ४.३२ वर्षो में दुहराना है।

नमस्ते : एक सर्वसाधारण एक दुसरे को अभिवादन का तरीका जैसे हॅलो, इसमें हाथ जोडकर और नम्रतापूर्वक झुककर यह जानते हुए कि जगत उस मानव मे है संम्बोधन करना।

निर्वाण : शाब्दिक अर्थ ज्वाला शमन जैसे मोमबत्ती को बुझाना, निर्वाण स्वर्ग है हिन्दु और बौधवादियों के लिए भी किन्तु उनके पंथो मे कैसे और किस तरह वहां पहचने के विचार में बिभिन्नता है, माना लिया जाता है। किन ऐसा कोई स्थान है, या स्थिति है और यह हमारे अन्तरात्मा मे हैं, महशूस करने के लिए इंतजार करना, यह शून्य की सिध्दांत है, जो परमानन्द आता है, वह प्रयाप्त नही होता कि ठीक से दर्द या आनन्द को , शुध्दता मे बिलय से स्वय अस्तित्व के बिलोप द्वारा महशूस किया जा सके।

न्यास : किसी के हाथों को माथे, मुजाओं (कंधो) और सीने पर रखने इत्यादि से देवता को अराधक के शरीर मे बुलाने की परम्परा को कहते है, जब मंत्रो को बारह दुहराते है, मंत्रो को बारम्बार उच्चारित करने की ऐसा सजाया गया रहता है कि स्वयं श्रधालु देवता के समानता मे हिलते हुए समाने को अभिब्यक्त करना है। या मंत्रो की ध्वनि, न्यास इस प्रकृया को मजबूत करने की अवधारणा मात्र है।
ओबियाह मन : एक प्रकार का बैगा, अफ्रीका से वेस्ट इंडिज लाया गया, बहुधा हिन्दुओ द्वारा तिरस्कृत किया जाना, सामान्यत: यह माना गया है कि उसकी आज्ञा को पाना, शैतान की शक्ति से, और अन्य निम्न अस्तित्व , जिसका वह प्रयोग करना, जो उसके पास सहायता के लिए आते उनकी इच्छाओ को पूर्ति करने की अदायगी।

पूजा : शब्दश: महिमा करना बोली और अराधना करने का ढण्ग स्पष्ट करता है कि यह द्रविणीयों का यह आरम्भिक अस्तित्व को दर्शाता है। यह सब केवल परम्परा की रीति से स्वीकार किए गये थे, और पशु बलिदान की आर्यो की प्रथा जो श्रधा करने की परम्परा थी। वेदी को लहूँ से पोतना भी सम्मिलित है, धीरे –धीरे बाद के वर्षो में इसे बुधिवादियों का चुनौती का समावेश जो द्रविण अभयास का फुलो का अर्पण और चन्दन लकडी के लेप के साथ श्रधा के लिए बनाना। फुलों के साथ, हिन्दुओं के आधुनिक पूजा के ढण्ग, नीजी घरों और मंदिरो मे पूर्ण किया जाता है। सामन्यत: अर्पण फल, कपडे, पानी और मुद्रा होते है।

पंडित : एक ब्राम्हण जो विशेषकर हिन्दु रीतिरीवाज को सीखा हो और इस ज्ञान का प्रयोग दुसरों के फायदे के लिए प्रयोग करने मे समर्थ हो, जैसे भविष्य के लिए सलाह, या देवताओं के मध्यस्ती , और धार्मिक परम्पराओं और समारोहों का कार्य निष्पादन करते है। सब ब्राम्हण याजक पंडित नहीं है। फिर भी जन्म ही से वे अपने आप इसके लिएवे योग्य जो जाते है। उनमें सबके सब अपने धार्मिक धर्म के गहन श्रधालु नहीं होते कि पंडित बने, और आज भारत के बहुत लौकिक ब्यवसाय को चुन रहे है।

राम : विष्णु का अवतार, जिनका जीवन महाकाब्य रामायण के बिषय मे है। हिन्दु को , राम अतयन्त महिमा के साथ कार्मो और आदर्श पुरूष है, उसकी पत्नी सीता, आदर्श महिला है, प्रत्येक हिन्दु पंथ राम को उच्च आदर देते है , और उसका नाम भारतीय बच्चों

को रखा जानेवाला सर्व साधारण नाम है। प्रत्येक भारतीय मरते वक्त अपने मुख मे राम का नाम लेना चाहता है, जब महात्मा गांधीजी को उसी के हिन्दु भाई ने शारीरिक रूप से घायल किया तब गिरने के पश्चात, होठो मे बडबडाया हे राम , हे राम।

रामायण : राम का जीवन चरित्र दो हिन्दु महाकाव्य मे से एक, राम के जीवन मानवीयता से सम्बधित सात किताबों का संग्रह है। विष्णु का अवतार, सम्भवत: बुध्द वादियों के संस्करण से अधिक प्रभावित हुआ, इसका असली भाषान्तर कई संसकरणों मे आज, तीन अधिकारिक संस्करण प्रत्येक एक दुसरे के विवरण से प्रमाणित है। और भारत मे लोकप्रिय है।

ऋग्वेद : सबसे महत्वपूर्ण और चारों वेदो का आदर (किन्तु प्राचीनतम नही), प्राचीन इतिहासों के छुट पुट का संग्रह। मंत्रोपचार एवं गीते, दस पुस्तकों में बिभक्त है, इसके श्लोक, सामान्यत: संगीतमय और शुष्क आदिम सृष्टि के देवताओं के महिमा के ध्वनियों के साथ। उसके याजकीय प्रार्थनाओं में स्वार्थ और कामुक स्वभाव पाये जाते है, कभी कभार आध्यात्मिक बुधि के लिए इच्छा प्रकट करते, किन्तु नशा के लिए, औरत, धन, और शक्ति के जरूरत को अभिव्यक्त करते है।

संध्या : धुधलका का परमेश्वर, सुबह का परमेश्वर नाम भी दिया जाता है। चाँद और संध्या अराधना को दोहरे जन्में हिन्दुओं (शुद्र वर्ण के उपर के जाति) ऐसे समयों पर गायत्री मंत्रों का संम्भावित अधिक से अधिक बार मंत्रोपचार, सूर्य को आकाश की ओर रखकर और मंत्रोपचार के व्दारा उध्दार प्राप्त करते हैं।

संयासी: एक धार्मिक हिंदू को जो जीवन के चौथे चरण में हरेक चीजों का त्याग करके, सभी रीति रिवाजों के उपर और अपने आप को समाज से अलग करके और समारिहों मे भी , यदि वह किसी विशेष नियम क्रम का नहीं किंतु स्वतंत्र है। जिसे साधु या योगी भी कहा जाता है- यदि वह योगी का गुरू है।

आत्मानुभव: पूर्वी चिंतन का अंतिम उव्देश्य और योग व्दारा चाहे जो भी नाम से पुकारा जाए "माया" से छुटकारा, ब्यक्तिगत स्थिति जागतिक परिस्थिति एक ब्रहमान से अलग अलग रहता है। यदापि मनुष्य यह भुल जाता है कि वास्तव में वह है कौंन ? और इस तरह अपने आप को अपने पडोसी या ब्रहमान से विशेष मानता है। आत्मानुभव व्दारा वह अपने ब्यक्तिगत लौकिक मौजुदगी के मोह से अलग हो जाता है। और ब्रहमान के पास फिर एकात्मता में लौट जाता है।

शक्तिपत: एक गुरू के स्पर्श करने का ढंग की रीति प्रयोग करते, अपने हाथ को श्रधालु के माथे पर रखकर अलौकिक शक्ति उत्पन्न करने के लिए करता है। शक्ति का अर्थ सामर्थ और इस शक्ति को प्राप्त करने के लिए गुरू ही प्राथमिक शिकृत का नाली बनता है, ऐहिक शक्ति जगत को पकड़ कर रखता है, देवी शक्ति मे साकार, शिव की पत्नी गुरू के स्पर्श व्दारा अलौकिक शक्ति के प्रभाव से श्रधालु जमीन पर गिर सकता है, या चमकीली रौशनी देख सकता है, या प्रबोधज्ञान का अनुभव या आंतरिक ज्योतिर्मय, या अन्य कोई रहस्यमय या गूढ रहस्य का अनुभव कर सकता है।

स्वामी: एक संयासी या योगी को जो एक धर्म विशेष के नियमों के अनुसार हो, अभ्यास की रीति में प्रयोग जैसे एक गुरू के नाम या शीर्ष नियमों के आधीन करना पड़ता है।

तसास: बड़े समारिहों का ढोल

उपनिषद: ***अर्थ:-*** समीप "बैठना" हिंदु पवित्रशास्त्र के एक भाग का नाम को दिया गया है। जो कुछ विशेष भेद की बातें, गुरू व्दारा अपने अंतरंग शिष्यों को समीप बिठाकर निर्देश देने में उपदेश करने हैं। जिसे प्राचीन गुरूओं व्दारा मात्र चुने हुए शिष्यों को ◻ाते। 400 ई. पूर्व अविवाहित नर-नारी का मिलन असली में वेदो में इसे वेदों मंत्रों (तोपों) के भाग के रूप में न मानना, उपनिषद को आधुनिक में अधिकतर मात्रा में स्वीकार किया जाता है।
उपनिषद का मनोविज्ञान गुप्त है, और विरले लोगों व्दारा समझा जाता है मनुष्य और परमेशवर के सवाभाव व्दारा विभिन्न कठिन विषयों को समाहित करने का उव्देश्य अंतिम उध्दार और अस्तित्व शामिल करना है। उपनिषद अपने ही ब्याख्या व्दारा सब हल करना चाहता है। जो उसमें अच्छा सुन्दरता लिए हुए है। एक ब्तक्ति आत्मा के साथ ब्यापक आत्मा (ब्राहमण), और आवश्यक सभी का एकल। इसमें से सबसे उत्कृष्ठ अभिब्यक्तियों के सिध्दाँत चँदोग्य उपनिषद में अपने पुत्र श्वेताकेतु को उव्दालका के शिक्षा में पाया जाता है। "सूक्ष्म अति ब्यापकता से विसरित सब चीजों में सब जगह पाया जाता है। यह अपने आप में सत्य है; और श्वेताकेतु उसका महिमा"

वेदांत:- ***शब्दश:*** आखरी या अंतिम या वेदों में श्रेष्ठ "उपनिषद में इसका ब्यापकता से प्रयोग किया जाता है, संकुचित विचार में, यह हिंदु धर्म के 6 रूढिवादी विधि के हिंदु दार्शनिक उपनिषद पर आधारित और दार्शनिक व्दारा प्रथम रचित बोड़ारायना पर है। जो करीब 200 ई. पूर्व था। वेदांत ब्रहमवाद और विश्व देवता बाद के नजरिये में समझौता नहीं करता है। ब्रहमाण ही एकमात्र सत्य ॅ; बाकी सब मिथ्या है। वेदांत समाज, स्वामी विवेकानन्द व्दारा स्थापित की गई। रामकृण के अग्रेता, जगत का केंद्र विन्दु, सब धर्मो के कमी (छुट) को पढाने की कबूली, तथापि, "सर्व धर्म समभाव" इसका स्वतंत्र और ब्यापक विचारधारा के रूप में

स्वीकार नहीं किया गया। किन्तु वह अपने एकात्मवाद (एकत्ववाद) पर समझौता न करते हुए जिसमे कहा गया है कि सब चौजें एक समान है।

वेद:- हिंन्दु धर्म के प्राथमिक शास्त्रों में है। कहा जाता है कि यह देवताओं से भी क्षेष्ठ है। क्योंकि देवता नाश हो सकते हैं किन्तु वेद बना रहता है। यह विश्वास किया जाता है कि स्यंम ब्राहमण व्दारा प्रकत किए गये हैं। अतिम और अनन्त तक अस्तित्व में और अरम्भ से ही परिपूर्ण है। वेदों में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वेद हैं। इसको चार प्रमुख भागों में वर्गीकृत किया गया है। मंत्रें (छण्दवध्द) स्तुति के भजन; ब्राहमण (रीति रिवाज के अनुदेश ओर याजकीय प्रार्थना के मार्गदर्शन) अर्ण्यकस (विशेष शोध साधुओं और संतों के लिए) और उपनिषदें (दार्शनिक खोज)।

वैदिक:- भाषा जो वेदों को असलियत में लिखा गया था। संसकृत का पुरातन अक्षर, जिसे पुराने आर्य भारतीय भाषा के नाम से भी जाना जाता है। जैसे इसका अर्थ विशलेषण "जैसा सिखाया गया या सिदाहरण वेदों में अंकित है।

योगा:- ***शब्दश:*** "एक साथ होना" यह ब्रहमान के साथ युग्म होने को इंगित करता है। इसी प्रकार योग के कई पाठशाला पाये जाते हैं, और विभिन्न तरीके, किन्तु इन सभी का मूल उव्देश्य एक है कि उस परमात्मा के साथ मिल जायें।
आसन और प्राणायाम नियंत्रण, पूर्वी चिंतन अवधारणा से जुड़े हैं। अपने आप को अनुशासित करके मोह, माया, ईच्छाओं को त्यागने का साधन है, जिससे शरीर की बातें मन पर एकाग्रचित होता है। योग विशेष करके आत्मा के स्थिति को प्रवृत करने के लिए योजनावध्द किया जाता है, जो साधारणत: मन को अनुमति देता है कि ब्रहमाण की ओर एक संग होने के लिए उन्मुक्त होता है। यह एक संसार के मिथ्या से अलग करके मात्र वास्तविक सच को ढूढने का साधन है।

योग:- यदि कोई केवल शारीरिक स्वस्थता प्राप्त करना चाहता है, ब्यायाम उसके लिए उद्देश्य को ध्यान में रखकर बनाया गया है, जिसका चुनाव करना चाहिए। योगा का कोइ भी हिस्सा उसके पिछे के मानसिक धारणा से अलग नहीं किया जा सकता है।

योगी:- स्वतंत्र विचार में, कोई भी जिसने योगाभ्यास में प्रवीणता प्राप्त कर लिया हो, किन्तु सचमुच में, वह जो योगा में गुरू है- वही जिसनें योगाभ्यास के व्दारा ब्राहमाण को प्राप्त कर चुका हो। जिसका यही उव्देश्य है, एक योगी चिंतक अपने आप के विचारों से स्पस्ट अलगाव परिवार से, मित्रों से और सब मानवीय जिम्मेदारियों से पूर्ण अग होना (करना) वह बृम्हाण्ड आगे (उपर) होना, समय, जाति, देश, धर्म और यहाँ तक कि भले ओर बुरे का भी पूर्ण त्याग। जैसे कि श्रीकृष्ण भगवत गीता में कहा: योगी के लिए योगा से बढकर और कोई बात का कोइ मायने नहीं है।

==

यह कुल 16 पुस्तकों के एक सेट की पुस्तक क्र. 11 है

इसका अध्ययन मिनिस्ट्री और ट्रेनिंग कोर्स में होना है, जो "केवल एक बार" का कोर्स है - Project of M.L.T.C. Ministries.

(केवल निजि वितरण के लिए!! - बिक्री के लिए नहीं!! - "केवल एक बार" प्राजक्ट का एक अंश)

==

दॅ डायरेक्टर आफ एमएलटीसी,
पी. ओ. बॉक्स 19106,
वरली,
मुम्बई – 400 030

+ या ईमेल करें : **mltc_ministries@yahoo.com**